वार्षिक प्रतिवेदन

ANNUAL REPORT
2016 – 2017

भारतीय उच्च अध्ययन संस्थान

राष्ट्रपति निवास, शिमला–171005

INDIAN INSTITUTE OF ADVANCED STUDY

RASHTRAPATI NIVAS, SHIMLA-171005

अनुक्रमणिका

क्रमांक	विवरण	पृष्ठ संख्या
	प्राक्कथन	5
	निदेशक की टिप्पणी	7
	पृष्ठभूमि	8
1	प्रशासन	9
2	शोधरत अध्येता	9
3	अकादमिक गतिविधियां	11
	क. चतुर्थ टैगोर स्मृति व्याख्यान	11
	ख. संगोष्ठियां, सम्मेलन तथा कार्यशालाएं	11
	ग. अध्येताओं द्वारा प्रस्तुत साप्ताहिक संगोष्ठियां	68
	घ. अध्येताओं से प्राप्त पाण्डुलिपियां	70
	ङ. आगंतुक प्राध्यापक	72
	च. आगंतुक विद्वान	73
	छ. अतिथि अध्येता	74
	ज. मानविकी एवं सामाजिक विज्ञानों के लिए अंतरविश्वविद्यालय केन्द्र	75
	झ. अन्य कार्यक्रम	79
4	पुस्तकालय	80
5	प्रकाशन	80
6	बिक्री एवं जनसंपर्क अनुभाग	81
7	औषधालय	82
8	यौन उत्पीड़न समिति	83
9	सूचना का अधिकार अधिनियम, 2005	83
10	सम्पदा का रखरखाव	83
11	लेखा एवं बजट	85
12	उद्यान	85
13	संस्थान के वर्ष 2016–17 के लेखा परीक्षण का विवरण	88–121
14	मानविकी एवं सामाजिक विज्ञानों के लिए अंतरविश्वविद्यालय केन्द्र के लेखा परीक्षण का विवरण	122–127
15	भा.उ.अ.सं. की सोसायटी, शासी निकाय तथा वित्त समिति की सूची	128–142

प्राक्कथन

जैसे ही मैं वर्ष 2016–2017 के प्रतिवेदन की समीक्षा करता हूँ तो मुझे बहुत संतोष होता है कि मानव संसाधन की बाधित परिस्थितियों के वाबजूद भी संस्थान ने अपनी अकादमिक गतिविधियों को सतत जारी रखा। निःसंदेह इसका श्रेय प्रोफेसर चतुर्वेदी जी को जाता है जिन्होंने अपनी दोहरी जिम्मेदारी तथा अपने भरसक प्रयास से सभी गतिविधियों का निर्देशन तथा मार्गदर्शन किया। इतना ही नहीं इसके साथ–साथ उन्होंने भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान, रुड़की के प्रमुख का दायित्व भी बड़ी जिम्मेदारी के साथ निभाया।

इस समृद्ध वार्षिक प्रतिवेदन के लिए मैं उन्हें हार्दिक धन्यवाद देता हूँ और उनका आभार व्यक्त करता हूँ। आने वाले वर्षों के लिए शुभ संकेत दिखाई दे रहे हैं कि ज्ञान गंगा अब उन नए क्षेत्रों में प्रवाहित होगी जिससे संस्थान का बौद्धिक समुदाय अपने मूल अधिदेश के आनुरूप्य समृद्ध होगा।

मैं उन सभी अधिकारियों व कर्मचारियों की भी प्रशंसा करना चाहता हूँ जिन्होंने अपनी जिम्मेदारी की महान भावना के साथ काम किया और सभी गतिविधियों के सुचारू संचालन में अपना सहयोग दिया। संस्थान के सचिव, श्री प्रेम चंद जी भी धन्यवाद के पात्र हैं क्योंकि ज्यादातर समय वही परिसर में सबसे वरिष्ठ अधिकारी थे और वास्तव में यही उनके योगदान को परिभाषित करता है।

सभी को मेरी शुभकामनाएँ।

कपिल कपूर
अध्यक्ष, शासी निकाय
एवं
प्रधान, सोसायटी
भा.उ.अ.सं, शिमला

निदेशक की टिप्पणी

अपनी अकादमिक उत्कृष्टता की तलाश में भारतीय उच्च अध्ययन संस्थान ने वर्ष 2016–17 के प्रतिवेदन में एक और सफल वर्ष का कीर्तिमान स्थापित किया है। संस्थान की सर्जना के समय तत्कालीन केन्द्रीय शिक्षा मंत्री तथा संस्थान के अध्यक्ष श्री एम.सी छागला ने सही कहा था, '*ब्रतानवी साम्राज्यवाद का प्रतीक उत्तम भारतीय विद्वता में परिवर्तित हो रहा है।*' वर्षों से संस्थान अपने मूल उद्देश्य के प्रति समर्पित रहा है क्योंकि यहां प्रख्यात विद्वानों ने मौलिक अवधारणाओं का अन्वेषण कर ज्ञान सागर में बहुत ज्यादा वृद्धि की है।

भारतीय उच्च अध्ययन संस्थान की ऐसी संस्था है जहां देश विदेश के विविध विषयों से जुड़े विद्वान पधारते हैं और यहां रहकर परस्पर विचारों का अन्वेषण, तर्क–वितर्क तथा विमर्श करते हैं जोकि हमारे लिए प्रेरक और सारगर्भित सिद्ध होते हैं।

संस्थान की गौरवपूर्ण अध्येतावृति कार्यक्रम के अंतर्गत जाने–माने विद्वान एक वर्ष या दो वर्ष की अवधि के लिए अपनी शोध परियोजनाओं पर कार्य करते हैं और अंत में अपने शोधकार्य को प्रकाशन के लिए संस्थान में जमा करते हैं। मुझे यह बताते हुए प्रसन्नता हो रही है कि परीवीक्षा अवधि के दौरान जिन विद्वानों ने अपनी अध्येतावृति पूर्ण की है, लगभग सभी ने अपने विनिबन्ध जमा करवा दिए हैं। इस दौरान यहां समय–समय पर बहुत से अतिथि प्राध्यापकों, अतिथि विद्वानों तथा अतिथि अध्येताओं ने भी शिरकत की, जिससे एक विविधता का वातावरण बना जोकि गहन अकादमिक बचनबद्धता के लिए पूर्णतः सहायक सिद्ध हुआ। वर्ष के दौरान संस्थान में अनेक संगोष्ठियां, सम्मेलन, कार्यशालाएं तथा अध्ययन सप्ताह आयोजित किए गए जिनका उल्लेख इस प्रतिवेदन में किया गया है।

जिस ऐतिहासिक धरोहर में यह संस्थान चल रहा है उस भव्य भवन की देखरेख भी अति आवश्यक है। भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण तथा केन्द्रीय लोक निर्माण विभाग द्वारा इसके रखरखाव के लिए निरंतर प्रयास किए जा रहे हैं। विशेषतौर पर इन दोनों इकाईयों को इस भवन की मरम्मत और रखरखाव का जिम्मा सौंपा गया है।

संस्थान का पुस्तकालय मानविकी तथा सामाजिक विज्ञानों के क्षेत्र में देश का एक बहुत समृद्ध पुस्तकालय है। पुस्तकालय तथा अन्य अनुभागों की कार्यकुशलता ही संस्थान के संस्थापक श्रद्धेय विद्वान तथा तत्कालीन भारत के राष्ट्रपति डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन् के स्वप्न को पूरा करने के लिए समर्थ बनाती है।

मैं संस्थान की शासी निकाय की पूर्व अध्यक्ष तथा सोसायटी की प्रधान प्रोफेसर चन्द्रकला पाडिया का आभार प्रकट करता हूँ जिन्होंने संस्थान के प्रभावी क्रिया–कलापों में अपनी गहन रूचि दिखाई।

सत्त सहयोग तथा संस्थान के सुचारू संचालन के लिए मैं केन्द्रीय मानव संसाधन विकास मंत्रालय का भी धन्यवाद करता हूँ।

अजित कुमार चतुर्वेदी

निदेशक

भारतीय उच्च अध्ययन संस्थान
राष्ट्रपति निवास शिमला-171005

वर्ष 2016–2017 का प्रतिवेदन

भारतीय उच्च अध्ययन संस्थान की स्थापना वर्ष 1860 के समिति पंजीकरण अधिनियम–21 (पंजाब संशोधित अधिनियम 1957) के अन्तर्गत 6 अक्तूबर 1964 को की गई थी। शिमला स्थित राष्ट्रपति निवास में चलायमान यह संस्थान मूलतः मानवीय महत्त्व और सामाजिक विज्ञानों के गहन सैद्धान्तिक शोध के लिए समर्पित है। संस्थान के शैक्षणिक निकाय में मुख्यतः यहां शोधरत अध्येता होते हैं जो अपना शोध–कार्य करने के अतिरिक्त परस्पर औपचारिक व अनौपचारिक विचार–विनिमय भी करते हैं। राष्ट्रपति निवास तथा इसकी परिसम्पदा प्रकृति के सुरम्य वातावरण में चिन्तनशील उच्च अध्ययन तथा मानवीय दशा के विभिन्न पहलुओं के अन्वेषण हेतु प्रेरक है।

संस्थान का संगम-ज्ञापन विभिन्न क्षेत्रें में शोध का मार्ग प्रशस्त करता है, जो इस प्रकार है-

(क) शोध के क्षेत्र ऐसे होने चाहिए जो अंतर्विधात्मक अनुसंधान का उन्नयन करें।

(ख) अनुसंधान की विषय–वस्तु गहन मानवीय महत्त्व की होनी चाहिए।

संगम–ज्ञापन में अध्ययन के विभिन्न क्षेत्र भी दर्शाए गए हैं जो इस प्रकार हैं–

(क) सामाजिक राजनैतिक और आर्थिक दर्शन;

(ख) तुलनात्मक भारतीय साहित्य (जिसमें प्राचीन मध्यकालीन, आधुनिक, लोक और आदिवासी–साहित्य भी हो);

(ग) दर्शन और धर्म का तुलनात्मक अध्ययन;

(घ) शिक्षा, संस्कृति और कला, जिसमें निष्पादन कलाएँ और हस्तशिल्प भी हों;

(ड) तर्क और गणित की मौलिक अवधारणाएँ और समस्याएँ;

(च) प्राकृतिक और जीवन विज्ञानों की मौलिक अवधारणाएँ और समस्याएँ,

(छ) प्राकृतिक और सामाजिक पर्यावरण का अध्ययन,

(ज) एशियाई पड़ोसी देशों तथा विश्व के संदर्भ में भारतीय सभ्यता, और

(झ) राष्ट्रीय एकता और राष्ट्र निर्माण के संदर्भ में समसामायिक भारत की समस्याएँ।

ज्ञापन के अनुसार निम्न विषयों पर विशेष ध्यान दिया जाना चाहिए -

(क) अनेकता में भारतीय एकता का विषय,

(ख) भारतीय चेतना का एकीकरण,

(ग) भारतीय प्ररिप्रेक्ष्य में शिक्षा का दर्शन,

(घ) प्राकृतिक विज्ञानों में उच्च अवधारणाएँ और उनकी दार्शनिक विवक्षाएँ,

(ड) विज्ञान और अध्यात्म के संश्लेषण में भारत और एशिया का योगदान,

(च) भारतीय मानव एकता,

(छ) भारतीय साहित्य की सहचर,

(ज) भारतीय महाकाव्यों का तुलनात्मक अध्ययन,

(झ) मानव पर्यावरण।

1. प्रशासन

समीक्षा वर्ष के दौरान महाराजा गंगा सिंह विश्वविद्यालय, बीकानेर की उपकुलपति प्रोफेसर चन्द्रकला पाडिया ने संस्थान की शासी निकाय की अध्यक्षा तथा सोसायटी की प्रधान का कार्यभार संभाला। भारतीय उच्च अध्ययन संस्थान की सोसायटी के प्रधान लब्धप्रतिष्ठित व्यक्ति होते हैं जिन्हें विभिन्न क्षेत्रों से चयनित किया जाता है। संस्थान की एक वित्त समिति है जिसमें मानव संसाधन विकास मंत्रालय के सदस्यों के अतिरिक्त संस्थान की प्रबन्ध समिति के सदस्य भी होते हैं जो प्रबन्ध समिति को वित्तीय मामलों में परामर्श देते हैं।

संस्थान का नेतृत्व निदेशक करते हैं जिन्हें सचिव तथा अन्य अधिकारी अपना सहयोग देते हैं। समीक्षा अवधि के दौरान प्रोफेसर चेतन सिंह तत्पश्चात प्रोफेसर अजित कुमार चतुर्वेदी ने संस्थान के निदेशक का कार्यभार संभाला।

2. शोधरत अध्येता

संस्थान के आधार इसके अध्येता हैं। राष्ट्रीय अध्येता/अध्येता/टैगोर अध्येता यहाँ रहकर अपनी शोध परियोजनाओं पर कार्य करतें हैं। इसकी अवधि दो वर्ष तक है। अध्येता अपनी अवधि के समाप्त होने पर पाण्डुलिपि प्रस्तुत करते हैं, यदि यह प्रकाशन के लिये उचित पाई जाती है तो संस्थान इसका प्रकाशन करता है। इन्हें संगोष्ठियों में सहभागिता, विचार–विमर्श तथा व्याख्यानों में सहभागिता करनी होती है। वर्ष 2016–2017 के दौरान निम्नलिखित राष्ट्रीय अध्येता/अध्येता/टैगोर अध्येता कार्यरत थे–

क्रमांक	अध्येता का नाम	शोध परियोजना
1.	प्रोफेसर बैटिना बूमर राष्ट्रीय अध्येता	*''थर्ड आई एण्ड ओवरकमिंग डेथ''। द योगा ऑफ द नेत्रा तंत्रा एण्ड इट्स एग्जैसिस बाई क्षेमराजा।*
2.	प्रोफेसर निर्मल सेनगुप्ता राष्ट्रीय अध्येता	*द ट्रांजिशन पैराडाइम ऑफ ट्रैडिशनल नॉलेज मैनेजमेंट एण्ड गवर्नेंस सिस्टम।*
3.	प्रोफेसर विजय शंकर वर्मा राष्ट्रीय अध्येता	*ट्रांसलेशन ऑफ मैन्युस्क्रिप्ट इन द खुदा बक्श लाइब्रेरी इन पटना ऑन द ''रेज ऑफ लाइट'' बाई द अरब फिलॉस्फर एण्ड साइंटिस्ट अल–किन्दी*
4.	श्री अमित दत्ता टैगोर अध्येता	*द क्रिएटिव प्रोसेस– एस्थेटिक्स इन मूवमेंट*
5.	डॉ. मार्टिन कैम्प्चन टैगोर अध्येता	*रवीन्द्रनाथ टैगोर एण्ड पॉल गेहीब : देयर परसनल रिलेशनशिप एण्ड कन्वर्जेंस ऑफ एजूकेशन आइडियास।*
6.	डॉ. सौम्या शर्मा अध्येता	*अप्रोच टू कन्जर्वेशन एण्ड रेस्टोरेशन : स्पेसिफिक फोक्स ऑन कल्चरल हेरिटेज ऑफ हिमाचल प्रदेश।*

7.	प्रोफेसर महेश चंपकलाल अध्येता	*लैंग्वेज इन थियेटर, लैंग्वेज ऑफ थियेटर (ड्रामेटिक टैक्सट वर्सेस परफार्मेंस टैक्स्ट इन द कन्टैक्स्ट ऑफ भाषा नाटक चक्रा– एन एनाल्टिकल एण्ड कम्पेरेटिव स्टडी)।*
8.	डॉ. कौस्तव चक्रबर्ती अध्येता	*सोसिओ–कल्चरल स्टडी ऑफ द नॉन–नॉर्मेटिव एक्सप्रेशनस इन सिलेक्ट ट्राइबल फोक–लिट्रेचर ऑफ नॉर्थ बंगाल।*
9.	डॉ. बी. रविचन्द्रन अध्येता	*लैंग्वेज, कास्ट एण्ड टैरिटरी : लैंग्वेज स्पोकन बाई द स्कैवैंजिंग कम्युनिटीस इन साउथ इण्डिया*
10.	डॉ. ज्योति सिन्हा अध्येता	*चैलेंजिस एण्ड अटेन्मेंटस ऑफ 'ठुमरी सिंगरस' इन द कस्टम ऑफ बनारस।*
11.	डॉ. अर्पिता मित्रा अध्येता	*जर्मन इण्डोलजी स्कॉलरशिप एण्ड मॉडरन इंटरप्रटेशनस ऑफ वेदांता इन द 19थ एण्ड 20थ सेचरीस।*
12.	डॉ. अम्बा कुलकर्णी अध्येता	*कम्प्यूटेशनल मॉडलिंग ऑफ योग्यता एण्ड तात्पर्य।*
13.	डॉ. गोहार याकूब अध्येता	*शेपिंग ए लिट्रेरी स्पेस : द डिस्कोर्स ऑफ आइडेंटिटी एण्ड यूज ऑफ कश्मीरियत एज कैटगरी इन अर्ली लिटरेरी हिस्ट्री ऑफ कश्मीरी।*
14.	श्री समीर बनर्जी अध्येता	*रिइंटरप्रेटिंग गाँधीयन थॉट बाइ कंटेम्परेरी सिविल सोसायटी इनिशिएटिवस।*
15.	डॉ. प्रदीप कुमार नायक अध्येता	*टूवर्डस गारंटींग लैण्ड टाइटलिंग (सिक्योर प्रॉपर्टी राइटस) इन इण्डिया : ए स्टडी*
16.	श्री छेरिंग दोर्जे अध्येता	*थीअरी एण्ड प्रैक्टिस ऑफ हैरिटेज कन्जर्वेशन रेस्टोरेशन ऑफ राष्ट्रपति निवास*
17.	प्रोफेसर जगदीश लाल डाबर अध्येता	*हिस्ट्री ऑफ फूड इन नॉर्थ इण्डिया : मिजोरम सिन्स प्री–कलोनिअल टाइम्स*
18.	डॉ. रत्नाकर त्रिपाठी अध्येता	*ए कम्पेरिटिव स्टडी ऑफ द रीजनल म्यूजिक इन्डस्ट्रीस इन हिन्दी–स्पीकिंग इण्डिया : विद स्पेशल फोक्स ऑन हिमाचल प्रदेश, बिहार एण्ड हरियाणा*
19.	सुश्री प्राची दुबले अध्येता	*टूवर्डस ए थीअरिटकल फ्रेमवर्क ऑफ आदिवासी म्यूजिक : स्टडींग द म्यूजिकल ट्रेडिशन ऑफ रथवा आदिवासी, ए रिप्रेजेंटेटिव ट्राइब लिविंग ऑन बॉर्डरस ऑफ महाराष्ट्र*
20.	डॉ. राधिका कृष्णन् अध्येता	*रेड इन ग्रीन : शंकर गुहा नियोगी (1942–1991) एण्ड पॉलिटिक्स एज द ग्रेट आउटसाइडर*
21.	डॉ. सुमन्यु सतपति अध्येता	*इन प्रिंट : द रोल ऑफ द अर्ली पीरियडिकल प्रैस इन शेपिंग मॉडरन ओड़िया लिटरेरी कल्चर*

22.	डॉ. आर. ललिता राजा अध्येता	*सिग्निफिकेंस ऑफ ऑप्टिलिटी थीअरी इन फोनोलोजिकल एक्यूजिशन एण्ड इन असैस्समेंट एण्ड इंटरवेन्शन ऑफ फोनोजिकल डिसऑर्डरस*
23.	डॉ. बिन्दु मैनन एम. अध्येता	*रिलिजन, माइग्रेशन एण्ड मॉडरनिटी : इस्लामिक होम फिल्मस इन केरला एण्ड माइग्रेशन टू द गल्फ कंटरीज।*
24.	डॉ. आदित्य प्रताप देव अध्येता	*राइटिंग ट्रांस–टैम्परेलिटी इनटू हिस्ट्री : टाइम एण्ड पॉलिटिक्स इन द ऑरल ट्रैडिशनस ऑफ द मिक्स्ड ट्राइब–कास्ट कम्युनिटीज ऑफ द प्रिसली स्टेट ऑफ कांकर, सदरन छत्तीसगढ़।*
25.	डॉ. लियोन मोरेनस अध्येता	*मोहल्लास एण्ड स्मार्ट सिटीज : पोस्ट कलोनिअल डिवेलप्मेंट इन दिल्ली।*
26.	प्रोफेसर त्रिलोकी सिंह अध्येता	*बाउंसिंग एण्ड साइक्लिक मॉडलस ऑफ द यूनिवर्स।*
27.	डॉ. आनंद कुमार अध्येता	*इण्डिया : बिटवीन डेमोक्रेटिक नेशन–बिल्डिंग एण्ड डोमिनेंट कास्टस' डेमोक्रेसी।*
28.	प्रोफेसर के.एम. बहरूल इस्लाम	*माइग्रेंट म्यूज : द थर्ड स्पेस इन आसामीज लिट्रेचर।*
29.	प्रोफेसर माधवन पी.	*मीनिंग इन लैंग्वेजिस : ए कम्पेरिजन ऑफ द डोमिनेंट थीमस एण्ड देयर ट्रीटमेंट इन द वेस्टरन एण्ड इण्डिया/संस्कृत ट्रैडिशन।*
30.	डॉ. सांडिली महाराज–रामदयाल अध्येता	*फरॉम फोर्सड माइग्रेशन टू द ऐण्ड ऑफ इन्डेन्च्युर : ए साइकालजिकल एनालसिस ऑफ द पीपल ऑफ इण्डियन एन्सेस्टरी इन त्रिनिदाद (1845–1917)*

3. अकादमिक गतिविधियां

क. चतुर्थ टैगोर-स्मृति व्याख्यान

संस्थान में संस्कृति एवं सभ्यता के अध्ययन के उद्देश्य से वर्ष 2013 में टैगोर सेंटर स्थापित किया गया है। जिस बौद्धिक वचनबद्धता को लेकर टैगोर सेंटर की स्थापना की गई है उन अकादमिक गतिविधियों में किसी प्रख्यात विद्वान अथवा आम प्रज्ञावान व्यक्ति द्वारा वर्ष में किसी ऐसे महत्त्वपूर्ण विषय पर एक टैगोर–स्मृति व्याख्यान दिलवाना भी इस केन्द्र का प्रमुख कार्य है। इस व्याख्यान की विषय–वस्तु संस्कृति, समाज, तथा मानवीय दशाओं से संबद्ध सभ्यतात्मक मुद्दे होते हैं, जोकि टैगोर के अतिसाधक रूचिपूर्ण विषय रहे हैं।

चतुर्थ टैगोर स्मृति व्याख्यान 28 नवंबर 2016 को प्रख्यात कला इतिहासकार प्रोफेसर बी.एन. गोस्वामी द्वारा शिमला में प्रस्तुत किया गया। इस अवसर पर संस्थान की शासी निकाय की अध्यक्षा प्रोफेसर चंद्रकला पाडिया ने स्वागत भाषण प्रस्तुत किया। संस्थान के निदेशक प्रोफेसर चेतन सिंह ने इस आयोजन में उपस्थित सभी सभासदों का धन्यवाद ज्ञापित किया।

ख. संगोष्ठियां, सम्मेलन तथा कार्यशालाएं

समीक्षा वर्षावधि के दौरान संस्थान में कई संगोष्ठियां तथा सम्मेलन आयोजित किये गये। जिन्हें संबंधित संयोजकों/सह–संयोजकों द्वारा तैयार अवधारणा नोट में व्याख्यायित शैक्षिक औचित्य सहित सूचीबद्ध किया गया है। इन संगोष्ठियों

की रिपोर्ट में प्रत्येक संगोष्ठी के विभिन्न सत्रों तथा प्रतिभागियों के नाम दर्शाए गए हैं।

प्रत्येक संगोष्ठी का अवधारणा नोट संस्थान की वेबसाइट पर डाल दिया जाता है तथा वेबसाइट पर ही शोधपत्र आमंत्रित किए जाते हैं। आमंत्रित प्रख्यात विद्वानों जो पहले भी प्रस्तावित संगोष्ठी की विषय–वस्तु में अपना महत्त्वपूर्ण योगदान दे चुके हैं, के अलावा संबंधित विषय में रूचि रखने वाले अन्य विद्वानों को भी आमंत्रित किया जाता है। इस आमंत्रण के प्रत्युत्तर में कई युवा शोधार्थी अपने शोधपत्र प्रस्तुत करने के लिए अपनी इच्छा जाहिर कर चुके हैं जोकि एक अच्छा संकेत है। इस व्यापक प्रचार के फलस्वरूप अत्याधिक प्रतिक्रियाएं प्राप्त हो रही हैं।

आलोच्य वर्ष के दौरान निम्नलिखित अकादमिक गतिविधियां आयोजित की गई–

1. 'इंटिमेसी एण्ड बिलाँगिंग इन कंटेम्परेरी इण्डिया' विषय पर अंतर्राष्ट्रीय संगोष्ठी (04–06 अप्रैल 2016)

मूलाधार – इंटिमेसी अर्थात 'अंतरंगता' अथवा 'घनिष्ठता' शब्द की व्युत्पत्ति लैटिन भाषा से हुई है जिसका अभिप्रायः निकटतम मित्र के बारे में उसकी अंतरतम के बारे में जानने से है। इस प्रकार, अंतरंगता, संबंधित व्यक्ति की इच्छाशक्ति को स्वीकार कर उसे साझा करने की धारणा है। एक साथ, लगभग असुरक्षित रूप से तब प्रश्न उत्पन्न होते हैं– जो कुछ हम विकसित करते हैं, उनमें से कितने हमारे लिए घनिष्ठ संबंध रखते हैं? उन सभी में से जो हम समझते हैं, कितने लोगों की भावनाओं को पहचान सकते हैं और उनमें से कितनों को हम एक परिचित सर्कल में अच्छी तरह से व्यक्त कर सकते हैं? अंतरंगता का विरोधाभास इस तथ्य में निहित है कि यह एक उद्देश्य है लेकिन निजी, दैहिक, फिर भी मनोवैज्ञानिक, निश्चित विचारात्मक/आत्म–चेतन आधार के बिना अपने आयाम में प्रभावशाली है। ध्यातव्य है कि 'आत्म' की अंतरंगता 'अन्य' पर निर्भर है और फिर इस तरह से एक साथ मिलकर काम करती है कि 'स्व' और 'अन्य' के बीच भेदपूर्ण अंतर समाप्त हो गया है। अतः अंतरंगता की धारणा यह साबित करती है कि 'स्व' 'अन्य' से बाधित नहीं हो सकता। विशिष्ट होने के लिए 'स्व' को 'अन्य' के माध्यम से ही जाना जा सकता है, जहां संभव लगता है कि अंतरतम गुण साझा किए जा सकते हैं। यहां चुनाव का प्रश्न सामने आता है। गैर मानवीय बंधनों के विपरीत, मनुष्य के बीच अंतरंग बंधन, सबसे पहले साझा करने की स्पष्ट संभावना और दूसरे दोनों पक्षों से संबंधित परस्पर सहमति और प्रतिबद्धता पर निर्भर करते हैं। क्या अंतरंगता की ऐसी संभाव्यता की वास्तविकता पूरी तरह से राजनीतिक है? क्या समीपता/निष्ठा के माध्यम से संबंधित होने के लिए प्रेरणा राजनीति के बिना पूरी तरह से प्रेरक है? वह कौन सी राजनीति है जो हमें संबद्धता की अंतरंग जागरुकता से (बाहरी रूप से संबंधित) संबद्धतता की ओर या उसके विरुद्ध ले जाती है? वह कौन सी राजनीति है जो अक्सर अंतरंगता के लिए एक गूढ़ आयाम जोड़ती है?

प्रारंभ में अंतरंगता का संबंध रोजमर्रा की जिंदगी के संवाद के एक हिस्से 'व्यक्तिगत जीवन के समाजशास्त्र' के रूप में माना जाता था मगर अब यह श्रम, अर्थव्यवस्था, सामाजिक न्याय, वस्तुओं और खरीददारी आदि से जुड़े जटिल व्यापक मुद्दों के साथ भी सम्मिलित है।

संबंध को एक साथ समझने के नए तरीकों को खोजने की संभावना राष्ट्रीयता, नागरिकता और समुदाय के विचारों को बदलने के साथ अंतरंगता के जटिल संबंध को जाने बिना नहीं समझी जा सकती है। 'शृंगार' से लेकर 'प्रेम' की प्राचीन कामुक प्रथाओं से, वैलेंटाइन्स दिवस पर सशक्त बहस के साथ अंतरधर्मीय, अंतरवर्गीय, अंतरजातीय प्रेम/विवाह तथा परिणामस्वरूप ऑनर किलिंग जैसे शर्मनाक व जघन्य अपराध भारत में अंतरंगता के क्षेत्र में ऐसे लक्षण सूचक हैं जो नए–नए रूपों में हमारे सामने आते हैं।

इस सम्मेलन में, समकालीन भारत में अंतरंगता के उभरते रूपों पर ध्यान केंद्रित किया गया तथा संबद्धतता की बदलती धारणा/प्रकृति के पीछे राजनीति को समझने का भी एक प्रयास था। अंतरंगता की उत्पति के क्या कारण हैं

तथा वे कौन से कारक हैं जो किसी की अपनी पहचान बताने को प्रतिबंधित करते हैं? पारस्परिक संबंधों, प्रवासन/आप्रवासन, वैकल्पिक सामाजिक–आर्थिक सिद्धांतों का उदय, नई संचार प्रौद्योगिकियों तथा अंतर्राष्ट्रीय मीडिया के परिणामस्वरूप – अंतरिमता के तरीकों के सभी परिवर्तनों पर प्रश्न पूछे जा सकते हैं। इस तरह अंतरंग स्थानों/अंतरंग मुठभेड़ों के लिए अंतरंग सेटिंग्स को जन्म देते हैं। वास्तव में यह अनुप्रस्थ और मुक्ति संरचनाओं के लिए मार्ग प्रशस्त है जो राजनीतिक रूप से प्राधान्य, पारंपरिक, भारतीय अवधारणाओं/संबंधों के मानदंडों को चुनौती देते हैं, जो पहले वर्ग, जाति, धर्म, क्षेत्र और मानक के कठोर सीमाओं तक ही सीमित थे।

विशेष रूप से, ये प्रश्न पूछे जाते रहे हैं– विपरीत–सांस्कृतिक/अपरंपरागत/गैर–मानव अंतरंगता के लाभ और उसकी चुनौतियों क्या हैं? संबद्धता की राजनीति क्या है यदि अंतरंगता के समकालीन रूप भौगोलिक स्थान/जातीयता, वर्ग, जाति, विकलांगता, उम्र, (दलित/आदिवासी) उपमहाद्वीप, (धार्मिक/लैंगिक) अल्पसंख्यक आदि से जुड़े मुद्दों का अन्तर्विभाजन करते हैं तो इस प्रकार वैकल्पिक उप–सांस्कृतिक प्रक्षेपों को विकसित करने का प्रयास करते हैं? क्या भारत में संबद्धता की उभरती प्रवृति को बौद्धिक अंतरंगता, आध्यात्मिक अंतरंगता और स्मृति के माध्यम से पुरानी अंतरंगता की अवधारणाओं के साथ संबंध जोड़ा जा सकता है? क्या अंतरंगता, परिवर्तन, निकाय, श्रम, देखभाल और सामाजिक न्याय के समेकन के पीछे एक अनिवार्य राजनीति है? नाम और संबंधित–जैसे दोस्त, साथी, प्रेमी, साथी, पति–पत्नी, पाली–कामुक इच्छाओं, असंतुष्ट कामुकता, गुमनाम/अज्ञात बंधन या सामूहिक रूप से एक अस्थायी ढंग से जुड़े परिवर्तन से राजनीति और परिवर्तन की संभावनाओं को कैसे पकड़ा जा सकता है? घरेलू हिंसा जैसे अंतरंगता विरोधाभासों का भी अर्थ कैसे हो सकता है?

भारतीय उच्च अध्ययन संस्थान में 04–06 अप्रैल 2017 को 'इंटिमेसी एण्ड बिलॉगिंग इन कंटेम्परेरी इण्डिया' विषय पर एक अंतर्राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन किया गया। संस्थान के अध्येता डॉ. कौस्तव चक्रवर्ती इस संगोष्ठी के संयोजक थे। संस्थान के निदेशक प्रोफेसर चेतन सिंह ने इस अवसर पर स्वागत भाषण दिया। संगोष्ठी के संयोजक डॉ. कौस्तव चक्रवर्ती ने परिचयात्मक टिप्पणी प्रस्तुत की तथा उद्घाटन उद्बोधन पुलवाडो पिक्केनो, बेनौलीम, गोवा से आए डॉ. सुधीर कक्कड़ द्वारा प्रस्तुत किया गया।

प्रतिभागी

- डॉ. सुधीर कक्कड़, पुलवाडो पिक्केनो, बेनौलीम, गोवा।
- डॉ. जी.जी. अमरजीत शर्मा, उत्तर पूर्व भारत अध्ययन कार्यक्रम, स्कूल ऑफ सोशल साइंसिस, जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय, नई दिल्ली
- सुश्री जूही सिद्धार्थ, प्लॉट नं. 87, सेक्टर 8, गाँधीनगर, गुजरात
- डॉ. वीभती दुग्गल, अंग्रेजी विभाग, जाकिर हुसैन दिल्ली कोलाज (शाम), दिल्ली विश्वविद्यालय, नई दिल्ली
- डॉ. प्राण प्रतीक पटनायक, संस्कृति और मीडिया अध्ययन विभाग, स्कूल ऑफ सोशल साइंसेस, केन्द्रीय विश्वविद्यालय, राजस्थान।
- प्रोफेसर राधिका राज, टाटा सामाजिक विज्ञान संस्थान, मुंबई
- डॉ. आर. उमामहेश्वरी, अध्येता, भा.उ.अ.सं., शिमला
- डॉ. कौस्तव चक्रवर्ती, अध्येता, भा.उ.अ.सं., शिमला
- डॉ. मालमंगनबा निन्थौजम मीती, फेलो, अध्येता, भा.उ.अ.सं., शिमला

- डॉ. गीता पटेल, सेक्टर –15 ए, फ्लैट 4 बी, सुपर डेलक्स फ्लैट, नोएडा, यूपी
- प्रोफेसर इसाबेल क्लार्क–डिसेस, मानव विज्ञान विभाग, प्रिंसटन विश्वविद्यालय, प्रिंसटन, एनजे 08544, यूएसए
- प्रोफेसर फ्रेडरिक स्मिथ, धार्मिक अध्ययन विभाग, आयोवा विश्वविद्यालय, आयोवा सिटी, आईए 52242, यूएसए
- श्री सायन भट्टाचार्य, जादवपुर विश्वविद्यालय, कोलकाता
- प्रोफेसर प्रियंबादा सरकार, दर्शनशास्त्र विभाग, कोलकाता विश्वविद्यालय, कोलकाता
- डॉ. एम.एस. सिद्दीकी, शिक्षा विभाग, विश्व–भारती (केंद्रीय विश्वविद्यालय), शांतिनिकेतन, पश्चिम बंगाल
- डॉ. पी. संभाल मोहन, स्कूल ऑफ सोशल साइंसिस, महात्मा गाँधी विश्वविद्यालय, कोट्टायम, केरल
- श्री डिकेंस लियोनार्ड एम., सेंटर फॉर कम्पैरेटिव लिटरेचर, युनिवर्सिटी ऑफ हैदराबाद, हैदराबाद
- प्रोफेसर के. सत्यनारायण, सांस्कृतिक अध्ययन विभाग, द इंग्लिश एंड फॉरेन लैंग्वेज यूनिवर्सिटी, हैदराबाद
- डॉ. सुचिताता सरकार, डीटीएसएस कॉलेज ऑफ कॉमर्स, कुरार, मुंबई
- डॉ. मंगेश कुलकर्णी, राजनीति और लोक प्रशासन विभाग, एस.पी. पुणे विश्वविद्यालय, पुणे
- सुश्री चांदनी मेहता, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली
- डॉ. विनीता सिंह, प्रबंधक, सक्षम भारत, बैंगलोर
- डॉ. हिमाद्री रॉय, लिंग एवं विकास अध्ययन विद्यालय, इंदिरा गाँधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय, नई दिल्ली
- प्रोफेसर जी अरुनीमा, महिला अध्ययन संस्थान, स्कूल ऑफ सोशल साइंसिस, जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय, नई दिल्ली
- सुश्री सिल्पा मुखर्जी, जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय, नई दिल्ली
- प्रोफेसर शिवाजी के पानिककर, स्कूल ऑफ कल्चर एंड क्रिएटिव एक्सप्रेशन, आम्बेडकर विश्वविद्यालय, दिल्ली
- डॉ. कन्टाकोचर–लिंड्रेंन, 23 शा वान ड्राइव, ब्लॉक 3, 1 तल, अप्प 1 सी, पोक्फलम, हांगकांग
- सुश्री निलजाणा सेन, किशोर भारती भागिनी निवेदिता कॉलेज (सह–एड), कोलकाता
- डॉ. कौस्तव चक्रवर्ती, अध्येता, भा.उ.अ.सं., शिमला
- डॉ. टैड ग्राहम, अध्येता, भा.उ.अ.सं., शिमला
- डॉ. आर्यक गुहा, अध्येता, भा.उ.अ.सं., शिमला
- प्रोफेसर निर्मल सेनगुप्ता, राष्ट्रीय अध्येता, भा.उ.अ.सं., शिमला
- प्रोफेसर के.एल. टुटेजा, टैगोर अध्येता, भा.उ.अ.सं., शिमला
- डॉ. गोवर याकूब, अध्येता, भा.उ.अ.सं., शिमला
- प्रोफेसर बैट्टीना बूमर, राष्ट्रीय अध्येता, भा.उ.अ.सं., शिमला
- डॉ. अनिंदिता मुखोपाध्याय, अध्येता, भा.उ.अ.सं., शिमला

प्रतिभागियों ने संगोष्ठी के दौरान निम्न विषयों पर प्रस्तुतीकरण किया–

सत्र–1

जी. अरूणिमा– *लव, लाइफ, लर्निंगः द इन्टिमेट हिस्ट्री ऑफ पॉलिटिकल सब्जैक्टिविटी*

के. सत्यनारायण– *आइडैंटिफिकेशन, बिलाँगिंग एण्ड द कैटगरी ऑफ दलित*

शिवाजी के. पाणिक्कर– *इन्टिमेसी एण्ड बिलाँगिंग अंडर डूरेसः द क्राइसिस इन द क्वीर एक्सप्रेसिव प्रैक्टिस*

सत्र–2

इसबैले क्लार्क–डिसेस– *इन्टिमेसी इन तमिल किन्शिप*

प्रियम्बदा सरकार– *चैलेंजिस ऑफ क्वीर इन्टिमेसिस इन कोलकाता : एन एक्सप्लोरेशन*

निलंजना सेन– *हाऊ स्टैण्ड स्टिल इन एन ऐवर मूविंग अर्थ : ए रीडिंग ऑफ इन्टिमेसी इन डिसेबिलिटी स्टडीस*

सत्र–3

गीता पटेल– *रूटिंग टैक्नो–इन्टिमेसी, रिस्क एण्ड द एम्बिऐंट पॉलिटिकल*

जूही सिद्धार्थ– *न्यू फ्रीडमस, ओल्ड कंट्रोलस : द रोल ऑफ मोबाइल फोन टेक्नालजी इन द इन्टिमेसी लाइव्स ऑफ यंग वोमेन इन मुम्बई स्लम*

सुचारिता सरकार– *मेटरनल इन्टिमेसिस ऑनलाइन : हाऊ इण्डियन मॉम–ब्लॉगरस रिकन्फिगर सेल्फ, बॉडी, फैमिली एण्ड कम्यूनिटी*

सत्र–4

मंगेश कुलकर्णी– *इन्टिमेसी, बिलाँगिग एण्ड मैस्क्यूलिनिटी इन भालचन्द्र नेमाड़ेज नोवल, कोस्ला (कॉकून)*

मालेमंगंबा निंगथौजम मितैयी– *एनिमेटिड इन्टिमेसी : एनैक्टिंग पॉपुलिज्म एण्ड कुलैक्टिव मेमोरीज इन ए फ्रैगमैंटिड सोसायटी*

राधिका राज– *किंग्ज ऑफ द सबरबस : हिन्दू नेशनलिज्म एण्ड फ्रैटरनल बॉड एज पॉलिटिक्स इन द अर्बन मार्जिनस*

सत्र–5

आर. उमामहेश्वरी– *सो नियर येट सो फार : नेचर एज जी इन्टिमेट एण्ड नेचर एज द अदर*

प्रांता प्रतीक पटनायक– *पब्लिक स्पेसिस एण्ड प्राइवेट इन्टिमेसिस : द 'पॉलिटिक्स ऑफ बिलाँगिंग' इन पार्क्स*

सत्र–6

सायन भट्टाचार्य– *रीडिंग क्वीरनेस : सेम–सैक्स मैरिजिस इन इण्डिया*

विनिता सिंह– *गेटिंग इंटिमेट : द डिसेबल बॉडी एज डेट, लवर एण्ड फ्रैंड– रीडिंग द रिसेंट स्ट्रेटेजीस ऑफ बींग सैक्सुअल बाई द डिसेबल इन कंटेम्परेरी इण्डिया*

चाँदनी मेहता– *सेक्स वर्क : द इंटिमेट 'अदर' ऑफ इंटिमेसी एण्ड बिलांगिंग*

सत्र–7

हिमाद्री रॉय– *प्लेजरेबल पेन : कन्ज्यूमिंग इंटिमेसी एण्ड सेंस ऑफ बिलांगिंग ऑफ इरॉटिक गे मेन*

डिक्कन्स लियोनार्ड एम– *एंटी–कास्ट कम्युनिटीस एण्ड आउट–कास्ट एक्सपीरियंसः स्पेस, बॉडी, डिस्प्लेसमेंट एण्ड राइटिंग*

सत्र–8

जी. अमरजीत शर्मा– *सिटिजनशिप एण्ड एथनिक इंटिमेसी : इनक्लोजर एण्ड इंटरसेक्शन इन द लाइव्स ऑफ पीपल इन नॉर्थ–ईस्ट इण्डिया*

शिल्पा मुखर्जी– *क्वीर इंटिमेसीस इन द टाइम ऑफ न्यू मीडिया : व्हेन ग्राइंडर प्रोड्यूस अल्टरनेटिव कार्टोग्राफीस*

सत्र–9

विभूति दुग्गल– *लिसनिंग टू द लव सॉंग : इंटिमेसी ऑन द रेडियो इन इण्डिया, सी. 1960–75*

कांता कोछर लिङरेन– *डिस– इक्वीलिब्रियमस : परफॉर्मेंसिस ऑफ बिलांगिग एक्रॉस साउथ एशियन डिसेबिलिटी एण्ड डैफ*

सत्र–10

मोहम्मद शाहीर सिद्दकी– *वायस ऑफ एगोनी इन द स्प्रिचुअल स्पार्क : फेमिनिस्ट मिस्टिजम, कंटेम्परेरी सोसायटी एण्ड स्प्रिचुअल इंटिमेसी*

फ्रेड्रिक एम. स्मिथ– *इंटिमेसी एण्ड कम्युनिटी इन प्रोसेशनस इन गढ़वाल एण्ड हिमाचल प्रदेश*

पी. सनल मोहन– *इंटिमेसी इन द कंटेक्स्ट ऑफ कास्ट स्लेवरी : एक्सप्लोरिंग द मिशनरी राइटिंगस ऑन केरला*

2. 'पुलिसिंग ए डाइवर्स इण्डिया' विषय पर राष्ट्रीय संगोष्ठी (18–19 अप्रैल 2016)

मूलाधार– भारतीय समाज एक विविधतापूर्ण और तेजी से आधुनिकता की ओर बदलता हुआ समाज है। देश में सामाजिक–सांस्कृतिक विविधता का महत्त्वपूर्ण स्वरूप कई धुरियों पर टिका है। इस बारे में कोई खास उल्लेख नहीं है जबकि सामाजिक अंतःक्रिया की सम्पन्नता में इसका बहुत योगदान है। साथ इससे टकराव की संभावनाओं का एक भरपूर वातावरण भी बनता है। तथापि सांविधानिक दायरे में मेलजोल तथा आपसी टकराव के समाधान के व्यवहार्य तरीके मौजूद हैं। अधिकांशतः व्यावहारिक संतुलन बना हुआ है। इस बात से इन्कार नहीं किया जा सकता है कि ऐसी

कई घटनाएं हुई हैं कि सामाजिक पूर्वाग्रह की गहरी जड़ों ने पुलिस और दूसरी सुरक्षा एजेंसियों की कार्य–प्रणाली को प्रभावित किया है। जन समुदायों में व्याप्त इस प्रकार के पूर्वाग्रहों के कारण न सिर्फ पहले से चली आ रही टकराव की स्थिति और भड़कती है अपितु एक परस्पर भाईचारे एवं बहु–सांस्कृतिक देश के रूप बनी भारत की छवि को भी नुकसान पहुंचता है।

वर्ष 2011 में हुई जनगणना के अनुसार भारत की जनसंख्या लगभग 1,210,193,422 तक पहुंच गई है। भारत की एक अरब से अधिक इस जनसमुदाय में ऐसे भारतीय सम्मिलित हैं जो हिन्दू, इस्लाम, ईसाई, यहूदी, जैन, सिख, बौद्ध तथा फारस से आया प्राचीन पारसी आदि प्रमुख धर्मों को मानने वाले हैं। देश के विभिन्न भागों में व्याप्त विविध संप्रदायों तथा उप संप्रदायों द्वारा भिन्न–भिन्न मत, उपासना, पद्वतियां तथा धार्मिक विश्वास अपनाएं जाते हैं।

भाषाई विविधता भी भारत में एक आश्चर्यचकित करने वाला कारक है। गिर्यसन ने 1903–28 के बीच भारतीय भाषाओं का सर्वेक्षण करने पर पाया कि भारत में 179 भाषाओं तथा 544 बोलियों का प्रचलन है। प्रारंभ में 11 प्रमुख भाषाओं को सूची में सम्मिलित किया था मगर उसके बाद भारत के संविधान में चार बार संशोधन हो चुके हैं और राजभाषाओं की सूची अब दोगुनी हो गई है। इसके अतिरिक्त आधी दर्जन से ज्यादा भाषा समूह अपनी भाषा को सांविधानिक दर्जा दिलवाने के प्रयासरत हैं।

भारतीय मानव सर्वेक्षण विभाग की परियोजना 'पीपल ऑफ इण्डिया' में सन 1985 से लेकर 2000 तक देश की सामाजिक–सांस्कृतिक विविधता के बारे में विस्तृत आंकड़े तैयार किए गए हैं।` 43 वॉल्यूम के इस शोध–कार्य में भारत में 4,694 समुदायों की शिनाख्त हुई है। इस परियोजना में 17,129 प्रविष्टियों का आंकड़ा कोश तैयार किया गया है जिनमें से 8,530 जातियों/समुदायों से संबंधित हैं जबकि शेष 8,566 उप समूहों (3123), कुलनामों (2,729) तथा देवी–देवताओं, स्थान तथा शीर्षकों से संबंधित हैं। इस विस्तृत में रिपोर्ट में 2,619 जातियों, 12 भाषायी परिवारों में 4,599 भाषाओं तथा बोलियों तथा 24 लिपियों (सिंह 1996) का उल्लेख किया गया है। रिश्तेदारी, शादी–विवाहों के रीति रिवाजों, विरासत, रहन–सहन, समुदायिक जीवन, पट्टेदारी, कृषि संचालन आदि अनके प्रकार की विविधताओं से हमारा देश भरपूर है।

ऐसे विविधतापूर्ण समाज में कानून व्यवस्था बनाए रखना अपने आप में चुनौतीपूर्ण कार्य है। पुलिस को न सिर्फ किसी क्षेत्र में रहने वाले विभिन्न समुदायों की जानकारी होनी चाहिए अपितु उन परस्पर अंतरालों तथा अतिव्यापी जगहों के बारे में पता होना चाहिए जहां अंतर–समुदायिक संबंध या तो संवेदनशील हों या फिर विस्फोटक हो सकते हों। क्योंकि प्रशासनिक अधिकारियों द्वारा विभिन्न समुदायों में व्याप्त विविधता को समझ पाने की असमर्थता की स्थिति में छोटी सी भूल के कारण सम्प्रदायिक दंगे भड़क जाते हैं। अतः सांप्रदायिक सौहार्द बनाए रखने के लिए यह आवश्यक है कि पुलिस अधिकारियों को ऐसे समाजिक विवादग्रस्त तथा संवेदनशील स्थानों का पता होना चाहिए। प्रायः जब कभी तथा जहां कहीं सांप्रदायिक फसाद होता है पुलिस तथा सुरक्षा एजेंसियों का सामाज के प्रति पूर्वाग्रह एक उत्तेजक चर्चा की विषय बन जाता है।

अभी भी भारत में जातिवाद एक बहुत बुरी सामाजिक कुरीति है जिससे समाज की प्रत्येक वर्ग तथा जीवन का हर पहलु बुरी तरह ग्रस्त है। यद्यपि पुलिस से बहुत सी अपेक्षाएं होती हैं मगर दलित एवं आदिवासी उत्पीड़न के मामलों में उसकी वृत्तिक अतिसंवेदनशीलता प्रायः काफी स्पष्ट हो जाती है। महिलाओं से संबंधित मामलों को भी सुरक्षा बलों द्वारा इसी प्रकार निपटाया जाता है क्योंकि वैश्विक जगत में तेजी से बदलते लैंगिक संबधों के परिप्रेक्ष्य में बढ़ती मांग के साथ तालमेल बनाए रखने में असफल सिद्ध हुई है।

विशेष व्यवस्था बनाए रखने का एक व्यापक क्षेत्र है जहां न सिर्फ पुलिस बल अपितु अर्द्धसैनिक बल या सशस्त्र बल भी सुरक्षा बनाए रखने के लिए तैनात हैं। विशेष व्यवस्था के अंतर्गत आतंकवाद तथा विद्रोह के कारण प्रमुख जन

सुरक्षा के प्रमुख मुद्दों का समाधान किया जाता है। कुछ हद तक अलगाववाद की ओर रूख किए राजनीतिक आंदोलनों (उदाहरण के लिए पूर्वोत्तर तथा जम्मू–कश्मीर के कुछ भागों तथा सामाजिक वर्गों) के कारण भी आतंकवाद और विद्रोह की चुनौतियां बढ़ी हैं। जन सुरक्षा के मामले में सबसे आगे होने के नाते पुलिस को ही इस तरह की स्थितियों से निपटना पड़ता है। इस प्रकार भारत की विविधता सुरक्षा इकाईयों के लिए चुनौतियां पैदा करती है। पूर्वात्तर भारत तथा जम्मू–कश्मीर तो साफ तौर पर दो भिन्न सामाजिक–सांस्कृतिक क्षेत्र हैं। स्थिति नियंत्रण करने के लिए यहां के आयाम और अभिव्यक्तियां भी भिन्न हैं। कानून व्यवस्था बनाए रखने के लिए राज्य तथा सुरक्षा बलों द्वारा सशस्त्र बल विशेष शक्तियां अधिनियम (अफस्पा) के अंतर्गत प्रावधान किए जाते हैं। यद्यपि इससे एक तरफ सरकार तथा इसकी एजेंसियों के बीच बहुत बड़ी अविश्वास और गंभीर दिक्कतें पैदा की हैं और दूसरी ओर आमजन तथा मानवाधिकार समूहों को भी प्रभावित है।

माओवादी आंदोलन के कारण आज सबसे बड़ी अशांति व्याप्त है जिसकी जड़ें भारत की हृदयभूमि में समाई हुई हैं। इसे आर्थिक प्रणाली की असमानताओं के कारण बल मिला है जिसने लाखों लोगों को पीछे छोड़ दिया है। सरकारी बोलचाल में जिसे वामपंथी अतिवाद (एलडब्ल्यूई) के रूप में जाना जाता है, उसे अक्सर एक क्रांतिकारी आंदोलन के रूप में देखा जाता है जिसमें विद्रोह की भावना देखी जाती है। ग्रामीण और जनजातीय लोगों के साथ घनिष्ठ संबंध को देखते हुए, वामपंथी अतिवाद (एलडब्ल्यूई) से निपटने वाली पुलिस और अर्धसैनिक बलों पर बार–बार परिहार्य क्रूरता का आरोप लगाया गया है, भले ही वे कभी–कभी हिंसा के बढ़ते चक्र के शिकार भी बन जाते हैं। वास्तविकता यह भी है कि आदिवासी और दलित एलडब्ल्यूई समूहों के मातहत बन जाते हैं, जिससे ये आंदोलन को काफी चिंता का विषय बन जाते हैं, जोकि एक तत्काल और विस्तृत जांच का विषय बन जाता है।

हिमाचल प्रदेश पुलिस (स्थापना दिवस समारोह) के सहयोग से भारतीय उच्च अध्ययन संस्थान में 18–19 अप्रैल 2016 के दौरान **'पुलिसिंग ए डाइवर्स इण्डिया'** पर एक राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन किया गया। लोक मामलों के केंद्र, नोएडा, उत्तर प्रदेश के निदेशक (मानद), और श्री जाहुर एच. जैदी, इंस्पेक्टर जनरल (प्रशासन), हिमाचल प्रदेश पुलिस, शिमला तथा डॉ. अजय के. मेहरा इस संगोष्ठी के संयोजक थे। संस्थान के निदेशक प्रोफेसर चेतन सिंह ने इस अवसर पर स्वागत भाषण प्रस्तुत किया जबकि डॉ. अजय के. मेहरा और श्री जाहुर जैदी, संगोष्ठी के संयोजक ने प्रारंभिक टिप्पणी प्रस्तुत की।

प्रतिभागी

- डॉ. अजय के. मेहरा, निदेशक (मानद), सार्वजनिक मामलों के केंद्र, नोएडा, उ.प्र.
- श्री जहर एच. जैदी, इंस्पेक्टर जनरल (प्रशासन), हिमाचल प्रदेश पुलिस, शिमला
- श्री कमल कुमार, पुलिस महानिदेशक (सेवानिवृत्त), पूर्व निदेशक, राष्ट्रीय पुलिस अकादमी
- सुश्री माधवी कुकरेजा, सनत काडा, 130–जे.सी. बोस रोड, कैसरबग, लखनऊ
- प्रोफेसर अश्वनी कुमार, प्रो–चांसलर, एपीजी यूनिवर्सिटी, शिमला
- डॉ. सुधांशु सारंगी, पुलिस महानिदेशक, राज्य पुलिस मुख्यालय, ओड़िशा
- सुश्री मजा दारुवाला, निदेशक, राष्ट्रमंडल मानवाधिकार पहल, नई दिल्ली
- सुश्री श्रेया दत्त, फिल्म अध्ययन विभाग, जादवपुर विश्वविद्यालय, कोलकाता
- श्री प्रदीप फंजुबाम, इम्फाल फ्री प्रेस, मणिपुर

- श्री संजय वशिष्ठ, अपराध विज्ञान केंद्र, विधि संकाय, यूनिवर्सिटी ऑफ ऑक्सफोर्ड, यूनाइटेड किंगडम
- श्री पी.के. एच. थरकन, द कनाटट पैरायल कॉमना, ओलाविप, केरल।
- श्री अकबर चौधरी, जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय, नई दिल्ली
- श्री ध्रुव पाण्डे, मानविकी और सामाजिक विज्ञान विभाग, भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान, कानपुर
- श्री बसंत रथ, पुलिस मुख्यालय, जम्मू
- डॉ. मनीषा सेठी, जामिया मिलिया इस्लामिया, नई दिल्ली
- श्री पुपुल दत्ता प्रसाद, राष्ट्रीय मानवाधिकार आयोग, नई दिल्ली
- डा. एम. सज्जाद हसन, सेंटर फॉर इक्विटी स्टडीज – मिसाल, नई दिल्ली
- श्री संजय कुंडू, पुलिस मुख्यालय, निगम विहार, शिमला
- श्री कमलेंद्र प्रसाद, डीजी पुलिस (सेवानिवृत्त), के –704, अवध अपार्टमेंट
- विपुल –1, गोमती नगर, लखनऊ
- श्री उमेश शरीफ, सरदार वल्लभभाई पटेल, राष्ट्रीय पुलिस अकादमी, हैदराबाद
- सुश्री फराह नकवी, (पूर्व सदस्य एनएसी), 310, कुटाब व्यू अपार्टमेंट्स, जैन मंदिर, दादा बाड़ी रोड़, मेहरोली, नई दिल्ली
- श्री सुकुमार मुरलीधरन, अध्येता, भा.उ.अ.सं., शिमला

संगोष्ठी के दौरान प्रतिभागियों द्वारा निम्नलिखित शोधपत्र प्रस्तुत किए गए–

सत्र–1

पुलिस इन इण्डिया : दी हिस्टोरिकल बर्डन

अश्वनी कुमार : *द इण्डियन पुलिस एण्ड इट्स लीगल एण्ड एडमिनिस्ट्रेटिव बर्डन*

बसंत रथ : *डाइवर्सिटी एण्ड कोप्रोडक्शन ऑफ सेफ्टी : इण्डियाज डिस्पोजल प्रोब्लम*

एम. सज्जाद हसन : *पुलिस अगेंस्ट द पीपल : अंडरस्टैण्डिग इम्प्यूनिटी*

सत्र–2

सोसायटी एण्ड पुलिस

कमल कुमार : *द रोल ऑफ इन्वायरन्मेंटल फैक्टरस*

उमेश शरीफ : *ए रैक्यूम फॉर फ्री स्पीच*

फराह नकवी : *आइडैंटिटी, प्रिजुडिस एण्ड द पुलिस : ए शिफ्टिंग रिस्पोंस फरॉम 'पुलिस*

सेन्सीटाइजेशन' टू 'पुलिस अकाउंटेबिलिटी'

सत्र–3

पुलिस एण्ड कंटैम्परेरी चैलेंजिस

संजय कुण्डू : *ह्यूमन ट्रैफ्किंग इन इण्डिया*

सुधाशू सारंगी : *पुलिसिंग इन द कंटैक्स्ट ऑफ रेडिकलाइजेशन*

संजय वशिष्ठ : *एविडेंस बेसड पुलिसिंग : द नीड फॉर ए 'व्हाट–वर्क्स' एप्रोच इन इण्डिया*

सत्र–4

दी रीजनल क्वेश्चनस

श्रेया दत्त : *कश्मीर : स्टडींग ए पॉसिबल रिऑग्रेनाइजेशन ऑफ सिविल सोसायटी*

प्रदीप फैंजोबम : *पुलिसिंग द नॉर्थ–ईस्ट फ्रंटियर*

सत्र–5

इश्यूज ऑफ जेण्डर

माजा दारूवाला : *वुमेन इन पुलिसिंग : रफ रोड़ ए जस्टिस*

ध्रुव पाण्डेय : *लॉ एण्ड द पुलिस एट इंटरसेक्शन : दलित वुमेन इन रूरल तमिलनाडू एण्ड राजस्थान*

माधवी कुकरेजा : *प्रोटैक्टिंग द मार्जिनलाइज्ड जेण्डर, एलजीबीटी, सीनियर सिटिजनस एण्ड ह्यूमन ट्रैफ्किंग*

सत्र–6

टेररिज़म एण्ड एक्ट्रीमिस्ट मूवमेंटस

पी.के.एच. ठरकन : *डिटैक्टिंग इवॉल्यूशन ऑफ टैररिस्ट ग्रुप्स थ्रो सोशल नेटवर्क एनालसिस*

सत्र–7

इश्यूज ऑफ मार्जिनाइलाजेशन

अकबर चौधरी : *ड्रैकोनियन पुलिस एण्ड सिक्योरिटी फोर्स एक्शनस कार्पोरेट कम्पलिसिटी एण्ड ह्यूमन राइट्स इन द एलडब्ल्यू अफैक्टिड रीजनस इन इण्डिया*

सत्र–8

दी क्वेश्चनस ऑफ ह्यूमन राइट्स

मनीषा सेठी : *प्रेजडिस एण्ड इम्प्यूटी : ए स्टडी ऑफ टेरर इन्वेस्टिगेशनस*

पुपुल दत्ता : *रिस्पेक्टिंग ह्यूमन राइट्स इन रिस्पॉडिंग टू टेररिज़म*

कमलेन्द्र प्रसाद : *पुलिस रिफॉर्म्स : क्वेस्ट फॉर एन अल्टरनेटिव अजेंडा*

3. 'किप्लिंग इन इण्डिया : इण्डिया इन किप्लिंग' विषय पर अंतर्राष्ट्रीय संगोष्ठी (26–28 अप्रैल 2016)

मूलाधार – रूडयार्ड किप्लिंग (1865–1936) का जन्म हुआ और उन्हें भारत लाया गया। पांच वर्ष की उम्र तक उन्होंने एक भारतीय भाषा बोलनी शुरू कर दी तत्पश्चात इग्लैण्ड में स्कूली शिक्षा के बाद भारत वापिस आ गए। यहां पर उन्होंने 1882 से 1887 तक लाहौर से छपने वाली *द सिविल एण्ड मिलिटरी गजट* तथा 1887 से 1889 तक इलाहबाद से छपने वाली *द पायनियर* अखबार (भारत का एक अग्रणी समाचार पत्र; जैसा कि किप्लिंग ने उल्लेख किया है) में एक पत्रकार के रूप में कार्य किया। मार्च 1889 में वे भारत से चले गए और 1891 में कुछ अवधि के लिए फिर भारत लौट आए। उनके पिता जे. लॉकवुड किप्लिंग 1865 में भारत आए थे और उन्होंने बम्बई/मुम्बई स्थित एक स्कूल जो बाद में जे.जे. स्कूल ऑफ आर्ट बना में कला एवं शिल्प के अध्यापक के रूप में कार्य किया। सन् 1875 में वे एक संग्रहालय में सरंक्षक के रूप कार्य करने के लिए लाहौर चले गए और सन् 1891 में वहां पर *बीस्ट एण्ड मैन इन इण्डिया* नामक शीर्षक से एक पुस्तक लिखी तथा उसके पश्चात 1893 में इंग्लैण्ड वापिस चले गए। रूडयार्ड की मात्र एक बहन, एलिस (ट्रिक्स) थी जिसका विवाह भारतीय सवेक्षण के कैप्टन जैक फ्लेमिंग से हुआ था। उसके *द हर्ट ऑफ ए मेड* (1891) तथा *ए पिंचबैक गॉडिस* (1897) नाम दो उपन्यास प्रकाशित हुए। वह भारत में अपने पति के साथ दिमागी तौर पर बीमार होने तक रही। उसने और रूडयार्ड दोनों ने *इको* (1883) नामक शीर्षक से प्रकाशित काव्य संग्रह में अपना योगदान दिया।

1889 में भारत से चले जाने से पूर्व रूडयार्ड ने कविताओं और कहानियों की आठ पुस्तकें लिख चुके थे, जिनमें *डिपार्टमेंटल डिटीज* तथा *प्लेन टेलस फरॉम द हिल्स* भी सम्मिलित हैं। बाद में ब्रिटेन तथा अमेरिका में रहते हुए उन्होंने भारत में रचित अनेक रचनाएं प्रकाशित करवाईं जिनमें *नौलखा* (1892) नामक सहरचित उपन्यास दो *जंगल बुक्स* (1894,95) तथा अंततः उनकी महानकृति *किम* (1901) भी सम्मिलित हैं।

इन आम तथ्यों के अलावा किप्लिंग की अधिक महत्त्वपूर्ण रचनात्मक तथा भारत के साथ व्यापक संबंधों के बारे में एक व्यक्ति तथा एक लेखक के रूप में उनके एक हाल ही के जीवनी लेखक ने लिखा है–

भारत में रूडयार्ड बहुत प्रसन्न था, जहां उन्होंने शिल्पकला सीखी, जहां उन्होंने स्वयं को अपनी रचनाओं के माध्यम से एक लेखक के रूप में अपने आपको स्थापित किया। भारत ने उन्हें बनाया, उनकी कल्पनाओं को उड़ान मिली, और मार्च 1889 में भारत छोड़ने के पश्चात 23 वर्ष की उम्र में वे एक पूर्ण कलाकार बने और पुनर्वास की जिन्दगी बसर की। अपनी महानकृति *किम* के साथ अपनी भारतीय स्मृतियों को विस्मृत करने के उपरांत वे अपनी श्रेष्ठ रचनात्कता को बनाए रखने में असमर्थ हो गए। (चार्ल्स एलन, *किप्लिंग साहिब,* 2007)

अतः अवस्थिति, संस्कृति तथा भाषा, जिन विषय–वस्तुओं के उन्होंने लिखने के लिए चुना तथा आज की और तब की ऐतिहासिक व राजनीतिक परिप्रेक्ष्य में भारत के साथ किप्लिंग के संबंधों तथा भारत के बारे में उनकी रचनाओं का निरीक्षण, अन्वेषण तथा पुनः मूल्यांकन करना बहुत ही आवश्यक है।

भाारतीय उच्च अध्ययन संस्थान में 26–28 अप्रैल 2016 के बीच किप्लिंग सोसायटी, गेट ब्रिटेन के सहयोग से **'किप्लिंग इन इण्डिया : इण्डिया इन किप्लिंग'** विषय पर एक अंतर्राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन किया गया। दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली, अंग्रेजी विभाग के प्रोफेसर हरीश त्रिवेदी तथा 36ए सेंट दस्तान स्ट्रीट, कैंटरबरी, सीटी2 8बीजेड से प्रोफेसर जैनेट मोंटेफियोर इस संगोष्ठी के संयोजक थे। संस्थान के राष्ट्रीय अध्यक्ष प्रोफेसर के. सच्चिदानंद ने संस्थान के निदेशक की ओर से सभी प्रतिभागियों का स्वागत किया। संगोष्ठी के संयोजक प्रोफेसर हरीश त्रिवेदी ने प्रारंभिक टिप्पणी प्रस्तुत की।

प्रतिभागी

- प्रोफेसर हरीश त्रिवेदी, अंग्रेजी के प्रोफेसर, दिल्ली विश्वविद्यालय
- प्रोफेसर जेनेट मोंटेफियोर, 36 सेंट डन्स्टन स्ट्रीट, कैंटरबरी, सीटी 2 8 बीजेड
- प्रोफेसर के. सच्चिदानंदन, राष्ट्रीय अध्येता, भा.उ.अ.सं., शिमला
- श्री अनिंद्यो रॉय, कोल्बी कॉलेज, वाटरविले मेन, यूएसए
- प्रोफेसर स्टीफन हेनकॉक, अंग्रेजी विभाग, ब्रिघम यंग यूनिवर्सिटी–हवाई, यूएसए
- प्रोफेसर के.एल. तुतजा, टैगोर फेलो, आईआईएएस, शिमला
- सुश्री एंजेला आइर, ओपन यूनिवर्सिटी, मिल्टन केनेस एमके 7 6 एए, ब्रिटेन
- डॉ. जिल डिडुर, अंग्रेजी विभाग, कॉनकॉर्डिया विश्वविद्यालय, कनाडा
- डॉ. सर्वचेत्तन काटोच, अंग्रेजी विभाग, शहीद भगत सिंह कॉलेज, दिल्ली विश्वविद्यालय, नई दिल्ली
- डॉ. विनीता भटनागर, मानविकी विभाग, प्रौद्योगिकी संस्थान, आरजीपीवी भोपाल
- प्रोफेसर हैरी जॉन डिलन रिक्ट्स, विक्टोरिया विश्वविद्यालय वेलिंगटन, न्यूजीलैंड
- डॉ. उषा मुग्गांति, स्कूल ऑफ लिबरल स्टडीज, आम्बेडकर विश्वविद्यालय, दिल्ली
- प्रोफेसर एलेलीन हनक्वार्ट टर्नर, पेरिस विश्वविद्यालय, फ्रांस
- प्रोफेसर सतीश सी. एकांत, बसंत वाटिका, कुलरी मसूरी, उत्तराखण्ड
- डॉ. रंगना बनर्जी, अंग्रेजी विभाग, कलकत्ता विश्वविद्यालय, कोलकाता
- डॉ. सुधीर ककर, पुलवाडो पिक्केनो, बेनौलीम, गोवा
- प्रोफेसर नीलम सरन गौर, इलाहाबाद विश्वविद्यालय, इलाहाबाद
- सुश्री काओरी नागाई, यूनिवर्सिटी ऑफ केंट, कैंटरबरी, केंट, सीटी 27 एनजेड, ब्रिटेन
- प्रोफेसर सैंड्रा केम्प, अनुसंधान विभाग, विक्टोरिया और अल्बर्ट संग्रहालय, लंदन एसडब्ल्यू 7 2आरएल, इंग्लैंड, ब्रिटेन
- प्रोफेसर नधरा खान, लाहौर विश्वविद्यालय, प्रबंधन विज्ञान, लाहौर, पाकिस्तान
- डॉ. मधु ग्रोवर, लेडी श्रीराम कॉलेज, दिल्ली विश्वविद्यालय, नई दिल्ली
- सुश्री मैरी हामर, एएफआरओ–अमेरिकन स्टडीज, हार्वर्ड
- डा. अमृता नारायणन, 21, डिफेंस कॉलोनी, चरण –1 लेन –2, गोवा बार्डेज
- श्री जूलियस ब्रायंट, विक्टोरिया और अल्बर्ट संग्रहालय, लंदन एसडब्ल्यू 7, ब्रिटेन

संगोष्ठी के दौरान प्रतिभागियों ने निम्नलिखित शोधपत्र प्रस्तुत किए–

सत्र–1, पॉलिटिकल एम्पायर

एंजेला आइर : *मांइड द गैप : द ट्रांसलेशन एण्ड यूज ऑफ हिन्दी, उर्दू एण्ड हिन्दुस्तानी वर्डस इन किप्लिंगस किम*

हरीश त्रिवेदी : *किप्लिंग एण्ड इण्डियन नेशनलिज्म*

किप्लिंग सोसायटी

मैरी हैमर (अध्यक्ष, किप्लिंग सोसायटी), इंट्रोड्यूजिंग दी किप्लिंग सोसायटी

श्री माइक किप्लिंग द्वारा किप्लिंग सोसायटी की वेबसाइट तथा इसके संसाधनों के बारे में प्रस्तुति।

किप्लिंग सोसायटी की ओर से श्री भरत भूषण द्वारा मैरी हैमरन को मुम्बई में किप्लिंग के जन्म–स्थान का जलावर्ण चित्र भेंट किया गया।

जैनेट मौंटफियोर द्वारा किप्लिंग जर्नल के बारे में अवगत करवाया गया तथा निदेशक, भा.उ.अ.सं., शिमला को किप्लिंग के बारे में लिखी कुछ पुस्तकें भेंट की।

सत्र–2, किप्लिंग एज पोयट

हैरी रिक्केटस : *हार्ड नॉकस एण्ड विजनस : किप्लिंगस इण्डियन पोयट्री*

जैनेट मौंटफियोर : *किप्लिंगस इण्डियन लब लिरिक्स*

सत्र–3, इम्पेरिकल हॉस्पिटैलिटी

स्टीफन हैंकॉक : *लेटिंग इन द जंगल*

कौरी नगाई : *'आई हैव द जातका; एण्ड आई हैव द' : फैबलस एण्ड किप्लिंगस पालिटिकल जूलॉजी*

सत्र–4, द जंगल बुक

सर्वचेतन कटोच : *रिव्यूइंग द जंगल बुक*

अम्रीता नारायण : *सोल मर्डर, वूल्फ मदर : रि–रीडिंग किप्लिंगस जंगल बुक एलांगसाइड साइकोएनालसिस*

सत्र–5, द चाइल्ड इन किप्लिंग

ऊषा मदीगंती : *थ्रू द लेंस ऑफ चाइल्डहुड*

सत्र–6, गोइंग नेटिव

सतीश सी. एकांत : *गोइंग नेटिव, कॉशियसलि : कलोनिअल एम्बीवेलेंस इन रूडयार्ड किप्लिंगज किम*

अनिंद्यो रॉय : *रेक्यूपरेटिवस इन द एंग्लो–इण्डियन रोमांस : सिचुएटिंग किप्लिंगस द नौलखा*

सत्र–7, किप्लिंगज सिटीस

जिल्ल दिदुर : *एंग्लो–इण्डियनस इन किप्लिंग : किप्लिंग इन शिमला*

एविलिन, हैंक्वार्ट–टर्नर : *द सिटी ऑफ ड्रैडफुल नाइट : फरॉम थॉमसनज क्रनोटोप टू किप्लिंगज लाहौर*

नीलम शरण गौर : *किप्लिंग एण्ड इलाहाबाद*

सत्र–8, किप्लिंगज इण्डियन स्पेसिस

मधु ग्रोवर : *ऑन द ऐज : द कन्यूड्रम ऑफ किप्लिंगस एम्बीवेलेंट फिक्शनस*

रंगना बनर्जी : *किप्लिंग एण्ड का (ली) : वाया कोलकाता*

विनिता ढोंडियाल भटनागर : *रीडिंग किप्लिंग इन 'किप्लिंगज ओन कन्ट्री*

सत्र–9, जॉन लॉकवुड किप्लिंग एण्ड रूडयार्ड किप्लिंग

नाधरा खान : *किप्लिंगज लाहौर : ड्राइंग एण्ड रीडिंग आर्किटैक्चर*

सन्द्रा कैम्प : *'एक्सपर्ट फैलो–क्राफ्टसमैन': हाउ लॉकवुड किप्लिंग शेपड रूडयार्डज*

अंडरस्टैण्डिग ऑफ इण्डिया

जुलिअस ब्रयांट : *जॉन लॉकवुड किप्लिंग : एन इन्ट्रोडक्शन टू द वी एण्ड ए एग्जिविशन (2017)*

समापन सत्र

मेरी हैमर, *रीडिंग फरॉम किप्लिंग एण्ड ट्रिक्स*

4. 'पोइट्री एज काउंटर–कल्चर : एन अनब्रोकन इण्डियन ट्रैडिशन' विषय पर राष्ट्रीय संगोष्ठी (16–18 मई 2016)

मूलाधार– भारतीय दर्शन की तरह भारतीय काव्य की भी रचनात्मक विरोध की एक लम्बी परंपरा है क्योंकि यह हमेशा से अपने ईर्दगिर्द वातावरण के प्रति सजग रहा है और सांस्कृतिक प्राधान्य के विविध रूपों के प्रति एक विपरीत संस्कृति की भांति कार्य किया है। यह परंपरा लोक संगीत तथा जनजातीय कविताओं के साथ प्रारंभ होती है जहां लोग अपने विभिन्न मूल भाषाएं बोलते हैं, मिथकों की यथास्थिति को समाप्त करने का प्रयास करते हैं तथा अपने मालिकों के खिलाफ आवाज उठाते हैं जो उनके अधिकारों का हनन करते हैं। हमारे देश में प्रमुख महाकाव्यों के समानांतर लोक संगीत तथा आदिवासी महाकाव्य हैं जिनकी विषय वस्तु रामायण और महाभारत से उद्धृत मानी जाती है और एक नया रूप प्रदान करते हुए प्रायः अधीनस्थ, विवेचनों अथवा लोकनायकों के रूप में प्रस्तुत किया जाता है।

संस्कृत काव्यशास्त्र में भी ऐसे अनेक कवि हैं जो योगेश्वर अथा शुद्रक जैसे काव्य के मुख्य मानदण्डों तथा पद्धतियों को नहीं अपनाया है। बौद्ध और जैन काव्य भी संगम काव्य है तथा तमिल महाकाव्य *मणिमेकलई* तथा *शिलप्पादिकारम* ने विभिन्न माध्यमों से यथास्थिति की जानकारी प्राप्त की है। भक्ति और सूफी काव्यों (दक्षिण भारत

में तिरूमुलर, बसवेश्वर, अक्का महादेवी से लेकर उत्तर भारत में कबीर, मीराबाई, सूरदास, तुकाराम, नामदेव, चैतन्य, लल्लेश्वरी, बुल्ले शाह, शाह अब्दुल लतीफ तथा अन्य कई कवि) में प्रायः प्रचलित धार्मिक तथा वर्ण/जाति पितृसत्ता आदि सामाजिक रीतियों की आलोचना की गई है।

इनमें से अधिकतर कवियों ने धर्म की सांप्रदायिक व्याख्याओं को अस्वीकार कर दिया, समस्याग्रस्त पुजारीपन के आधार पर सवाल उठाया और जाति पदानुक्रमों के आधार पर सवाल उठाया, कई लोग धर्म से जुड़े अनुष्ठानों और अंधविश्वासों के खिलाफ थे, और संस्कृत जोकि उस समय कुछ विशिष्ट की भाषा थी के स्थान पर लिखित भाषा के स्थान पर आमजन की मौखिक भाषाओं में का प्रयोग किया। साथ ही अपनी उपन्यास धारणाओं को व्यक्त करने के लिए नई प्रतीकात्मक भाषाओं का निर्माण किया था। कहा जा सकता है कि इन आंदोलनों ने भारत में बाद की काव्य प्रथाओं की सुरक्षित नींव रखी है क्योंकि उन्होंने पदानुक्रम जानकारी प्राप्त की थी जोकि धर्मनिरपेक्ष आध्यात्मिक और समतावादी आदर्श की अग्रभूमि थी।

इन विचारों ने स्वतंत्रता संग्राम के दौरान औपनिवेशिक विरोधियों तथा सुधारवादियों को उन आंदोलनों में शामिल करने के लिए प्रेरित किया जोकि सुब्रमण्य भारती, वीरेशलिंगम पंतलु, रवींद्रनाथ टैगोर, नजरूल इस्लाम, कुमारन आशान, वल्लथोल नारायण मेनन, सुमितानंदन पंत, मैथिलिशन गुप्ता, सुभद्राकुमारी चौहान अन्य द्वारा चलाये गए थे। उन्होंने जाति व्यवस्था, सामंती शोषण, पितृसत्ता और अंधविश्वास की पूरी तरह आलोचना की। गाँधी और मार्क्स दोनों द्वारा प्रेरित प्रगतिशील आंदोलन, पहले से चली आ रही सुधारवादी कविताओं में एक जुड़ाव था, लेकिन उर्दू, हिंदी, बंगाली, कश्मीरी, तमिल, तेलुगू और मलयालम जैसी भाषाओं में विशेषकर अधिक उत्साह के साथ मजबूत हुए। इससे कई स्वर उत्पन्न हुए जिन्होंने पुराने सामंती भेदभाव के साथ–साथ पूंजीवादी शोषण, जाति, वर्ग और लिंग के आधार पर होने वाले भेदभाव के पर सवाल उठाया।

प्रगतिशील आधुनिकतावादियों ने कविता के मुहावरे को मूल रूप से बदल दिया, जोकि गजानन मुक्तिबोध, अली सरदार जाफरी, धूमिल, विजयदेव नारायण साही, सर्वेश्वर दयाल सक्सेना, राजेश जोशी, कुंवर नारायण, केदारनाथ सिंह, मंगलेश दबराल, जॉय गोस्वामी, सुरजीत पत्थर, अतूर रविविर्मा, केजी शंकर पिल्लई और कई अन्य कवियों की काव्य रचनाओं में देखा जा सकता है।

धार्मिक तथा एवं लैंगिक अल्पसंख्यक कविताओं तथा पर्यावरण तथा भाांति से संबंधित विषयों के साथ विविध प्राधान्यों को चुनौती देने वाले, अपनी अलग पहचान बनाने तथा काव्यगत भाषा में स्थानीय मुहावरों तथा बोलियों का अन्वेषण करने वाले कवियों के साथ कविताओं में दृढ़ नारीवादी, स्वदेशी भावना, दलित तथा जनजातीय रुझानों का उद्भव काव्य भाषा को नवाचार करते हुए भारतीय कविता में विपरीत–सांस्कृतिक परंपरा को पुनर्जीवित किया है। इस संगोष्ठी में विपरीत–सांस्कृतिक परंपरा को अपनी समग्रता, साथ ही प्रारंभ से लेकर आज तक भारतीय कविता में मतभेदों, प्रतिमानों और पद्धतियों में विशिष्ट प्रवृत्तियों, लेखकों और ग्रंथों की भी जांच की गई।

भाारतीय उच्च अध्ययन संस्थान में 16–18 मई 2016 के बीच **'पोइट्री एज काउंटर-कल्चर : एन अनब्रोकन इण्डियन ट्रैडिशन'** विषय पर एक राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन किया गया। संस्थान के राष्ट्रीय अध्यक्ष प्रोफेसर के. सच्चिदानंद इस संगोष्ठी के संयोजक थे। संस्थान के निदेशक प्रोफेसर चेतन सिंह ने सभी प्रतिभागियों का स्वागत किया। संगोष्ठी के संयोजक प्रोफेसर के. सच्चिदानंद ने प्रारंभिक टिप्पणी प्रस्तुत की। माउंट कैलाश, एसएफएस अपार्टमेंटस, नई दिल्ली से आए श्री केकी एन. दारूवाला ने उद्घाटन उद्बोधन प्रस्तुत किया जबकि सफदरजंग देव क्षेत्र, नई दिल्ली से आए श्री अशोक वाजपेयी ने इस अवसर पर बीज भाषण प्रस्तुत किया।

प्रतिभागी

- प्रोफेसर के. सच्चिदानंदन, राष्ट्रीय अध्येता, भा.उ.अ.सं., शिमला
- श्री केकी एन. दारुवाला, 79, माउंट कैलाश, एसएफएस एपार्टमेंट, नई दिल्ली
- श्री अशोक वाजपेयी, सी –4 / 1 9 3, सफदरजंग देव क्षेत्र, नई दिल्ली
- श्री मोहम्मद साजिद अंसारी, अंग्रेजी विभाग, अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय, अलीगढ़
- डॉ. ए.जे. थॉमस, पूर्व संपादक, भारतीय साहित्य, साहित्य अकादमी, नई दिल्ली
- प्रोफेसर केशवन वेलुत, इतिहास विभाग, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली
- श्री नीरज संज्ञान, मानविकी और सामाजिक विज्ञान संस्थान, भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान (आईआईटी) मंडी
- श्री चिराग त्रिवेदी, अंग्रेजी और बिजनेस कम्युनिकेशन विभाग, बीकेएमआईबीए, अमृत मोदी स्कूल ऑफ मैनेजमेंट, अहमदाबाद विश्वविद्यालय, अहमदाबाद
- डॉ. मनोज पाण्डेय, श्री गोविंद गुरु सरकारी कॉलेज, बंसवाड़ा, राजस्थान
- श्री अभिषेक झा, उत्तर बंगाल विश्वविद्यालय, कोलकाता, पश्चिम बंगाल
- डॉ. कौस्तव चक्रवर्ती, अध्येता, भा.उ.अ.सं., शिमला
- प्रोफेसर बेट्टीना बूमर, राष्ट्रीय अध्येता, भा.उ.अ.सं., शिमला
- सुश्री तेजोस्विता सैकिया, डीकेडी कॉलेज, असम
- सुश्री श्रेया दत्त, फिल्म स्टडीज विभाग, जादवपुर विश्वविद्यालय, कोलकाता
- डॉ. कुमार सुशील, पंजाब विश्वविद्यालय परिसर, पंजाब
- सुश्री परमिता दत्ता, अंग्रेजी विभाग, गोबरदंगा हिंदू कॉलेज, पश्चिम बंगाल
- श्री हुजैफा पंडित, अंग्रेजी विभाग, कश्मीर विश्वविद्यालय, श्रीनगर
- डॉ. आर. रामप्रिया, अंग्रेजी विभाग, कुंथवई नाचियायार राजकीय महिला महाविद्यालय, थंजावु
- प्रोफेसर एच.एस. शिवप्रकाश, स्कूल ऑफ आर्ट्स और सौंदर्यशास्त्र, जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय, नई दिल्ली
- सुश्री अर्द्र एन जी, सेंटर फॉर पॉलिटिकल स्टडीज, स्कूल ऑफ सोशल साइंसिस, जवाहरलाल नेहरू यूनिवर्सिटी, नई दिल्ली
- प्रोफेसर पुरुषोत्तम अग्रवाल, बी 5/ए, (धरातल तल), कैलाश कॉलोनी, नई दिल्ली
- श्री जुल्हाजीत सरकार, तुलनात्मक साहित्य विभाग, कला के संकाय, जादवपुर विश्वविद्यालय, कोलकाता
- डॉ. अजय एस शैखेर, अंग्रेजी विभाग, एस एस विश्वविद्यालय, काल्दी, केरल
- प्रोफेसर पी. पी. रवींद्रन, महात्मा गाँधी विश्वविद्यालय, कोट्टायम, केरल
- सुश्री गोपीका जडेजा, दक्षिण एशियाई अध्ययन कार्यक्रम, सिंगापुर की राष्ट्रीय विश्वविद्यालय, सिंगापुर
- प्रोफेसर इप्सित चंदा, तुलनात्मक साहित्य विभाग, जादवपुर विश्वविद्यालय, कोलकाता

- प्रोफेसर रुक्मिणी भाया नायर, मानविकी और सामाजिक विज्ञान विभाग, भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान, नई दिल्ली
- श्री शाजी खान, अंग्रेजी विभाग, जम्मू विश्वविद्यालय, जम्मू
- सुश्री श्रुति सरेन, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली
- डॉ. कोकीला कालेकर, अनुवाद अध्ययन विभाग, अंग्रेजी एवं विदेशी भाषा विश्वविद्यालय, हैदराबाद
- डॉ. सोबम हरिप्रिया, टाटा इंस्टीट्यूट ऑफ सोशल साइंसेस, गुवाहाटी, असम
- प्रोफेसर मिनी चंद्रन, मानविकी और सामाजिक विज्ञान विभाग, भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान, कानपुर
- सुश्री संपर्णना छतरारजी, ए 3, फ्लैट 205, हरसिंह पार्क, पवार नगर, ठाणे, महाराष्ट्र
- डॉ. परितोष चंद्र दुगड़, प्रधानाचार्य (सेवानिवृत्त), राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, राजस्थान
- प्रोफेसर के.एल. टुटेजा, टैगोर अध्येता, भा.उ.अ.सं., शिमला
- डॉ. गोव्हार याकूब, अध्येता, भा.उ.अ.सं., शिमला
- डॉ. जगदीश लाल डावर, अध्येता, भा.उ.अ.सं., शिमला

संगोष्ठी के दौरान प्रतिभागियों द्वारा निम्न विषयों पर शोधपत्र प्रस्तुत किए गए–

सत्र–1, सोसायटी एण्ड ट्रैन्सेडन्स : सम अर्ली एग्ज़ाम्पलस

एच.एस. शिवप्रकाश : *द वचना ट्रैडिशन : टूवर्डस ए काउंटर–पोइटिक्स*

रामप्रिया रामचन्द्रन : *जोइसेंस एण्ड द फिमेल बॉडी इन ट्रैन्सेडन्स : ए रीडिंग ऑफ अंडलस नैक्कियार त्रिमोज़ी थ्रू इरिगरे*

मिनी चन्द्रन : *संगम पोइट्री : द सांग ऑफ द कॉमन मैन*

सत्र–2, वूमनस रेजिस्टेंस : द बुद्धिस्ट स्ट्रेण्ड

रूकमणि भाया नायर : *लैंग्वेज, बॉडी, रेजिस्टेंस*

कौस्तव चक्रवर्ती : *'रेडिकल ग्रेस' : हाइमनिंग ऑफ 'वूमनहुड' इन थेरिगाथा*

बैटिना शारदा बूमर : *क्लाम्ब द वाइड विद ए लैडर : भीमा भोई, ट्राइबल मिस्टिक पोयट ऑफ ओड़िशा*

कविता पाठ का विशेष सत्र

अशोक वाजपेयी

केकी दारूवाला

रूकमणि भाया नायर

एच.एस. शिवप्रकाश

सम्पूर्णा चटर्जी

ए.जे. थोमस

के. सच्चिदानंद

सत्र–3, भक्ति : कबीर, मीरा

पुरूषोत्तम अग्रवाल : *कबीर एण्ड आफ्टर : न्यू सोसायटी, न्यू पोइटिक्स*

मनोज पाण्डेय : *'देशज आधुनिकता और कबीर की प्रासंगिकता*

परितोष चन्द्र डुगर : *द मिस्टिकल, मैजिकल, मैवरिक मीरा : ए पोइटिक्स ऑफ डिस्सेंट*

सत्र–4, द प्रोग्रेसिव इन रिट्रोस्पेक्ट

इष्शिता चंदा : *ब्लड बाई एनी अदर नेम : काजी नजरूल इस्लाम, बेंगाली पोयट*

कुमार सुशील : *आइडोलॉजिकल कन्सर्नस ऑफ पंजाबी पोइट्री : ए स्टडी ऑफ द सिलेक्टिड पोयम्स ऑफ अवतार पाश*

आरद्र एन जी : *कैन एम्बीवेलेंस बी प्रोग्रेसिव? रिप्रेजेंटेशनस ऑफ लेबर इन प्रोग्रेसिव मलयालम पोइट्री*

सत्र–5, द राइज ऑफ फेमिनस्ट पोयटिक्स

श्रुति सरीन : *पोस्ट इंडिपेंडेंट इण्डियन वूमनस पोइट्री*

परोमिता दत्ता : *फेमिनिस्ट पोइट्री इन द 20थ–21स्ट सेंचरी इन बंगाल : ए रीडिंग ऑफ द पोयम्स ऑ मलिका सेनगुप्ता*

कोकिला कालेकर : *पोस्ट मॉडरन फेमिनिस्ट पोइट्री इन हिन्दी एज काउंटर–कल्चर*

सत्र–6, वायसिंग द वायसलेस

शाजी खान : *द फारगेटन सूफी ट्रेडिशनस ऑफ द पुस्तनस : एन एनालटिकल स्टडी ऑफ द सिलेक्टिड पोयम्स ऑफ रहमान बाबा*

श्रेय दत्त : *पोयटिक्स ऑफ द एवरीडे : रीडिंग कश्मीर एण्ड काउंटर–कल्चर इन आगा शहीद अली*

हुजैफ पण्डित : *जेजुरी : द पोइटिक्स ऑफ सबक्लचरल रेजिस्टेंस*

सत्र–7, पोइट्री एण्ड बैड टाइम्स

सोइबम हरिप्रिया : *व्हाट गुड इज पोइट्री इन डिसोलेट टाइम्स : ऑन मणिपुरी पोइट्री*

नीरज संख्यान : *पोइट्री एज काउंट कल्चर : रीडिंग आइडैंटिटी इन किन्फाम सिंग नॉनकिंरीहज पोयट्री*

जुधाजीत सरकार : *बिटवीन साउंड एण्ड सेंस : पोइट्री, रेजिस्टेंस एण्ड द रीदम ऑफ एवरीडे स्पीच*

सत्र–8, इंटेरोगेटिंग हैगमोनीस

पी.पी. रवीन्द्रन : *पोइट्री : द प्रोग्रेसिव, द मॉडरन एण्ड द काउंटर–मॉडरन*

चिराग त्रिवेदी : *एन एनस्थेटिक कालड द ऐस्थेटिक : ए पोस्ट–कलोनिअल इन्क्वैरी इनटू द एस्थेटिक्स ऑफ उमा शंकर जोशीज पोइट्री।*

अजय एस शेखर : *पोइट्री ऑफ काउंटर हैगमोनिक कल्चर एण्ड एथिकल एस्थेटिक्स : सहोदरन अय्यप्पनज लिबरेटिव पोइटिक्स एण्ड कल्चरल पोलिटिक्स इन केरला*

सत्र–9, पोइट्री ऑफ ट्रैंसग्रेशन

सम्पूर्णा चटर्जी : *सुकुमार रे : अनसंग काउंटर–कल्चरलिस्ट*

अभिषेक झा : *ट्रेडिशन ऑफ ट्रैंसग्रेसिव टेलेंट? ट्रेसिंग द स्ट्रेनस ऑफ बाउल इन बंगाली हंगरी जेनरेशन पोइट्री।*

मो. साजिद अंसारी : *ट्रीटमेंट ऑफ होमोसेक्सुअल लब इन मॉडरन इण्डियन पोइट्री इन इंग्लिश : ए स्टडी ऑफ द सिलेक्टिड पोइम्स ऑफ होशांग मर्चेंट एण्ड भ्गालीन राकेश*

सत्र–10 इंटेरोगेटिंग हैगमोनीस

केशवन वेलुथाट : *लाफ्टर इन द टाइम्स ऑफ माइजरी : सिनिसिज्म एज प्रोटेस्ट इन अर्ली मॉडरन संस्कृत पोयम्स*

गोपिका जडेजा : *मास्टर, द कंट्री इज फ्री : द भजन एण्ड मॉरेलिटी इन गुजराती दलित पोइट्री*

ए.जे. थोमस : *दलित पोइट्री इन मलयालम, तमिल, कन्नड़ा एण्ड तेलगु : ए कम्पेरेटिव स्टडी*

तेजो श्वेता : *स्क्रिप्टस ऑफ स्कारस : दलित वुमनज पोइट्री*

5. 'माइग्रेशन एण्ड सिटिजनशिपस' विषय पर अंतर्राष्ट्रीय संगोष्ठी (30 मई–01जून 2016)

मूलाधार–

जर्जर हालत नौकाओं का निर्मम समुद्र में पलटकर डूब जाना, यूरोप और एशिया में स्क्वाइड शिविरों में दास या हिरासत में रखना, यहां तक कि समुद्र के किनारे उनका एकदम वध आदि से जुड़ी प्रवासियों के बारे में वीभत्स रिपोर्टें हाल ही के वर्षों में नियमित तौर पर मुख्य समाचार बनी रहती हैं। इन रिपोर्टों में नया कुछ नहीं है मगर अपने आप में दुःखद घटनाएं हैं जिनका लंबा इतिहास है। लेकिन हाल ही वर्षों में भूमध्यसागर और बंगाल की खाड़ी में प्रवासी प्रवाह स्तर तेजी से बढ़ गया है। अंतर्राष्ट्रीय प्रवासन संगठन ने केवल एक आंकड़े उद्धृत करने के लिए अनुमान लगाया गया है कि इस साल 12 मई तक कम से कम 30,400 प्रवासी ग्रीस में आए जबकि वर्ष 2014 में यह कुल आंकड़ा 34,000 था।

यदि भूमध्यसागरीय क्षेत्र में प्रवासन में तेजी से वृद्धि के लिए तत्काल कारणों सीरिया के माध्यम से सीरिया, वहां से यमन और इराक में गृह युद्ध और अफगानिस्तान में निरंतर अस्थिरता–शामिल हैं तो इस बारे में कई प्रश्न उठाए गए हैं। प्रवासियों की ये धाराएं ट्रांस–अफ्रीकी और ट्रांस–एशियाई प्रवासन की एक बड़ी श्रृंखला का हिस्सा हैं क्योंकि स्थानों में लोग भूमध्यसागरीय और हिंद महासागर के तटों के करीब आगे बढ़ते हैं ताकि उन्हें यूरोप या दक्षिणपूर्व एशिया और उससे आगे के मार्ग के लिए बेहतर ढंग से व्यवस्थित किया जा सके। जबकि पश्चिमी (या

पश्चिमी समर्थित) हस्तक्षेपों के प्रत्यक्ष परिणाम स्पष्ट हैं। बोरिस पासर्नक के 'फल के फल', 'परिणामों के परिणाम', –संरचनात्मक समायोजन नीतियों से लेकर जो अफ्रीकी अर्थव्यवस्थाओं को अमेरिका और यूरोपीय कार्यवाहियों में बर्बाद कर दिया जिनके चलते इजरायल ने फिलिस्तीनियों को अपने मातृभूमि से निष्कासित कर दिया उनके अप्रत्यक्ष क्या परिणाम हैं? अधिक सुरक्षित भविष्य के लिए कौन सी आबादी में प्रवासन अधिक संभावना है? विदेशी निवेश (परिणामस्वरूप लोगों का निष्कासन) और पर्यावरणीय गिरावट (परिणामस्वरूप आजीविका के पैटर्न की हानि) ने इन प्रवासों को कैसे बढ़ावा दिया?

भारतीय उच्च अध्ययन संस्थान शिमला तथा बिघम्टन विश्वविद्यालय द्वारा प्रायोजित इस संगोष्ठी में अफ्रीका, एशिया तथा यूरोप में ऐतिहासिक तौर पर प्रवासन तथा नागरिकता के समकालीन मुद्दों पर गहन मंथन किया गया।

भारतीय उच्च अध्ययन संस्थान में 30 मई से 01 जून 2016 तक कला एवं विज्ञान महाविद्यालय, हरपुर, बिघम्टन तथा माइग्रेशन एवं फोर्स्ड माइग्रेशन स्टडीज, कलकत्ता शोध ग्रुप, कोलकता की विशेष चेयर के सहयोग से 'माइग्रेशन एण्ड सिटिजनशिपस' विषय पर एक अंतर्राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन किया गया। न्यूयार्क राज्य विश्वविद्यालय बिंघम्टन, न्यूयार्क से आए समाजशास्त्र विभाग के प्राध्यापक प्रोफेसर रवि पलाट तथा माइग्रेशन एवं फोर्स्ड माइग्रेशन स्टडीज, कलकत्ता शोध ग्रुप, कोलकता की विशेष चेयर के प्रोफेसर रणबीर सम्मद्दार इस संगोष्ठी के संयोजक थे। संस्थान के निदेशक प्रोफेसर चेतन सिंह ने सभी प्रतिभागियों का स्वागत किया। कला एवं विज्ञान महाविद्यालय, हरपुर, बिघम्टन के प्रोफेसर ऐन्ने मैक्काल ने इस अवसर पर परिचायात्मक टिप्पणी प्रस्तुत की जबकि संयोजक प्रोफेसर रणबीर सम्मद्दार ने बीज भाषण प्रस्तुत किया।

प्रतिभागी

- प्रोफेसर नसीर उद्दीन, मानव विज्ञान विभाग, चित्तगांव विश्वविद्यालय, चित्तगांव, बांग्लादेश
- सुश्री बिपाशा रोजी लाकरा, राजनीति अध्ययन केन्द्र, सामाजिक विज्ञान संस्थान, जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय, नई दिल्ली
- प्रोफेसर रवि पलाट, समाजशास्त्र विभाग, न्यूयॉर्क राज्य विश्वविद्यालय, बिंगहैमटन, न्यूयॉर्क
- प्रोफेसर रणबीर समाद्दर, प्रवासन और अनिवार्य प्रवास अध्ययन में प्रतिष्ठित चेयर, कोलकाता रिसर्च ग्रुप, कोलकाता
- श्रीमती अन्वेश सेनगुप्ता, रिसर्च एंड प्रोग्राम एसोसिएट, कलकत्ता रिसर्च ग्रुप, साल्ट लेक, कोलकाता
- श्री दिनेश काफ्ले, अंग्रेजी अध्ययन केंद्र, जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय, नई दिल्ली
- प्रोफेसर ऐन मैक्कॉल, हरपुर कॉलेज ऑफ आर्ट्स एंड साइंसिस, बिंघमटन विश्वविद्यालय
- प्रोफेसर निर्मल सेनगुप्ता, राष्ट्रीय अध्येता, भा.उ.अ.सं., शिमला
- प्रोफेसर रॉबर्टो पेट्रीसीओ कोरजनिएविज, समाजशास्त्र विभाग मैरीलैंड विश्वविद्यालय, यूएसए
- डॉ. नसीरन चौधरी, राजनीति विज्ञान विभाग, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली
- डॉ. अनीता सेनगुप्ता, कलकत्ता रिसर्च ग्रुप, साल्ट लेक, कोलकाता
- सुश्री अनुराधा सेन मुखर्जी, ग्रेजुएट इंस्टीट्यूट ऑफ इंटरनेशनल एंड डेवलपमेंट स्टडीज, स्विट्जरलैंड
- सुश्री स्मिता तिवारी, भारतीय अंतर्राष्ट्रीय मामले परिषद, नई दिल्ली

- प्रोफेसर जोसेफ बोरॉज, समाजशास्त्र विभाग, रूटर विश्वविद्यालय, न्यू ब्रंसविक, एनजे 08 9 01, यूएसए
- प्रोफेसर महावा सरकार, समाजशास्त्र विभाग, बिंघमटन विश्वविद्यालय, बिंघमटन, यू.एस.
- सुश्री समता विश्वास, बेथ्यून कॉलेज, कोलकाता
- डॉ. साइमन बेहरमान, स्कूल ऑफ लॉ, यूनिवर्सिटी ऑफ ईस्ट एंग्लिया, नॉर्विच एनआर 4 7 टीजे, यूके
- श्री चापरबन सजादेएन, तुलनात्मक साहित्य केंद्र, मानविकी विद्यालय, हैदराबाद विश्वविद्यालय, हैदराबाद
- डॉ. निशा कपूर, समाजशास्त्र विभाग, यॉर्क विश्वविद्यालय, हेस्लिंग्टन, याओ 10 5डीडी
- डॉ इशिता श्रुति, डी –4, मदर अपार्टमेंट, प्लॉट –6, सेक्टर 5, द्वारका, नई दिल्ली

संगोष्ठी के दौरान निम्नलिखित विषय–वस्तुओं पर शोधपत्र प्रस्तुत किए गए–

सत्र –1

माइग्रेशन इन हिस्ट्री

रॉबर्टो पेट्रीशिओ कोरजनिविज : *ग्लोबल माइग्रेशन एण्ड द कंटेनशियस पॉलिटिक्स ऑफ सिटिजनशिप*

महावा सरकार : *द फ्लिपसाइड ऑफ द इंटीग्रेशन/एसीमिलेशन क्वेश्चन : सर्कुलर/ मैनेज्ड माइग्रेशन रेजिमस एण्ड देयर सिग्निफिकेंस, हिस्ट्रोरिकल एण्ड टूडे*

सत्र–2

सिटिजनशिप एण्ड माइग्रेशन : 1

नासिरन चौधरी : *मेकिंग सिटिजनस– बिलांगिंग एण्ड राइट्स इन कैम्पस इन तमिलनाडू*

समंता बिश्वास : *माइग्रेशन एण्ड डिस्प्लेसमेंट इन हल्दिया*

सत्र–3

माइग्रेशनस–साउथ एशिया : 1

बिपाशा राय लाकड़ा : *व्हू आर द 'सनस ऑफ द सॉइल? आदिवासी एडमिस्ट द ट्राइबस ऑफ असम*

अन्वेश सेनगुप्ता : *रिफ्यूजीस एज प्रोडक्टिव सिटिजनस : रिहैबिलिटेशन ऑफ ईस्ट बंगाली हिन्दूस इन अंडमान एण्ड दण्डकअरण्य*

दिनेश काफ्ले : *कराचीज नेटिव 'अदरस' : रिप्रेजेंटेशन ऑफ मुजाहिरस इन कैमिला शामजीज नॉवलस*

सत्र–4

माइग्रेशन–यूरोप : 1

साइमन बेहरमैन : *ऑन द क्रिएशन एंड अकमोडेशन ऑफ द मिजरी ऑफ द वर्ल्डः द केस ऑफ द सन्स–पेपिर्स*

जोसेफ बोरॉजः *ए मैटरियलिस्ट बैकराउंड टू द 2015 'रिफ्यूजी क्राइसिस ऑफ यूरोप'*

सत्र–5

सिटिजनशिप एण्ड माइग्रेशन : 2

निशा कपूर : *अनमेकिंग सिटिजनस*

अनीता सेनगुप्ता : *द माइग्रेंट एज पॉलिटिकल ऑब्जेक्ट*

सत्र–6

माइग्रेशन : साउथ एशिया –2

इशिता श्रुति : *द मेकिंग ऑफ रोहिंग्यास : इंटरप्ले ऑफ रेस, रीलिजन एण्ड एथनिसिटी*

स्मिता तिवारी : *अफगानस इन पाकिस्तान : इश्यूज ऑफ स्टेटलेसनेस एण्ड बिलॉंगिंग*

सत्र–7

सिटिजनशिप एण्ड माइग्रेशन : 3

नासिर उद्दीन : *सिटिजनशिप, माइग्रेशन एण्ड स्टेटलेसनेस : ए केस ऑफ रोहिंगियास इन बंगलादेश*

चप्परबन सैजुद्दीन : *कैन ए मुस्लिम बी ए डायसपोटिक? आइडिया ऑफ हिजरत इन इस्लाम एण्ड मुस्लिम माइग्रेशन*

गोलमेज/खुली चर्चा और समीक्षा

6. 'रिथिंकिंग मिथ इन फोक ड्रामटिक फार्मस' विषय पर राष्ट्रीय संगोष्ठी (14–15 जून 2016)

मूलाधार– विविध सांस्कृतिक परिप्रेक्ष्य में मानव शास्त्र, धार्मिक अध्ययन, लोकसंगीत, साहित्य का इतिहास, दर्शन, मनोविज्ञान आदि विषयों के विद्वानों द्वारा मिथक की प्रकृति तथा उसके कार्यों को लेकर प्रश्न उठाए जाते हैं और उन पर बहस होती है। एक खेमे से दूसरे खेमे तथ मिथक की अवधारणा में तेजी से परिवर्तन होता है। विशेषज्ञ धर्म–सम्प्रदायों तथा रीति–रिवाजों से संबंधित मिथकों के बारे में बात करते हैं। लोककथाकार मिथकों के मनोरंजन की पृष्ठभूमि तैयार करते हैं तथा दूर–दूर तक उनका प्रचार–प्रसार करते हैं। साहित्य के इतिहासकार तथा आलोचक उनके साहित्यिक गुणों पर बल देते हैं तथा दर्शनशास्त्री उनके सच्चे मूल्य की तलाश करते हैं। रिचर्ड चेज, ए.बी. रूथ, ए.ई. जेनसेन, जेन एलेन हैरिसन, क्लक्खोहन तथा बी. मैलिनोवस्की की मिथक के बारे में अपनी व्याख्या है जोकि उनके कार्यक्षेत्र तथा विषय पर आधारित होती है। मिथक विशिष्ट गुणों तथा कार्यों से युक्त अपनी तरह की एक शैली है जिसका सांस्कृतिक विविधता तथा धार्मिक परिप्रेक्ष्य में अध्ययन किया जा सकता है।

इसमें संदेह नहीं कि मिथक मानवीय सभ्यता का महत्त्वपूर्ण घटक और आवश्यक सांस्कृतिक गुण है। समाज को चलाने में मिथकों ने हमेशा एक आवश्यक उपकरण के रूप में कार्य किया है तथा उन सामाजिक व्यवस्थाओं का पोषण करने में सहायता की है जिन्हें कदाचित अप्राकृतिक तथा अनुचित समझा जाता रहा है। इस संगोष्ठी में यह समझने का प्रयास किया गया कि मानवीय उद्यम में मिथक की पवित्र परंपरा कितनी गहरी है तथा कितने बलपूर्वक यह उसके मनोबल तथा सामाजिक व्यवहार को नियंत्रित करता है।

मिथकों के क्षेत्र में भारत एक समृद्ध देश है जिसमें अखिल भारतीय हैं, कुछ क्षेत्रीय तथा कुछ स्थानीय हैं। वे

ज्ञान का खजाना हैं तथा कोई भी उन्हें पढ़ सकता है, उनकी पुनर्व्याख्या कर सकता है तथा पुनर्लेखन कर सकता है। कलाकार लगातार मिथकों की तलाश में रहते हैं तथा विश्वदर्शन तथा सामाजिक समालोचना को सुस्पष्ट करने के लिए उनके अर्थ तथा सौंदर्य की क्षमता का अन्वेषण करते रहते हैं। यह सब उपन्यास, काव्य, रंगमंच तथा अन्य कई कला विधाओं में होता है।

यह संगोष्ठी लोक नाटकीय रूपों में मिथक की व्याख्या पर केंद्रित रही और विभिन्न

सांस्कृतिक संदर्भों में उनके प्रदर्शन के बारे में चर्चा की गई कि वे कैसे और क्यों कर रहे हैं और मिथक विशिष्ट सामाजिक और सांस्कृतिक संदर्भों में क्या कार्य करता है, दूसरे शब्दों में, लोक प्रदर्शन में मिथक के रोजगार और उसकी व्याख्या के बारे में चर्चा की गई।

समय–समय पर प्राधान्य सामाजिक समूहों के हितों के लिए कई लोकप्रिय मिथकों को नष्ट, विकृत और उन्हें तोड़–मरोड़ कर पेश किया गया है। नतीजतन, कई मिथकों ने अपना मूल अर्थ, संबंध और मनोरथ खो दिया है और अक्सर बहुत विपरीत संकेत देने के लिए प्रयोग किए जाते हैं। निरंतर दुरुपयोग जैसा कि एम.एन. श्रीनिवास ने उल्लेख किया है कि 'संस्कृतकरण, के कारण कई मिथकों पूरी तरह से अपरिचित हो गए हैं और अपने मूल रूप और उद्देश्य से दूर हो गए हैं। इस संगोष्ठी का उद्देश्य विशिष्ट संस्कृतियों, समाजों और ऐतिहासिक संदर्भों में इस तरह के उलझन और परिवर्तनों में मिथक की

प्रकृति और कार्यों का अवलोकन करना और आकलन और विचलन की अंतर्निहित रणनीति को उजागर करना था। इस दृष्टिकोण से देश के विभिन्न हिस्सों से मिथक विद्वानों, लोकगीत विशेषज्ञों, मानवविज्ञानी, थियेटर कार्यकर्ताओं और कलाकारों को आमंत्रित किया गया और मिथक–निर्माण, मिथक–परिवर्तन और मिथक–हेरफेर के सामाजिक, सांस्कृतिक और राजनीतिक प्रभावों पर पर सारगर्भित चर्चा की गई।

चर्चा के बिन्दु

सामान्य

- मिथक क्या है?
- मिथक का क्या सामाजिक कार्य हैं?
- लोक प्रदर्शनों में मिथक किस प्रकार और क्यों प्रयोग किए जाते हैं?
- ऐसे प्रदर्शनों में एक मिथक का क्या होता है? उसकी भूमिका और उसके कार्यों में किस प्रकार परिवर्तन होता है?

विशेष

- भारत के विभिन्न भागों, पूर्व, पश्चिम, उत्तर तथा पूर्वोत्तर में विशेष लोक–साहित्य प्रदर्शनों में मिथक।
- एक विशेष सांस्कृति तथा वर्ग संदर्भ में एक विशेष मिथक किस प्रकार व्याख्यायित किया जाता है?
- समाज को समझने के लिए मिथक क्या करते है?
- सामाजिक नियंत्रण तथा गलत पहचान में यह किस प्रकार सहायता करता है?
- एक विशेष प्रस्ततीकरण में किसका हित निहित होता है?

भारतीय उच्च अध्ययन संस्थान में 14–15 जून 2016 को **'रिथिंकिंग मिथ इन फोक ड्रामटिक फार्मस'** विषय पर एक राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन किया गया। संस्थान के अध्येता प्रोफेसर ए. अच्युतन इस संगोष्ठी के संयोजक थे। संस्थान के निदेशक प्रोफेसर चेतन सिंह ने सभी प्रतिभागियों का स्वागत किया। संगोष्ठी के संयोजक प्रोफेसर ए. अच्युतन ने प्रारंभिक टिप्पणी प्रस्तुत की। भारतीय लोक–साहित्य संस्थान के निदेशक प्रोफेसर एन. भक्तवत्सल रेड्डी ने इस अवसर पर बीज भाषण प्रस्तुत किया।

प्रतिभागी

- प्रोफेसर वशिष्ठ नारायण त्रिपाठी, हिंदी विभाग, बनारस हिंदू विश्वविद्यालय, वाराणसी
- प्रोफेसर डी.आर. पुरोहित, अंग्रेजी विभाग, एच.एन.बी. केंद्रीय विश्वविद्यालय, श्रीनगर, गढ़वाल
- प्रोफेसर एन. भक्तवत्सल रेड्डी, भारतीय लोककथा संस्थान, त्रिवेन्द्रम
- डॉ. डी.एस. चौगले, कन्नड़ भौरो कटककर कॉलेज, कर्नाटक
- प्रोफेसर आर. सैसिधरन, हिंदी विभाग, कोचीन विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय, कोच्चि, केरल
- डॉ. मंजूर अहमद नजर, मंगलायान विश्वविद्यालय, अलीगढ़, उत्तर प्रदेश
- डॉ. अमिताभ मुखर्जी, पथ भवन, विश्व–भारती, शांतिनिकेतन, पश्चिम बंगाल
- प्रोफेसर फनिंदम देव, पीओ– खड़ीर, जिला– नौपादा, ओडिशा
- डॉ. आर.एस. सीखोला, शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद, सोलन, हि.प्र.
- डॉ. आर. उमामहेश्वरी, शेषाद्री रेजीडेंसी, स्कंदगिरी, पद्मारावनगर, सिकंदराबाद
- डॉ. नामदेव, हिंदी विभाग, करोड़ीमल कॉलेज, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली
- डॉ. नीलम, हिंदी विभाग, लक्ष्मीबाई कॉलेज, दिल्ली
- प्रोफेसर एम. दासन, अंग्रेजी विभाग, केरल विश्वविद्यालय, केरल
- प्रोफेसर महेश चंपकलाल, अध्येता, भा.उ.अ.सं., शिमला
- प्रोफेसर गणेश चन्दनशिव, लोक कला अकादमी, मुंबई विश्वविद्यालय, मुंबई
- प्रोफेसर प्रकाश खड़गे, लोक कला अकादमी, मुंबई विश्वविद्यालय, विद्यापाठ छात्र भवन, मुंबई
- डॉ. धनंजय सिंह, नेहरू मेमोरियल संग्रहालय और पुस्तकालय, तीन मूर्ति भवन, नई दिल्ली
- प्रोफेसर सुखविंदर कौर बाथ, हिंदी विभाग, पंजाबी विश्वविद्यालय, पटियाला, पंजाब
- प्रोफेसर ए. अच्युतन, अध्येता, भा.उ.अ.सं., शिमला
- डॉ. कौस्तव चक्रवर्ती, अध्येता, भा.उ.अ.सं., शिमला
- डॉ. अम्बा कुलकर्णी, अध्येता, भा.उ.अ.सं., शिमला
- प्रोफेसर के.एल. टुटेजा, टैगोर अध्येता, भा.उ.अ.सं., शिमला
- श्री मकरंद साठे, राष्ट्रीय अध्येता, भा.उ.अ.सं., शिमला

संगोष्ठी के दौरान प्रतिभागियों द्वारा निम्नलिखित विषयों पर शोधपत्र प्रस्तुत किए गए–

सत्र–1

डी. आर. पुरोहित : कन्टिनजेंट सर्कलस ऑफ मिथ : रिचूअल इनैक्टमेंट ऑफ मिथिकल नेरेटिवस इन द फोक थियेटर ऑफ उत्तराखण्ड

धनंजय सिंहः प्रवासियों की लोकसंस्कृति में मिथक का सृजन

वा पुनह श्रुजन : एक पुनर्विचार

सत्र–2

एम. दासन : इंटरप्रेटेशन एण्ड इंटरपोलेशन इनटू थिय्यम मिथस

डी. एस. चौगले : रिथिंकिंग मिथ इन फोक ड्रामाटिक फॉर्म्स (कन्नड़)

पी. नजीमद्दीन : रिथिंकिंग मिथ इन फोक ड्रामाटिक फॉर्म्स ऑफ तमिलनाडु

सत्र–3

नामदेव : लोक परम्परा मे नौटंकी का स्थान

गणेश एस. चन्द्रशिव : तमाशा में मिथक : एक अुनष्ठान

लोक नाटकीय प्रदर्शन की झलकों की स्क्रीनिंग

सत्र–4

फैनिंदम देव : मिथक, फोक ड्राम अला उदेल एण्ड एंटिक्वीटीस ऑफ मारगुडा वैली

अमिताभ मुखर्जी : इन्वेस्टिगेटिंग इनटू द स्कोप ऑफ रि–इंटरप्रेटिंग इन मैथडोलजी ऑफ छोउ ऑफ पुरुलिया

मंजूर अहमद नाजर : कैलिडोस्कोपिक पोर्ट्रियल ऑफ मिथ ऑफ मिथ इन फोकटेल्स विद स्पेशल रिफरेंस टू हेमल नगराई

सत्र–5

वी. एन. त्रिपाठी : मिथ की पुनर्खोज संदर्भ रामनगर (वाराणसी) की रामलीला

आर उमामहेश्वरी : हाउ टू रिकॉन्फिगर द मिथ ? एन एग्जाम्पल फरॉम ए स्टूडैण्ट मूवमेंट इन तेलंगाना

आर. शशिधरन : केरल का लोकनाटय पटयानी' में प्रयुक्त मिथक एक पुनर्विचिंतन

सत्र–6

सुखविंदर कौर बाथ : पंजाबी लोक–नाट्य और मिथक

नीलम हरियाणा का खोदिया' लोकनाटय (संदर्भ महिला रंगमंच)

रणधीर सिंह चौटाला : ड्रामाटिक रिप्रेजेंटेशन ऑफ सीता साँग इन पहाड़ी फोक रामायणा एण्ड इंटरप्रेटेशन इन मिथ

सत्र–7

प्रकाश एस. खंडगे : मिथ ऑफ गॉड खदोबा इन रिचूअलिस्टिक फोक प्ले 'जागरण'

महेश चंपकलाल : जसमा ओड़न– परंपरा से नए प्रयोग की ओर

7. 'थिंकिंग सोशल साइंसिस' विषय पर विचार–गोष्ठी (11–12 जुलाई 2016)

मूलाधार– भारत और इंडोनेशिया दोनों में सामाजिक विज्ञान समुदायों के बीच एक स्थायी बातचीत शुरू करना ही इस संगोष्ठी का उद्देश्य था। अंतर्दृष्टि साझा करने और सहयोग के निर्माण के स्पष्ट लाभ से परे यह विश्वास है कि भारत और इंडोनेशिया दोनों जटिल देश हैं, जहां सामाजिक परिवर्तन की एक स्तरित प्रक्रिया हो रही है। इसलिए नीतिगत हस्तक्षेपों की सहायता एवं सहयोग के लिए सामाजिक विज्ञानों में निवेश करना आवश्यक है, जिसका अनुपालन आवश्यक है। दोनों देशों के समाजों को परिवर्तन प्रक्रिया के सामाजिक निरूपण के एक समृद्ध निकाय की आवश्यकता है जोकि लोकतंत्र और वैश्वीकरण की अवधारणाओं द्वारा संचालित की जाती है। ये संचालक निर्देशात्मक तथा प्रक्रियात्मक दोनों हैं। इन्हें पहचानने, विश्लेषण करने और इनके बारे में विमर्श करने की आवश्यकता है। उनकी गतिशीलता को समझने के लिए परस्पर तुलना की जानी चाहिए।

परस्पर आंतरिक विविधता के बावजूद ग्रामीण इलाकों से शहरी इलाकों की पलायन, तेजी से बढ़ता शहरीकरण, शिक्षा प्राप्ति की इच्छा, अनुमानित जनसांख्यिकीय लाभांश, पारिस्थितिक बलाघात, यहां तक कि बहुसंख्यक अल्पसंख्यक संबंध आदि प्रमुख कारक हैं जो भारत और इंडोनेशिया दोनों देशों में समान रूप से व्याप्त हैं। तुलना करने के लिए यदि हम किसी भी विषय पर अधिक गहन चर्चा शुरू करने से पहले दो सामाजिक विज्ञानों के समुदायों के सामान्य संबंधों और उनकी चिंताओं को समझना अधिक उचित है। इस परिप्रेक्ष्य में निम्नलिखित विषयों को लेकर एक शुरुआत की जा सकती है–

1. साम्राज्यवाद की श्रेणिया

   जो सामाजिक वैज्ञानिक सामाजिक वास्तविकताओं का अवधारणात्मक रूप से प्रस्तुतीकरण करना चाहते हैं उन्हें औपनिवेशिक देशों में जिस चुनौती का सामना करना पड़ता है, उसका दोहरा रूप है– (1) चर्चा के लिए सामाजिक समस्या के उन्मुखवादी ढांचे से बचना और (2) अपनी सामाजिक वास्तविकताओं को प्रस्तुत करने के लिए वैचारिक श्रेणियों का चयन करना। तकरीबन आधी सदी तक भारत के बारे में शोध करने के उपरांत 2005 में अपने अध्यक्षीय संबोधन में सुसान रुडॉल्फ इस समस्या का वर्णन किया था। उनकी शिकायत थी कि उत्तर भारत में दिया गया पद्धतिपूर्ण प्रशिक्षण दक्षिण भारत के भिन्न क्षेत्र में आंकड़े संग्रह के अनुभवों के लिए उपयुक्त न था।

   उन्हें आश्चर्य हुआ कि ये अवधारणाएं और पद्धतियां किस हद तक जीवन के तौर–तरीकों तथा अन्य देशीय रूपों में समावेश, अनुकूलन, संशोधन और परिवर्तन के लिए उत्तरदायी हैं? संयुक्त राज्य अमेरिका से खरीदे गए उपकरण, सभ्यताओं, संस्कृतियों और पश्चिमी पर्यवेक्षक और गैर–पश्चिमी लोगों तथा विश्व मतों के बीच मतभेदों की खाई को भरने में किस सीमा तक सक्षम है?

   चूंकि अवधारणाएं विशाल हो सकती हैं, घुसपैठ, अनुकूलन और संशोधन, सिद्धांत रूप में, संभव हो सकता है। इससे पहले का कार्य 'असुविधाजनक तथ्यों' का निर्माण करना है जोकि उत्तर की अवधारणाओं के लिए आवश्यक है ताकि उन्हें समाविष्ट किया जा सके। इसके लिए कठिन बौद्धिक श्रम की आवश्यकता है।

2. उच्च शिक्षा का लोकतांत्रिककरण

   भारत और इंडोनेशिया दोनों देशों में उच्च शिक्षा के विस्तार के कई परिणाम हुए हैं। जैसे– (1) महिलाओं और उपनगरीय वर्गों जैसे बहिष्कृत समूहों के लिए कक्षा के खुले द्वार (2) पाठ्यक्रम और राष्ट्रवादी एजेंडे के संबंध में इन समूहों की बढ़ती आवाज, (3) पर्यवेक्ष की बजाय प्रतिभागी बनने के लिए इन समूहों की राजनीति में बदला हुआ

दृष्टिकोण, और (4) सार्वजनिक क्षेत्र में होने वाले परिवर्तन। आजादी के बाद से उच्च शिक्षा के लोकतांत्रिककरण के कारण ये परिवर्तन उभरकर आए हैं, इसलिए हमारे लिए इन परिवर्तनों का खाका तैयार करना और उच्च शिक्षा के इस लोकतांत्रिककरण के परिणामों का अध्ययन करना आवश्यक है।

3. अस्मिता और ज्ञान विस्तार

ज्ञान विस्तार की राजनीति में हितों का मुद्दा हमेशा रहता है। चूंकि उच्च शिक्षा के लोकतांत्रिककरण ने सार्वजनिक दृष्टिकोण में नए दृष्टिकोण लाए हैं, इसलिए सामाजिक वैज्ञानिकों के लिए ज्ञान संलेख और प्रतिनिधित्व के मुद्दे पर चर्चा करना महत्वपूर्ण है। ज्ञान समर्थन विशेष समूहों के लिए एक महत्वपूर्ण संसाधन है क्योंकि वे सार्वजनिक क्षेत्र में अपनी पहचान का दावा करना चाहते हैं। परिणामस्वरूप सामाजिक विज्ञान परिदृश्य, ऐसे ज्ञान अर्जन में लगे कई उप समूहों में विभाजित है। ज्ञान की ऐसी राजनीति में हम वैधता के मुद्दे से कैसे निपट सकते हैं?

4. सामाजिक विज्ञान का भविष्य तथा सामाजिक विज्ञान और भविष्य

इस सत्र में राज्य की शैक्षणिक नीति में सामाजिक विज्ञान की सहायता और उच्च शिक्षण संस्थानों में सामाजिक विज्ञान के शिक्षण और अनुसंधान पद्धतियों के बारे में चर्चा की।

5. समापन सत्र में इंडोनेशिया और भारत में सामाजिक विज्ञान के लिए बेनेडिक्ट एंडरसन के योगदान पर एक समूह चर्चा की गई।

भारतीय उच्च अध्ययन संस्थान, शिमला में *'थिंकिंग सोशल साइंसिस'* विषय पर 11–12 जुलाई 2016 को एक विचार–गोष्ठी का आयोजन किया गया। सीएसडीएस, दिल्ली के प्रोफेसर पीटर रॉनल्ड डिसूजा तथा संस्थान के अध्येता डॉ. राधिका कृष्णन् इस विचार–गोष्ठी के संयोजक थे। संस्थान के निदेशक प्रोफेसर चेतन सिंह ने इस अवसर पर स्वागत उद्‌बोधन प्रस्तुत किया। दिल्ली स्थित इण्डोनेशिया दूतावास के मिशन उप प्रमुख श्री डॉल्टन सैम्ब्रिंग ने गोष्ठी के प्रतिभागियों को संबोधित किया तथा संयोजक प्रोफेसर पीटर रॉनल्ड डिसूजा ने परिचायात्मक टिप्पणी प्रस्तुत की।

प्रतिभागी

- श्री डाल्टन सेम्बिंग, इंडोनेशिया दूतावास, नई दिल्ली
- प्रोफेसर रुक्मिणी भाया नायर, मानविकी और सामाजिक विज्ञान विभाग, भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान, नई दिल्ली
- श्री हर्ष सेठी, एक्ससी –1, सहविकास, 68, आईपी विस्तार, दिल्ली
- डॉ. गैंगिया मुखर्जी, फ्लैट नंबर सी –404, ब्लॉक –2, कमल अपार्टमेंट, इलाहाबाद
- प्रोफेसर चंदन गौड़ा, अजीम प्रेमजी विश्वविद्यालय, बेंगलुरु
- प्रोफेसर त्रिदीप सुहरुद, साबरमती आश्रम, आश्रम रोड़, अहमदाबाद
- प्रोफेसर पीटर रॉनल्ड डिसूजा, सेंटर फॉर द स्टडी ऑफ डेवलपिंग सोसाइटीज, दिल्ली
- सुश्री इदावती हसन मुच्यारायरा, जेएल. तमन मत्रामन तिमुर नं. 17., जकार्ता पुसात
- प्रोफेसर माइलिंग ओई, कॉम्प्लेक पेजेटेन इंदहा आई/बी 4।, एच. समली उजंग, कालिबाटा, जकार्ता, इंडोनेशिया
- प्रोफेसर हस्जिम ज़जाल, जेएल. केमांग 4 नं. 10 ए, जकार्ता सेलाटन, इंडोनेशिया

- प्रोफेसर ताउफिक अब्दुल्ला, जेएल. विद्या चन्द्रा, 13/आई डी, जकार्ता जकार्ता सेलाटन, इंडोनेशिया
- प्रोफेसर मोहम्मद अमीन अब्दुल्ला, जेएल. कपुवातु I, आरटी/आरडब्ल्यू 02/01, पुरवामार्तानी, कलासन, स्लमैन, योग्यकार्ता, इंडोनेशिया
- प्रोफेसर उज्जैन भट्टाचार्य, इतिहास विभाग, विद्यासागर विश्वविद्यालय, पश्चिम बंगाल
- डॉ. राकेश पाण्डे, सेंटर फॉर द स्टडी ऑफ डेवलपिंग स्टडीज, दिल्ली
- डॉ. मनीष कुमार ठाकुर, भारतीय प्रबंधन संस्थान, कलकत्ता, कोलकाता
- डॉ संजीर आलम, सेंटर फॉर द स्टडी ऑफ डेवलपिंग स्टडीज, दिल्ली
- डॉ. हेमचंद्रन करह, मानविकी और सामाजिक विज्ञान विभाग, भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान मद्रास, चेन्नई
- प्रोफेसर पुलाप्रे बालकृष्णन, सेंटर फॉर डेवलपिंग स्टडीज, त्रिवेंद्रम
- डॉ. अरुंधती विरमानी, अतिथि अध्येता, भा.उ.अ.सं., शिमला
- डॉ. राधिका कृष्णन, अध्येता, भा.उ.अ.स, शिमला
- प्रोफेसर निर्मल सेनगुप्ता, राष्ट्रीय अध्येता, भा.उ.अ.स, शिमला
- प्रोफेसर के.एल. टुटेजा, टैगोर अध्येता, भा.उ.अ.स, शिमला
- डॉ अर्पिता मित्रा, अध्येता, भा.उ.अ.स, शिमला
- श्री समीर बनर्जी, अध्येता, भा.उ.अ.स, शिमला
- डॉ. रत्नाकर त्रिपाठी, अध्येता, भा.उ.अ.स, शिमला
- डॉ. गोवर याकूब, अध्येता, भा.उ.अ.स, शिमला

विचार–गोष्ठी के दौरान निम्नलिखित विषयों पर शोधपत्र प्रस्तुत किए गए–

सत्र–1

इम्पीरिलिज ऑफ कैटगरीज– इन्फिलट्रेटिंग दी वैस्टरन डिस्कोर्स

प्रस्तुति– पीटर रॉनल्ड डिसूजा

टिप्पणी– पुलाप्रे बालकृष्णन्, राकेश पाण्डेय, अर्पिता मित्रा

सत्र–2

डिमाक्रेटाइजेशन ऑफ हायर एजूकेशन

प्रस्तुति– हर्ष सेठी

टिप्पणी– त्रिदीप सुहरूद, संजीर आलम, मेलिंग ओइय

सत्र–3

आइडेंटिटी एण्ड नॉलेज प्रोडक्शन

प्रस्तुति– मनीष ठाकुर

टिप्पणी– रूकमणि भाया नायर, गौहर याकूब, रत्नाकर त्रिपाठी

सत्र–4

दी फ्यूचर ऑफ सोशल साइंसिस एण्ड सोशल साइंसिस एण्ड दी फ्यूचर

प्रस्तुति– चंदन गौड़ा

टिप्पणी– हेमचन्द्रन कराह, हास्जिम जलाल, अरूंधति विरमानी

सत्र–5

बैंडेक्टि एंडरसन एण्ड दी सोशल साइंसिस इन इण्डोनेशिया एण्ड इण्डिया

पैनल के सदस्य – उज्जैन भट्टाचार्य, गांगेय मुखर्जी

खुली बहस

8. 'कॉस्मोपोलिटनिम्ज इन दी हिस्ट्री ऑफ साइंस' विषय पर अंतर्राष्ट्रीय संगोष्ठी (09–10 अगस्त 2016)

मूलाधार–जैसे–जैसे दुनिया 'वैश्विक' बन जाती है, वैसे ही इसका इतिहास भी होना चाहिए – विशेष रूप से विज्ञान का इतिहास। ज्ञान के समकालीन इतिहास ने कई स्रोतों, संचार नेटवर्क तथा वैज्ञानिक ज्ञान के प्रचार–प्रसार के महत्त्व की ओर हमारा ध्यान खींचा है। यह पुनर्संकेन्द्रीकरण बहुसंख्यक वंशावली और ज्ञान की गतिविधियों के करीब एक संवेदनशीलता के साथ आया है। इससे हमें विज्ञान के स्थानीय और वैश्विक इतिहास के बारे में सामान्य प्रश्नों की नई प्रश्नावली मिलती है।

दो साल पहले, ईएचईएस, पेरिस ने 'आधुनिक एशिया में 'विश्वव्यापीता' पर एक कार्यशाला का आयोजन किया था। संग्रह को *पुरूषार्थ* नामक पत्रिका के एक विशेष अंक में प्रकाशित किया गया जो दक्षिण एशिया में ज्ञान परिसंचरण और विश्वव्यापीता के विशिष्ट अध्ययन पर केंद्रित थे, साथ ही पत्रिका में स्थानीय और वैश्विक के अंतःक्रिया को मान्यता प्रदान की गई। कार्यशाला के विचार को सामाजिक सिद्धांत के कुछ मुद्दो जोकि अब विज्ञान के इतिहास से संबद्ध हो उन्हें दोबारा जांचने के लिए आगे बढ़ाया जा सकता है।

विज्ञान के इतिहास में 'विश्वबंधुत्व' को दरकिनार करने से परा–सांस्कृतिक अथवा –राष्ट्र के बीच एक विशिष्ट अंतर की शुरूआत हो जाएगी। अथवा मेटा वर्णन जो भी हो कोई हमारी ऐतिहासिक मामलों और पदार्थों, वस्तुओं, सक्रिय कार्य कर्ताओं, ग्रंथ इत्यादि के विश्वबंधुत्व से रूचि लेगा जोकि हमारी जांच के सम्मुख होता है। यह शायद ऐतिहासिक कर्ताओं के हिसाब से नहीं हो सकता है।

इसके अलावा, यह समझना भी उतना ही महत्वपूर्ण है कि ज्ञान की राजनीति लघु और उच्च परंपराओं के बीच संपर्क क्षेत्र में खुद को कैसे क्रियाशील रखती है। खेल के मैदान शायद ही समतल हों। उदाहरण के लिए कुछ हालिया

शोध कोरिया से यात्रा करने वाले चिकित्सकों को प्रतिबिंबित करते हैं जो चीन गए थे और कई चिकित्सा परंपराओं के बीच मध्यस्थ बन गए थे, जबकि साथ ही कोरिया में उनकी उच्च पेशेवर स्थिति के बारे में प्रश्न उठाए गए और चीन में एक कमजोर व्यक्ति के रूप ह्रासित हुए।

आखिरकार, विश्वबंधुता के बारे में बहस से परे या विश्वबंधुता कहां है। 'विश्वबंधु विज्ञान' का ढांचा विज्ञान की भौतिक संस्कृति, राष्ट्रीय सीमाओं का उल्लंघन तथा सभ्यता के इतिहास से अधिक अभिकर्ताओं, वस्तुओं और विज्ञान विविधता के साथ संबंध रखता है। किसी परंपरा या संस्थान या विश्वबंधुत्व की परिपाटी को एक ब्रांडेड या वर्गीकृत करने के में ईशारा हमेशा वंशावली, वस्तुओं और प्रवाहों की बहुसंख्यक आवश्यक विविधता की ओर होता है। विश्वबंधुत्व विज्ञान की राजनीति एक महानगरीय विज्ञान के चिकित्सकों के प्राधिकरण, विशेषाधिकार और सांस्कृतिक संपत्ति के अन्वेषण की मांग करती है।

संगोष्ठी को एक वार्ता की ओर निर्देशित किया गया था जिसमें तटस्थ रहने की बजाए आगामी शोध तथा समस्याग्रस्त विश्व विज्ञान के लिए महत्वपूर्ण मुद्दों चिन्हित किया गया।

विज्ञान के गैर–विशिष्ट इतिहास के वर्णनों का अध्ययन करने वाले विद्वानों को एक मंच पर लाना ही इस संगोष्ठी का उद्देश्य था। इस संगोष्ठी में विज्ञान के वैश्वीकृत इतिहास के निर्माण में शामिल मुद्दों, समस्याओं और सामग्रियों की जांच पर बल दिया गया जो 'स्थानीय' और परा–स्थानीय आदान–प्रदानों, परिसंचरण और ज्ञान के अनुवाद के लिए संवेदनशील हैं। 'विश्वबंधुता' की अवधारणा पर ध्यान केंद्रित इस संगोष्ठी का उद्देश्य विज्ञान के एक गैर–श्रेणीबद्ध विश्व इतिहास का वर्णन करने के नए तरीकों का पता लगाना था। इस संगोष्ठी के माध्यम से एक दीर्घकालिक सहयोगी शोध नेटवर्क विकसित करने की संभावना के बारे में चर्चा करने के लिए विभिन्न अनुशासनात्मक पृष्ठभूमियों और शोध विशेषज्ञों को एक सांझा मंच प्रदान किया गया।

09–10 अगस्त 2016 के दौरान संस्थान में **'कॉस्मोपालिटनिज्म इन दी हिस्ट्री ऑफ साइंस' विषय** पर एक अंतर्राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन किया गया। जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय, नई दिल्ली से आए प्रोफेसर ध्रुव रैना इस संगोष्ठी के संयोजक थे। संस्थान के निदेशक प्रोफेसर चेतन सिंह ने इस अवसर पर स्वागत भाषण प्रस्तुत किया। संगोष्ठी के संयोजक प्रोफेसर ध्रुव रैना ने प्रारंभिक टिप्पणी प्रस्तुत की।

प्रतिभागी

- डॉ. जॉबिन एम. कंजिरक्कट, किंग्स कॉलेज, 6350, कोबर्ग आरडी, हैलिफैक्स, एनएस, कनाडा
- प्रोफेसर जोआचिम कर्टज, कार्ल जैस्पर सेंटर, हेडलबर्ग विश्वविद्यालय, जर्मनी
- प्रोफेसर लेस्ले कॉर्मैक, कला संकाय, अल्बर्टा विश्वविद्यालय, कनाडा
- प्रोफेसर गॉर्डन मैक क्वात, किंग्स कॉलेज विश्वविद्यालय, हैलिफैक्स, कनाडा
- डॉ. रॉबर्ट माइकल ब्रेन, ब्रिटिश विश्वविद्यालय, कोलंबिया, इतिहास विभाग, कनाडा
- प्रोफेसर कपिल राज, इकोल डेस हॉटस एटडिसेन साइंसिस सोशल, ईएचईएस, पेरिस, फ्रांस
- प्रोफेसर जॉन बोस्को लॉर्दूसेमी, मानविकी और सामाजिक विज्ञान विभाग, भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान, मद्रास, चेन्नई
- प्रोफेसर ध्रुव रैना, जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय, नई दिल्ली

- डॉ. संजय कुमार, भौतिकी विभाग, सेंट स्टीफन कॉलेज, दिल्ली
- डॉ. प्रदीप रॉय, मनोचिकित्सा विभाग, निमहंस, बैंगलोर
- सुश्री स्राबंती चौधरी, समाजशास्त्र स्कूल ऑफ सोशल साइंसिज, नेताजी सुभाष, मुक्त विश्वविद्यालय, कलकत्ता
- प्रोफेसर विजया शंकर वर्मा, राष्ट्रीय अध्येता, भा.उ.अ.सं., शिमला
- डॉ. अम्बा कुलकर्णी, अध्येता, भा.उ.अ.सं., शिमला
- श्री ओम प्रसाद, सामाजिक विज्ञान केन्द्र, जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय, नई दिल्ली
- सुश्री उर्मिला उन्नीकृष्णन, जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय, नई दिल्ली

प्रतिभागियों द्वारा इस संगोष्ठी में निम्नलिखित शोधपत्र प्रस्तुत किए गए–

सत्र–1

कपिल राज : *कॉस्मोपोलिटनिजम : द वेरी आइडिया.....*

लैस्ले कॉरमेक : *व्हाट डज ए 'ग्लोबल हिस्ट्री ऑफ साइंअस' लुक लाइक? स्ट्रेटजजिंग फॉर ए न्यू 'मास्टर नैरेटिव'*

सत्र–2

रॉबर्ट ब्रेन : *हरमिट एण्ड कॉस्मोपोलिटियन फुली ह्यूमन : जर्मन नेचुरल सांइटिस्टस बिफोर द नेशन स्टेट*

प्रदीपो रॉय : *साइकॉलजिकल सिम्टमस इन द वर्नाकूलर : टूवर्डस ए कॉस्मोपोलिटन हिस्ट्री ऑफ मेंटल हैल्थ साइंस इन साउथ एशिया*

सत्र–3

सराबंती चौधरी : *निर्मल कुमार बोसज मास्टरपीस हिन्दी समजेर गदन (दी स्ट्रक्चर ऑफ हिन्दू सोसायटी): एन अटैम्पट ऑफर ए कॉस्मोपालिटन अप्रोच टू द स्टडी ऑफ इण्डियन सिविलाइजेशन*

जौचीम कुर्टज : *वेस्टरन, न्यू और कॉस्मोपोलिटन? चाइनीज व्यू ऑन द आरिजन ऑफ मॉडरन साइंस*

जान लौर्डसेमी : *कमोडिटीज एण्ड कॉस्मोपोलिटनिज्म : द केस ऑफ टी*

सत्र–4

संजय कुमार : *कॉस्मोपालिटन स्ट्रैण्ड इन साइंस इन कलोनिअल एण्ड पोस्ट–इण्डिपेंडेंस इण्डिया*

जौबिन कंजीरक्कट : *कॉस्मोपोलिटनिज्म एण्ड द लोक लिंग्विस्टिक्स*

सत्र–5

विजय शंकर वर्मा : *अल–किन्दी एण्ड कॉस्मोपालिटनिज्म इन साइंस*

गॉर्डन मैक्वेट : *लोकल कॉस्मोपोलिटनिज्म : सोशल, पॉलिटिकल एण्ड मैटिरियल (व्हेयर डू वी गो फरॉम हेयर)*

9. 'भास, इन परफॉमेंस' विषय पर स्कूल का आयोजन (29 अगस्त से 11 सितंबर 2016)

मूलाधार– 20वीं सदी के प्रथम दशक में नाटककार 'भास' के नाटकों की पुनः खोज शास्त्रीय रंगमंच के इतिहास में एक बहुत ही उल्लेखनीय घटना है। तब से लेकर महाकवि भास के *महाभारत* और कुछ *रामायण* एवं *बृहत्कथा* पर आधारित तेरह नाटकों का देश–विदेश में व्यापक तौर पर मंचन हुआ है। समकालीन दर्शकों के दृष्टिगत विभिन्न तरीकों से जो आधुनिक प्रयास किए गए हैं उनका विवरण निम्न प्रकार से है–

(क) प्रस्तुतिकरण परंपरागत क्षेत्रीय नाटकीय एवं रीति–रिवाजों से प्रेरित हैं। के.एन. पाणिक्कर, रतन थियाम, हबीब तनवर, बी.वी कारंथ, भूमिकेश्वर सिंह, अंजला महर्षि आदि की प्रस्तुतियां इसके उदाहरण हैं।

(ख) प्रस्तुतिकरण की पद्धति शुद्ध शास्त्रीय नृत्य अथवा नृत्य–नाटक पर आधारित हैं। कनक रेले की प्रस्तुति इसका उदाहरण है।

(ग) नाट्यशास्त्रीय परंपरा पर आधारित प्रस्तुति। शांता गाँधी, गोवर्धन पंचाल, एस.आर. लीला आदि इसके उदाहरण हैं।

(घ) मुक्त शैली का कुछ हद तक विभिन्न परंपरागत पद्धतियों के तत्वों से विकास हुआ है जिनमें कलाबाजियां सम्मिलित हैं। इनके सम्मिश्रण से एक शैलीयुक्त पद्धति का स्वरूप बनता है। एम.के. रैना तथा बंशी कौल का निर्माण इसके उदाहरण है।

(ङ) औपचारिक साज–सज्जा तके अर्द्ध यथाथवादी शैली में अग्रमंच रंगमंच अथवा तात्कालिक अग्रमंच स्टेज पर नाटकों की प्रस्तुति : वामन केन्द्र तथा नादिरा बबर द्वारा निर्मित।

इसके अतिरिक्त नाटककार भास के नाटकों विशेषकर रामायण नाटक को कुडियाट्टम मंच पर भी प्रस्तुत किया गया है।

29 अगस्त से 11 सितंबर 2016 तक संस्थान में 'भास इन परफार्मेंस' नामक विषय पर एक स्कूल का आयोजन किया गया। संस्थान के अध्येता प्रोफेसर महेश चंपकलाल इस स्कूल के संयोजक थे। संस्थान के निदेशक प्रोफेसर चेतन सिंह ने प्रतिभागियों का स्वागत किया तथा संयोजक प्रोफेसर महेश चंपकलाल ने परिचायात्मक टिप्पणी प्रस्तुत की।

प्रतिभागी

डॉ सी राजेंद्रन, 28/10 7, 'राजधानी', टी.पी. कुमारन नायर रोड़, चेवयुर, कालीकट, केरल

- प्रोफेसर के.डी. त्रिपाठी, इंदिरा गाँधी राष्ट्रीय कला केंद्र, वाराणसी क्षेत्रीय केंद्र, वाराणसी
- प्रोफेसर भूमिकेश्वर सिंह, ज्ञान खंड– 3/125, शिवरा रिवॉर्ग के पीछे, इंदिराराम, गाजियाबाद
- श्री बीआर भार्गव, कुलगुरु, नाट्यकुलम, जयपुर
- सुश्री संगीता गुंडेचा, राष्ट्रीय संस्कृत संस्थान, भोपाल
- प्रोफेसर राधावल्लभ त्रिपाठी, 21, लैंड मार्क सिटी, (भेल संगम सोसाइटी के पास), भोपाल
- प्रोफेसर महेश चंपकलाल, अध्येता, भा.उ.अ.सं., शिमला
- डॉ. प्रवीण भोले, ललित कला केंद्र (गुरुकुल) (प्रदर्शन कला केंद्र), पुणे विश्वविद्यालय, पुणे
- श्री रविंद्र मुंडे, आरएन –64, गोरख पांडे हॉस्टल, एमजीए, हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा, महाराष्ट्र
- श्री रोहित कुमार, एमजीए, हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा, महाराष्ट्र

- श्री सौरभ कुमार गुप्ता, एमजीए, हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा, महाराष्ट्र
- श्री शकीर तस्नीम, सेंटर फॉर परफॉर्मिंग आर्ट्स, झारखंड केंद्रीय विश्वविद्यालय, झारखंड
- सुश्री शिल्पी माथुर, राजस्थान विश्वविद्यालय, जयपुर
- डॉ. मित्युनजय प्रभाकर, नाटक एवं रंगमंच कला, संगठन भवन, विश्व भारती विश्वविद्यालय, शांति निकेतन, पश्चिम बंगाल
- श्री आनंद पांडे, इंदिरा कला संगीत विश्वविद्यालय, खैरा गढ़, छत्तीसगढ़
- श्री सिद्धार्थ पांडे, मध्य प्रदेश स्कूल ऑफ ड्रामा, भोपाल
- श्री शिवंकर पाठक, सेठवाल, रानी की सराई, जिला– आजमगढ़ (उ.प्र.)
- सुश्री डॉली देसाई, भारत कलंजली स्कूल ऑफ डांस, अहमदाबाद
- श्री भार्गव ठक्कर, बी –6, अरवाचिन सोसाइटी, बोपाल, अहमदाबाद, गुजरात
- डॉ. सुजाता मोहन, डॉ. एमजीआर जानकी कॉलेज फॉर आर्ट्स एंड साइंस, चेन्नई
- डॉ. धनंजय मिश्रा, राष्ट्रीय संस्कृत संस्थान, (डीम्ड विश्वविद्यालय), श्री सदाशिवा परिसर, पुरी, ओडिशा
- श्री विनय वर्मा, भारतीय रंगमंच विभाग, पंजाब विश्वविद्यालय, चंडीगढ़
- श्री प्रियंका महेंद्रभाई प्रजापति, सी/2 9 स्वामी नारायण नगर ई, रामवतिका के पास, वाघोडिया रोड, वडोदरा
- श्री मनोज मिश्रा, 165, बी –38, 3 मंजिल, पाटकर हाउसिंग सोसायटी, नई तिलकनगर, चेम्बूर, मुंबई

स्कूल के दौरान प्रतिभागियों ने निम्नलिखित विषयों पर प्रस्तुति दी गई–

सत्र–1

राधावल्लभ त्रिपाठी : *भास एण्ड नाट्यशास्त्रा*

सत्र–2

राधावल्लभ त्रिपाठी : *टैक्स्चुअल एनालसिस ऑफ भासज रामायण प्लेस*

सत्र–3

प्रोफेसर महेश चंपकलाल द्वारा 'भास इन परफॉर्मेंस' के बारे में परिचय

सत्र–4

भास इन कुडियाट्टम : प्रोफेसर महेश चंपकलाल द्वारा के.एन. पाणिकर के *पार्वती विमर्श* की प्रस्तुति का विश्लेशण

सत्र–5

राधावल्लभ त्रिपाठी : महाकवि भास के महाभारत नाटकों का पाठ विश्लेषण

सत्र–6

प्रतिज्ञा नाटकम पर अभिषेक नाटकम और धनंजय मिश्रा पर रविंद्र मुंडे द्वारा पाठ प्रस्तुति

सत्र–7

महेश चंपकलाल द्वारा के एन पनिककर के प्रतिमा नाटकम का प्रदर्शन विश्लेषण

सत्र–8

राधावल्लभ त्रिपाठीः भास लोकप्रिय कहानियों पर आधारित है

सत्र–9

बलचरितम पर सुजाता मोहन द्वारा पाठ प्रस्तुति

सत्र–10

महेश चंपकलाल द्वारा एस आर लीला और भूमिकेश्वर सिंह के बलचरितम का प्रदर्शन विश्लेषण

सत्र–11

विनय वर्मा द्वारा सिद्धार्थ पांडे और उरुभंगम द्वारा दुता घटोत्कच पर पाठ प्रस्तुति

सत्र–12

रोहित कुमार द्वारा प्रतिज्ञा युगंधरेयण पर पाठ प्रस्तुति

सत्र–13

महेश चंपकलाल द्वारा राजेंद्र अवस्थी के दता घटोत्कच, मध्यम व्यायोग, उरुभमगम का प्रदर्शन विश्लेषण

सत्र–14

महेश चंपकलाल द्वारा गोवर्धन पंचल के दत्ता वाक्यम का प्रदर्शन विश्लेषण

सत्र–15

भार्गव ठक्कर, डॉली देसाई और आनंद पांडे द्वारा दत्ता वाक्यम पर पाठ प्रस्तुति

सत्र–16

महेश चंपकलाल द्वारा के एन पनिककर, अंजला महर्षि और वामन केन्द्र के *मध्यम व्यायोग* का प्रदर्शन विश्लेषण

सत्र–17

प्रियंका प्रजापति और शकीर तस्नीम द्वारा *मध्यम व्यायोग* पर पाठ प्रस्तुति

सत्र–18

मनोज मिश्रा द्वारा चारदुट्टम पर पाठ प्रस्तुति

सत्र–19

महेश चंपकलाल द्वारा एस आर लीला और अनघा देशपांडे के स्वपना वासवद्त्तम का प्रदर्शन विश्लेषण

सत्र–20

भारत रत्न भार्गव : भास का अनुवाद

सत्र–21

शिल्पी माथुर द्वारा अविमारका के बारे में पाठ प्रस्तुति

सत्र–22

महेश चंपकलाल द्वारा शान्ता गाँधी के स्वपना वासवद्त्तम और के. एन. पनिककर की स्वप्ना कथा का प्रदर्शन विश्लेषण

सत्र–23

भारत रत्न भार्गवः भास का अनुवाद

सत्र–24

अम्बा कुलकर्णी द्वारा कर्णभारम का ई–पाठ

प्रवीण भोल और सौरभ कुमार गुप्ता द्वारा कर्णभार पर पाठ प्रस्तुति

सत्र–25

संगीता गुंडेचा : उरुभंगम का पाठ विश्लेषण

महेश चंपकलाल द्वारा रतन थियम के कर्णभार का प्रदर्शन विश्लेषण

सत्र–26

महेश चंपकलाल द्वारा के एन पन्निकार और नीरज कंदर के कर्णभार का प्रदर्शन विश्लेषण

सत्र–27

के एन पानिककर का उरुभंगम संगीता गुंडेचा द्वारा प्रस्तुत किया गया

सत्र–28

महेश चंपकलाल द्वारा के.एन. पाणिकर द्वारा रचित *चारूदात्तम* का प्रदर्शन विश्लेशण

सत्र–29

संगीता गुंडेचा के. एन. पनिककर और रतन थियाम द्वारा रचित *उरुबंगम* के संदर्भ में भास की समकालीन व्याख्या

सत्र–30

मृत्युंजय प्रभाकर द्वारा स्वपना वासवद्त्तम पर पाठ प्रस्तुति

रतन थियाम का उरुभंगम संगीता गुंडेचा द्वारा प्रस्तुत किया गया

सत्र–31

संगीता गुंडेचा और महेश चंपकलाल द्वारा रतन थियाम के उरुबंगम का प्रदर्शन विश्लेषण समूह चर्चा के बाद

सत्र–32

सी राजेंद्रन : भास के नाटकों में कार्य, संघर्ष और नाटकीय दृश्य

सत्र–33

भूमिकेश्वर सिंहः छाऊ नृत्य की विधा का परिचय

सत्र–34

सी राजेंद्रन : भास के दुखद पात्र

सत्र–35

भूमिकेश्वर सिंह : छाऊ नृत्य के माध्यम से भास के साथ प्रयोग

सत्र–36

वेश ऑफ कर्ण हिन्दी अनुकूलन भवाई शैली में भास के कर्णभार का पी.एस. चारी द्वारा निर्देशन

सत्र–37

भूमिकेश्वर सिंह : छाऊ नृत्य के माध्यम से भास के साथ प्रयोग

सत्र–38

के. डी. त्रिपाठी : पूर्व–मध्ययुगीन भारत में संस्कृत प्ले प्रदर्शन का प्रदर्शन और प्रदर्शन के दृष्टिकोण से भास के नाटकों का महत्व

सत्र–39

शिवंकर पाठक द्वारा पंचत्रम पर पाठ प्रस्तुति

सत्र–40

के. डी. त्रिपाठी : भास के नाटकों का प्रदर्शन : आधुनिक भारतीय रंगमंच आंदोलन के बारे में के.एन. पाणिकर और कुछ अन्य समकालीन निदेशकों का योगदान।

10. शिक्षक दिवस के अवसर पर 'सिग्निफिकेंस ऑफ ह्यूमन साइंस इन द वर्ल्ड' विषय पर कार्यक्रम का आयोजन (05 सितंबर 2016)

संस्थान के संस्थापक डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन् के जन्म दिन 'शिक्षक दिवस' के अवसर पर 05 सितंबर 2016 को एक कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इस कार्यक्रम में 'सिग्निफिकेंस ऑफ ह्यूमन साइंस इन द वर्ल्ड' विषय पर परिचर्चा की गई, जिसमें संस्थान के अध्येताओं ने भाग लिया।

प्रतिभागी

- प्रोफेसर विजय शंकर वर्मा, राष्ट्रीय अध्येता, भा.उ.अ.सं.
- डॉ. आनंद कुमार, अध्येता, भा.उ.अ.सं.
- डॉ. अम्बा कुलकर्णी, अध्येता, भा.उ.अ.सं.

11. 'रिवाइटलाइजिंग द रूरल : रिथिंकिंग रूरल एण्ड एग्रीकल्चरल पॉलिसीस' विषय पर राष्ट्रीय संगोष्ठी (27–29 सितंबर 2016)

मूलाधार– भारत की अर्थव्यवस्था के गहन और त्वरित वैश्वीकरण के समय और ग्रामीण भारत में संकट के चलते इन इन अवस्थाओं के साथ जुड़ने और नई नीतियां बनाने की तत्काल आवश्यकता है। हलांकि किसानों द्वारा की जा रही

आत्महत्याओं, व्याप्त ग्रामीण संकट पर कुछ ध्यान दिया गया है। ग्रामीण भारत कई अंतर्विरोधों से गुजर रहा है। इनमें बड़े गरीब क्षेत्रों की अपेक्षा वाणिज्यिक रूप से सफल कृषि क्षेत्र के छोटे किसानों के पास बढ़ता धन शामिल है। हरित क्रांति ने अनाज की उत्पादकता में वृद्धि की है, लेकिन इससे कृषि जैव–विविधता का नुकसान, प्राकृतिक संसाधनों का क्षरण, विशेष रूप से मिट्टी, और खाद्य पदार्थों के रासायनिककरण भी हुआ है, जिसने लोगों की खाद्य सुरक्षा को ओर अधिक खतरे में डाल दिया है। चूंकि पूंजी और बाजार का विस्तार ग्रामीण अर्थव्यवस्था को सुधारने के लिए हुआ है, ग्रामीण रोजगार गारंटी कार्यक्रम और खाद्य और बुनियादी शिक्षा के अधिकारों के रूप में 'कल्याणकारी सरकार' का प्रसार हुआ है। जबकि कुछ करोड़पति अचल संपत्ति उद्योग और निकासी उद्योग के विस्तार के दौरान ग्रामीण परिदृश्य को बदल रहे हैं और जनसंख्या के बहुत बड़े भाग को विनाश की स्थिति में धकेल रहे हैं। भूमि उपयोग, उपयोग, अधिकार (विशेष रूप से दलितों, आदिवासियों और महिलाओं के बीच) जैसे कई मुद्दों और भूमि उपयोग के विनाशकारी और अस्थिर रूपों के विस्तार पर ध्यान देने की आवश्यकता है। ग्लोबल वार्मिंग और जलवायु परिवर्तन कृषि उत्पादकता और प्रथाओं को प्रभावित कर रहे हैं। अतः प्राकृतिक संसाधन प्रबंधन और कृषि मॉडल के लचीले और टिकाऊपन का तेजी से पता लगाया जाना चाहिए।

चूंकि मौजूदा नीतियां और गैर–नीति कार्यक्रम बड़े और पूंजी आधारित कृषि, नीतियों पर ध्यान केंद्रित करते हैं, जो बहुमत की जरूरतों को पूरा करते हैं और पूरा करते हैं, छोटे और सीमांत किसानों की स्थिति पर गंभीरता से विचार करना चाहिए। नीतिगत निर्णयों को निहित वाणिज्यिक/वित्तीय हितों के बिना लोकतांत्रिक और पारदर्शी बनाया जाना चाहिए। नए उत्पादन, विपणन, वितरण और प्रशासनिक संरचनाओं को बढ़ावा देने की तत्काल आवश्यकता है जो कि किसानों और ग्रामीण व्यवस्थाओं को आर्थिक रूप से व्यवहार्य बनाने में सक्षम बना सकते हैं।

कृषि के प्रतिगमन के साथ अनुवर्ती जोखिम नीतियों और कार्यक्रमों का एक अनुक्रम रहा है जिसके कारण शिक्षा और स्वास्थ्य जैसे सार्वजनिक संस्थानों का तेजी से निजीकरण हुआ है। बढ़ते कर्ज और लोगों को गरीबी से बचाने के लिए अकेले इन पर व्यय हो रहा है। इन संस्थानों को प्रभावी और सार्वजनिक संस्थानों की कार्यप्रणाली बहुत सी समस्याओं का समाधान कर सकती है और ग्रामीण लोगों के बड़े पैमाने पर व्यक्तिगत और घरेलू/पारिवारिक क्षमताओं को बढ़ाया जाएगा।

ग्रामीण और कृषि को एकीकृत करने के लिए, दृष्टिकोण न केवल आर्थिक बल्कि सामाजिक और संस्थागत मुद्दों का भी समाधान करना है जो ग्रामीण भारत में रोजमर्रा की जिंदगी को प्रभावित करते हैं। खाद्य सुरक्षा, बीज संप्रभुता, आय उत्पादन, और पारिस्थितिक स्थिरता जैसे मुद्दों पर ध्यान देने की आवश्यकता है। नई प्रौद्योगिकियों और जैव–प्रौद्योगिकियों (जैसे जीएम बीजों) की एक श्रेणी कॉर्पोरेट क्षेत्रों द्वारा तैनात की जानी चाहिए। महाद्वीप की जैव–विविधता के लिए उनके खतरे और ऐसे वाणिज्यिक निवेश के सामाजिक और आर्थिक प्रभावों पर पर्याप्त बहस और समीक्षा नहीं की गई है। नई ग्रामीण सेवा अर्थव्यवस्था का उदय इंगित करता है कि ऐसे तरीके हैं जिनसे ग्रामीण कृषि को स्थायी उत्पादन और निवास की कार्यस्थली बनाने के लिए प्रोत्साहित किया जा सकता है। नई और वैकल्पिक कृषि नीतियों को बाहर प्रवास के प्रवाह को काबू में करने, भूमि का परित्याग और देश में स्थापित समग्र गैर–कृशि की आवश्यकता होती है।

वर्तमान में भारत के विभिन्न हिस्सों में वैकल्पिक कृषि और ग्रामीण आजीविका और शासन के कई छोटे और व्यवहार्य मॉडल काम कर रहे हैं। आंध्र प्रदेश में समुदाय समर्थित गैर–कीटनाशक कृषि, सिक्किम में जैविक कृषि, दक्षिण भारत के विभिन्न हिस्सों में शून्य बजट कृषि, किसान/उत्पादक विपणन संगठन, गुजरात के कुछ हिस्सों में एकीकृत कृषि आदि कुछ मामले हैं। टिकाऊ कृषि में बड़ी संख्या में किसानों के नेतृत्व वाले नवाचार भी हैं जो जमीन पर इन विकल्पों की संभावना का प्रदर्शन करते हैं। इनमें से कुछ से सीखना और प्रवर्धन के लिए इन मामलों से विचारों को एकीकृत करने की संभावना पर विचार किया जा सकता है।

भारतीय उच्च अध्ययन संस्थान में 27–29 सितंबर 2016 के दौरान 'रिवाइटलाइजिंग दी रूरल : रिथिंकिंग रूरल एण्ड एग्रीकल्चरल पॉलिसिस' विषय पर एक राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन किया गया। अपार्टमेंट जी–327, ब्रिगेड कोर्टयार्ड, एचएमटी, बंगलुरू से प्रोफेसर ए.आर. वास्वी तथा संस्थान के अध्येता डॉ. प्रदीप नायक इस संगोष्ठी के संयोजक थे। संस्थान के निदेशक प्रोफेसर चेतन सिंह ने इस अवसर पर प्रतिभागियों का स्वागत किया तथा संयोजक प्रोफेसर ए.आर. वास्वी तथा डॉ. प्रदीप नायक परिचायात्मक टिप्पणी प्रस्तुत की।

प्रतिभागी

- श्री अजय वीर जाखड़, अध्यक्ष, भारत कृषि समाज, नई दिल्ली
- सुश्री शालिनी भूटानी, ए –1/702 ग्लैक्सो एप्ट्स, मयूर विहार एक्स्टेंशन, दिल्ली
- सुश्री कविता कुरुगांति, सस्टेनेबल एंड होलीस्टिक एग्रीकल्चर (आशा) एलायंस, बेंगलुरू
- डॉ. वाल्टर फर्नांडीस, उत्तर पूर्वी सोशल रिसर्च सेंटर, गुवाहाटी
- डॉ. नमिता वाही, सेंटर फॉर पॉलिसी रिसर्च, धर्म मार्ग, चाणक्यपुरी, नई दिल्ली
- श्री पी.एस. विजयशंकर, समाज प्रगति सहायोग, जटाशंकर रोड़, मध्य प्रदेश
- डॉ. एम विजयबास्कर, मद्रास इंस्टीट्यूट ऑफ डेवलपमेंट स्टडीज, चेन्नई
- प्रोफेसर सी. शंबू प्रसाद, सामान्य प्रबंधन – रणनीति और नीति, ग्रामीण प्रबंधन संस्थान, आनंद
- प्रोफेसर अभिजीत सेन, जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय परिसर, नई दिल्ली
- प्रोफेसर सुखपाल सिंह, कृषि प्रबंधन केंद्र, भारतीय प्रबंधन संस्थान, अहमदाबाद
- श्री रवि चोपड़ा, पीपुल्स साइंस इंस्टिट्यूट, देहरादून
- प्रोफेसर केशब दास, गुजरात इंस्टिट्यूट ऑफ डेवलपमेंट रिसर्च, गोटा, अहमदाबाद
- डॉ. ऋचा कुमार, सामाजिक विज्ञान विभाग, भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान, नई दिल्ली
- डॉ. दबल देब, सेंटर फॉर इंटरडिस्पिलनरी स्टडीज, कोलकाता
- डॉ. राजेश्वरी एस. रैना, राष्ट्रीय विज्ञान संस्थान, प्रौद्योगिकी एवं विकास अध्ययन, नई दिल्ली
- श्री देवेंद्र शर्मा, कोठी नं. 273, सेक्टर –54, मोहाली
- श्री दीपक सानन, हिमाचल प्रदेश सचिवालय, शिमला
- सुश्री सरोजिनी जी. ठाकुर, एचपी निजी विश्वविद्यालय नियामक प्राधिकरण, शिमला
- प्रोफेसर निर्मल सेनगुप्ता, राष्ट्रीय अध्येता, भा.उ.अ.सं., शिमला
- प्रोफेसर ए.आर. वासवी, अपार्टमेंट जी–327, ब्रिगेड कोर्टयार्ड, बैंगलोर
- डॉ. प्रदीप कुमार नायक, अध्येता, भा.उ.अ.सं., शिमला
- श्री हरीश चौहान, फल, सब्जी एवं फूल उत्पादक केन्द्र, हिमाचल प्रदेश, नव बहार शिमला
- सुश्री एन सुधा, 5 9 3, 'दुंडुभी', 24 वां क्रॉस, बीएसके द्वितीय चरण, बेंगलुरु

संगोष्ठी के दौरान प्रतिभागियों ने निम्नलिखित विषय पर अपने शोधपत्र प्रस्तुत किए–

सत्र–1

ऑरियंटेशन फॉर रूरल एग्रीकल्चल पॉलिसीस

देवेंद्र शर्मा : *एग्रेरियन क्राइसिस एण्ड पॉलिसी चैलेंजिस*

सत्र–2

मार्जिनिटीज और फ्रैगिलिटीज

डॉ. वाल्टर फर्नांडीस : *रूरल क्राइसिस एण्ड रूरल डिवेलप्मेंट इन नॉर्थईस्ट इण्डिया*

डॉ. एम विजयबास्कर : *इमर्जिंग वल्नरबिलिटीस इन द इण्डियन प्लांटेशन इकानमी*

प्रोफेसर एआर वासवी : *मैटरस ऑफ लाइवलिटी : रिऑरियंटिंग पॉलीसी टूवर्डस द मार्जिनलाइज्ड मेजोरिटी*

सत्र–3

रूरल पब्लिक इन्स्टीटूशनस

प्रोफेसर राजेश्वरी रैना : *साइंस फॉर एग्रीकल्चरल पॉलिसी अप्रेजल एण्ड रिफॉर्म : इज देयर एनी स्कोप फॉर होप?*

डॉ. शालिनी भूटानी : *क्लैक्टिंग पीपल, कन्जर्विंग नॉलेज? इंटैक्चुअल प्रापर्टी राइट* (आईपीआर)

सुश्री कविता कुरंगती : *एस्योरड इनकम फॉर आल फार्म हाउसहोल्डस*

सत्र–4

रिसोर्स एण्ड रेगुलेटरी रिजीमस

डॉ. प्रदीप नायक : *लैण्ड टिलिंग एण्ड इमर्जिंग पॉलिटिकल इकनामी ऑफ लैण्ड इन इण्डिया*

डॉ. नमिता वाही : *अंडरस्टैण्डिग कन्फ्लिक्ट ओवर लैण्ड एक्वीजिशन इन इण्डिया*

श्री पी एस विजय शंकर : *रिफॉर्मिंग वाटर गवर्नेंस इन इण्डिया : ए प्रोपोजल*

सत्र–5

सीड एण्ड ग्रेन पॉलिसीस

डॉ. दबल देब : *क्लाइमेट चेंज, जेनेटिक डाइवर्सिटी कन्जर्वेशन एण्ड फूड सिक्योरिटी*

डॉ. ऋचा कुमार : *एग्रीकल्चरल मार्केटिंग इन इण्डिया : मेकिंग मार्केटस वर्क फार फार्मरस*

प्रोफेसर सुखपाल सिंह : *कार्पोरेट इंटरफेस विद द इण्डियन एग्रीकल्चरल सैक्टर : स्मालहोल्डर एण्ड वर्कर परस्पैक्टिवस*

सत्र–6

एप्रोप्रिएट एण्ड अल्ट्रानेटिव टैक्नॉलजी

प्रोफेसर निर्मल सेनगुप्ता : *पोस्ट–फ्लड रूरल रिवाइटलाइजेशन– सम इश्यूस*

श्री रवि चोपड़ा : *रूरल टैक्नॉलजीस*

प्रोफेसर शंबू प्रसाद सी. : *रिथिंकिंग द टैक्नालजी क्वेश्चनस न एग्रीकल्चर; सम थॉटस ऑन रूरल मैकानाइजेशन एण्ड स्केल एप्रोपरिएट च्वाइस*

सत्र–7

स्पोर्टिव पालिसीस एण्ड प्रोग्रामस

प्रोफेसर केशब दास : *रिजवेनेटिंग क्राफ्ट क्लस्टरस इन रूरल इण्डिया : चैलेंजिस फॉर पालिसीस*

श्री अजय वीर जाखड़ : *फेल्यर ऑफ फार्मर ऑग्रेनाइजेशनस टू डिलिवर फार्मरस प्रास्पेरिटी*

सत्र–8

व्हाट एइल्स रूरल सेनिटेशन इन इण्डिया

श्री दीपक सानन : *व्हाट एइल्स रूरल सेनिटेशन इन इण्डिया?*

महत्वपूर्ण चर्चा और विभिन्न बिंदुओं का सारांश; रिपोर्ट पूरा करने का मार्ग प्रशस्त; तत्पश्चात व्यस्तता और सहयोग

12. 'लैंग्वेज एण्ड लर्निंग' विषय पर कार्यशाला (6–8 अक्तूबर 2016)

मूलाधार– अक्सर कहा जाता है कि भाषा हमारी पहचान है, जोकि मास मीडिया, विज्ञापन, लिंग अंकन, विनम्रता व्यवहार, वर्ग निर्माण, राजनीतिक गतिविधि और सबसे महत्वपूर्ण रूप इसका शिक्षा है जो एक विशिष्ट भूमिका निभाता है। इस कार्यशाला में विशेष रूप से स्कूली बच्चों के बीच भाषा द्वारा सुलभ संज्ञानात्मक और संवादात्मक कौशल पर ध्यान दिया गया। ऐसा इसलिए है क्योंकि यह व्यापक रूप से स्वीकार कर लिया गया है कि 'भाषा जैव–कार्यक्रम' परिकल्पना लेनिनबर्ग द्वारा प्रस्तावित कार्यक्रम है जो 'भाषा खिड़की' का सुझाव देता है जो जन्म से लेकर युवावस्था तक खुला रहती है। यद्यपि यह खिड़की पूरी तरह से बंद नहीं होती है, लेकिन बच्चे 1–14 साल की उम्र के बीच एक या अधिक भाषाओं को आसानी से प्राप्त करते हैं। इस बात का भी प्रमाण है कि यह शायद जीवनकाल तक रहने के लिए मानसिक क्षमताओं वाले व्यक्ति को लैस करने के लिए सबसे उपयुक्त अवधि है।

स्पष्ट रूप से, भाषा हमारे अस्तित्व का केंद्र है। यह अकल्पनीय है कि भाषा के बिना हम कभी भी अपने समाज, संस्कृतियों और ज्ञान की प्रणालियों, पूर्व इतिहास, वर्तमान विवादों और जटिलताओं के बारे में महत्वपूर्ण प्रश्न उठा सकते हैं। रवींद्रनाथ टैगोर से लेकर पाउलो फ्रीर तथा नोएम चॉम्स्की जैसे शिक्षकों और विचारकों ने भाषा को बहुत पहले से मानसिक धुरी, ज्ञान के संचरण के लिए प्राथमिक माध्यम, अभिनव विचारों और महत्वपूर्ण सोच की अभिव्यक्ति के रूप में माना है। शिक्षा, वास्तव में, आदर्श रूप से प्रश्नोत्तरी की ऐसी भाषाई रूप से संचालित प्रक्रियाओं के साथ–साथ विज्ञान और कला के पूरे क्षेत्रों में हर उम्र में कुछ बुनियादी प्रश्नों के उत्तर देने और पुन : प्रारंभ करने के निरंतर प्रयासों के साथ शुरूआत की जानी चाहिए।

हालांकि, विडंबना यह है कि 'स्वयं' को आकार देने के लिए भाषा रूपी यह मौलिक उपकरण, जिसके बारे में पाणिनी से आगे भारतीय उपमहाद्वीप में सोचने की एक बेहद परिष्कृत परंपरा रही है, को समकालीन भारतीय शिक्षा परिदृश्य में बहुत उपेक्षित किया गया है। यह विशेष रूप से आश्चर्यजनक है कि भाषाओं और लिपियों की हमारी समृद्ध विरासत, स्वतंत्रता के बाद 'भाषाई राज्यों' का ऐतिहासिक गठन, भारत की 'आधिकारिक भाषा' पर संविधान सभा में जोरदार बहस, भारतीय की प्रमुख आठवीं अनुसूची संविधान 60 के दशक में 'तीन भाषा सूत्र' तैयार करने और भारत के भाषाओं की सूची में समर्पित है।

यह कैसे हो सकता है कि भाषा के बारे में सोचने की इतनी शक्तिशाली विरासत को भुला दिया गया है या, कम से कम, आज भी भारत में स्पष्ट रूप से स्पष्ट होने के लिए बहुत अराजक और कोलाहल बन गया है? जिस तरह से हम भाषा और सीखने के बीच संबंधों की कल्पना करते हैं, उसमें स्पष्टता की कमी इस देश में हमारे स्कूल

और विश्वविद्यालय शिक्षा की नींव को गहराई से प्रभावित कर सकती है। इसके अलावा, भारत के तेजी से बदलते परिदृश्य में, जोकि बढ़ती हुई वैश्विक दुनिया में एक विशिष्ट युवा जनसांख्यिकीय है, मन के वह गुण जो हम चाहते हैं कि हमारे युवा नागरिकों के पास हों और वे आशावादी भविष्य तक पहुंच जाएं, वे अनजाने में भाषाई प्रश्न के साथ बंधे हुए हैं। इस कारण इस कार्यशाला का विषय काफी आवश्यक बन जाता है।

आज, यह व्यापक रूप से स्वीकार किया जाता है कि हमारे स्कूल के बच्चों में शिक्षा की गुणवत्ता बेहद परिवर्तनीय है, जिनके पास अत्याधिक भाषा सीखने का विशेषाधिकार प्राप्त है और दूसरी तरफ वे भी जिन्हें भाषा सीखने से वंचित होना पड़ता है। कोई इसे भाषा कुपोषण की दुर्बलता के नाम से पुकार सकता है। इसके अलावा, रट्टा लगाना तथा दंडनीय परीक्षाओं की समस्याएं ग्रेड और सिर्फ ग्रेड प्रणाली द्वारा ही पैदा होती हैं। यह बिना किसी बहस और पूछताछ के इतनी प्रचलित हैं कि उन्हें हटाने के लिए भी बहुत कठिन कार्य है। जैसा कि टैगोर ने इसका बहुत पहले उल्लेख कर रखा है–

हमारे बचपन से ... हम बदले में जानकारी प्राप्त करने के लिए हमारी दुनिया खोने के लिए तैयार हैं। हमने उसे भूगोल सिखाने के लिए अपनी पृथ्वी के बच्चे को लूट लिया, उसे व्याकरण सिखाने के लिए भाषा का ... बच्चों के दिमाग दुनिया के प्रभावों के प्रति संवेदनशील हैं ... यह संवेदनशील ग्रहण उन्हें बिना किसी तनाव के, मास्टर भाषा के लिए अनुमति देता है, जो सबसे जटिल है और अभिव्यक्ति का कठिन साधन, अनिश्चित विचारों और अमूर्त प्रतीकों से भरा ... बचपन में हम शरीर और दिमाग दोनों की सहायता से सबक सीखते हैं, सभी इंद्रियां सक्रिय और उत्सुक हैं।

इस कार्यशाला में भारत की 21वीं शताब्दी के तेजी से उत्परिवर्ती संदर्भ की पुनः कल्पना की गई जोकि करीब एक शताब्दी पूर्व रवींद्रनाथ टैगोर ने 'शरीर और मस्तिष्क' के माध्यम से शैक्षणिक चिंताओं को बड़ी तीव्रता से व्यक्त किया था।

ऐसा कहा जाता है कि टैगोर के बाद से वैश्विक आधुनिकता और आधुनिकता के बाद अकादमिक में 'भाषाई मोड़' द्वारा चिह्नित किया गया है, जिसके दौरान भाषा सीखने पर विभिन्न दृष्टिकोण विकसित किए गए थे। उदाहरण के लिए चॉम्स्की जैसे विद्वानों का मानना है कि भाषा नियम 'जन्मजात' हैं यानी वे समाज के संपर्क में आने से पहले मानव दिमाग में पहले से मौजूद हैं। फिर भी दूसरों का मानना है कि 'सामान्य संज्ञानात्मक क्षमताओं' जो दूसरी प्रकार की शिक्षा के लिए है भाषा का ही रूप है। बहुत से विचारक इस दृष्टिकोण से सहमत हैं कि भाषा अनिवार्य रूप से सामाजिक रूप से अंतःस्थापित है और उसे सीखने के सभी सीखने की सारी प्रक्रिया सामाजिक संबंधों से होती है। कुछ भाषा को केवल शब्द–संग्रह और वाक्य–विन्यास के संयुक्त के रूप में देखते हैं लेकिन सभी सहमत हैं कि भाषा का रूप जटिल और हमारे मानवता की सबसे महत्वपूर्ण विशेषता है। इस कार्यशाला में शिक्षा के हमारे दृष्टिकोण में मौजूदा अभाव का एक नया विश्लेषण करने के लिए इन सैद्धांतिक दृष्टिकोणों में से कुछ का निरीक्षण किया गया।

तीस साल पहले, एक शैक्षणिक मानवविज्ञानी शर्ली ब्रिस–हीथ ने एक प्रसिद्ध शोधपत्र में भविष्यवाणी की थी कि दशकों में भाषा विज्ञान से आने वाली भाषा के बारे में कार्यात्मक ज्ञान गणित, भौतिकी और जीवविज्ञान के कुछ सिद्धांतों की तरह होगी तथा अन्य विषयों के साथ–साथ व्यावहारिक डोमेन जैसे शिक्षक प्रशिक्षण, कानूनी और चिकित्सा शिक्षा, और कंप्यूटर सॉफ्टवेयर उत्पादन के लिए बुनियादी ज्ञान ... भाषा तेजी से कंप्यूटर विज्ञान से लेकर औद्योगिक समाजशास्त्र तक के क्षेत्रों के शोध डोमेन का एक प्राकृतिक हिस्सा होगा।

ऐसी भविष्यवाणी के साथ आज असहमत होना मुश्किल है। भाषा जैसी जटिल घटना का अध्ययन करने का दृष्टिकोण केवल प्रकृति में बहुआयामी हो सकता है। इस कार्यशाला में भाषा शिक्षण के क्षेत्र में पेशेवर शिक्षकों और चिकित्सकों के साथ भाषाविदों, वैज्ञानिकों और अन्य शिक्षाविदों को एक मंच पर लाया गया। इससे न केवल भाषा की प्रकृति के बारे में जागरूकता पैदा हुई और व्यापक अर्थों में सीखने के अपने गहरे संबंधों को समझाने का लक्ष्य रखा

गया बल्कि व्यावहारिक और कार्यान्वयन योग्य उपायों के सेटों की भी सिफारिश की गई जो कलम की रक्षा करने वाले सभी लोगों के हाथों को मजबूत करेंगे – यहां तक कि यदि नई कहानियों को बताने के लिए 'पेन' के तेजी से कंप्यूटर होने की संभावना भी है।

06–08 अक्टूबर 2016 के दौरान भा.उ.अ.सं., शिमला में 'भाषा और शिक्षा' पर कार्यशाला का आयोजन किया गया। प्रोफेसर रुक्मिणी भाया नायर, मानविकी एवं सामाजिक विज्ञान विभाग, भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान, हौजखा, नई दिल्ली और डॉ. राजेश कुमार, मानविकी एवं सामाजिक विज्ञान, भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान मद्रास, चेन्नई इस कार्यशाला के संयोजक थे। प्रोफेसर विजय शंकर वर्मा, राष्ट्रीय अध्येता, भा.उ.अ.सं., शिमला द्वारा प्रतिभागयों का स्वागत किया गया। संयोजक रूकमणि भाया नायर ने कार्यशाला में स्वागत उद्‌बोधन प्रस्तुत किया।

प्रतिभागी

- प्रोफेसर आर गोविंदा, सामाजिक विकास परिषद, नई दिल्ली
- डॉ. इरफानुल्ला फारूकी, समाजशास्त्र विभाग, अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय, अलीगढ़
- डॉ. हेमचंद्रन करह, मानविकी और सामाजिक विज्ञान विभाग, भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान, मद्रास, तमिलनाडु
- प्रोफेसर आलोक राय, अंग्रेजी विभाग, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली
- डॉ. मुमताज बेगम, स्कूल ऑफ एजुकेशन, पांडिचेरी सेंट्रल यूनिवर्सिटी, पुडुचेरी
- डॉ. रथ जेड हौजेल, गीताम विश्वविद्यालय, हैदराबाद, तेलंगाना
- डॉ. रुक्मिणी बनर्जी, प्रथम शिक्षा फाउंडेशन, नई दिल्ली
- प्रोफेसर अजीत मोहंती, जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय, दिल्ली
- डॉ मीनाक्षी पवहा, अंग्रेजी एवं आधुनिक यूरोपीय भाषा विभाग, लखनऊ विश्वविद्यालय, लखनऊ
- डॉ. राजेश कुमार, मानविकी एवं सामाजिक विज्ञान, भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान मद्रास, चेन्नई
- श्री क्षीर कुमार दाश, राष्ट्रीय शैक्षणिक योजना एवं प्रशासन विश्वविद्यालय, नई दिल्ली
- प्रोफेसर अनीता रामपाल, शिक्षा संकाय, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली
- डॉ. ओम प्रकाश, मानविकी और सामाजिक विज्ञान स्कूल, गौतम बुद्ध विश्वविद्यालय, नोएडा, उत्तर प्रदेश
- सुश्री स्नेहलाता गुप्ता, शिक्षा संकाय, केन्द्रीय शिक्षा संस्थान, दिल्ली विश्वविद्यालय, नई दिल्ली
- श्री संजीत चक्रवर्ती, दर्शन विभाग, जादवपुर विश्वविद्यालय, कोलकाता, पश्चिम बंगाल
- डॉ. एनी कोशी, सेंट मैरी स्कूल, सफदरजंग एनक्लेव, नई दिल्ली
- प्रोफेसर परविन सिंक्लेयर, स्कूल ऑफ साइंसेज, इग्नू, नई दिल्ली
- सुश्री दीपा किरण, हाउस संख्या 107, प्लॉट संख्या 22–23, रामानिया अपार्टमेंट, ज्योति कॉलोनी, हैदराबाद
- प्रोफेसर रोहित धंकर, अजीम प्रेमजी विश्वविद्यालय, बेंगलुरु, कर्नाटक
- प्रोफेसर रुक्मिणी भाया नायर, मानविकी और सामाजिक विज्ञान विभाग, भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान, हौज खास, नई दिल्ली

- प्रोफेसर अम्बा कुलकर्णी, अध्येता, भा.उ.अ.सं., शिमला
- डॉ. आर ललिता राजा, अध्येता, भा.उ.अ.सं.,शिमला
- प्रोफेसर महेश चंपकलाल, अध्येता, भा.उ.अ.सं., शिमला
- प्रोफेसर पुन्नुपुरथ माधवन, अध्येता, भा.उ.अ.सं., शिमला
- सुश्री प्रीतम प्यारी, एजुकेशनल इंस्टिट्यूट दयालबाग, आगरा, उत्तर प्रदेश
- सुश्री स्वाती माजता, रिसर्च विद्वान, राजस्थान विश्वविद्यालय, अजमेर, राजस्थान

प्रतिभागियों ने कार्यशाला के दौरान निम्नलिखित विषय पर शोधपत्र प्रस्तुत किए–

सत्र–1

स्कूल एण्ड टैक्स्ट्स

डॉ रुक्मिणी बनर्जी : *चैलेंजिस फॉर स्कूल एजेकेशन इन इण्डिया टूडे*

प्रोफेसर अजीत मोहंती : *मल्टीलिंगुअलिजम : ए कग्निटिव रिसोर्स ऑर बर्डन*

डॉ. एनी कोशी : *इन्क्लूशिव एजूकेशन : लॉ, लैंग्वेज एण्ड एट्टीच्यूडस टूवर्डस डिसेबिलिटी*

सत्र–2

लर्निंग डिसेबिलिटीस, कल्चर एण्ड कग्निशन

सुश्री स्वाती माजता : *रोल ऑफ जेस्चर एण्ड आई कॉटैक्ट इन टीचिंग एण्ड लर्निंग कम्युनिकेशन अमंग स्कूल स्टूडैण्ट्स एण्ड टीचरस*

सुश्री प्रीतम प्यारी : *विजुअल लर्निंग : बून फॉर डेफ स्टूडैण्टस*

डॉ. आर ललिता राजा : *इम्पलिकेशन ऑफ कग्निशन ऑन लैंग्वेज लर्निंग इन चिल्ड्रन विद डिस्लेक्सिया*

डॉ. मुमताज बेगम : *साइन लैंग्वेज ऑफ द हियरिंग एम्पायरड– ए पॉसिटिव साइन ऑफ द कग्निटिव माइंड*

डॉ. प्राची दुबले : *पूलसाइड थियेटर परफॉर्मेंस : ''सांग ऑफ इण्डिया : कुनैक्शनस बिटवीन वेरियस म्युजिकल ट्रैडिशनस''*

सत्र–3

नेचर एण्ड स्ट्रक्चर ऑफ लैंग्वेज

प्रोफेसर रोहित धनकर : *लैंग्वेज, लॉजिक एण्ड ह्यूमन अंडरस्टैण्डिग*

डॉ. राजेश कुमार एवं डॉ. ओम प्रकाश : *लर्निंग ऑफ लैंग्वेज इंटरफेस विद आई/ई लैंग्वेज डिस्टिंक्शन*

प्रोफेसर अम्बा कुलकर्णी : *इम्पॉरटेंस ऑफ इन्फोर्मेशन डायनामिक्स इन लर्निंग ह्यूमन एण्ड प्रोग्रामिंग लैग्वेजिस*

डॉ. इरफानुल्ला फारूकी : *अंडरस्टैण्डिग मिस्टेकस एज साइट्स ऑफ पॉसिबिलिटीस : रिविजिटिंग सक्सेस एण्ड फेल्यर इन द कंटैक्स्ट ऑफ एलीमेंटरी एजूकेशन*

सत्र– 4

पैडागोजी एण्ड लर्निंग

प्रोफेसर अनीता रामपाल : *लैंग्वेज फॉर लर्निंग*

श्री क्षीर कुमार दाश : *स्कूलिंग ऑफ ट्राइबल चिल्ड्रन थ्रू मल्टीलिंगुअल एजेकेशन प्रोग्राम : ए स्टडी ऑफ सिलेक्टिड स्कूलस इन ओड़िशा*

डॉ. रूथ जे. हौजेल : *लैंग्वेज टीचिंग एण्ड लर्निंग इन ए मल्टीलिंगुअल कंटैक्स्ट ऑफ नॉथ ईस्ट रीज़न*

सुश्री स्नेहलाता गुप्ता : *इंग्लिश इन गवर्न्मेंट स्कूलस इन दिल्ली*

सत्र–5

क्रिएटिविटी, लिट्रेचर, परफॉर्मेंस एण्ड इमानिसिपेशन

डॉ. मीनाक्षी पवहा : *रोल ऑफ जेण्डर एण्ड क्लास इन इंग्लिश लैंग्वेज लर्निंग : ए स्टडी ऑफ रूरल एण्ड एरियास इन एण्ड अराउंड लखनऊ*

डॉ. हेमचंद्रन करह : *डेक्रीपिट प्रेजेंस ऑफ द आइडिया ऑफ केयर विदइन द लैंग्वेज ऑफ इमानसीपेटरी पैडागोजी : ए फ्यू कन्सीडरेशन*

सुश्री दीपा किरण : *स्टोरी टेलिंग एण्ड स्कोप फॉर लैंग्वेज लर्निंग : टीचर एण्ड स्टूडैण्ट डिवेलप्मेंट पॉसिबिलिटी*

श्री संजीत चक्रवती : *सीइंग थ्रू लैंग्वेज*

प्रोफेसर महेश चंपकलाल : *लर्निंग लैंग्वेज थ्रू थियेटर*

सत्र–6

गोलमेज चर्चा

- प्रोफेसर रुक्मिणी भाया नायर
- प्रोफेसर अजीत मोहंती
- प्रोफेसर आलोक राय
- प्रोफेसर अम्बा कुलकर्णी
- प्रोफेसर अनीता रामपाल
- डॉ. एनी कोशी, प्रिंसिपल
- सुश्री दीपा किरण
- डॉ. हेमचंद्रन करह
- डॉ. इरफानुल्ला फारूकी

- श्री क्षीर कुमार डैश
- प्रोफेसर महेश चंपकलाल
- डॉ. मीनाक्षी पवहा
- डॉ. मुमताज बेगम
- डॉ. ओम प्रकाश
- प्रोफेसर परविन सिंक्लेयर
- प्रोफेसर पुणापुरथ माधवन
- सुश्री प्रीतम प्यारी
- प्रोफेसर आर गोविंदा
- डॉ. आर ललिता राजा
- डॉ. राजेश कुमार
- प्रोफेसर रोहित धनकर
- डॉ. रुक्मिणी बनर्जी
- डॉ. रूथ जेड हौजेल
- श्री संजीत चक्रवर्ती
- सुश्री स्वाती माजता

निष्कर्ष तथा रोडमैप

13. ''द इसेन्शियल टैगोरः वांडरर बिहोल्ड, दीज ट्रीज आर प्रेयरस!'' विषय पर कला कार्यशाला (19–22 अक्तूबर 2016)

मूलाधार– प्रकृति की पवित्रता तथा समस्त सृष्टि एक महत्त्वपूर्ण भारतीय प्रतिमान है जिसका रवीन्द्रनाथ टैगोर ने पूरे दिल से समर्थन किया है। उन्होंने अपने काव्य और गद्य में अनेक तरीकों से पवित्रता को व्याख्यायित किया है। टैगोर ने लाक्षणिक जगत में वृक्ष को एक विशेष स्थान प्रदान किया है। उपनिषदों में वृक्ष को जीवन का प्रतीक माना है। जड़े आसमान में थी जिनके माध्यम से उत्कृष्ट मण्डल से पोशण प्राप्त होता था। रवीन्द्रनाथ टैगोर ने वृक्ष की पवित्रता में और कई परतें जोड़ दीं जिसका साक्ष्य उनकी सुप्रसिद्ध कविता *वृक्ष बंदना/वृक्षों का स्तुति गान* में मिलता है। वृक्ष को सृजनात्मक जीवन–शक्ति का प्रतीक मानते हुए टैगोर ने एक पर्यावरण–अध्यात्मवाद का विकास किया है जिसने समस्त प्राणी जगत; जड़वत वस्तुओं को समाविष्ट किया है जैसा कि उन्होंने इसे इस जगत की आध्यात्मिक गूँज के रूप अनुभूति की है। आधुनिक पारिस्थितिकी प्रयोजन पर्यावरण की सुरक्षा प्रकृति को पवित्रता की श्रेणी में और मजबूती मिलती है विशेषकर प्रकृति के प्रतिमान के रूप में वृक्षों की पवित्रता जोकि हमारी पारिस्थितिक जागरूकता के मूल में निहित है। कलाकार इस जागरूकता को नवीन पद्धतियों से व्यक्त कर सकते हैं।

संस्थान में ''द इसेन्शियल टैगोरः वांडरर बिहोल्ड, दीज ट्रीज आर प्रेयरस!'' विषय पर 19 अक्तूबर से 22 अक्तूबर 2016 के दौरान एक कला कार्यशाला का आयोजन किया गया। हिमाचल प्रदेश विश्वविद्यालय में ललित कला

के संकायाध्यक्ष प्रोफेसर हिम चटर्जी इस कार्यशाला के संयोजक थे। संस्थान के राष्ट्रीय अध्यक्ष प्रोफेसर विजय शंकर वर्मा ने इस अवसर पर स्वागत उद्‌बोधन प्रस्तुत किया। कार्यशाला के संयोजक प्रोफेसर हिम चटर्जी ने परिचायात्मक टिप्पणी प्रस्तुत की जबकि टैगोर अध्येता प्रोफेसर मार्टिन कैम्प्चेन ने उद्‌घाटन भाषण प्रस्तुत किया।

प्रतिभागी

- प्रोफेसर हिम चटर्जी, प्रदर्शन एवं दृश्य कला संकाय, हि.प्र. विश्वविद्यालय, शिमला
- श्री सुदांशु सूटर, बी– 127, केन्द्रीय विहार, सेक्टर –56, गुड़गांव
- श्री भज्जू श्याम, 57 आकाशवाणी कॉलोनी, कोटरा, सुल्तानाबाद, मध्य प्रदेश
- डॉ. मार्टिन कैम्पचेन, टैगोर अध्येता, भा.उ.अ.सं., शिमला
- श्री संन्यासी लोहार, पूरबल्ली, शांति निकेतन, पश्चिम बंगाल
- श्री हेमंत द्विवेदी, दृश्य कला विभाग, एम.एल. सुखदायिया विश्वविद्यालय, उदयपुर
- श्री रजत नंदी, भारतीय कला एवं ड्राफ्टमैनशिप महाविद्यालय, कोलकाता
- श्री बाबू सी., श्रीवलसम, टी.बी. रोड़, अंगमाली, केरल
- श्री श्याम शर्मा, पूर्व प्राधानाचार्य, ललित कला महाविद्यालय (पटना विश्वविद्यालय), पटना, बिहार
- प्रोफेसर विजय शंकर वर्मा, राष्ट्रीय अध्येता, भा.उ.अ.सं., शिमला
- श्री विनी वाधरा, 1071 हाउस नंबर, सेक्टर 18–सी, चंडीगढ़
- श्री गौतम पाल, महालक्ष्मी बालाजी एवेन्यू, फ्लैट नंबर –107, सुदर्शन नगर, हैदराबाद
- डॉ. विजय एम. धोरे, 2–2–12/5, डी.डी. कॉलोनी, शिवम रोड़, लाइफ अस्पताल के पास, हैदराबाद
- श्री कानू पटेल, लज्जा– दूसरा तल, सुपर मार्केट, राजेंद्र मार्ग, वल्लहब विद्या नगर, आनंद, गुजरात

14. ''साइंस एण्ड स्पिरिचुएलिटी : ब्रिजिस ऑफ अंडरस्टैण्डिग'' विषय पर अंतर्राष्ट्रीय संगोष्ठी (21–23 नवंबर 2016)

मूलाधार–'आत्मनिर्भरता, जो सभी आध्यात्मिक अनुभवों का प्रतीक है, वह विज्ञान, कला और नैतिकता की खोज के लिए समर्पित जुनून में मौजूद है।' (डॉ. एस. राधाकृष्णन्)

'सबसे खूबसूरत चीज जिसका हम अनुभव कर सकते हैं वह रहस्यमय है' यह सभी सच्ची कलाओं और विज्ञान का स्रोत है।' (अल्बर्ट आइंस्टीन)

मनुष्य ने सच्चाई की खोज के लिए अनके मार्ग अपनाए हैं जिनकी अनेक पद्धतियां हैं। आज के परिप्रेक्ष्य में विज्ञान और आध्यात्मिकता इन पद्धतियों में सबसे अधिक महत्त्वपूर्ण हैं। विज्ञान तथा इसकी अनुप्रयोगिक प्रौद्योगिकी ने हमें अनेक सुख–साधन जुटाएं हैं और जो हमारे वर्तमान जीवन के हर पहलु में व्याप्त है।

वे दुनिया के साथ हमारे रिश्ते को भी आकार देते हैं। साथ ही, पूर्व और पश्चिम दोनों में, आंतरिक अर्थ खोजने के लिए मानवता की लगातार बढ़ती आवश्यकता है। दुनिया भर में आध्यात्मिक परंपराओं और प्रथाओं में शरण की

निरंतर खोज है। विज्ञान, आध्यात्मिकता दोनों, ब्रह्मांड के रहस्यों और पदार्थ और आत्मा के आंतरिक कार्यों को जानने का प्रयास करते हैं। दोनों दृष्टिकोण सत्य की तलाश के प्रति प्रतिबद्ध हैं, और एक तरलता है जो साधक को किसी भी बिंदु पर रुकने की अनुमति नहीं देती है। विज्ञान लगातार नई खोजों की ओर बढ़ता है, और आध्यात्मिकता चेतना के गहरे आयामों की तलाश करती है। वैज्ञानिक पद्धति, अनुभवजन्य साक्ष्य पर निर्भर, और आध्यात्मिक अभ्यास, आंतरिक अनुभव के उद्देश्य से ब्रह्मांड की महानता और मानव भावना की गहराई पर आश्चर्य की भावना साझा करते हैं। जैसे ही सहज प्रेरणा के क्षणों ने कुछ सबसे बड़ी वैज्ञानिक खोजों को जन्म दिया है, आध्यात्मिक परंपराएं अंतर्ज्ञानी, प्रबुद्ध अंतर्दृष्टि से उत्पन्न होती हैं और प्रमाण प्रस्तुत करती हैं। आदर्श रूप से, दोनों विषयों को अपने लक्ष्य तक पहुंचने के लिए के लिए एक मुक्त दिमाग, निष्पक्षता और निर्विवाद की आवश्यकता होती है। मानव परिस्थितियों की सीमाओं और उन पर काबू पाने का तरीका, वैज्ञानिक और आध्यात्मिक दृष्टिकोण दोनों के लिए न केवल प्रासंगिक है, बल्कि यह एक अधिक समावेशी और एक कृपालु अस्तित्व की ओर ईशारा करता है–

हर इंसान ब्रह्मांड के एक हिस्से का हिस्सा है, जो समय और स्थान में सीमित है। वह अपने आप, अपने विचारों और भावनाओं का अनुभव करता है जोकि उसे बाकी से भिन्न करते हैं, उसकी चेतना एक प्रकार का आँख का भ्रम है। यह भ्रम हमारे लिए एक प्रकार की कैद है, जो हमें हमारी अपनी इच्छाओं और हमारे कुछ नजदीकी लोगों के स्नेह तक सीमित करता है। हमें इस कैद से स्वयं को मुक्त करना होगा और सभी प्राणियों और पूरी प्राकृतिक सुन्दरता को करूणामयता से गले लगाना होगा।

पिछली शताब्दी के दौरान हमने दोनों क्षेत्रों के महान व्यक्ति देखे हैं जिन्होंने एक दूसरे को समझने का प्रयास किया और परस्पर भ्रातृभाव स्थापित किया। आशान्वित होने का बहुत बड़ा कारण है कि *''ये दोनों अपने ही दिनों में एक दूसरे के साथ निकटता में आते हैं, ताकि वे एक–दूसरे की सहायता और सशक्त कर सकें, एक सामान्य कारण में नौकर के रूप में पाए जा सकते हैं, न कि विरोधी और असंगत विचारों के रूप में।''*[1] क्वांटम यांत्रिकी ने वास्तविकता की हमारी समझ और दुनिया के बारे में हमारे लंबे विचारों को गहराई से चुनौती दी है। नील्स बोहर का कथन *''जो कुछ भी हम वास्तविक कहते हैं वह उन चीजों से बना है जिन्हें वास्तविक नहीं माना जा सकता''।* माया की हिंदू अवधारणा गूंज उठती है। इरविन श्रोडिंगर के शब्दों *'क्वांटम भौतिकी इस प्रकार ब्रह्मांड की मूल एकात्मकता को प्रकट करती है'।* यह एकात्मकता के आध्यात्मिक अनुभव के साथ अच्छी तरह से गुंजाईमान होती है, जिसे पूर्व और पश्चिम के संतों और ऋषियों ने सदियों से इतने उत्साहपूर्वक गाया है।

दूसरी तरफ, श्री अरबिंदो यह स्वीकार करते हैं कि कैसे विज्ञान आध्यात्मिक प्रथाओं को समझने में हमारी सहायता और सुधार करने में सहायता कर सकता है– ''योगिक विधियों में मनुष्य के पारंपरिक मनोवैज्ञानिक कार्यकलापों के संबंध उसी प्रकार हैं जिस प्रकार बिजली या भाप के बल का वैज्ञानिक संबंध है या फिर प्रकृति में उनके सामान्य संचालन के भाप की आवश्यकता है। और वे भी, विज्ञान के संचालन की तरह, नियमित प्रयोग, व्यावहारिक विश्लेषण और निरंतर परिणाम द्वारा विकसित और पुष्टि के ज्ञान पर बने होते हैं।[2]''

परम पावन दलाई लामा पिछले कुछ दशकों से वैज्ञानिकों के साथ बातचीत कर रहे हैं, जो कि तंत्रिका विज्ञान के साथ संबंधित हैं। हमें इस महत्वपूर्ण और युग बनाने वाली बातचीत से जुड़ना होगा। सोसाइटी ऑफ न्यूरोसाइंस (वाशिंगटन, डीसी) को संबोधित करते हुए, दलाई लामा ने कहा था, ''मेरा मानना है कि तंत्रिका विज्ञान और बौद्ध चिंतनशील परंपरा के बीच सहयोग नैतिकता और तंत्रिका विज्ञान के अंतरापृष्ठ के बेहद महत्वपूर्ण सवाल पर ताजा प्रकाश डाल सकता है ...। इस विमर्श में दोनों मानव मस्तिष्क के अनुभवजन्य अवलोकन तथ्यों का सामान्य आधार पा

1 एन्नी बेसेंट, मॉडरन साइंस एण्ड हायर सेल्फ (अद्यार, 1915)
2 श्री अरबिंदो, दी सिन्थेसिस ऑफ योगा, पृष्ठ 7, पाण्डिचेरी, 1999

सकते हैं, जबकि एक दूसरे के अनुशासनात्मक ढांचे को लघुकारक करने के प्रलोभन में नहीं आते..।[3]

विरोधियों और विभाजन को नियंत्रित करने प्रयास इस संगोष्ठी का आयोजन किया गया। हम न तो विज्ञान के बिना और आध्यात्मिकता के बिना जी सकते हैं, और यह दोनों के बीच के अंतर का एक सेतु है जो समाज में अधिक सद्भाव में योगदान देगा। डॉ. एस. राधाकृष्णन का दृष्टिकोण हमारे लिए बहुत आवश्यक है– 'विज्ञान, कला और नैतिकता के क्षेत्र में प्रगति से पता चलता है कि अहम् और निःस्वार्थ को अपेक्षाकृत विरोध नहीं किया जाता है। यह विपक्ष को तोड़ने के लिए मनुष्य का व्यवसाय है, और दोनों एक ही भावना व्यक्त करते हैं। यह विचार प्रकृति और आत्मा के बीच संतुलन को पुनः स्थापित करता है, और जीवन को श्रेष्ठकर बनाता है।[4]''

भा.उ.अ.सं., शिमला में 21 नवंबर 2016 से 23 नवंबर 2016 के दौरान ''साइंस एण्ड स्पिरिचुएलिटी : ब्रिजिस ऑफ अंडरस्टैण्डिग'' विषय पर अंतर्राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन किया गया। संस्थान की राष्ट्रीय अध्येता प्रोफेसर बैटिना शारदा बूमर इस संगोष्ठी की संयोजक थीं। इस अवसर पर संस्थान के निदेशक प्रोफेसर चेतन सिंह ने प्रतिभागियों का स्वागत किया जबकि प्रोफेसर बैटिना बूमर ने संगोष्ठी की परिचायात्मक टिप्पणी प्रस्तुत की। राष्ट्रीय विज्ञान अकादमी, 5, लाजपतराय रोड़, मुमफोर्डगंज, इलाहाबाद से आए अध्येता प्रोफेसर पार्था घोष ने बीज–भाषण प्रस्तुत किया।

प्रतिभागी

- प्रोफेसर पार्था घोष, अध्येता, राष्ट्रीय विज्ञान अकादमी, 5, लाजपतराय रोड़, मुमफोर्डगंज, इलाहाबाद
- प्रोफेसर स्वामी आत्मप्रियानंद, उपकुलपति, रामकृष्ण मिशन विवेकानंद विश्वविद्यालय, हावड़ा, पश्चिम बंगाल
- श्री गेशे जंगचुप चुनडेन, गाडेन शर्तेस् मठ, मुंदगोड, कर्नाटक
- डॉ. किशोर देरे, विजिटिंग फैकल्टी, जामिया मिलिया इस्लामिया यूनिवर्सिटी, जामिया नगर, नई दिल्ली
- डॉ. स्टीफन एंटनी पार्कर, स्वामी राम साहोका, ग्राम वीरपुर कुरद वीरभद्र रोड़, पशुलोक 24 9 203, ऋषिकेश यू.के.
- प्रोफेसर पी. कृष्णा, कृष्णमूर्ति फाउंडेशन इंडिया, राजघाट किला, वाराणसी
- प्रोफेसर जोय सेन, आर्किटेक्चर और क्षेत्रीय योजना, आईआईटी खड़गपुर, पश्चिम बंगाल
- डॉ. जितेंद्र बी. शाह, एलडी इंस्टीट्यूट ऑफ इंडोलॉजी, गुजरात विश्वविद्यालय, नवरंगपुरा, अहमदाबाद, गुजरात
- प्रोफेसर सुधीर के. सोपोरी, पूर्व उप–कुलपति, सूक्ष्मजैविकी के प्रोफेसर, जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय, नई दिल्ली
- डॉ. गोपाल चंद्र भर, रामकृष्ण मिशन, विवेकानंद विश्वविद्यालय, पश्चिम बंगाल
- डॉ. वी. हरि नारायणन, मानविकी और सामाजिक विज्ञान विभाग, भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान, जोधपुर
- डॉ. अतुल भटनागर, दंत विज्ञान के संकाय, चिकित्सा विज्ञान संस्थान, बनारस हिंदू विश्वविद्यालय, वाराणसी
- डॉ. अर्पिता मित्रा, अध्येता, भा.उ.अ.सं., शिमला

3 तेन्जिन ग्यास्ता, दी दलाई लामा, साइंस एट दी क्रॉसरोड्स (2005 की वार्ता)
4 डॉ. एस. राधाकृष्णन्, दी फिलॉस्फी ऑफ रवीन्द्रनाथ टैगोर, पृष्ठ 27, (लंदन, 1919)

- डॉ. वर्गीस मणिमाला, सेंट जोसेफ कैप्चिन प्रांतीय, कोट्टायम, केरल
- उस्ताद बहूद्दीन डागर, 6ध्20, रुक्मिणी, आर.सी. मार्ग, चेंबूर, मुंबई
- डॉ. मार्टिन कैम्प्चेन, टैगोर अध्येता, भा.उ.अ.सं., शिमला
- प्रोफेसर महेश चंपकलाल, अध्येता, भा.उ.अ.सं., शिमला
- श्री समीर बनर्जी, अध्येता, भा.उ.अ.सं., शिमला
- प्रोफेसर विजय शंकर वर्मा, राष्ट्रीय अध्येता, भा.उ.अ.सं., शिमला

संगोष्ठी के दौरान प्रतिभागियों ने निम्नलिखित विषय पर अपनी प्रस्तुति दी

सत्र–1

सुधीर के. सोपरी : *परसेप्शन एण्ड अवेयरनेस इन द प्लांट वर्ल्ड*

गोपाल चंद्र भर : *इन सर्च ऑफ रेशनेलिटी इन अवर हैबिट : स्प्रिचअुलिटी इन द लाइट ऑफ न्यूरोप्लास्टिसिटी*

सत्र–2

पी. कृष्ण : *साइंस एण्ड स्प्रिचुअलिटी : जे. कृष्णामूर्तिज व्यू*

वर्गीस मणिमाला : *सेक्रेड सेकुलेरिटी : द मीटिंग प्वाइंट ऑफ साइंस एण्ड स्प्रिचुलिटी*

सत्र–3

गेशे जांगचुप चॉडेन : *स्टडी ऑफ कन्सिअसनेस*

जितेंद्र बी. शाह : *कान्शस्नस, नॉलेज एण्ड कर्मा इन जैनिज्म एण्ड साइंस*

उस्ताद बहाउद्दीन डागर द्वारा पूल थिएटर में ध्रुपद की कला पूल थिएटर में संध्या कार्यक्रम : वैज्ञानिक विधि और आध्यात्मिकता का प्रश्न

रुद्र वीना प्रस्तुति और प्रदर्शन

सत्र–4

स्वामी आत्मप्रियानंद : *स्वामी विवेकानंदस कॉन्सेप्ट ऑफ द हारमोनी ऑफ साइंस एण्ड रिलिजन*

बेट्टीना एस. बौमर : *कान्शस्नेस एट द हार्ट ऑफ मैटर : त्रिका शैविज्म ऑफ कश्मीर एण्ड इट्स इनसाइट्स फॉर ए डायलॉग विदइन साइंस*

सत्र–5

अतुल भटनागर : *थॉट : इट्स जेनेसिस एण्ड ग्रोथ इन द लाइट ऑफ थियोसफी एण्ड न्यूरोसाइंस*

विजय शंकर वर्मा : *साइंस एण्ड स्प्रिचुअलिटी*

सत्र–6

स्टीफन ए पार्कर : *इन्ट्यूशन, प्लेग्राउंड ऑर कुरुक्षेत्र?*

पतंजलि योग और मनोविज्ञान से एक परिप्रेक्ष्य

मार्टिन कैम्चन : *रवींद्रनाथ टैगोरज बिलीफ इन होलिस्टिक साइंस*

सत्र–7

जॉय सेन : *एक्सप्लोरिंग 'ट्री' – इस्टैब्लिशिंग डॉयलॉगस बिटवीन कॉस्मिक साइंस एण्ड इण्डियन हेरिटेज*

हरि नारायणन : *सेल्फ, एक्पीरियंस एण्ड स्प्रिचुअलिटी*

सत्र–8

किशोर डेरे : *21स्ट सेंचरी इकॉलजिकल कन्सर्नस : परस्पैक्टिवस ऑफ मॉडरन साइंस एण्ड एनसिएंट इण्डियन स्प्रिचुअलिटी*

अर्पिता मित्रा : *हार्ट ऑफ द मैटर : वेदांत एण्ड द पॉसिबिलिटी ऑफ ए 'हार्ट' –सेंट्रिक एजूकेशन*

पैनल चर्चा

पार्था घोष, एस.के. सोपरी, पी. कृष्ण, स्वामी आत्मप्रियानंद

15. ''लाइफ एण्ड थॉट ऑफ एम.के. गाँधी'' विषय पर शरद स्कूल (01–15 दिसंबर 2016)

01–15 दिसंबर 2016 को भारतीय उच्च अध्ययन संस्थान में 'लाइफ एंड थॉट ऑफ गाँधी' विषय पर शरद स्कूल का आयोजन किया गया। डॉ. गंगेय मुखर्जी, फ्लैट नंबर सी –404, ब्लॉक–2, लोटस अपार्टमेंट, 49/39 ताशकंद मार्ग, इलाहाबाद इस स्कूल के संयोजक थे। संस्थान के निदेशक प्रोफेसर चेतन सिंह ने इस अवसर पर स्वागत भाषण प्रस्तुत किया। संस्थान की अध्यक्षा प्रोफेसर चंद्रकला पाडिया, ने उद्घाटन उद्बोधन प्रस्तुत किया। स्कूल के संयोजक डॉ. गंगेय मुखर्जी ने प्रारंभिक टिप्पणी प्रस्तुत की।

प्रतिभागी

- प्रोफेसर त्रिदीप सुहरुद, संरक्षण एवं स्मारक ट्रस्ट और मुख्य संपादक, गाँधी विरासत पोर्टल, गाँधी आश्रम, साबरमती, आश्रम रोड़, अहमदाबाद
- प्रोफेसर गोपाल गुरू, राजनीतिक अध्ययन केंद्र, सामाजिक विज्ञान विद्यालय, जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय, नई दिल्ली
- प्रोफेसर सुधीर चंद्र, दिल्ली
- डॉ. समीर बनर्जी, अध्येता, भा.उ.अ.सं., शिमला
- प्रोफेसर भगवान जोश, सेंटर फॉर हिस्टोरिकल स्टडीज, स्कूल ऑफ सोशल साइंसेस, जवाहरलाल नेहरू यूनिवर्सिटी, नई दिल्ली
- डॉ. शशि जोशी, 511, अयाची अपार्टमेंट, सेक्टर 45, गुरुग्राम, हरयाणा
- डा. अनुराधा वीरवल्ली, दर्शन विभाग, दिल्ली विश्वविद्यालय
- डॉ. गांगेय मुखर्जी, फ्लैट नंबर सी –404, ब्लॉक–द्वितीय, लोटस अपार्टमेंट, 49/39 ताशकंद मार्ग, इलाहाबाद
- प्रोफेसर आनंद कुमार, अध्येता, भा.उ.अ.सं., शिमला

- प्रोफेसर कुंदन लाल टूटेजा, # 884, सेक्टर –5, अर्बन एस्टेट, कुरुक्षेत्र
- डॉ. अजय कुमार, एमआईजी –91, सेक्टर–सी, पी.डी. नगर, उन्नाव, (यू.पी.)
- श्री अब्दुल रावफ मीर, झेलम छात्रावास, कक्ष 360, जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय, नई दिल्ली
- डॉ. अरुण एस. वाहुल, इतिहास विभाग, विवेकानंद आर्ट्स, सरदार दलपसिंघ, वाणिज्य और विज्ञान कॉलेज, समर्थनगर, औरंगाबाद, महाराष्ट्र
- डॉ. मिथिलेश कुमार, एमजीएफजी सेंटर फॉर सोशल वर्क, महात्मा गाँधी अंतरराज्यीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा (केंद्रीय विश्वविद्यालय) महाराष्ट्र
- श्री रोहन हसन, अंग्रेजी विभाग, अलिया विश्वविद्यालय, कोलकाता
- सुश्री अश्मित कौर, ई –94, लाजपत नगर, भाग एक, नई दिल्ली
- डॉ. चित्र उपाध्याय, ए 1–009– सेंचुरी कमांडर विस्टा, प्रेस्टीज मोंटे कार्लो के पीछे, येलहंका बेंगलूर, कर्नाटक
- सुश्री अंविता भुवन मिश्रा, ए 403, एल्डके सिटी, आईआईएम रोड़, लखनऊ
- श्री बिप्लेव कुमार, इतिहास विभाग, सिक्किम विश्वविद्यालय, तदोंग, गंगटोक, सिक्किम
- श्री अतुल कुमार मिश्रा, गोरख पांडेय हॉस्टल, महात्मा गाँधी, अंतर्राष्ट्रवादी विश्वविद्यालय, वर्धा महाराष्ट्र
- श्री ठाकुर प्रेम कुमार, सरमोहनपुर, गंगवारा, दरभंगा, बिहार
- सुश्री नीतूंजली खारी, 5484/5 नई चंद्रावल, कमला नगर के पास, नई दिल्ली
- सुश्री निर्धा सक्सेना, एफ –27, सेक्टर 25, पंजाब यूनिवर्सिटी के आवासीय परिसर, पंजाब यूनिवर्सिटी, चंडीगढ़
- सुश्री त्रिपाता शर्मा, 69, पश्चिम विहार एक्टेन्शन, रोहतक रोड़, ऑर्डिनेंस डिपो के सामने, नई दिल्ली
- श्री पवन कुमार, गाँधीवादी विचार एवं शांति अध्ययन तथा अनुसंधान केंद्र, गुजरात गाँधीनगर केंद्रीय विश्वविद्यालय
- श्री पवन कुमार, अंतर्राष्ट्रीय राजनीति विभाग, अंतर्राष्ट्रीय राजनीति, संगठन और निरस्त्रीकरण केंद्र, अंतर्राष्ट्रीय अध्ययन स्कूल जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय, नई दिल्ली
- श्री प्रवीण ढांडा, # 69, पश्चिम विहार विस्तार, रोहतक रोड, ऑडिशन ऑर्डिनेंस डिपो, नई दिल्ली
- श्री सचिन कुमार, ग्राम जोला, डाकघर पद्युन, जिला मंडी, हिमाचल प्रदेश
- श्री सोमक बिस्वास, फ्लैट 9 बी/1, एकता ओलेंदर्स, 16 राधानाथ चौधरी रोड़, कोलकाता श्रीकृष्ण कुमार मिश्रा, जी.बी. पंत सामाजिक विज्ञान संस्थान, इलाहाबाद।
- श्री विकास कुमार मिश्रा, जी.बी. पंत सामाजिक विज्ञान संस्थान, इलाहाबाद– 21101 9
- श्री सुभाष देबनाथ, विल्ल विद्यासागर पल्ली, डी–ब्लॉक, पी.ओ.– आई.सी. नगर, पीएस–अमात्ली, त्रिपुरा, पश्चिम
- श्री राजीव कुमार, ए 31/32, कक्ष नंबर 04, मेट्रो हॉस्टल, ईसाई कॉलोनी, पटेल चेस्ट, नई दिल्ली

इस शरद स्कूल के दौरान संसाधन व्यक्तियों ने निम्नलिखित विषयों पर अपने व्याख्यान प्रस्तुत किए–

01 दिसंबर, 2016

श्री समीर बनर्जी : 'डाउन विद गाँधीज्म'

श्री समीर बनर्जी : फिल्म

श्री समीर बनजी : फिल्म पर चर्चा

02 दिसंबर, 2016

प्रोफेसर भगवान जोश : 'द क्लोनिअल स्टेट एण्ड गाँधीयन स्ट्रेटजी

श्री समीर बैनर्जी : 'गाँधी एण्ड एजूकेशन : नई तमिल'

डॉ. शशि जोशी : 'गाँधी एण्ड हिज क्रिस्चियन फ्रैन्ड्स–1

डॉ. शशि जोशी : 'गाँधी एण्ड हिज क्रिस्चियन फ्रैन्ड्स–2

03 दिसंबर, 2016

प्रोफेसर भगवान जोश : द लॉजिक ऑफ गाँधीवादी मूवमेंट्'

प्रोफेसर भगवान जोश : 'गाँधी, इण्डियन नेशनल कांग्रेस एण्ड द पॉलिटिक्स ऑफ द कैपिटलिस्ट क्लास'

05 दिसंबर, 2016

डॉ. गाँगेय मुखर्जी : 'द लिमिटस एण्ड पॉसबिलिटीज ऑफ वायलेंस–1'

डॉ. गाँगेय मुखर्जी : 'द लिमिटस एण्ड पॉसबिलिटीज ऑफ वायलेंस–2'

डॉ. गाँगेय मुखर्जी : 'गाँधी, टैगोर एण्ड जलियांवाला बाग ट्रैजडी : द एथीसिज्म ऑफ प्रोटेस्ट–1

डॉ. गाँगेय मुखर्जी : 'गाँधी, टैगोर एण्ड जलियांवाला बाग ट्रैजडी : द एथीसिज्म ऑफ प्रोटेस्ट–2

06 दिसंबर, 2016

प्रोफेसर सुधीर चंद्र : 'फेसिंग गाँधी, फेसिंग द सेल्फ'

प्रोफेसर आनंद कुमार : 'डाइमेन्शन ऑफ गाँधीयन थॉट'

प्रोफेसर के. एल. टुटेजा : 'गाँधीज साइकालजी ऑफ मास मूवमेंटस'

प्रोफेसर सुधीर चंद्र : 'प्रैग्मैटिक नॉन वायलेंस '

07 दिसंबर, 2016

प्रोफेसर गोपाल गुरू : 'आम्बेडकरज गाँधी–1

प्रोफेसर गोपाल गुरू : 'आम्बेडकरज गाँधी–2

प्रोफेसर आनंद कुमार : 'द गाँधीयन वे एण्ड द वेव ऑफ ग्लोबलाइजेशन'

प्रोफेसर के. एल. टुटेजा : 'हिंदू–मुस्लिम यूनिटी एण्ड गाँधी

08 दिसंबर, 2016

प्रोफेसर सुधीर चंद्र : 'व्हेयर इज गाँधी टूडे?'

प्रोफेसर सुधीर चंद्र : 'गाँधीज रिक्गनिशन ऑफ दलित ऑप्रेशन'

प्रोफेसर त्रिदीप सुहरुद : 'गाँधी : द साउथ अफ्रीकन एक्सपेरिमेंट'

प्रोफेसर त्रिदीप सुहरुद : 'इन्ट्रोड्यूसिंग *हिंद स्वराज*'

09 दिसंबर, 2016

प्रोफेसर सुधीर चंद्र : 'राग माला : द मल्टी डाइमेन्शनलिटी ऑफ लुकिंग एट गाँधी'

प्रोफेसर त्रिदीप सुहरुद : 'रीडिंग *हिंद स्वराज*'

प्रोफेसर त्रिदीप सुहरुद : 'रीडिंग *हिंद स्वराज*'

प्रोफेसर त्रिदीप सुहरुद : 'रीडिंग *हिंद स्वराज*'

10 दिसंबर, 2016

प्रोफेसर त्रिदीप सुहरुद : 'रीडिंग *द ऑटोबायोग्राफी*'

प्रोफेसर त्रिदीप सुहरुद : 'रीडिंग *हिंद स्वराज*'

प्रोफेसर त्रिदीप सुहरुद : 'रीडिंग *हिंद स्वराज*'

12 दिसंबर, 2016

प्रोफेसर त्रिदिप सुहरुद : 'रीडिंग *हिंद स्वराज*'

प्रोफेसर त्रिदिप सुहरुद : 'रीडिंग *हिंद स्वराज*'

प्रोफेसर त्रिदीप सुहरुद : इंटरैक्टिव सैशन ऑन *हिंद स्वराज*

प्रोफेसर त्रिदीप सुहरुद : इंटरैक्टिव सैशन ऑन *हिंद स्वराज*

13 दिसंबर, 2016

डॉ अनुराधा वीरवल्ली : गाँधी एज थीअरिस्ट : स्वराज इन पॉलिटिकल थीअरी

डॉ. गाँगेय मुखर्जी : 'रीडिंग *आश्रम आब्ज़रवेंस इन एक्शन*'

डॉ. गाँगेय मुखर्जी : रीडिंग *सत्याग्रह इन अफ्रीका*'

14 दिसंबर, 2016

डॉ अनुराधा वीरवल्ली : चरखा, इंडस्ट्रीलाइजेशन एण्ड पॉलिटिकल इकानमी

डॉ. गाँगेय मुखर्जी : रीडिंग *सत्याग्रह इन साउथ अफ्रीका*'

डॉ. गाँगेय मुखर्जी : 'टैगोर–गाँधी डिबेट

डॉ. गाँगेय मुखर्जी : गाँधीज नेशनलिज्म

15 दिसंबर, 2016

डॉ. गाँगेय मुखर्जी : 'बायोग्राफीज ऑफ गाँधी'

16. 'एन्थ्रोपॉलजिकल हिस्ट्रीस एण्ड ट्राइबल वर्ल्डस इन इण्डिया' विषय पर राष्ट्रीय संगोष्ठी (27–29 मार्च 2017)

मूलाधार– ऐसा माना जाता है कि आज के बढ़ती जटिल परिस्थितियों में जनजातीय लोग लगातार संघर्ष कर रहे हैं। यदि इतिहास कार्य भूतकालीन अवधारणाओं से आधुनिक मानवीय दशा में समानुभूति रखना है तो जनजातीय लोगों के संदर्भ में यह कार्य बहुत ही बोझिल है। सांख्यिकीविदों के अभिलेखों में वे अधिकतर अदृश्य हैं जबकि ऐतिहासिक प्रकृति तथा राजनीति की अपेक्षा वे रचनात्मक हैं। नृवंशविज्ञान इतिहास के दर्पण के दो भाग हैं। अपने आधारभूत रूप में यह एक प्रकार की महत्वपूर्ण साइट के रूप में उभरा है, जिससे इतिहास के संलेख को चुनौती दी जा सकती है और जनजातीय लोगों के जीवन–संसार की वैधता को स्वीकार नहीं करते हैं, जहां से इतिहास लिखा जाना है। मानव विज्ञान इतिहास के क्षेत्र ने जनजातीय अतीत के बारे में लिखने के पद्धतियों को एक आशावादी और रोमांचक मुकाम प्रदान किया है।

जनजातीय लोगों के मानव विज्ञान संबंधी इतिहास ने ज्ञानमीमांसा और प्रशासनिक इकाईयों से जानना चाहा है कि प्राचीन आदिवासी आदि की श्रेणी के निर्माण कैसे हुआ है जिसमें इतिहास और मानव विज्ञान शामिल है। आदिवासी लोगों के पहचान के दावों, उनके परिवर्तन तथा अतीत में इन समुदायों की आत्म–प्रस्तुतियों में वैकल्पिक कल्पनाओं की ओर भी संकेत किया है। इन प्रयासों ने आदिवासियों को एक बहुत ही गंभीर एवं कर्कश संकेत के रूप में प्रस्तुत किया है और आधुनिक इतिहास /राजनीति को अपरिवर्तनीय और केंद्रित करने का प्रयास किया है। तथापि, जनजातीय लोगों के लिए सार्थक मानव विज्ञान इतिहास बनाने की परियोजना ने गंभीर दार्शनिक, पद्धतिपूर्ण और राजनीतिक प्रश्नों को जन्म दिया है।

- हम ऐतिहासिक लेखन में अपनी जीवित अस्थायीताओं के अतुलनीय असंतोषों को कैसे समझ सकते हैं ताकि अनुशासनात्मक ऐतिहासिक में जनजातीय दुनिया न तो एकवचन, अद्वितीय, प्राचीन–उदारवादी और प्रामाणिक व्यक्तियों के स्थान के रूप में बुत हो जाएं और न ही पूरी तरह से समेकित हो जाएं?
- क्या वैकल्पिक जगत का अध्ययन जोकि ऐतिहासिक के साथ संबद्ध हो लेकिन उसका गुरुत्वाकर्षण का केंद्र कहीं और हो एक रूढ़िवादिता की पुष्टि करता है या एक प्रयास की ओर इंगित करता है जो राजनीतिक रूप से अधिक शक्तिशाली है? इस उद्यम में राजनीतिक/ ऐतिहासिक कैसे पुनर्निर्मित किया जा सकता है और क्या हम उस प्रयास के लिए जोखिम उठा सकते हैं?
- क्या हम परिवर्तित जनजातीय जगत के परे देख सकते हैं और अपने सामुहिक अस्थायीताओं की उलझन के बारे में लिख सकते हैं। इससे आदिवासी–आधुनिक भाषाओं और शब्दावली क्या रूप हो सकता है?
- ऐसी ऐतिहासिक भूमिकाओं और इतिहास और नृवंशविज्ञान के संबंधों और उनकी परस्पर जटिल बाधाओं के चलते प्रकाशित होने वाले ग्रंथों का स्वरूप कैसे हो सकता है?
- हम जनजातीय जगत का पता कैसे लगा सकते हैं और आदिवासियों की वर्तमान पहचान और उनकी दयनीय दशाओं को सुधारन के लिए किस प्रभावी ढंग से कार्य कर सकते हैं?
- आदिवासियों के बारे में हर रोज सुनने के बाद उनके शोषण के प्रतिरोध में हमारी भावनाएं किस प्रकार परिवर्तित होती हैं और हमारे अंदर किस प्रकार की आत्म चेतना जागृत होती है?

- 'जनजातीय अध्ययन' के क्षेत्र में बिना पैठ के हम कैसे आदिवासी इतिहास पर ध्यान केंद्रित कर सकते हैं। इसके अतिरिक्त अन्य तुलनीय गैर–आदिवासी दुनिया और उसकी समस्याओं के बारे में संवाद स्थापित कर सकते हैं जाकि हमारे लिए बहुत ही चिंता का विषय है।

27–29 मार्च 2017 के दौरान भारतीय उच्च अध्ययन संस्थान में 'एंथ्रोपोलजिकल हिस्ट्रीस एण्ड वर्ल्डस इन इण्डिया' विषय पर एक राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन किया गया। संस्थान के अध्येता डॉ. प्रताप देव, इस संगोष्ठी संयोजक थे। प्रोफेसर विजय शंकर वर्मा, राष्ट्रीय अध्येता ने स्वागत उद्‌बोध प्रस्तुत किया गया। संगोष्ठी के संयोजक डॉ. आदित्य प्रताप देव ने प्रारंभिक टिप्पणी प्रस्तुत की। तेजपुर विश्वविद्यालय, तेजपुर समाजशास्त्र एवं सामाजिक कार्य विभाग के प्रोफसर वर्गिनस एग्जा द्वारा इस अवसर पर बीज भाषण प्रस्तुत किया।

प्रतिभागी

- डॉ. के.सी. बिन्दु, आम्बेडकर विश्वविद्यालय, दिल्ली
- डॉ. देवकी नंबियार, पब्लिक हेल्थ फाउंडेशन ऑफ इंडिया, दिल्ली
- डॉ. अमृता तुलिका, इतिहास विभाग, सेंट स्टीफंस कॉलेज, दिल्ली
- श्री बिस्वाम्य पति, 47 देशबंधु अपार्टमेंटस, 15 पटपड़गंज, दिल्ली
- श्री सुबोधों मेंदली, इतिहास विभाग, संबलपुर विश्वविद्यालय, उड़ीसा
- श्री नितिन द्विवेदी, सारफिकपुरा, महोबा (उ.प्र.)
- डॉ. आर. उमामाहेश्वरी, पूर्व अध्येता, भा.उ.अ.सं., शिमला
- श्री राजेश के. पी., कुनीपुरमिल हाउस, ईस्ट रोड़, बाप्पकड़द, कोयलींडी
- सुश्री रीमी तडु, टाटा इंस्टीट्यूट ऑफ सोशल साइंसिज, हैदराबाद
- सुश्री रिधि ज्ञान पांडे, आदर्श नगर, कांकर
- डॉ. सुरेश एम, स्कूल ऑफ डेवलपमेंट स्टडीज, टाटा इंस्टीट्यूट ऑफ सोशल साइंसिज, मुंबई
- डॉ. आवेजनन मुरुगेशपांडियन, एक्सएक्सवी 25/343, कोलांजियाल हाउस, ऐसवाया लेन, थोट्टक्कट्टाउरा, अलुवा, केरल
- डॉ. स्वर्गज्योति गोहैन, मानविकी और सामाजिक विज्ञान विभाग, भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान, कानपुर
- सुश्री लुब्ना इरफान, अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय, अलीगढ़ (उ.प्र.)
- श्री दुली ईटे, इतिहास विभाग, डेरा नेटंग गवर्नमेंट कॉलेज, इटानगर
- सुश्री सारा जैकबसन, प्रथम तल, एच न –44, आदर्श नगर, कांकर, छत्तीसगढ़
- डॉ. जॉन थॉमस, मानविकी और सामाजिक विज्ञान विभाग, भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान, गुवाहाटी
- डॉ. अविशेक रे, मानविकी एवं सामाजिक विज्ञान विभाग, राष्ट्रीय प्रौद्योगिकी संस्थान सिलचर, सिलचर
- डॉ. राधिका कृष्णन, राष्ट्रीय सूचना प्रौद्योगिकी, हैदराबाद
- सुश्री प्रियंका चौधरी, पीएचडी विद्वान, राजनीति विज्ञान विभाग, दिल्ली विश्वविद्यालय

- सुश्री प्राची दुबे, अध्येता, भा.उ.अ.सं., शिमला
- श्री अमित दत्ता, टैगोर अध्येता, भा.उ.अ.सं., शिमला
- डॉ. जगदीश लाल डाबर, अध्येता, भा.उ.अ.सं., शिमला
- डॉ. प्रदीप नायक, अध्येता, भा.उ.अ.सं., शिमला
- प्रोफेसर चेतन सिंह, पूर्व निदेशक, भा.उ.अ.सं., शिमला
- डॉ. ज्योति सिन्हा, अध्येता, भा.उ.अ.सं., शिमला

संगोष्ठी के दौरान प्रतिभागियों ने निम्नलिखित विषयों पर अपनी प्रस्तुति दी–

सत्र –1

फ्रेमिंग द सब्जेक्ट

केसी बिंदू : *नेचुरलिटी प्योर आदिवासी एण्ड करप्ट मॉडरनिटी सिचुऐटिंग द एंटी–मॉडर्निटी डिबेट विद रेफरेंस टू द आदिवासी*

अमृता तुलिका : *भील रेबेलियनस इन ए फ्रंटियर रीजन : वेस्टरन डेक्कन सी .800–1860*

अविषेक रे : *हिस्ट्रीग्राफी ऑफ ट्रैवल इन इण्डिया : द ट्राइवल लाइफवर्ल्ड डिसेंफ्रैचाइज्ड*

सत्र–2

पॉलिटिक्स ऑफ कल्चर

जॉन थॉमस : *स्पेस, टाइम एण्ड रिलिजिअस चेंज अमंग द ट्राइबस ऑफ नॉर्थ–ईस्ट इण्डिया*

आदित्य प्रताप देव : *द एनचाटिंग रीलम : स्पिरिटस ऑफ द स्टेट इन ए किंग्डम इन कलोलिअल सेंट्रल इण्डिया*

राधिका कृष्णन : *इण्डिजेनिटी एण्ड इट्स परफॉर्मेंसिस : इकॉलजिकल डिस्कोर्सिस, द इंडस्ट्रीयल प्रोजैक्ट एण्ड रेजिस्टेंस इन ओड़िशा*

सत्र–3

हाशिये पर बातचीत

राजेश केपी : *मार्जिनेलिटी, लैण्ड क्वेश्चन एण्ड द मेकिंग ऑफ मॉडरन आदिवासी कम्युनिटी इन केरला : द केस ऑफ आदिवासी गोथरा महा सभा (एजीएमएस)*

आर उमामहेश्वरी : *अंडरस्टैण्डिग रेजिस्टेंस फरॉम द पीपल कोंडोमोडालु (नॉर्थ गोदावरी, आंध्र प्रदेश)*

फिल्म की स्क्रीनिंग

अमित दत्ता : जंगढ़ फिल्म/आई, 2008

सत्र–4

फरॉम मेमोरी टू हिस्ट्री

दुली ईटे : *मिसिंग इन नरेशन :वुमन इन हिस्ट्री एम्बेडेड इन द जिनिआलजी ऑफ द गैलोस ऑफ अरुणाचल प्रदेश*

प्राची दुबले : *हिस्ट्री आफ स्थवा भील थ्रू द डायनामिक्स ऑफ देयर सॉगस एण्ड स्टोरीस!*

रिमी तादू : *एथनोग्राफिक कन्जर्वेशनस इन हिस्ट्री : डूइंग ऑरल हिस्ट्री इन द नॉर्थ ईस्ट इण्डिया*

सत्र–5

होल्डिंग आउट

सुरेश एम. : *स्टेट ऑफ मिसरिकग्निशन : पॉलिटिक्स एण्ड मॉडेलिटीस ऑफ '' ओइविंग'' एण्ड ''ट्राइबस'' इन केरला*

प्रदीप नायक : *फरॉम लैण्ड रिफार्मस टू लैण्ड टिलिंग (सिक्योर प्रॉपर्टी राइट्स इन लैण्ड) इन इण्डिया परस्पैक्टिस फरॉम ट्राइबल लैण्ड राइटस*

सत्र–6

एविडेंस एण्ड एक्सपीरियंस

आगमन एम : *मॉडरनिटी एण्ड बॉडी हिस्ट्री : रि–इंजीनियरिंग फॉरेस्टस एण्ड ट्राइबल लेबर इन 20थ सेंचरी सदरन तमिलनाडू*

जगदीश लाल दावार : *नेचुरल डिजास्टरस इन पोस्ट–कलोनिअल नॉर्थ–ईस्ट इण्डिया : डिफरेंट मेमोरीस ऑफ फैमिन ऑफ 1959 इन मिजोरम*

सुबोध मेंडली : *मेगालिथिक कल्चर इन ओडिशा : ए रिसेंट स्टडी ऑन मेगालिथिक ट्रेडिशन फाउंड अमंग द मुंडा ट्राइबस इन सुन्दरगढ़ डिस्ट्रिक्ट*

सत्र–7

कैटगरिकल क्वेश्चनस

स्वर्गज्योति गोहेन : *लिजेंडस ऑफ ऑरिजन एण्ड द पॉलिटिक्स ऑफ रिकग्निशन*

प्रियंका चौधरी : *एंटी–सिविलाइजेशन कलोनियल टाइम्स : खानबादोश ऑफ द नॉर्थ वेस्ट इण्डिया*

लुब्ना इरफान : *अफ्रीकन डायस्पोरा इन मिडीवल इण्डियन हिस्ट्री : कांन्टैक्चुलाइजिंग द पॉलिटिकल प्रेजेंस ऑफ सिडी और हब्शी ट्राइबस इन इण्डिया*

सत्र–8

रिजिमस ऑफ नॉलेज–1

बिस्वामोय पति : *एक्स्पलोरिंग हैल्थ कन्सर्नस : द ट्राइबल्स एण्ड आउटकास्टस/दलितस इन कलोनिअल ओड़िसा*

देवकी नंबियार : *विदन रिवाइटलाइजेशन? : ऑन डाक्यूमेंटेशन एज ए मोड ऑफ डिस्पिलिनिंग सिनेसेंट ट्राइबल नॉलेज इन साउथ इण्डिया*

सत्र–9

रिजिमस ऑफ नॉलेज–2

नितिन द्विवेदी : *इण्डिजिनियस नॉलेज सिस्टमस एण्ड कन्जर्वेशन ऑफ नेचुरल रिसोर्सिस अमंग द ट्राइबस ऑफ मिडल इण्डिया : मध्य प्रदेश सिन्स द 19थ सेंचरी*

सारा जैकबसन और रिद्धि पांडे : *गोंड आदिवासी मेकिंग हिस्ट्री : डॉक्यूमेंटिंग देयर कल्चर इन मॉडरन टाइम्स*

ग. अध्येताओं द्वारा प्रस्तुत साप्ताहिक संगोष्ठियां

संस्थान के अध्येताओं द्वारा साप्ताहिक संगोष्ठियां प्रस्तुत की जाती हैं जिनमें संस्थान के अन्य अध्येता, सह–अध्येता तथा हिमाचल प्रदेश विश्वविद्यालय के प्राध्यापक भाग लेते हैं। ये संगोष्ठियां संस्थान के अध्येताओं की शोध परियोजनाओं पर आधारित होती हैं तथा अन्य विद्वानों के साथ औपचारिक अंतःक्रिया का अवसर प्रदान करती है। आलोच्य वर्ष 2016–17 के दौरान अध्येताओं द्वारा निम्नलिखित संगोष्ठियां प्रस्तुत की गईं–

1.	प्रोफेसर बैटिना बूमर	*द योगा ऑफ द नेत्रा तंत्राः द 'थर्ड आई' एण्ड 'ओवरकमिंग डैथ'* (07 अप्रैल 2016)
2.	डॉ. प्रदीप नायक	*टूवर्ड्स गारंटिंग लैण्ड टाइटलिंग (सिक्युर प्रॉपर्टी राइट्स) इन इण्डिया* (13 अप्रैल 2016)
3.	प्रोफेसर के. सच्चिदानंद	*ट्रैवल पोइट्री एण्ड इट्स पोइटिक्स* (21 अप्रैल 2016)
4.	डॉ. अनिंदिता मुखोपध्याय	*चिल्ड्रनज गेम्स एडल्टस गैम्बिट्स* (02 मई 2016)
5.	डॉ. टैड ग्राहम फैरनी	*बिऑन्ड द फॉस्टेन बारगेन : एथिक्स एज मैटिरियल डिवेलप्मेंट* (05 मई 2016)
6.	प्रोफेसर निर्मल सेनगुप्ता	*मॉडरन वर्ल्ड ऑफ ट्रैडिशनल नॉलेज* (10 मई 2016)
7.	डॉ. बी. रविचन्द्रन	*लैंग्वेज, कास्ट एण्ड टेरिटोरी : लैंग्वेज स्पोकन बाई द स्कैवैंजिंग कम्यू. निटीस इन साउथ इण्डिया* (19 मई 2016)
8.	श्री समीर बैनर्जी	*रीइंटरप्रेटिंग गाँधियन थॉट बाई कंटैम्परेरी सिविल सोसायटी इनिसिएटिवस* (26 मई 2016)
9.	श्री अमित दत्ता	*जांगड़ सिंह श्याम : आर्ट एजूकेशन एण्ड प्रोस्पेरिटी* (02 जून 2016)
10.	डॉ. ज्योति सिन्हा	*बनारस संगीत एवं बनारसी ठुमरी* (30 जून 2016)
11.	प्रोफेसर ए. अच्युतन	*भारतीय लोक नाट्य परम्परा और दलित चेतना* (08 जुलाई, 2016)
12.	डॉ. अर्पिता मित्रा	*''निओ–हिन्दूइज्म'' एण्ड एथिक्स : अनपैकिंग द पोलिटिक्स ऑफ पॉल हैक्कर (1913–1979)* (14 जुलाई, 2016)
14.	प्रोफेसर कुन्दन लाल टुटेजा	*हिन्दू कंशसिसनेस एण्ड नेशनलिज्म इल कलोनीअलिज्म इन कला. `नीअल पंजाब* (21 जुलाई, 2016)
15.	डॉ. रत्नाकर त्रिपाठी	*ए कम्पेरेटिव स्टडी ऑफ द रीजनल म्यूजिक इंडस्ट्रीस इन हिन्दी–. स्पीकिंग इण्डिया : विद स्पेशल फोक्स ऑन हिमाचल प्रदेश, बिहार एण्ड हरियाणा* (28 जुलाई, 2016)
16.	सुश्री प्राची दुब्ले	*टूवर्डस ए थियोरिटकल फ्रेमवर्क ऑफ आदिवासी म्यूज़िक : स्टडींग द म्यूज़िकल ट्रेडिशन ऑफ रथवा आदिवासी, ए रिप्रेजेटेटिव ट्राइब लिविंग ऑन बॉर्डरस ऑफ मध्य प्रदेश, गुजरात एण्ड महाराष्ट्र* (28 जुलाई, 2016)
17.	श्री छेरिंग दोर्जे	*थीअरी एण्ड प्रैक्टिस ऑफ हेरिटेज कन्जरवेशन एण्ड रेस्टोरेशन ऑफ राष्ट्रपति निवास, शिमला* (04 अगस्त, 2016)

18.	डॉ. जगदीश लाल डाबर	*हिस्ट्री फूड इन नॉर्थ इण्डिया : मिजोरम सिन्स प्री–कलोनिअल टाइम्स* (04 अगस्त, 2016)
19.	डॉ. कौस्तव चक्रवर्ती	*नॉन–नॉर्मेटिव एण्ड द इन्डिन्निटी : क्वीरिंग द स्लेक्ट ट्राइबल फोक. टेल्स* (11 अगस्त, 2016)
20.	डॉ. अम्बा कुलकर्णी	*कम्प्यूटेशनल मॉडलिंग ऑफ योग्यता* (16 अगस्त, 2016)
21.	श्री समीर बैनर्जी	*गाँधी इन साउथ अफ्रीका : सत्यार्थी टू सत्याग्रही* (18 अगस्त, 2016)
22.	डॉ. गोव्हार याकुब	*भोपिंग ए लिट्रेरी स्पेस : द डिस्कोर्स ऑफ आइडेंटिटी एण्ड यूज ऑफ कश्मीरियत एज ए केटगरी इन अर्ली लिट्रेरी हिस्ट्री ऑफ कश्मीरी* (26 अगस्त, 2016)
23.	सुश्री सौम्य शर्मा	*कम्परिहैंडिग आर्किटैक्चर एण्ड कन्जरवेशन थ्रू शिमला* (30 अगस्त, 2016)
24.	डॉ. राधिका कृष्णन्	*रेड इन ग्रीन : शंकर गुहा नियोगी (1942–1991) एण्ड द 'ग्रेट आउटसाइडर'* (01 सितंबर 2016)
25.	प्रोफेसर सुमन्यु सत्पति	*इन प्रिंट : द रोल आफी अर्ली पिरिआडिकल प्रैस इन भोपिंग मॉडरन ओड़िया लिट्रेरी कल्चर* (01 सितंबर 2016)
26.	प्रोफेसर विजय शंकर वर्मा	*अल–किन्दी एण्ड हिज ट्रीटाइज ऑन लाइट रेज* (08 सितंबर 2016)
27.	प्रोफेसर महेश चंपकलाल	*ऐपिसोड ऑफ 'वाल्काल' एण्ड 'प्रतिमा' ऑन पेज एण्ड स्टेज* (15 सितंबर 2016)
28.	प्रोफेसर के. सच्चिदानंद	*इज एन इण्डियन लिट्रेरी हिस्ट्री पॉसिबल?* (19 सितंबर, 2016)
29.	डॉ. प्रदीप नायक	*टूवर्ड्स गारंटिंग लैण्ड टाइटलिंग (सिक्युर प्रॉपर्टी राइट्स) इन इण्डिया : ए स्टडी* ((22 सितंबर, 2016)
30.	डॉ. आर. ललिता राजा	*सिग्निफिकेंस ऑफ ऑप्टीमल्टी थीअरी इन फोनलाजीकल एक्यूजिशन इन असैसमेंट एण्ड इंटरवेन्शन ऑफ फोनलाजीकल डिसॉर्डरस* (20 अक्तूबर, 2016)
31.	डॉ. लियोन एंजेलो मौरेनस	*मोहल्लास एण्ड स्मार्ट सिटीस : पोस्ट–कलोनिअल डिवेलप्मेंट इन डेल्ही* (20 अक्तूबर, 2016)
32.	डॉ. बिन्दु मेनन एम.	*रिलिजन, माइग्रेशन एण्ड मॉडरनिटी : इस्लामिक होम फिल्मस इन केरला एण्ड माइग्रेशन टू द गल्फ कन्टरीस* (27 अक्तूबर, 2016)
33.	डॉ. आदित्य प्रताव देओ	*राइटिंग ट्रांस–टैम्परेलिटी इन्टू हिस्ट्री : टाइम्स एण्ड पॉलिटिक्स इन द ऑरल ट्रैडिशनस ऑफ द मिक्स्ड ट्राइब–कास्ट कम्यूनिटीज ऑफ द प्रिंसली स्टेट ऑफ कंकर, छत्तीसगढ़* (27 अक्तूबर, 2016)
34.	प्रोफेसर आनंद कुमार	*इण्डिया : बिटवीन डिमॉक्रेटिक नेशन–बिल्डिंग एण्ड डॉमिनेंट कोस्टस डिमॉक्रेसी* (03 नवंबर, 2016)
35.	प्रोफेसर के.एम. बहरूल इस्लाम	*माइग्रेंट म्यूस : द थर्ड स्पेस इन आसामीज लिट्रेचर* (10 नवंबर, 2016)
36.	प्रोफेसर निर्मल सेनगुप्ता	*अगेन्स्ट प्राइड एण्ड प्रिजुडिस* (17 नवंबर, 2016)

37.	प्रोफेसर त्रिलोकी सिंह	*बाउंसिंग एण्ड साइक्लिक मॉडल्स ऑफ द यूनिवर्स* (24 नवंबर, 2016)
38.	प्रोफेसर पी. माधवन	*मीनिंग इन लैंग्वेजिस : ए कम्पेरिजन ऑफ द डॉमिनेंट थीमस एण्ड देयर ट्रीटमेंट इन द वेस्टरन एण्ड इण्डियन/संस्कृत ट्रेडिशनस* (24 नवंबर, 2016)
39.	डॉ. मार्टिन कैम्पचन	*रवीन्द्रनाथ टैगोर एण्ड जोहान्न वोल्फगैंग गोयथे* (01 दिसंबर 2016)
40.	डॉ. शांडिली महाराज रामदयाल	*फरॉम फोर्स्ड माइग्रेशन टू द ऐंड ऑफ आइडेन्च्योरशिप : ए साइकालजिकल एनालसिस ऑफ द पीपल ऑफ इण्डियन ऑरिजन इन त्रिनिलैण्ड (1845–1917),* (08 दिसंबर 2016)
41.	डॉ. बिन्दु मैनन	*मॉरेलिटी टेल्स : रिफॉर्म, डिमाक्रेसी एण्ड मीडिया इन मालाबर होम फिल्मस* (09 मार्च 2017)
42.	डॉ. रत्नाकर त्रिपाठी	*ए कम्पेरेटिव स्टडी ऑफ द रीजनल म्यूजिक इंडस्ट्रीस इन हिन्दी–. स्पीकिंग इण्डिया : विद स्पेशल फोक्स ऑन हिमाचल प्रदेश, बिहार एण्ड हरियाणा* (16 मार्च 2017)
43.	सुश्री प्राची दुबले	*राठवा–भील समाज की गीत परंपरा : कला एवं शास्त्र विमर्श* (23 मार्च 2017)
44.	डॉ. जगदीश लाल डावर	*फूड एज कमोडिटी एण्ड इट्स इवॉल्यूशन इन मिजोरम* (30 मार्च 2017)

घ. अध्येताओं से प्राप्त पाण्डुलिपियां

अध्येताओं को पाण्डुलिपि के रूप में अपनी शोध संबंधी अंतिम परिणाम संस्थान में जमा करवाना होता है। प्रतिवेदन की अवधि के दौरान अध्येताओं से निम्नलिखित पाण्डुलिपियां प्राप्त हुई–

1.	डॉ. शेखर पाठक	*चिपको मूवमेंट एण्ड द ट्रैडिशन ऑफ पीजेंट प्रोटेस्टस इन उत्तराखण्ड हिमालय* (10 अप्रैल 2016)
2.	प्रोफेसर के. सच्चिदानंद	*नो बॉर्डर फार मी : पोइम्स ऑफ ट्रैवल* (13 अप्रैल 2016)
3.	श्री सुकुमार मुरलीधरन	*डिवेलप्मेंट एण्ड डिस्प्रोपोरशनलिटी : रीविजिटिंग द च्वाइस ऑफ टैक्नॉलजी क्वेश्चन* (02 मई 2016)
4.	श्री अर्यक गुहा	*मइनर मैटरस : कल्चरस ऑफ चाइल्डहुड इन पोस्ट–इंडिपेंडेस इण्डिया (ड्राफ्ट)* (29 अप्रैल, 2016)
5.	डॉ. एन. मालेमंगबा मितेयी	*आर्म्ड फोर्सिस स्पेसिया : पॉवरस एक्ट एण्ड द प्रोटेस्ट इन मणिपुर* (12 मई 2016)
6.	प्रोफेसर बी.डी. चट्टोपध्याय	*स्पेसिस, पीपलस एण्ड कल्चरस : परसेप्शनस इन अर्ली इण्डियन टैक्स्टस* (13 जून 2016)
7.	डॉ. अनिन्दिता मुखोपध्याय	*चिल्ड्रन गेम्स, एडल्टस गैम्बिट्स : सम रिस्ट्रोस्पेक्टिव मूवस इन कलोनिअल एण्ड पोस्ट कलोनिअल बंगाल* (27 जून 2016)

8.	डॉ. देबोज्योति	*मेमोरी रेजिलिएंस एण्ड क्लाइमेट चेंज एथनोग्राफी ऑफ फ्लड साइक्लोन इन साउथ एशिया* (31 जुलाई 2016)
9.	श्री मकरंद साठे	*रीयलिज्म मॉडरनिज्म, रोमांटिसिज्म एण्ड एक्सपेरिमेंटल मरा. ठी थियेटर फरॉम 1970 टू 1990* (02 अगस्त 2016)
10.	प्रोफेसर कुन्दन लाल टुटेजा	*हिन्दू कंसियसनेस एण्ड नेशनलिज्म इल कलोनीअलिज्म इन कलोनीअल पंजाब* (12 अगस्त 2016)
11.	प्रोफेसर ए. अच्युतन	*भारतीय लोक नाट्य परम्परा और दलित चेतना* (19 अगस्त 2016)
12.	डॉ. परवेश जंग गोले	*द ऑटोनोमस मैन : कांट, साडे एण्ड नीत्शे* (19 अगस्त, 2016)
13.	डॉ. कौस्तव चक्रवर्ती	*सेसिओ–कल्चरल स्टडी ऑफ द नॉन–नॉर्मेटिव एक्सपे. सन इन स्लेक्ट ट्राइबल फोक लिट्रेचर ऑफ नार्थ बंगाल* (29 अगस्त, 2016)
14.	प्रोफेसर महेश चंपकलाल	*लैंग्वेज इन थियेटर, लैंग्वेज ऑफ थियेटर (ड्रामाटिक टैक्स्ट वर्सेस परफॉर्मेंस टैक्स्ट इन द कंटैक्स्ट ऑफ भाषाज रामायण प्लेस– एन एनालिटीकल एण्ड कम्पेरेटिव स्टडी)* (06 अक्तूबर 2016)
15.	डॉ. सरफराज अहमद	*ट्रांसलेशन, इन्ट्रोडक्शन एण्ड एडिशन ऑफ माठीर–ई–जहांगीरी विद वैल्यूएबल* (24 अक्तूबर, 2016)
16.	सुश्री सौम्य शर्मा	*अप्रोच टू कंजरवेशन एण्ड रेस्टोरेशन : स्पेसिफिक फोक्स ऑन कल्चरल हेरिटेज ऑफ शिमला* (02 नवंबर, 2016)
17.	प्रोफसर एन. जयाराम	*थीअरी एण्ड मेथड इन सोसिआलजी : ए स्टडी इन द फिलॉसफी ऑफ सोशल साइंसिस* (17 नवंबर, 2016)
18.	प्रोफसर विजय शंकर वर्मा	*अल–किंदी एण्ड हिज ट्रीटाइज ऑन लाइट रेज* (19 नवंबर, 2016)
19.	डॉ. राधिका कृष्णन्	*रेड इन द ग्रीन : शंकर गुहा नियोगी (1942–1991) एण्ड पॉलि. टिक्स एज द ग्रेट आउटसाइडर* (27 दिसंबर 2016)
20.	डॉ. एन. एम. मितेयी	*आर्म्ड फोर्सिस स्पेशल पॉवरस एक्ट एण्ड द प्रोटैस्ट इन मणिपुर* (02 फरवरी 2017)
21.	श्री छेरिंग दोर्जे	*थीअरी एण्ड प्रैक्टिस ऑफ हेरिटेज कन्जर्वेशन एण्ड रेस्टोरेशन ऑफ राष्ट्रपति निवास, शिमला* (02 फरवरी 2017)
22.	डॉ. शशि जोशी	*रिलिजस क्रॉसिंग एण्ड बाउंडरीज : गाँधी, दीनाबन्धु, एन्ड्रयूस एण्ड द–सेवक–एल्विन* (03 मार्च 2017)

ङ. आगन्तुक प्राध्यापक

संस्थान की शासी निकाय द्वारा सुविख्यात विद्वानों को आगंतुक प्रोफेसर के रूप में आमंत्रित किया जाता है जो अपने विशेषज्ञता से संबंधी रूचि के तीन व्याख्यान प्रस्तुत करते हैं। वे संस्थान में एक महीने में एक महीने के लिए रूकते हैं और संस्थान के अकादमिक समुदाय के साथ अंतःक्रिया करते हैं। प्रतिवेदन की अवधि के दौरान निम्नलिखित आंगतुक प्राध्यापकों को आमंत्रित किए–

मई 2016

1. सेंटर फार एक्सीलेंस इन बेसिक साइंसिस, मुम्बई विश्वविद्यालय से मानविकी के विजिटिंग प्रोफेसर, प्रोफेसर श्रीधर राजेश्वरन ने निम्नलिखित व्याख्यान प्रस्तुत किए–

- *डब्ल्यू.बी. यीट्स ए डायलेक्टि ऑफ डिजायर एण्ड नेशन : द बॉडी ऑफ ए वुमन एण्ड द लाइफ ऑफ द लैण्ड* (06 मई 2016)
- *गिरीश कर्नाद : बिगिनिंगस, एण्डस एण्ड न्यू बिगिनिंगस* (12 मई 2016)
- *अर्थ 1947 थ्रो द फिश–आई : इमेजिंग द लैण्डस्केप ऑफ मेमोरी* (23 मई 2016)

जून 2016

1. सेंटर फार डिवेल्पिंग स्टडीज, प्रशांत नगर, त्रिवेंद्रम के निदेशक प्रोफेसर पुलप्रे बालकृष्ण्न ने निम्नलिखित व्याख्यान प्रस्तुत किये–

- *मार्केट, ग्रोथ एण्ड सोशल जस्टिस : ट्वेंटी–फाइव इयरस ऑफ एकनामिक रिफॉर्मस* (09 जून 2016)
- *राइट्स एण्ड कैपेबिलिटीस : ए रिफ्लैक्शन ऑन डिमॉक्रेसी एण्ड डिवेलप्मेंट इन इण्डिया* (16 जून 2016)
- *नोइंग व्हेयर यू कम फरॉम : द एकनामी ऑफ अर्ली इंडिपेंडेंट इण्डिया रिविजिटिड* (23 जून 2016)

सितंबर 2016

1. प्रोफेसर उदयन मिश्रा, मकान नं. 3, लेन 3, नारीकलबाड़ी, मदर टैरेसा रोड़, गुवाहटी ने निम्नलिख्ति व्याख्यान प्रस्तुत किए–

- *रिडिफाइनिंग द इण्डियन नेशन : द नॉर्थईस्ट एक्स्पीरीअंस–1* (06 सितंबर 2016)
- *रिडिफाइनिंग द इण्डियन नेशन : द नॉर्थईस्ट एक्स्पीरीअंस–2* (20 सितंबर 2016)
- *रिडिफाइनिंग द इण्डियन नेशन : द नॉर्थईस्ट एक्स्पीरीअंस–3* (26 सितंबर 2016)

च. आगन्तुक विद्वान

संस्थान में आगंतुक विद्वानों की योजना के अंतर्गत एक सप्ताह के लिए जाने माने विद्वानों को आमंत्रित किया जाता है। इस दौरान वे अपनी रूचि के विषय पर व्याख्यान प्रस्तुत करते हैं। प्रतिवेदन की अवधि के दौरान निम्नलिखित आगंतुक विद्वान संस्थान में पधारे–

अप्रैल 2016

1. मुम्बई 27/43, सागर संगम, बांद्रा रिक्लेमेशन से आए श्री पी. साईनाथ ने 08 अप्रैल 2016 को *रूरल इण्डिया– ए लिविंग जर्नल, ए ब्रिथिंग आर्काइव (दी एव्रीडे लाइव्स ऑफ एव्रीडे पीपल)* विषय पर अपना व्याख्यान प्रस्तुत किया।

मई 2016

1. मद्रास इन्स्टिट्यूट ऑफ डिवेलप्मेंट स्टडीज, चेन्नई, तमिलनाडू से आए प्रोफेसर आनंत कुमार गिरि ने 09 मई 2016 को *विद एण्ड बियॉंड एपिस्टमोलजिस फरॉम द साउथ : अंटोलोजिकल एपिस्टमोलजी ऑफ पार्टीसिपेशन, मल्टी–टॉपिअल हर्मेन्यूटिक्स एण्ड द कंटेम्परेरी चैलेंजिस ऑफ प्लानेटरी रियलाइजेशनस* विषय पर अपना व्याख्यान प्रस्तुत किया।
2. 3 एल्केद्रा क्लोज, हॉव्कर, एक्ट 2614, आस्ट्रेलिया से आए प्रोफेसर रॉय डब्ल्यू. पैरेट ने 20 मई 2016 को *मेमोरी, डाउट एण्ड द सेल्फ* विषय पर अपना व्याख्यान प्रस्तुत किया।
3. जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय, नई दिल्ली से आए स्कूल ऑफ कम्प्यूटेशनल एण्ड इंटेग्रेटिव साइंसिस के प्रोफेसर एवं संकायाध्यक्ष ने *फिजिसिस्ट्स अप्रोच टू स्टडींग सोसीओ–इकनॉमिक इनइक्वेलिटीस : कैन ह्यूमनस बी मॉडल्ड एज एटमस?* (25 मई 2016) विषय पर व्याख्यान प्रस्तुत किया।

अगस्त 2016

- श्री शंकराचार्य संस्कृत विश्वविद्याल, कलादी, केरल से आए दर्शनशास्त्र विभाग के विभागाध्यक्ष प्रोफेसर श्रीकला एम. नायर ने 19 अगस्त 2016 को *रीलिजिंग थिआलजी फरॉम एपिस्टमोलजिकल बैरिअरस : ए पोस्टमॉडरन नैरेटिव* विषय पर व्याख्यान प्रस्तुत किया।

सितंबर 2016

- जामिया मिलिया नई दिल्ली से इतिहास एवं संस्कृति विभाग के सेवानिवृत प्रोफेसर प्रोफेसर नारायणी गुप्ता ने 14 सिंतबर 2016 को *द हाल ऑफ नेशनस एज ए मैटफोर फॉर अवर सेन्स ऑफ हिस्ट्री* विषय पर व्याख्यान प्रस्तुत किया।

अक्तूबर 2016

- आनंद निकेतन, मकान नं. 4, (मोतीलाल महाविद्यालय के पीछे) धौला कुआं, नई दिल्ली से आई प्रोफेसर उमा चक्रवर्ती ने 18 अक्तूबर 2016 को *द फैमिनिस्ट टर्न इन डाक्यूमेंट्री सिनेमा : एन ऑडियो विजुअल* विषय पर व्याख्यान प्रस्तुत किया।

नवंबर 2016

- पुणे 5 गौतम, प्रभात रोड़, 9वीं लेन से आए श्री मकरंद साठे ने 15 नवंबर 2016 को *पॉलिटिकल एण्ड सोशल एस्पैक्ट्स ऑफ थियेटर ड्यूरिंग 19th सेन्चरी कलोनिअल रूल– विद रेफरेंस टू मराठी थियेटर* विषय पर व्याख्यान प्रस्तुत किया।

मार्च 2017

- लैटिन अमेरिकी एवं कैरिबियन, यॉर्क यूनिवर्सिटी, टोरंटो, कनाडा अनुसंधान केंद्र सोशल साइंस विभाग, 17 मार्च 2017 को लिबरल आर्ट्स एवं प्रोफेशनल स्टडीज संकाय की ऐसोसिएट प्रोफेसर डॉ. नलिनी परश्रम, एसोसिएट प्रोफेसर ने *'थॉट थ्रू मॉटिलिटी : फिनोमेनोलजिकल एण्ड सोमेटिक स्टूडियोंस ऑफ द कॉन्सेप्चुअल'* विषय पर व्याख्यान प्रस्तुत किया।

छ. अतिथि अध्येता

अतिथि अध्येताओं को संस्थान में तीन माह की अवधि के लिए बुलाया जाता है मगर उन्हें किसी प्रकार की अध्येतावृति राशि नहीं दी जाती है। संस्थान द्वारा केवल उनके यात्रा खर्च की अदायगी की जाती है तथा निःशुल्क खाने–पीने व रहने की सुविधा मुहैया करवाई जाती है। इस श्रेणी में वे विद्वान आते हैं तो पूर्णकालिक अध्येतावृति ग्रहण नहीं कर सकते मगर कम से कम समय के लिए संस्थान में शोध के लिए आना चाहते हैं। इस अवधि के दौरान उन्हें अन्य अकादमिक गतिविधियों में भाग लेने के आमंत्रित किया जाता है और वे संस्थान के पुस्तकालय तथा अन्य सुविधाओं का निःशुल्क प्रयोग कर सकते हैं। अपनी इस लघु अध्येतावृति अवधि के पूर्ण होने पर उन्हें संस्थान के अन्य अकादमिक समुदाय के समक्ष अपने शोधपत्र की प्रस्तुति करनी होती है।

इस श्रेणी के अंतर्गत निम्नलिखित शोधपत्र प्रस्तुत किए गए–

मई 2016

- हैदराबाद विश्वविद्यालय, हैदराबाद से आए समाजशास्त्र विभाग के प्रोफेसर सुजाता पटेल ने 24 जून 2016 को *द चैलेंज ऑफ डूइंग सोसीआलजी* विषय पर अपना व्याख्यान प्रस्तुत किया।

जुलाई 2016

- ईएचईएसएस, सेंटर नॉबरट ऐलियास, 2 रू डे ला कारते, 13002, मार्सेल, फ्रांस से आए डॉ. अरूंधति विरमानी ने 05 जुलाई 2016 को *द सोशल रिस्पांसिबिलिटी ऑफ द हिस्टोरियन : द केस ऑफ द एन्नेलस सिन्स 1929 इन रिस्पैक्टिव* विषय पर व्याख्यान प्रस्तुत किया।

अगस्त 2016

- आचार्य कृपलानी अध्ययन केन्द्र, गुजरात विद्यापीठ, अहमदाबाद के निदेशक श्री प्रकाश एन. शाह ने 02 अगस्त 2016 को *गाँधीज इन्नर क्वेस्ट : ए टैम्परल परस्पैक्टिव* विषय पर व्याख्यान प्रस्तुत किया।

अक्तूबर 2016

- आरएबी 306, 131 जॉर्ज स्ट्रीट, न्यू ब्रंसविक, एनजे, 08901–1414, यूएसए से मानव शास्त्र विभाग के डॉ. परविस घास्सीम–फैचांडी तथा एरॉन बर हाल, प्रिन्सटन यूनिवर्सिटी, प्रिन्सटन, न्यू जैरसे 08540 यूएस से मानवशास्त्र

विभाग के प्रोफेसर जॉन बॉर्नमैन ने 24 अक्तूबर 2016 को *द सिरियन रेफ्यूजी क्राइसिस इन जर्मनी : एसॉटिक कन्फिलिक्ट एण्ड फॉरेनर इंटेग्रेशन* विषय पर व्याख्यान प्रस्तुत किया।

ज. मानविकी एवं सामाजिक विज्ञानों के क्षेत्र में अंतरविश्वविद्यालय केन्द्र (आईयूसी)

संस्थान में विश्वविद्यालय अनुदान आयोग की ओर से मानविकी एवं समाजिक विज्ञानों के क्षेत्र में एक अंतरविश्वविद्यालय केन्द्र (आईयूसी) भी चलायमान है। आईयूसी के अकादमिक कार्यक्रमों में तीन प्रमुख कारक हैं– (1) सह–अध्येतावृति की योजना, (2) देश के विभिन्न भागों में संगोष्ठियां आयोजित करना (3) संस्थान में राष्ट्रीय तथा अंतर्राष्ट्रीय हित से संबंधित समस्याओं पर अध्ययन सप्ताहों का आयोजन करना। इस केंद्र के अंतर्गत देश के विश्वविद्यालय तथा महाविद्यालयों में कार्यरत अध्यापकों को तीन सालों में तीन बार अध्ययन के बुलाया जाता है, जो मूलतः निम्नलिखित उद्देश्यों की पूर्ति हेतु पधारते हैं –

क) अपने किसी लेख को पूर्ण करने हेतु जो किसी कारणवश अधूरा रह गया हो; ख) प्रकाशन के लिए अपने शोध–कार्य को संशोधित करने हेतु ; ग) संस्थान के पुस्तकालय के प्रयोग हेतु तथा घ) संस्थान में आये देश विदेश के अध्येताओं तथा अतिथि प्राध्यापकों व अतिथि विद्वानों के साथ अंतःक्रिया करने के लिए। ये सह–अध्येता संस्थान की नियमित अकादमिक गतिविधियों के अतिरिक्त समय–समय पर आयोजित होने वाली राष्ट्रीय अंतराष्ट्रीय संगोष्ठियों व सम्मेलनों में भाग लेते हैं। सह–अध्येताओं से अपेक्षा की जाती है कि वे अपने शोध–कार्य के अलावा संस्थान की अन्य अकादमिक गतिविधियों में भी प्रतिभागिता करें। केंद्र में अपने रहने के दौरान उन्हें अपना एक शोधपत्र प्रस्तुत करना होता है। हालांकि यह उनकी इच्छा पर निर्भर करता है कि वे अपने शोधपत्र को संस्थान द्वारा प्रकाशित जर्नलों में प्रकाशनार्थ दें अथवा नहीं। आलोच्य वर्ष के दौरान जो सह–अध्येता संथान में अध्ययन हेतु पधारे उनका तथा उनके द्वारा प्रस्तुत शोधपत्रों का विवरण निम्न प्रकार से है–

अप्रैल

1. डॉ. शैलजा बी. वाडिकर (नांदेद) : *स्पिरिट फॉर रेवलूशन इन बादल सिरकाज स्टेल न्यूज* (21 अप्रैल 2016)
2. डॉ. बलीराम रघुनाथ देशपाण्डे (महाराष्ट्र) : *हिन्दी मराठी सिनेमा से संबंधित व्यक्तियों का जीवनीपरक साहित्य (मेरी 'फिल्मी आत्मकथा' और 'एकता जीव' के विशेष संदर्भ में)* (21 अप्रैल 2016)
3. डॉ. जगन कराड़े (महाराष्ट्र) *सोशल इंटरेक्शन पैट्रन ऑफ द स्ड़यूलड कास्ट इन महाराष्ट्र* (21 अप्रैल 2016)
4. डॉ. देवापम राहा (पश्चिम बंगाल) *फिक्शन ऑफ महाश्वेता देवी : ए पोस्टकलोनिअल इको–क्रिटिकल स्टडी एण्ड बिऑन्ड* (21 अप्रैल 2016)
5. प्रोफेसर सुबीर बिस्वास (कोलकाता) : *एथिकल इश्यू इन एन्थ्रोपोलजिकल रिसर्च : पार्टिसिपेंट ऑब्ज़रवेशन* (22 अप्रैल 2016)
6. डॉ. रीता कुमारी शर्मा (झारखण्ड) : *रेलवन्स ऑफ योगा फॉर स्ट्रेस मैनेजमेंट इन इरा ऑफ ग्लोबलाइजेशन* (22 अप्रैल 2016)
7. डॉ. आकाश वर्मा (आसाम) : *भोजपुरी लोक गीतों में अभिव्यक्त संवेदना का आधार* (22 अप्रैल 2016)
8. श्री मैलविन सन्नी पिंटो (बंगलोर) : *स्टूडैंट्स यूजिस एण्ड ग्रैटिफिकेशनस ऑफ द इंटरनेट :ए कम्पेरेटिव एनालसिस* (22 अप्रैल 2016)
9. डॉ. उमा शंकर प्रसाद पात्रा (उड़ीसा) : *रूरल मार्केटिंग–ऑपर्चूनिटीस एण्ड चैलेंजिस इन द ग्लोबलाइज़्ड सिनारियो* (22 अप्रैल 2016)

10. डॉ. अनूप कुमार मोहंती (उड़ीसा) : *इन्ट्रोडक्शन ऑफ गुड्स एण्ड सर्विसिस टैक्स (जीएसटी)– चैलेंजिस अहैड* (22 अप्रैल 2016)

11. डॉ. अमूल्य कुमार त्रिपाठी (उड़ीसा) : *मोदीज यू.एस. पालिसी : ए चेंजिंग सिनारियओ?* (22 अप्रैल 2016)

मई

1. डॉ. अक्षय कुमार रथ (ओड़िशा) : *काली इन ब्रिटिश इण्डिया* (20 मई 2016)

2. डॉ. कुमार बीरेंद्र सिंह (झारखण्ड) : *छायावादी काव्य प्रतिमाओं के निर्माण में पुस्तक समीक्षा का योग* (20 मई 2016)

3. डॉ. अखिलेश कुमार शंखधर (मणिपुर) : *अरूण कमल के काव्य में यथार्थ और करुणा* (20 मई 2016)

4. डॉ. भीमजी खचारिया (गुजरात) : *गुजरात की कण्ठस्थ परंपरा में गरबा* (23 मई 2016)

5. डॉ. पॉलामिआइक मुखर्जी (केरल) : *कारनेशनस कैप्टेनस एण्ड कम्यूनिज्म : एक्पलारिंग पॉलिटिकल पोस्टरस एज ए सोर्स ऑफ हिस्टी* (23 मई 2016)

6. डॉ. रोहमिंगमवी (मिजोरम) : *कल्चरल रिवाइटलाजेशन एण्ड द एक्पीरिअंस ऑफ रिवाइवल मूवमेंट इन मिजोरम* (23 मई 2016)

7. डॉ. विनोद बालकृष्णन् (तमिलनाडु) : *वन अमंग अस एण्ड बाई च्वाइस, ए पोयट; सम नोट्स ऑन निजिम एजिकील* (23 मई 2016)

8. डॉ. नरेन्द्र कुमार बैहेरा (आड़िशा) : *सीजनल आउट–माइग्रेशन : ए केस स्टडी ऑफ बरगढ़ डिस्ट्रिक्ट ऑफ वेस्टर्न ओड़िशा* (24 मई 2016)

9. श्री रावेन्द्र सिंह पटेल (मध्य प्रदेश) : *भारत में मानव विकास एवं जननकिया लाभांश* (24 मई 2016)

10. डॉ. डी. वैंकट राम (आंध्र प्रदेश) : *रोल ऑफ इण्डियन एग्रो इन्डस्ट्री इन रूरल इकनॉमिक डिवेलप्मन्ट* (24 मई 2016)

11. डॉ. अनन्य मिलिन्द थात्ते (मुम्बई) : *महाराष्ट्र के संगीत नाटक और नाट्य संगीत : उगम, विकास और स्वरूप* (24 मई 2016)

12. डॉ. इस्मीत कौर चौधरी (गुजरात) : *नैरेटिंग द एक्पीरिअंसिस : ऑरल हिस्ट्रीस एण्ड टैस्टीमोनीज ऑफ द 1984 एंटी–सिख कारनेज विक्टम्स* (25 मई 2016)

13. डॉ. दर्शन पाडिया (अहमदाबाद) : *इश्यूज एण्ड एस्पैक्टस ऑफ लिटरेरी एण्ड एजूकेशन : लेशन फरॉम दहोद* (25 मई 2016)

14. डॉ. अभिषेक कुमार (तमिलनाडु) : *गोरा एण्ड जॉन तन्नेर – ए फॉकलदिअन रीडिंग* (25 मई 2016)

जून

1. डॉ. प्रीति चौधरी (उ.प्र.) : *साहित्य में लोकतंत्र : हिन्दी लेखन और दलित नैवाद* (20 जून 2016)

2. डॉ. रश्मि चतुर्वेदी (उ.प्र.) : *भारतीय दलित साहित्य में मानवाधिकार* (20 जून 2016)

3. डॉ. वीरेन्द्र सिंह ढिल्लों : *खाप आइडियोलोगस : कान्सेप्ट ऑफ ऑनर इन रूरल हरियाणा* (20 जून 2016)
4. डॉ. यामिनी : *इवॉल्यूशन ऑफ रिलिजस इन द मॉडरन सेक्यूलर वर्ल्ड* (21 जून 2016)
5. डॉ. लक्ष्मीकांत पाधी : *डज मॉरेलिटी डिपेंड अपॉन रिलिजन?* (21 जून 2016)
6. सुश्री मीनू गुप्ता : *लिट्रेचर एज ए मोड एथिकल रिफलैक्शन* (21 जून 2016)
7. डॉ. प्रवीणा देवी : *ऋग्वैदिक दर्शन–ज्ञान तत्व के संदर्भ में* (22 जून 2016)
8. प्रोफेसर हरदीप सिंह : *अव्यक्त वाणियों में 'स्वराज अधिकारी' की अवधारणा* (22 जून 2016)
9. डॉ. नंदिता बैनर्जी : *रोल ऑफ द कोर्टीसन इन हिन्दी फिल्म्स* (22 जून 2016)
10. डॉ. सुशील कुमार : *प्रॉब्लमैटिक्स ऑफ द पैडागोजी ऑफ इंग्लिश लैंग्वेज टीचिंग इन रूरल एरिया ऑफ पंजाब* (23 जून 2016)
11. श्री ललित कुमार पात्रा : *एजूकेटिंग एण्ड मोटिवेटिंग ग्लोबल सोसायटी फार सस्टेनेबल एन्वायरन्मेंट* (23 जून 2016)
12. श्री एस.एन. किरण : *इमेजिस ऑफ सिटीस इन मॉडरन इण्डियन पोयट्री इन इंगिलिश* (23 जून 2016)
13. डॉ. गार्गी तलपात्रा : *रिलोकेटिंग 1857 : द इवेंट एण्ड द परस्पैक्टिवस* (24 जून 2016)
14. सुश्री कविता हरिहर : *सम ऑब्ज़रवेशन ऑन द फोक रिचुअलस ऑफ नॉर्थ कर्नाटका* (24 जून 2016)
15. डॉ. शर्मिला छोटारे : *इंटेग्रेटिंग एण्ड रेजिस्टिंग द 'अदर' : द कंटेम्परेरी हिस्ट्री ऑफ इमर्जिंग ट्राइबल आइडेंटिटी इन त्रिपुरा* (24 जून 2016)

जुलाई

1. डॉ. शोभा कौर (दिल्ली) : *सांस्कृतिक साम्राज्यवाद के समानान्तर गोबिन्द साहित्य की प्रासंगिकता* (25 जुलाई 2016)
2. डॉ. सुरेश कुमार (हरियाणा) : *द करंट वर्ल्ड ऑर्डर* (25 जुलाई 2016)
3. डॉ. ताहिर एच. अंसारी (आसाम) : *द खड़गपुर चीफटैंसी ड्यूरिंग 18^{थ} एण्ड 19^{थ} सेंचरी* (25 जुलाई 2016)
4. डॉ. सोना मण्डल (दिल्ली) : *ऐस्पैक्टस ऑफ वूमेनस वर्क इन ए नियोलिबरल इण्डिया : ए कम्पेरेटिव परस्पैक्टिव* (26 जुलाई 2016)
5. डॉ. मेघाली गोस्वामी (पश्चिम बंगाल) : *दुर्गा पूजा इमेजिस एण्ड पण्डाल ऑफ सिल्चर : स्टोरीटैलर ऑफ ट्रैडिशन, सासिओ–कल्चर एण्ड ऐस्थेटिक्स* (26 जुलाई 2016)
6. डॉ. प्रद्युमन सर्मा (असाम) : *पाठशाला : द (ही) स्टोरी सो फार ...* (26 जुलाई 2016)

अगस्त

1. डॉ. निर्पत प्रसाद प्रजापति (मध्य प्रदेश) : *दलित साहित्य : संघर्ष के आयाम* (19 अगस्त 2016)
2. डॉ. प्रतीप चट्टोपध्याय (पश्चिम बंगाल) : *न्यू पालिटिक्स पालिटिकल पार्टीज इन इण्डिया : अंडरस्टैण्डिग तृणमूल कांग्रेस* (19 अगस्त 2016)

3. डॉ. प्रतिभा सिंह (झारखण्ड) : *हैदिया इन 'एचओ' ट्राइबस ऑफ झारखण्ड : फरॉम रिचूअलस टू एडिक्शन* (19 अगस्त 2016)
4. डॉ. रामदास पी (केरल) : *फिश–ऑयल टेक्नालजी इन द ब्रिटिश मालाबार केरला : ट्रांसफर, डिवेलप्मंट एण्ड इम्पैक्ट (1880–1930)* (24 अगस्त 2016)
5. डॉ. वी.पी. बडोला (हि.प्र.) : *वेदांतिज़्म एण्ड पोस्टमॉडरन सिचूएशन : ए सिंथेटिक अप्रोच टू नॉलेज* (24 अगस्त 2016)
6. डॉ. मुमताज़ बेगम (पाण्डेचरी) : *लाइफ राइट्स एजूकेशन : द यूनिवर्सल वर्डिक्ट* (24 अगस्त 2016)

सितंबर

1. डॉ. दीपक के. मिद्या (पश्चिम बंगाल) : *सोशल एक्सक्लूशन एण्ड द वल्नरबिलिटी टू एक्ट्रीमिस्ट एक्टिविटी : लुकिंग इनटू द एथनिक ग्रुप्स इन द रेड कॉरिडोर इन इण्डिया* (20 सितंबर 2016)
2. डॉ. शिव शरण कौशिक (जयपुर) : *समकालीन हिन्दी–उपन्यास और सांस्कृतिक संकट* (20 सितंबर 2016)
3. डॉ. ओइन्द्रिला घोष (कोलकाता) : *द 'न्यू वूमन' हर कंस्ट्रक्शन एण्ड डिपिक्शन इन थॉमस हॉर्डी एण्ड रवीन्द्रनाथ टैगोर : ए कंपैरेटिव स्टडी* (21 सितंबर 2016)
4. डॉ. अनिता नायर (राजस्थान) : *सिनेमा और स्त्री : आज और कल* (21 सितम्बर 2016)

अक्टूबर

1. डॉ. वीरेन्द्र सिंह यादव (उत्तर प्रदेश) : *समाजवादी चिंतक डॉ. राममनोहर लोहिया भाषाई विमर्श* (18 अक्तूबर 2016)
2. डॉ. मंजीत मान (हरियाणा) : *शिफ्टिंग पैरडाइम इन हरियाणा* (18 अक्तूबर 2016)
3. डॉ. एस. चन्द्रकिरण (मान्डय) : *ग्लोबलाइजेशन एण्ड कन्नड़ा लिट्रेचर* (18 अक्तूबर 2016)
4. डॉ. आशुतोष पाण्डे (उत्तर प्रदेश) : *जूडिशियल एक्टिविज़्म एण्ड प्रोटेक्शन ऑफ ह्यूमन राइट्स इन इण्डिया* (20 अक्तूबर 2016)
5. डॉ. प्रेमकुमारा जी.एस. (कर्नाटक) : *रूरल एनर्जी सिक्योरिटी इन कर्नाटका : थियोरिटिकल एण्ड एम्पाइरिकल परस्पैक्टिवस* (20 अक्तूबर 2016)
6. डॉ. आलोक प्रसाद (इलाहबाद) : *जवाहरलाल नेहरूज व्यू ऑफ कास्ट एण्ड कास्ट–बेस्ड सोशल एक्सक्लूशन : एक्रिटिकल एनालसिस* (20 अक्तूबर 2016)
7. डॉ. ब्रजेश कुमार त्रिपाठी (उत्तर प्रदेश) : *भारत में राजनीतिक दल व्यवस्था एवं संविद सरकारें* (20 अक्तूबर 2016)
8. डॉ. अनिल कुमार झा (मध्य प्रदेश) : *डॉ. अंबेडकरज एंगेजमेंट विद एन्वायरन्मेंटल क्वेश्चनस* (21 अक्तूबर 2016)
9. डॉ. चन्द्रशील बाबी तांबे (महाराष्ट्र) : *एन एक्सपलोरेशन ऑफ दलित आइडैंटिटी* (21 अक्तूबर 2016)
10. डॉ. आशा सुसान जैकब (केरल) : *पॉलिटिक्स ऑफ जैण्डर एण्ड गवर्नैंस : फिमेल पर्सनल नैरेटिवस एज साइटस ऑफ कल्चरल डिस्कोर्स* (21 अक्तूबर 2016)
11. डॉ. पूनम सूद (नई दिल्ली) : *उत्तर उपनिवेशवाद एवं निर्मल वर्मा* (21 अक्तूबर 2016)

नवम्बर

1. डॉ. पुलक चन्द्र देवनाथ : *सोसिओ–इकनॉमिक कंडीशन ऑफ द चकमस इन सीएडीसी ऑफ मिजोरम* (24 नवंबर 2016)
2. डॉ. आयुब खान : *थ्री करैक्टरस, थ्री पोर्टेलस : इमेजिस ऑफ द हिज्र इन हिन्दी सिनेमा* (24 नवंबर 2016)
3. डॉ. हरीश ठाकुर : *थिअराइजिंग रोमा ऑरिजनस : ए स्टडी इन मिलेन्निअम लौंग एफ्फलक्स* (24 नवंबर 2016)
4. डॉ. अनुराधा आर चैतिया : *स्टॉकस्टिक प्रोसेसिस एण्ड देयर एप्लीकेशन इन म्यूजिक : ए रिव्यू* (26 नवंबर 2016)
5. डॉ. अनिल कुमार ठाकुर *: सैक्रेड ट्रैडिशनस एण्ड प्लांटस : ए केस स्टडी ऑफ शिवालिक हिल्स, हिमाचल प्रदेश, इण्डिया* (25 नवंबर 2016)

मार्च 2017

1. डॉ. विन्नी जैन *: रिजिस्टिंग पैट्रीआर्की : द लाइव्स ऑफ वूमेन इन क्लोनिअल महाराष्ट्रा* (22 मार्च 2017)
2. डॉ. लीना चौहान : *ब्रज के उपेक्षित–अध्यात्मिक अस्थल* (22 मार्च 2017)
3. डॉ. महेश्वर मिश्रा : *उत्तर–आधुनिक संदर्भ में वागर्थ की प्रासंगिकता* (22 मार्च 2017)
4. डॉ. सुनीता झाखड़ : *ए डॉलीज हाउस : रिएनालसिस ऑफ द करैक्टर ऑफ नोरा* (23 मार्च 2017)
5. डॉ. प्रियेश सी.ए. : *द एजेण्डा फार द नेक्स्ट जेनरेशन ऑफ इकनॉमिक रिफॉर्म्स इन इण्डिया* (23 मार्च 2017)
6. डॉ. सुधीर भाऊसाहेब वाडेकऱ : *वाटर डिस्प्यूट इन द नील रीवर बेसिन* (23 मार्च 2017)
7. डॉ. मृदुला शारदा : *बियांड द प्रेजेंट डिमाक्रेसी : एन आइडिया ऑफ दीनदयाल उपाध्याय* (24 मार्च 2017)
8. डॉ. अरूण कुमार : *द इमरजिंग लैण्डस्केप ऑफ मर्जर एण्ड एक्यूजिशन इन इण्डिया* (24 मार्च 2017)
9. डॉ. जॉन मैथ्यू : *ह्यूमन राइट्स इश्यूज ऑफ माइग्रेंट वर्करस इन केरला* (24 मार्च 2017)

झ. अन्य कार्यक्रम

संस्थान में शोध प्रकाशन तथा डॉ. आनंदस्वरूप गुप्ता की जीवनी 'कॉट बाइ द पुलिस' पर 18 अप्रैल 2016 को परिचर्चा की गई। संस्थान के निदेशक प्रोफेसर चेतन सिंह ने स्वागत उद्बोधन प्रस्तुत किया। संघ लोक सेवा आयोग, नई दिल्ली के अध्यक्ष श्री दीपक गुप्ता तथा श्री मधुकर गुप्ता, एबी 96, शाहजहां रोड़, संघ लोक सेवा आयोग, नई दिल्ली के पीछे ने डॉ. आनंदस्वरूप तथा पुलिस के बारे में उनके मत से अवगत करवाया। इस अवसर पर श्री जाहुर जैदी पुलिस महानिदेशक (प्रशासन), हिमाचल प्रदेश तथा डॉ. अजय कुमार मेहरा, निदेशक (मानद) सार्वजनिक मामलों के केन्द्र, नोयडा, उ.प्र. ने अपनी प्रस्तुति दी तथा संस्थान के अध्येता डॉ. प्रदीप नायक ने धन्यवाद प्रस्ताव ज्ञापित किया।

11 मई 2016 को पाकिस्तान के उच्चायुक्त श्री अब्दुल बसित ने *'पाकिस्तान–इण्डिया रिलेशनस : द करंट सिचूएशन'* विषय पर वार्ता प्रस्तुत की। इस वार्ता के उपरांत संस्थान के अध्येताओं के साथ प्रश्नोत्तर सत्र भी चला।

25 जुलाई 2016 को संस्थान के अध्येता प्रोफेसर सुमन्यु सत्पति द्वारा *'मिल्टन, मैकॉले एण्ड द लर्नड नेटिवस : राधानाथस महायात्रा इंट्रप्टिड'* विषय पर व्याख्यान प्रस्तुत किया गया।

4. पुस्तकालय

संस्थान के पुस्तकालय का न सिर्फ नियमित अध्येता अपितु देशभर से आए आगंतुक प्रोफेसर, आंगतुक विद्वान, आईयूसी सह–अध्येता, परामर्शी सदस्य तथा संगोष्ठियों में आए प्रतिभागी लाभ उठाते वर्ष के दौरान पुस्तकालय में 1265 पुस्तकें उपार्जित की गईं तथा 187 मुद्रित जर्नल व पत्र–पत्रिकाएं अभिदत्त की गईं।

पुस्तकालय का पूरी तरह कम्प्यूटरीकरण कर दिया गया है तथा पुराने प्रसार के स्थान पर पुस्तकालय–सामग्री को जारी व वापिस करने हेतु पूर्णतः स्वचलित प्रणाली प्रयोग में लाई गई है। पुस्तकालय की पुस्तकों की सूची को ऑनलाईन कर दिया गया है। इंटरनेट द्वारा प्रयोगकर्ता कहीं भी किसी भी समय पुस्तकालय के कैटलॉग को देख सकते हैं। पुस्तकालय में 42 बाहरी सदस्यों को नाममात्र शुल्क प्राप्त कर पुस्तकालय की सदस्यता प्रदान की गई है। इसके अतिरिक्त वर्ष 2016–17 में 2388 आगंतुक पुस्तकालय में आए।

ई–संसाधनों का अभिगमन– संस्थान का पुस्तकालय ई–शोधसिंधु का सदस्य है तथा इस संकाय के अंतर्गत व्यापक ई–संसाधनों से जोड़ा गया है। इस संकाय के अंतर्गत संस्थान ने मानविकी एवं सामाजिक विज्ञानों के क्षेत्र से संबंधित सभी प्रमुख ई–संसाधनों की अभिगम्यता प्राप्त कर ली है। कैम्बरिज यूनिवर्सिटी प्रेस, ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस, जॉस्टर, प्रोजैक्ट म्यूज, स्प्रिंगरलिंक, विल्ली इंटरसाइंस, ऐन्यूअल रिव्यू, टेलर एण्ड फ्रांसिस तथा ऐब्रेरी आदि प्रमुख ई–संसाधनों की अभिगम्यता प्राप्त है। इसके अतिरिक्त पुस्तकालय के लिए ड्यूक यूनिवर्सिटी प्रेस तथा एसीएलएस को भी अभिदत्त किया गया है। वर्ष 2016–17 के दौरान ई–संसाधन अभिगम्यता का नवीनीकरण किया गया।

दूरवर्ती अभिगमन– संस्थान ने दूरवर्ती स्थानों से ई–संसाधनों की अभिगम्यता लागू की गई है। अभिदान तथा लाईसेंस संसाधनों का प्रयोग इजेडपीआरओएक्सवाई सॉफ्टवेयर के संचालन से कहीं भी किसी भी समय किया जा सकता है।

विनिबंधों का अंकरूपण – पुस्तकालय ने संस्थान द्वारा प्रकाशित विनिबंधों तथा पत्रिकाओं को डिजिटाइज्ड कर दिया गया है। पुस्तकालय से संबंधित सामग्री के अंकरूपण हेतु अलग लैब बनाई गई है।

5. प्रकाशन

प्रतिवेदन की अवधि के दौरान संस्थान द्वारा निम्नलिखित पुस्तकें व पत्रिकाएं प्रकाशित की गई हैं –

1. डॉ. गांगेय मुखर्जी कृत पुस्तक *गाँधी एण्ड टैगोर रू पालिटिक्स, ट्रुथ एण्ड कॉन्सिसनेस (*रूटलेज के साथ सह–प्रकाशन*)*
2. प्रोफेसर वर्षा भगत गांगुली द्वारा संपादित *लैण्ड राइट्स इन इण्डिया पॉलिसिस, मूवमेंट्स एण्ड चैलेंजिस (*रूटलेज के साथ सह–प्रकाशन*)*
3. प्रोफेसर डी.एन. धनाग्रे कृत *पॉपुलिज्म एण्ड पावर फार्मरस मूवमेंट इन वेस्टरन इण्डिया : 1980–2014 (*रूटलेज के साथ सह–प्रकाशन*)*
4. प्रोफेसरर श्रीशेंदु चक्रवर्ती कृत *टूवर्डस इन एथिकस एण्ड एसथेटिक्स ऑफ द फ्यूचर : रवीन्द्रनाथ टैगोर 1930–41*
5. प्रोफेसर वर्षा भगत गांगुली कृत *प्रोटैस्ट मूवमेंट्स एण्ड सिटिजनस राइट्स इन गुजरात (1970–2010*)
6. प्रोफेसर जे.एस. ग्रेवाल द्वारा संपादित तथा द्वितीय भूमिका सहित *सिक्खिज्म एण्ड इण्डियन सोसायटी*
7. प्रोफेसर वृंदा डालमिया कृत *केयरिंग टू नो : टूवर्डस ए कम्पेरेटिव केयर–बेसड एपिस्टमोलजी (ओयूपी के साथ सह–प्रकाशन)*

8. डॉ. धनंजय सिंह कृत *प्रवासी श्रम इतिहास मौखिक श्रोत : भोजपुरी लोकसाहित्य*

9. प्रोफेसर राधावल्लभ त्रिपाठी कृत *वेदा इन थियोरि एण्ड प्रैक्टिस : स्टडीज डिवेटस डॉयलॉगस एण्ड डिस्कशनस इन इण्डियन इंटैक्चुअल डिस्कोर्सिस* (डी.के. प्रिंटवर्ल्ड के साथ सह–प्रकाशन)

10. प्रोफेसर उदय कुमार कृत *राइटिंग द फर्स्ट परसन : लिटरेचर, हिस्ट्री एण्ड ऑटोबायोग्राफी इन मॉडरन केरल* (पर्मानेंट ब्लैक के साथ सह–प्रकाशन)

11. डॉ. सुमंता बनर्जी कृत *मेमोरीज ऑफ रोड़स : कलकत्ता फरॉम क्लोनिअल अर्बनाइजेशन टू ग्लोबल मॉडरनाइजेशन (ओयूपी के साथ सह–प्रकाशन)*

12. डॉ. लता सिंह तथा डॉ. गुरू राव बापट द्वारा संपादित *परफॉर्मिंग आर्टस इन इण्डिया : परफॉमेंस ऑफ/एण्ड वायलेंस*

13. डॉ. अजंता सरकार कृत *द कैटगरी ऑफ चिल्ड्रन सिनेमा इन इण्डिया*

14. डॉ. गिरिराज किशोर कृत *दलित विमर्श : संदर्भ गाँधी और अंबेडकर*

15. डॉ. एन.जे. फ्रांसिस कृत *ए सोर्स ऑफ अर्ली बुद्धिस्ट इन्स्क्रिप्शनस ऑफ अमरावती*

16. डॉ. क्वीनी प्रधान कृत *एम्पायर इन हिलस : शिमला, दार्जीलिंग, ऊटी तथा आबू (1821–1920) (ओयूपी के साथ सह–प्रकाशन)*

17. डॉ. जयेन्द्र शर्मा कृत *आउट ऑफ पॉकेट एक्सपेंडिचर एण्ड हैल्थ सिक्योरिटी इन भूटान*

18. डॉ. अनिरुधा चौधरी कृत *सिंगुलर हिस्ट्री–रीडिंग पोस्टमैटाफिजिकल हिस्ट्री इन हैड्गर एण्ड गैडमर*

पत्रिकाएं

1. समरहिल : आईआईएएस रिव्यू वॉ. 20 नं. 1, समर 2014, संपादक डॉ. अल्वीना शकील

2. समरहिल : आईआईएएस रिव्यू वॉ. 21 नं. 1, समर 2015, संपादक के. सच्चिदानंद

3. *स्टडीज इन ह्यूमैनिटीज एण्ड सोशल साइंसिस,* वॉ. 22, नं. 2 विंटर 2015 ''एंग्जाइटी ऑफ इंटीमेसी'' विषय पर विशेषांक संपादक, डॉ. कौस्तव चक्रवर्ती

4. समरहिल : आईआईएएस रिव्यू वॉ. 21 नं. 2, विंटर 2013

5. हिन्दी पत्रिका *हिमांजलि* का 12वां व 13वां अंक

6 बिक्री एवं जनसम्पर्क अनुभाग

प्रवेश शुल्क से प्राप्त आय

आलोच्य वर्ष 1 अप्रैल 2016 से 31 मार्च 2017 तक के दौरान संस्थान में 2,06,207 पर्यटक घूमने आए तथा प्रवेश शुल्क के रूप में 73,66,140/– रूपये की आय प्राप्त हुई। जबकि वाहनों का प्रवेश से 5,63,600/– रूपये की आय प्राप्त हुई। इस प्रकार वर्ष के दौरान प्रवेश टिकटों की बिक्री से कुल आय 79,29,780.00 रूपए हुई।

संस्थान के बुक शॉप में अन्य प्रकाशकों की पुस्तकों की बिक्री

संस्थान की बुक शॉप में राष्ट्रीय व अंतर्राष्ट्रीय अग्रणी प्रकाशकों की पुस्तकें बिक्री के लिए रखी जाती हैं। वर्ष के दौरान संस्थान ने इन प्रकाशकों की 468 पुस्तकों की बिक्री हुई तथा बिक्री से कुल 1,74,392/– रूपये की आय प्राप्त हुई जिसमें से 43,683/– रूपए का शुद्ध लाभ हुआ।

संस्थान के प्रकाशनों की बिक्री

इस अवधि के दौरान संस्थान ने देशभर में ग्राहकों को 79,927.00 रूपए के मूल्य की 372 पुस्तकें बेचीं। इसके अतिरिक्त संस्थान ने 07.1.2017 से 15.1.2017 तक नई दिल्ली में आयोजित विश्व पुस्तक मेले भाग लिया जिसमें 47,250.00 की राशि की कुल 307 पुस्तके बेचीं। संस्थान ने ऑनलाइन से भी 47,661.00 रूपए की कुल 263 पुस्तके बेचीं। इस प्रकार पुस्तकों की बिक्री से संस्थान को कुल 3,39,861.00 रूपए की आमदन हुई।

संस्थान के बुक क्लब की सदस्यता से प्राप्त आय

संस्थान ने इस अवधि के दौरान 34 सदस्यों को बुक क्लब का सदस्यता प्रदान की तथा कुल सदस्यता शुल्क 3400.00 (तीन हजार चार सौ मात्र) रूपए प्राप्त हुई।

सोवनियर की बिक्री

संस्थान की बुक शॉप में 'वायसरीगल लॉज और भारतीय उच्च अध्ययन संस्थान' नामक पुस्तिका, टी–शर्टस, स्वेट शर्टस, टोपियां, कॉफी मग, पिक्चर पोस्ट कार्डस तथा ग्रीटिंग कार्डस बिक्री के लिए रखे गए हैं। इस अवधि के दौरान संस्थान ने सोवनियर की बिक्री से कुल 5,44,875/– रूपए की आमदन प्राप्त की जिसमें राशि 1,97,780/–रूपए का शुद्ध लाभ हुआ।

वर्ष के दौरान विभिन्न स्त्रोतों से प्राप्त आय का विवरण निम्न प्रकार है–

क्रमांक	विवरण	राशि (रूपयों में)
1.	भा.उ.अ.सं. की पुस्तकों की बिक्री	3,39,861.00
2.	प्रवेश शुल्क से प्राप्त आय	79,29,780.00
3.	अन्य प्रकाशकों की पुस्तकों की बिक्री से शुद्ध लाभ	43,683.00
4.	सोवनियर से शुद्ध लाभ	5,44,875.00
5.	बुक क्लब की सदस्यता से आय	3400.00
	कुल	88,61,599.00

7. औषधालय

संस्थान में अच्छे साज–सामान युक्त एक औषधालय है जिसमें एक आवासी चिकित्सा अधिकारी सेवारत है, जो संस्थान के अध्येताओं सह–अध्येताओं, कर्मचारियों और उनके परिवारों को चिकित्सीय सहायता प्रदान करता है। आलोच्य वर्ष

(01.4.2016 से 31.3.2017) के दौरान औषधालय में लगभग 3451 रोगियों की जांच की गई तथा उनका ईलाज किया गया। उक्त अवधि के दौरान आवासी चिकित्सा अधिकारी द्वारा 77 रोगियों को आपातकालीन स्वास्थ्य सेवाएं प्रदान की गई।

8. यौन–उत्पीड़न समिति

वर्ष के दौरान समिति के पास अभी तक यौन–उत्पीड़न का कोई भी मामला नहीं आया है और न ही इससे पूर्व कोई मामला था।

9. सूचना का अधिकार अधिनियम 2005

दिनांक 01.4.2016 से 31.3.2017 तक सूचना के अधिकार अधिनियम 2005 के तहत कुल 40 आवेदन आए जिनमें मांगी जानकारी संबंधी आंकड़े एकत्रित कर आवेदकों को सूचना प्रेशित की गई।

10. सम्पदा का रखरखाव तथा विशेष मुरम्मत कार्य

आलोच्य वर्ष के दौरान के.लो.नि. विभाग के दोनो विंगों सिविल एवं विद्युत तथा पुरातत्व सर्वेक्षण विभाग द्वारा दैनिक रखरखाब के कार्य किए गए। किए गए मुख्य कार्यों का विवरण निम्न प्रकार से है–

1. के.लो.नि.वि. (सिविल) के कार्य।

- संस्थान ने के.लो.नि.वि. (सिविल) को 4 नए पीवीसी 500 लीटर क्षमता वाले पानी के टैंकों के लिए प्रस्तुत प्राक्कलन की एवज में 92,207/–रूपए जारी किए। इन टैंकों से जाकिर हुसैन भवन तक जीआई पाइप लाइन तथा फिटिंग की जानी थी। उक्त कार्य पूर्ण कर लिया गया है।
- संस्थान ने के.लो.नि.वि. (सिविल) को फैलोज हाउस से जूस बार तक, मिलिट्री बैरेक नं. 1 तथा आर.पी. निवास की दूसरी जगहों पर डंगे लगाने के लिए दिए आक्कलन की एवज में 9,32,600/–रूपए जारी किए थे। कार्य प्रगति पर है।
- संस्थान ने क्रैंची लाइन से स्केवयर हाल संपर्क सड़क के किनारे घिसी हुई रेलिंग के स्थान पर एम.एस. ट्यूब रेलिंग लगाने के लिए प्रस्तुत आक्कलन की एवज में के.लो.नि.वि. (सिविल) को 61,41,300/–रूपए जारी किए गए। के.लो.नि.वि. (सिविल) कार्य पूर्ण कर दिया है।
- संस्थान ने के.लो.नि.वि. (सिविल) को स्केवयर हाल के समीप स्टेबल हाउस के आगे चितकबरी टाईलें लगाने के लिए 4,47,360/–रूपए जारी किए गए। के.लो.नि.वि. (सिविल) कार्य पूर्ण कर दिया है।
- संस्थान ने गोरखा गेट–2 से सोवनियर भॉप तक संपर्क सड़क के किनारे तथा सोवनियर शॉप से फैलोज हाउस तक पुरानी रेलिंग के स्थान पर एम.एस. ट्यूब रेलिंग लगाने के लिए प्रस्तुत आक्कलन की एवज में के.लो.नि.वि. (सिविल) को 46,75,930/–रूपए जारी किए गए। के.लो.नि.वि. (सिविल) कार्य पूर्ण कर दिया है।
- संस्थान ने के.लो.नि.वि. (सिविल) को छत्त का रिसाब रोकने तथा परिसर में स्थित पुाने टैनिस कोर्ट में होने वाले रिसाब को रोकने के लिए 17,30,100/–रूपए की धनराशि स्वीकृत की थी। यह कार्य जारी है

- संस्थान ने दिनांक 31.3.2017 को वर्ष 2016–17 के लिए यहां के रिहायशी भवनों की वार्षिक मरम्मत के लिए 48,19,310/–रूपए की राशि जारी की गई है। कार्य प्रगति पर है।
- संस्थान ने दिनांक 31.3.2017 को वर्ष 2016–17 के लिए यहां के गैर– रिहायशी भवनों की वार्षिक मरम्मत के लिए 43,70,460/–रूपए की राशि जारी की गई है। कार्य प्रगति पर है।
- संस्थान ने के.लो.नि.वि.को संस्थान की परिसर में स्थित उद्यान के डंगे की मरम्मत के लिए प्रस्तुत आक्कलन जिसे संस्थान द्वारा अनुमोदति किया गया था के 13,53,315/–रूपए की राशि जारी की गई थी। कार्य प्रगति पर है।

2. के.लो.नि.वि. (विद्युत) के कार्य

- संस्थान ने के.लो.नि.वि. (विद्युत) को बी–ब्लॉक, प्रोस्पैक्ट हिल, आर.पी. निवास में मरम्मत, जीर्णोद्धार, पुनः संयोजन तथा उन्नयन के लिए प्रस्तुत एवं संस्थान द्वारा अनुमोदित आक्कलन की एवज 13,36,424/–रूपए जारी किए। कार्य पूर्ण हो चुका है।
- संस्थान ने के.लो.नि.वि. (विद्युत) को 28 फैमिली लाइन के तथा मिलिट्री बैरेक नं. 4 7 क्वाटरों में जुड़नार, आंगन की लाइट तथा वायरिंग/रिवायरिंग के लिए प्रस्तुत प्राक्कलन जोकि संस्थान द्वारा अनुमोदित किया था की एवज में 9,64,221/– रूपए की राशि जारी की गई। उक्त कार्य को पूर्ण कर लिया गया है।
- संस्थान ने के.लो.नि.वि. (विद्युत) को संस्थान के मुख्य भवन के समीप सजावटी स्ट्रीट लाइट खम्बों तथा साज–समान के लिए प्रस्तुत आक्कलन की एवज में 24,55,474/– रूपए की राशि जारी की गई। कार्य पूर्ण कर लिया गया है।
- संस्थान ने आलोच्य वर्ष के दौरान के.लो.नि.वि. (विद्युत) को राष्ट्रपति परिसर में पम्प, स्ट्रीट लाइट, लिफ्ट तथा अन्य उपकरणों के वार्षिक रखरखाव के लिए 21,80,112/–रूपए की राशि जारी की है। कार्य प्रगति पर है।

3. भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण

आलोच्य वर्ष के दौरान संस्थान द्वारा भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण को जीर्णोद्धार का कोई भी कार्य नहीं दिया गया क्योंकि भा.पु.स. द्वारा वर्ष 2013–15 में सौंपा गया कार्य पूरा नहीं किया गया है। संस्थान ने भा.पु.स. विभाग को लंबित पड़े कार्य को शीघ्र पूर्ण करने और संस्थान को उपयोगिता प्रमाण पत्र प्रस्तुत के लिए कहा गया है।

4. सफाई अभियान

भारत सरकार द्वारा कार्यलय ज्ञापन संख्या 17–14/2014–एस एण्ड एस, दिनांक 24.3.2016 के तहत जारी दिशा–निर्देशों के अनुपालन में 17 अगस्त 2016 को संस्थान के सभी अधिकारियों व कर्मचारियों ने मुख्य भवन के स्वागति–कक्ष में स्वच्छता बनाए रखने तथा सफाई करने में अपना समय देने की शपथ ग्रहण की। इस कड़ी में सभी अधिकारियों/कर्मचारियों ने उस दिन अपने–अपने अनुभागों में सफाई व्यवस्था बनाए रखने के लिए दो घण्टे तक अपना योगदान दिया। शपथ ग्रहण समारोह तथा सफाई अभियान के दौरान ली गई तस्वीरों को संस्थान की वेबसाइट पर अपलोड किया गया।

साथ ही भारत सरकार के दिशा–निर्देशों के अनुसार संस्थान के सभी अधिकारी व कर्मचारी 20 अगस्त 2016 से वर्ष में 100 घण्टे स्वच्छता में लगाने के लक्ष्य को पूर्ण करने के हर सोमवार को दो घण्टे सफाई के लिए लगाते हैं।

संस्थान पहले से परिसर में कूड़ेदान लगा चुका है। संस्थान द्वारा यह सुनिश्चित कर लिया जाता है कि कूड़ेदानों से एकत्रित कूड़े को आगामी प्रक्रिया के लिए नगर निगम शिमला के सुपुर्द कर दिया जाए।

5. स्वच्छता पखवाड़ा (1–15 सितंबर 2016)

भारत सरकार के दिशा–निर्देशों के अनुरूप संस्थान में 01 सितंबर से 15 सितंबर 2016 तक स्वच्छता पखवाड़ा मनाया गया। इस संदर्भ में संस्थान में निम्नलिखित गतिविधियां/कार्यक्रम आयोजित किए गए–

1. संस्थान की परिसर तथा शौचालयों को साफ–सुथरा रखने के लिए संस्थान परिसर को कूड़ा–करकट रहित बनाने के लिए प्रयास किए गए।
2. इस क्रम में दो बैनर (एक मुख्य गेट तथा दूसरा संस्थान के मुख्य भवन की मुख्य ड्योढ़ी पर) लगाए गए।
3. पुराने रिकॉर्ड/पुरानी फाइलों की साफ–सफाई के लिए प्रयास किए गए।

11. लेखा एवं बजट

क) वर्ष 2016–2017 का अनुमोदित संशोधित आंकलन तथा वर्ष 2017–2018 के लिए अनुमानित बजट इस प्रकार है–

योजना का नाम	संशोधित आंकलन 2016–2017	बजट आंकलन 2017–2018
	(रुपए लाखों में)	
अभिलक्ष्य शीर्ष–31	1385.00	2214.00
अभिलक्ष्य शीर्ष–35	215.00	651.00
अभिलक्ष्य शीर्ष–36	970.00	1050.00
कुल	2570.00	3915.00

महालेखाकार, लेखापरीक्षा (केन्द्रीय), भारतीय लेखा परीक्षा एवं लेखा विभाग द्वारा वर्ष 2016–17 के संस्थान के परीक्षित वार्षिक लेखे अनुलंग्क–1 पर हैं।

ख) आई.यू.सी. लेखे

मानविकी व सामाजिक विज्ञानों के लिए अन्तरविश्वविद्यालय केन्द्र (आईयूसी) योजना के लेखों का परीक्षा सनदी लेखाकार मैसर्ज राकेश कुमार कौशल एवं कंपनी, शिमला द्वारा की गई है। वर्ष 2016–2017 का व्यय 28.68 लाख रूपए था।

मानविकी व सामाजिक विज्ञानों के लिए अन्तरविश्वविद्यालय (आईयूसी) केन्द्र योजना के वर्ष 2016–2017 परीक्षित लेखों का विवरण अनुलग्क–2 पर है।

12. उद्यान

संस्थान पूर्व वायसरीगल लॉज तथा ऐतिहासिक भवन में चलायमान है जिसका एक अपना सुन्दर उद्यान है तथा जिसमें फूलों, पौधों और वृक्षों की विभिन्न प्रजातियाँ हैं। विश्व में शायद इस प्रकार के प्राकृतिक दृश्य का उद्यान एक ही है। उद्यान वर्षा पर निर्भर हैं जो इसकी सिंचाई एवं रखरखाब के लिए एकत्रित किया जाता है। बारिश के संरक्षित जल से लॉन व उद्यान के रखरखाव के लिए प्रयोग किया जाता है। आलोच्य वर्ष में निम्न कार्य किये गए–

- संस्थान के उद्यान की नर्सरी में मौसमी पौधों का बीजारोपण किया गया। इन पौधों को संस्थान के प्रागण की क्यारियों, परिसर में स्थित अध्येताओं/अधिकारियों के आवासों जैसे– स्कवेयर हाल, सिद्धार्थ विहार, आब्जरबेटरी कॉटेज, आब्जरबेटरी हाउस (अतिथि गृह), रेड स्टोन, डैलविला तथा बिलासपुर हाउस में प्रत्यारोपण किया गया।
- माह मार्च से जून 2016 के दौरान कोलेस (प्लैक्ट्रैंथस), मैरीगोल्ड (टैगेटस), ऐस्टर, कॉक्सकांब (सिलोसिया), स्वीट विलियम (डायंथस), ग्लोब एमारंथ (गोफरेना), फ्लोक्स, कोरिओप्सिस, ज़िनिया, कॉस्मस, सनफ्लावर, एमारंथस साल्विया आदि के पौधों का बीजारोपण किया गया। साथ ही नर्सरी में जुलाई 2016 में ही पैटुनिया, सिनरेरिया, साइकलामेन, एंटीर्हिनियम, साल्विया, जिप्सोफिया के नए पौधे उगाए गए। इसी प्रकार पैंजी, पैटूनिया, एंटीर्हिनियम, प्रिमूला प्राइमरोज, साइकलामेन, स्कैंजांथस, सिनेरिया, पैंजी, कैलसियोलेरिया, गोडेसिया, एंथीरहिनीम, आईस प्लांट, होलीहॉक, गैलेडिया, टैनासिटम, कैरियोप्सिस, डेलफिनिम, गोडैटिया, लिंचनिस, डैल्फिनियम, जिप्सोफिला (सफेद व गुलाबी) तथा बिगोनिया की विविध किस्में नर्सरी में तैयार की गईं तथा अक्तूबर–दिसंबर 2016 के दौरान उनका क्यारियों में पौधारोपण किया गया। इनमें से कुछ पौधों को गमलों में लगाया गया और संस्थान के मुख्य भवन के अंदर सजावट के लिए लगाया गया।
- मई माह के अंत तथा जून के प्रारंभ में संस्थान के मुख्य भवन के आगे तथा पिछली तरफ पौधारोपण के लिए क्यारियां बनाई गई। इसके अतिरिक्त संस्थान की परिसर, अधिकारियों, अध्येताओ तथा स्टाफ के आवासों की क्यारियों को मौसमी पौधारोपण के लिए तैयार किया गया।
- बरसात में प्रिमूला, जैरेनियम, ऑर्किडस, ऐस्टर, रेन्यूकलस, साइकलामेन हाइड्रेंजिया आदि को प्लास्टिक बैग में से निकालकर नए गमलों में लगाया गया।
- जूनिपर, फयूसिया, जेरेनियम, कैमेलिया, मैगनोलिया, यूफोरबिया, गुलाब, हाइड्रैंजिया, वनसेनिया रोज, रेड स्पारिया, आइवी, प्राइवेट, ड्यूरांटा, इयोनिमस, रेक्स बिगोनिया, सप्रेसिस प्राइवेट हैडगे, चाइनीज लैटरन, हैडरा हैलिक्स आइवी, सिनरेरिया मैरितिमा, जैस्मिन आदि की कलमें नर्सरी के मिस्ट चैम्बर में रोपित की गई, जिन्हें पी–बैगों में डालकर बिक्री तथा उद्यान में प्रयोग किया गया। उसी तरह फरवरी 2017 में ऐंटीहिरिनम, स्काइजैंथस, पेटुनिया, पैंजी, गोडिशिया, क्लारकिया ड्राफ्ट तथा लम्बा सिनरेरिया, रूडबेकिया आदि मौसमी पौधों को तैयार किया गया तथा उन्हें संस्थान की क्यारियों में लगाया गया।
- क्यारियों से मौसमी पौधों के बीज एकत्रित किए गए और उनका उद्यान अनुभाग में भण्डारन किया गया ताकि आगामी जून–जुलाई तथा अक्तूबर–नवंबर के मौसम में उनका पौधारोपण किया जा सके।
- बरसात से भूमि कटाव को रोकने के उद्देश्य से संस्थान के मुख्य भवन के पिछली तरफ तथा स्टेरी कॉटेज में लगभग 150 पौधों का रोपण किया गया, जिनमें देवदार (50), सप्रेसिस (60) तथा जूनिपर (30) के पौधे थे। इन पौधों का रखरखाव भी उद्यान अनुभाग द्वारा किया गया। इस दौरान संस्थान के पिछली तरफ स्थित घास के मैदानों में बाड़ स्वरूप नए पौधे लगाए गए। इसके अतिरिक्त छोटी ढलानों पर तथा कैफेटेरिया/सोवनियर शॉप के समीप हाईड्रेंजिया, व्हाईट डेजी, डुरांटा, जूनिपरस के नए पौधे लगाए गए।
- संस्थान की परिसर और साथ ही स्केवयर हाल, आब्जरवेटरी कॉटेज, रेड स्टोन तथा अध्येताओं के आवासों के आसपास बनी क्यारियों में माह नवंबर तथा दिसंबर टिलर व हाथों से जोताई की गई। नए पौधों की पनीरी लगाई गई। इस अवधि के दौरान दौरान अचैलिया, क्रिसंथैमम, गोल्डन रॉड, सनसाइन डेड्रीम, पायोनिया, नाइल लिली आदि बारहमासी/स्थाई पौधों के संवर्धन प्रणाली के अंतर्गत बहुलीकरण तथा पुनःरोपण का कार्य भी किया गया।
- संस्थान में फूलों की रोजमर्रा की जरूरतें पूरी करने के लिए टेनिस कोर्ट के नीचे बगीचे में नई पौध क्यारियां

बनाई गईं। नई पौध को कोहरे से बचाने के लिए चीड़ की पत्तियों एवं कैक्टस से ढांपा गया। गोबर से बनी खाद खरीदी गई तथा संस्थान की परिसर में स्थित फूलों की क्यारियों में बिखेरा गया और सही ढंग से मिट्टी में मिलाया गया। इसके अलावा सर्दियों में गोबर से बनी खाद को स्केवयर हाल, आब्जरवेटरी कॉटेज, सिद्धार्थ विहार, रेड स्टोन तथा दूसरे अन्य भवनों के साथ बने बगीचों में भी डाला गया।

- माह मार्च से मई के बीच हिमालयी बान के वृक्षों के गिरे हुए पुराने पत्तों को इकट्ठा किया गया। पत्तों को एक गहरे गढडे में रखा गया जिन्हे गल–सड़ जाने के बाद मिट्टी में मिलाया गया।
- उद्यान की क्यारियों में लगाए गए पौधों तथा घास के मैदान से नियमित तौर पर खड़पतवार निकाला गया।
- संस्थान के अधिकारियों तथा अध्येताओं के आवासों के बाहर बनी फूलों की क्यारियों की नियमित तौर पर सफाई तथा झाड़ियों, बेलों की कांट–छांट की गई। इसके अतिरिक्त उद्यान अनुभाग में कार्यरत स्टाफ द्वारा उद्यान के विभिन्न भागों की साफ–सफाई कर उसका रखरखाव किया गया।
- गर्मियों के दिनों में टैंक में इकत्रित बारिश के पानी से उद्यान की क्यारियों में नियमित रूप से सिंचाई की गई।
- संस्थान के आसपास, अतिथि गृह तथा अधिकारियों व अध्येताओं के आवासों जैसे– स्केवयर हाल, सिद्धार्थ विहार, ऑब्जरवेटरी कॉटेज, ऑब्जरवेटरी हाउस, रेड स्टोन, डेलविला, बिलासपुर हाउस आदि के आगे बने लॉनों के घास की नियमित रूप से कटाई की गई।
- विस्टेरिया, टेकोमा, जैस्मिन आदि बेलों की छंटाई आदि की गई। सर्दी के मौसम में हाइड्रेंजिया, कारला लिली, डे लिली, अगेपैंथस लिली आदि के अनचाही टहनियों की कांट–छांट कर उन्हें निकाला गया।
- संस्थान के मुख्य भवन के आगे के बरामदे में लटकी फूलों की टोकरियों को बारहमासी फूल लगाकर बदल दिया गया।
- माह में दो बार सोमवार को पीतल के गमलों को साफ किया गया तथा उद्यान अनुभाग में कार्यरत कर्मचारियों द्वारा मुख्य भवन, जन प्रवेश में रखे गए मिट्टी के गमलों का बराबर रखरखाव किया गया तथा फूल–सज्जा भी की गई।
- पी–बैगों से नई पौध को गमलों में लगाने के लिए माह अप्रैल 2016 मिट्टी का मिश्रण तैयार किया गया। यह मिश्रण गले–सड़े बान के पत्ते, चिकनी मिट्टी, रेत तथा गाय का गोबर (बान के पत्तों के चार किल्टे, एक–एक किल्टा चिकनी मिट्टी का और गाय का गोबर) से तैयार किया गया। साथ ही मिट्टी का यह मिश्रण नवंबर 2016 में भी तैयार किया गया।
- समीपर्वी जंगल से सेवार घास का इकट्ठा किया गया तथा गमलों के अंदर लगाया गया ताकि उनसे पानी और मिट्टी का रिसाव न हो।
- उद्यान अनुभाग द्वारा संस्थान के प्राधिकारियों के निर्देशानुसार संस्थान में आने वाले अति विशिष्ट मेहमानों के दौरे के दौरान उन्हें भेंट करने के लिए पुष्पगुच्छ तैयार किये गये।

भारतीय लेखा परीक्षा तथा लेखा विभाग

कार्यालय प्रधान निदेशक लेखा परीक्षा (केन्द्रीय), चण्डीगढ़

सत्यमेव जयते

Indian Audit & Accounts Department

Office of The Principal Director of Audit (Central), Chandigarh

क्रमांक: पी.डी.ए. (सी)/के. व्यय/SAR IIASS 2016-17/2017-18/ 4268
दिनांक: 31/10/17

सेवा मे,

सचिव,
शिक्षा विभाग,
मानव संसाधन विकास मंत्रालय,
भारत सरकार
नई दिल्ली – 110001

विषय: Indian Institute of Advanced Study, Shimla के वर्ष 2016-17 के लेखाओं पर पृथक लेखापरीक्षा प्रतिवेदन

महोदय,

कृपया Indian Institute of Advanced Study, Shimla के वर्ष 2016-17 के लेखाओं पर पृथक लेखापरीक्षा प्रतिवेदन (Separate Audit Report) संसद के दोनों सदनों के समक्ष प्रस्तुत करने हेतु सलंग्न पायें।

संसद में प्रस्तुत होने तक प्रतिवेदन को गोपनीय रखा जाए।

संसद में प्रस्तुत करने के उपरांत प्रतिवेदन की पांच प्रतियाँ इस कार्यालय को भी भेजदी जाएँ।

कृपया इस पत्र की पावती भेजें।

भवदीय,

संलग्न: उपरोक्त अनुसार

हस्ता

प्रधान निदेशक

उपरोक्त की प्रतिलिपी वर्ष 2016-17 की पृथक लेखापरीक्षा प्रतिवेदन की प्रति सहित आवश्यक कार्यवाही हेतु निदेशक, Indian Institute of Advanced Study, Rashtrapati Niwas, Shimla को प्रेषित की जाती है।

उप निदेशक (केन्द्रीय व्यय)

प्लाट न. 20-21, सेक्टर - 17ई, चण्डीगढ़ – 160017 Plot No. 20-21, Sector-17E, Chandigarh - 160017
दूरभाष/ Tel.No. 0172 - 2782020 फैक्स/ FAX No:0172 - 2782021 / 2783974 ई-मेल/ Email: pdacchandigarh@cag.gov.in

31 मार्च, 2017 को समाप्त वर्ष के लिए, भारतीय उच्च अध्ययन संस्थान, शिमला के लेखों के बारे में भारत के नियन्त्रक–महालेखा परीक्षक की पृथक लेखा परीक्षा रिपोर्ट।

1. हमने 31 मार्च, 2017 को भारतीय उच्च अध्ययन संस्थान, शिमला के तुलन–पत्र, तथा उस तिथि को समाप्त वर्ष आय एवं व्यय लेखा/प्राप्तियां एवं भुगतान लेखों की नियन्त्रक–महालेखा परीक्षक के (कर्तव्य, शक्तियां एवं सेवा की शर्तें) अधिनियम, 1971 की धारा 20 (1) के अन्तर्गत लेखापरीक्षा की है। यह लेखापरीक्षा 2013–14 से 2017–18 तक की अवधि के लिए सौंपी गई है। इन वित्तीय विवरणों का उत्तरदायित्व संस्थान के प्रबन्धन का है। हमारा उत्तरदायित्व हमारी लेखापरीक्षा पर आधारित इन वित्तीय विवरणों पर मत व्यक्त करना है।

2. इस पृथक लेखापरीक्षा प्रतिवेदन में केवल वर्गीकरण, उत्तम लेखाकरण प्रथाओं के साथ अनुरूपता, लेखाकरण सम्बन्धी मानकों और प्रकटन मानकों आदि के सम्बन्ध में केवल लेखाकरण व्यवहार पर नियन्त्रक–महालेखापरीक्षक (सीएजी) की टिप्पणियां शामिल हैं। कानून, नियमों एवं विनियमों (औचित्य एवं नियमितता) तथा दक्षता एवं निष्पादन आदि के पहलुओं के अनुपालन में वित्तीय लेन–देन पर लेखापरीक्षा अभ्युक्तियां आदि कोई हों तो निरीक्षण प्रतिवेदनों/भारत के नियंत्रक महा–लेखापरीक्षक के लेखापरीक्षा प्रतिवेदनों के माध्यम से अलग से सूचित की गई है।

3. हमने भारत में सामान्य रूप से स्वीकार किए गए लेखापरीक्षण मानकों के अनुसार अपनी लेखापरीक्षा की है। इन मानकों में अपेक्षित है कि हम इस विषय में समुचित आश्वासन प्राप्त करने के लिए कि क्या वित्तीय विवरण मिथ्या विवरणों से मुक्त हैं, योजना बनाते हैं और लेखापरीक्षा करते हैं। लेखापरीक्षा में नमूना के आधार पर जांच करना, राशियों का समर्थन करने वाले साक्ष्यों और वित्तीय विवरणों में किए गए प्रकटन शामिल होते हैं। लेखापरीक्षा में प्रयुक्त किए गए लेखाकरण सिद्धान्तों तथा प्रबन्धन द्वारा किए गए महत्त्वपूर्ण अनुमानों के निर्धारण और वित्तीय विवरणों के समग्र प्रस्तुतीकरण का मूल्यांकन भी शामिल है। हम विश्वास करते हैं कि हमारी लेखापरीक्षा हमारे मत के लिए समुचित आधार प्रधान करती है।

4. अपनी लेखापरीक्षा के आधार पर हम रिपोर्ट करते हैं कि –

क. हमने अपनी सर्वोतम जानकारी तथा विश्वास के अनुरूप लेखापरीक्षा के उद्देश्यार्थ आवश्यक सूचनाएं और स्पष्टीकरण प्राप्त कर लिये हैं।

ख. इस प्रतिवेदन से सम्बन्धित तुलनपत्र और आय एवं व्यय लेखा/प्राप्तियाँ एवं भुगतान लेखा की भारत सरकार के मानव संसाधन विकास मंत्रालय द्वारा जारी आदेश संख्या 29–4/2012–एफडी, दिनांक 17 अप्रैल 2015 में निर्धारित प्रारूप में तैयार किया गया है।

स. बही–खातों का निरीक्षण करने के उपरांत हमारी राय में भारतीय उच्च अध्ययन संस्थान, शिमला द्वारा लेखों का अभिलेख उपयुक्त बहियों और अन्य सम्बद्ध अभिलेखों में किया गया है।

ग. हम आगे रिपोर्ट करते हैं कि–

अ. तुलन पत्र

अ.1 स्थिर परिसम्पतियां (योजना)

ई–संसाधन/डिजिटाइजेशन/स्वचलन – ₹ 5.14 लाख

उपर्युक्त में ₹ 2.92 लाख एचपी सरवर की खरीद हेतु खर्च किए गए मगर एमएस विंडो सरवर ऑप्रेटिंग सिस्टम उपलब्ध न होने पर दिनांक 31.3.2017 तक यह उपकरण प्रयोग में नहीं लाया गया। हलांकि ₹ 1.17 लाख की राशि का मूल्य ह्रास अधिक लगाया गया है। इसके परिणामस्वरूप ₹ 1.17 लाख की राशि की स्थिर परिसम्मतियों में व्यय की अत्युक्ति तथा संग्रह/पूंजीगत निधि में न्यूनोक्ति हुई है।

अ. 2 चालू परिसम्पतियां (अनुसूची–7)– ₹ 41.04 करोड़

उपरोक्त में दिनांक 31.3.2017 को 0.42 लाख रूपए की डाक टिकटों की राशि का अंतशेश सम्मिलिति नहीं किया गया है। फलस्वरूप चालू परिसम्पतियों तथा संग्रह/पूंजीगत निधि में 0.42 लाख रूपए की न्यूनोक्ति हुई है।

ब. वार्षिक लेखों पर लेखा परीक्षा टिप्पणी का शुद्ध प्रभाव

31 मार्च 2017 को भारतीय उच्च अध्ययन संस्थान, शिमला के वार्षिक लेखों पर लेखा परीक्षा टिप्पणी का शुद्ध प्रभाव निम्न प्रकार है–

1. 1.59 लाख रूपए परिसम्पतियों को कम दर्शाया गया है।
2. वर्ष के लिए 1.17 लाख रूपए का अधिक्य कम दर्शाया गया है तथा संग्रह/पूंजीगत निधि को भी 1.59 लाख रूपए कम दर्शाया गया है।

स. सामान्य

स–1 मूल्य ह्रास – ₹ 45.74 लाख

संस्थान द्वारा वित्तीय वर्ष 2014–15 से पूर्व खरीदी गई स्थिर परिसम्पतियों पर मूल्य ह्रास नहीं दर्शाया गया है और स्थाई परिसम्मतियों को वास्तविक खरीद मूल्य पर ही दर्शाया गया है। यद्यपि संस्थान ने वर्ष 2014–15 से लेकर खरीदी गई स्थिर परिसम्मतियों पर मूल्य ह्रास प्रभारित किया है। इस प्रकार स्थिर परिसम्पतियों पर मूल्य ह्रास प्रभारित न करने के कारण स्थिर परिसम्मतियों तथा पूंजीगत निधि पर उक्त ह्रास मूल्य के समान अतियुक्ति हुई है।

इस तथ्य को पूर्व की पृथक लेखा रिपोर्ट में भी उजागर किया गया था मगर कोई कार्यवाही नहीं की गई।

स–2 भारतीय उच्च अध्ययन संस्थान, शिमला ने दिनांक 30.9.2016 को 32,281/–रूपए की राशि का पुराने बैंक को रद्द किया तथा विपरीत प्रविष्टि की। उसे भुगतान के लिए प्रस्तुत नहीं किया गया क्योंकि तीन माह अवधि पूरी हो चुकी थी। यद्यपि संस्थान ने यह राशि अपनी नकदी बही में जमा की है मगर बहियों में इस पुराने चैक की देनदारी नहीं दर्शायी है। लेखों में आवश्यक सुधार की आवश्यकता है।

स–3 सेवानिवृति लाभ प्रावधान (अनुसूची–3 चालू देनदारियां तथा प्रावधान)

केन्द्रीय उच्चत्तर शिक्षण संस्थानों के लिए नए लेखा प्रारूप तथा लेखा भारतीय चार्टिड अकाउंट संस्थान के मानक–15 के अनुसार सेवानिवृति का लाभ बीमांकिक मूल्यांकन पद्धति के अनुरूप किया जाना होता है। यद्यपि संस्थान ने वित्तीय वर्ष 2016–17 के लेखों में सेवानिवृति लाभ का प्रावधान किया है मगर उक्त को बीमांकिक मूल्यांकन के आधार पर नहीं किया गया है। विगत पृथक लेखा परीक्षण रिपोर्ट में यह आपत्ति दर्ज की गई थी मगर सुधार हेतु कोई कदम नहीं उठाया गया।

द. सहायता अनुदान

उपलब्ध कुल निधि 55.96 करोड़ रूपए (गैर योजना 12.33 करोड़ रूपए, योजना 43.63 करोड़ रूपए) विगत वर्ष

की अप्रयोग शेष निधि राशि 23.50 करोड़ रूपए (गैर योजना 1.16 करोड़ तथा योजना 22.34 करोड़ रूपए) तथा वर्ष 2016–17 के दौरान प्राप्त अनुदान राशि 30.45 करोड़ रूपए (गैर योजना 11.17 करोड़ तथा योजना 19.28 करोड़); तथा 2.01 करोड़ की राशि का ब्याज (योजना) संस्थान मात्र 17.62 करोड़ रूपए (9.71 करोड़ रूपए गैर योजना तथा 7.91 करोड़ रूपए योजना) ही व्यय कर पाया तथा 31 मार्च 2017 को अप्रयोग राशि 38.34 करोड़ रूपए (2.62 करोड़ गैर–योजना तथा 35.72 करोड़ गैर–योजना) शेष रह गई।

घ. पूर्ववर्ती परिच्छेदों में हमारी अभ्युक्तियों के अनुसार हम रिपोर्ट करते हैं कि इस प्रतिवेदन से सम्बन्धित तुलनपत्र और आय एवं व्यय लेखा/प्राप्तियां एवं भुगतान लेखा, लेखा–बहियों के अनुरुप हैं।

ङ. हमारी राय में और हमारी सर्वोत्तम जानकारी तथा हमें दिए गए स्पष्टीकरण के अनुसार लेखाकरण नीतियां एवं लेखाओं पर टिप्पणियों के साथ पठित तथा उपर्युक्त उल्लिखित महत्वपूर्ण मामलों और इस लेखापरीक्षा प्रतिवेदन के अनुबन्ध में उल्लिखित अन्य मामलों से सम्बधित उक्त वितीय विवरण भारत में सामान्यतः स्वीकृत लेखाकरण के सिद्धांतों के अनुरुप सही एवं उचित दृष्टिकोण प्रस्तुत करते हैः–

1. जहां तक 31 मार्च 2017 को भारतीय उच्च अध्ययन संस्थान, शिमला के कार्यो के तुलन–पत्र से संबधित हैः तथा

2. जहां तक उस तिथि को समाप्त वर्ष के लिए 'घाटे' के आय एवं व्यय लेखे से संबधित है।

भारत के नियंत्रक–महालेखापरीक्षक की ओर से
हस्ता./
प्रधान निदेशक, लेखापरीक्षा (केन्द्रीय)
चण्डीगढ़

स्थानः चण्डीगढ़
दिनांकः 31.10.2017

लेखा परीक्षण के साथ अनुलग्नक

(1) आन्तरिक लेखा परीक्षा प्रणाली की पर्याप्तता

संस्थान की आंतरिक लेखा परीक्षा सनदी लेखाकार द्वारा की गई है।

(2) आन्तरिक नियंत्रण प्रणाली की पर्याप्तता

देनदारों से बकाया राशि की पुष्टि का कोई तरीका नहीं है।

(3) अचल परिसम्पतियों तथा वस्तु–सूचियों का सत्यापन

वर्ष 2016–17 के दौरान अचल परिसम्पतियों तथा वस्तु–सूचियों का भौतिक सत्यापन किया गया है। हलांकि परिसम्पतियों तथा वस्तु–सूचियों के सत्यापन का लेखा परीक्षा के दौरान प्रगति पर था।

(4) सांविधिक देयताओं की अदायगी में नियमितता।

संस्थान द्वारा सभी सांविधिक देयताओं को नियमित रूप से जमा करवाया गया है।

हस्ता./–

उप निदेशक

प्रबंधकीय पत्र के साथ अनुलग्नक

क. तुलन पत्र

स्थिर परिसम्पत्तियां (अनुसूची–4)– ₹ 1897.05 लाख

डिजिटाइजेशन/स्वचलन तथा नेटवर्किंग/ई–संसाधन– ₹ 5.04 लाख

1. उपर्युक्त में वर्ष 2015–16 के लिए डिजिटाइजेशन/स्वचलन तथा नेटवर्किंग/ई–संसाधन पर हुए आय प्रकृति का व्यय 0.91 लाख रूपए सम्मिलित है। इसके प्रतिफल में राजस्व व्यय में 0.45 लाख रूपए की न्यूनोक्ति हुई है (राजस्व व्यय को पूंजीगत व्यय ₹ 0.91 घटाव राजस्व व्यय ₹ 0.46 लाख पर मूल्य ह्रास – ₹ 61,112 X 60% + ₹ 29,718 X 30%) तथा ₹ 0.45 लाख की परिसम्पत्तियों को अतिश्योक्ति तथा उसी राशि की संग्रह की अतिश्योक्ति हुई है।

2. लेखा टिप्पणियों के अनुसार संस्थान ने आयकर अधिनियम 1962 में निर्धारित दरों पर मूल्य ह्रास का प्रावधान किया है। आयकर अधिनियम के अनुसार सॉफ्टवेयर तथा ई–पत्रिकाओं पर 100 प्रतिशत मूल्य ह्रास का प्रावधान है मगर 1.04 लाख रूपए के सॉफ्टवेयर तथा ई–पत्रिकाओं पर 60 प्रतिशत मूल्य ह्रास दर्शाया गया है। इस फलस्वरूप 0.53 लाख रूपए (₹ 1.04 लाख घटाव राजस्व व्यय ₹ 0.51 लाख – ₹ 66,140 X 60% + ₹ 37518 X 30%) की न्यूनोक्ति हुई है तथा ₹ 0.53 लाख की परिसम्पत्तियों को अतिश्योक्ति तथा उसी राशि की संग्रह की अतिश्योक्ति हुई है।

ख. सामान्य

सामान्य भविष्य निधि का निवेश

भारत सरकार के वित्त मंत्रालय द्वारा जरी अधिसूचना संख्या एफ.5(88)/2006–पीआर दिनांक 14.08.2008 के अनुसार सामान्य भविष्य निधि का निवेश नहीं किया गया है। 2..80 करोड़ रूपए का निवेश राष्ट्रीयकृत बैंक में स्थिर जमा में लगाया गया है। यह विषय पिछली पृ.ले.प.रिपोर्ट में उठाया गया था मगर सुधार हेतु कोई कदम नहीं उठाया गया है।

हस्ता./–

निदेशक

भारतीय उच्च अध्ययन संस्थान,
राष्ट्रपति निवास, शिमला-171005

तुलन–पत्र (31 मार्च, 2017)

निधि का स्त्रोत	अनुसूची	राशि (रूपयों में)	राशि (रूपयों में)
		चालू वर्ष 2016–17	विगत वर्ष 2015–16
संग्रह / पूंजीगत निधि	1	238742117.80	236680376.55
निर्दिष्ट / निर्धारित / प्रतिबंधित निधि	2	47546604.00	23428115.00
चालू देनदारियां तथा प्रावधान	3	441320022.43	291714520.86
कुल		727608744.23	551823012.41
निधि की प्रयुक्ति			
स्थाई परिसंपत्तियां			
भौतिक परिसंपत्तियां	4	218267092.73	189705917.73
अभौतिक परिसंपत्तियां	4	39653.00	66089.00
चालू कार्य पूंजी			
निश्चित एवं अनुदान से निवेश	5	-	0-00
दीर्घावधि			
लघु अवधि			
निवेश –अन्य	6	-	0.00
चालू परिसम्पतियां,	7	410398586.50	247240386.68
ऋण, अग्रिम जमा	8	98903412.00	114810619.00
कुल		727608744.23	551823012.41
महत्त्वपूर्ण लेखा पद्धतियां	23		
संभाव्य देनदारियां तथा लेखा–1 के बारे में टिप्पणी	24		

हस्ता./–
(राकेश कुमार सिंह)
लेखा अधिकारी

हस्ता./–
(प्रेम चंद)
सचिव

हस्ता./–
(अजित कुमार चतुर्वेदी)
निदेशक

भारतीय उच्च अध्ययन संस्थान,
राष्ट्रपति निवास, शिमला-171005

31 मार्च, 2017 को समाप्त वित्तीय वर्ष के आय व व्यय का लेखा

आय	अनुसूची	राशि (रूपयों में) चालू वर्ष	राशि (रूपयों में) विगत वर्ष
अकादमिक प्राप्तियां	9	0.00	0.00
अनुदान एवं दान	10	147973745.43	134464173.00
आय और निवेश	11	0.00	0.00
अर्जित ब्याज	12	0.00	0.00
अन्य आय	13	2639509.37	1708864.88
पूर्वाधि आय	14	0.00	209635.00
पूंजीगत अनुदान को हस्तांरित ह्रास मूल्य		4167380.00	9035231.00
कुल (क)		154780634.80	145417904.38
व्यय			
स्टाफ का भुगतान तथा लाभ	15	70388891.00	80822911.19
अकादमिक व्यय	16	32589218.12	32451985.00
प्रशासनिक तथा सामान्य व्यय	17	13310052.87	11552757.00
यातायात व्यय	18	388419.00	694995.00
मरम्मत और रखरखाव	19	31464101.00	10282056.00
वित्तीय लागतें	20	4123.56	5416.00
अन्य व्यय	4	#REF!	9151194.65
ह्रास मूल्य	21	0.00	0.00
पूर्वाधि व्यय	22	0.00	30855.00
कुल (ख)		#REF!	144992169.84
व्यय पर आय की अधिक्य का संतुलन (क–ख)		#REF!	425734.54
निर्दिष्ट निधि को/से हस्तांतरण भवन निधि अन्य (निर्दिष्ट)		--	--
अधिक्य बकाया/(घाटा) पूंजीगत निधि में हस्तांतरित		--	--
महत्त्वपूर्ण लेखा पद्धतियां	23	--	
संभाव्य देनदारियां तथा लेखा के बारे में टिप्पणी	24		

हस्ता./–	हस्ता./–	हस्ता./–
(राकेश कुमार सिंह)	(प्रेम चंद)	(अजित कुमार चतुर्वेदी)
लेखा अधिकारी	सचिव	निदेशक

भारतीय उच्च अध्ययन संस्थान,
राष्ट्रपति निवास, शिमला-171005

अनुसूची –1 संग्रह/पूंजीगत निधि

विवरण	राशि (रूपए) चालू वर्ष 2016–17	राशि (रूपए) विगत वर्ष 2015–16
वर्ष के प्रारंभ में बकाया राशि	236680376.55	236254642.01
जमा : संग्रह/पूंजीगत निधि में अंशदान		
जमा : यूजीसी से प्राप्त अनुदान, भारत सरकार तथा राज्य सरकार से पूंजीगत व्यय हेतु		
जमा : निर्धारित निधि से परिसम्पतियों की खरीद		
जमा : प्रायोजित परियोजनाओं, जहां मालिकाना हक संस्थान के पास है से परिसम्पतियों की खरीद		
जमा : दान की गई परिसम्पतियां/ उपहार प्राप्त		
जमा : अन्य योजन		
जमा : आय व व्यय लेखा से हस्तांतरित व्यय पर आधिक्य आय	2061741.25	425734.54
कुल	**238742117.80**	**236680376.55**
घटाया गया		
वर्ष के अंत	238742117.80	236680376.55

भारतीय उच्च अध्ययन संस्थान,
राष्ट्रपति निवास, शिमला-171005

अनुसूची–2 निर्दिष्ट/निश्चित की गई/चंदा निधि/पूंजीगत अनुदान

राशि (रूपए)

विवरण	निधिवार विच्छेद					कुल	
	पूंजीगत अनुदान सहायता	निधि क.क.क.	निधि ख.ख.ख.	निधि ग.ग.ग.	चंदा निधि	चालू वर्ष	विगत वर्ष
क							
क. अथशेष	23428115.00						20657552.50
ख. वर्ष के दौरान जमा	28285869.00						11805794.00
ग. निधि के निवेश से प्राप्त आय							--
घ. निवेश/अग्रिम राशि से उपार्जित ब्याज							0.00
ङ. बैंक बचत से प्राप्त ब्याज							0.00
च. अन्य आधिक्य (विशिष्ट प्रकृति के)							0.00
कुल (क)	51713984.00	0	0	0	0		32463346.50
ख							
प्रयोगिक/निधि के उद्देश्यों के प्रति व्यय							
पूंजीगत व्यय							
आगम व्यय							
न्यूनतर ह्रास मूल्य	4167380.00						9035231.50
कुल (ख)	47546604.00	0	0	0	0		23428115.00
वर्ष के अंत में शेष बकाया राशि (क–ख)	47546604.00						--
प्रस्तुतकर्ता							
नकद एवं बैंक शेष							
निवेश							
उपार्जित ब्याज मगर देय नहीं							
स्थाई परिसम्पतियां	47546604.00						23428115.00
कुल							

भारतीय उच्च अध्ययन संस्थान,
राष्ट्रपति निवास, शिमला-171005

अनुसूची–3 चालू देयताएं एवं प्रावधान

राशि (रूपयों में)

	चालू वर्ष 2016–17	विगत वर्ष 2015–16
(क) चालू देयताएं		
1. स्टॉफ द्वारा जमा		
2. छात्रों द्वारा जमा		
3. विविध लेनदार		
अ) वस्तुओं और सेवाओं के लिए		
ब) अन्य		
4. जमा–अन्य (ईएमडी, सिक्योरिटी जमा)		
5. वैधानिक देयताएं (जीपीएफ, टीडीएस, डब्ल्यूसी, सीपीएफ, कर, जीआईएसय, एनपीएस)		
अ) अतिदेय	42653-00	42653-00
ब) अन्य		
6. अन्य चालू देयताएं		
क) वेतन	4651474.00	3570034.00
ख) प्रायोजित परियोजनाओं के तहत प्राप्तियां		
ग) प्रायोजित अध्येतावृतियों तथा छात्रवृतियों के निमित्त प्राप्तियां		
घ) अप्रयोगिक अनुदान	235025832.86	235025832.86
ङ) एमओसी का अप्रयोगिक अनुदान	202157.00	202157.00
च) अन्य निधियां		
छ) अन्य देनदारियां		2931.00
ज) कर्मचारी कल्याण संस्था		450.00
झ) देय टीडीएस	121039.00	75101.00
ञ) देय नई पेंशन योजना		
ट) अनूप सर्विस स्टेशन	3464041.00	
ठ) देय व्यय		3924848.00
ड) आईसी4एचडी के लिए देय	97558.00	
कुल (क)	**391972763.43**	**242844006.86**
(ख) प्रावधान		
1. कराधान हेतु		
2. ग्रेच्यूटी	31590383.00	32726241.00
3. सेवानिवृत्ति/पैंशन	1700000.00	
4. जमा अवकाश का नकदीकरण	16056876.00	
5. व्यापार वारंटी/दावे		
6. अन्य (विशेषतः)		
कुल (ख)	**49347259.00**	**48870514.00**
कुल (क+ख)	**441320022.43**	**291714520.86**

भारतीय उच्च अध्ययन संस्थान,
राष्ट्रपति निवास, शिमला-171005

अनुसूची–4

(क) सहायता अनुदान से अर्जित स्थाई परिसम्मतियां

विवरण	मूल्य ह्रास कर दर	01.4.2016 को अथशेष	01.04.2016 से 31.3.2017 तक जमा	01.04.2016 से 31.3.2017 तक विलोपन	कुल	वार्षिक मूल्य ह्रास	31.03.2017 को बट्टे में डाली गई रकम
कार्यालयी उपकरण		7742537.63	-	-	7742537.63	-	7742537.63
इलैक्ट्रॉनिक उपकरण		10123527.00	-	-	10123527.00	-	10123527.00
फर्नीचर एवं फिटिंग		6923261.75	-	-	6923261.75	-	6923261.75
वाहन		2838064.64	-	-	2838064.64	-	2838064.64
पुस्तकालय उपकरण		5926142.38	-	-	5926142.38	-	5926142.38
अन्य उपकरण		814603.20	-	-	814603.20	-	814603.20
प्रकाशन उपकरण		839040.02	-	-	839040.02	-	839040.02
पुस्तकालय पुस्तकें तथा पत्रिकाएं		137892532.43	-	-	137892532.43	-	137892532.43
पुस्तक योजना संसाधन		247622.12	-	-	247622.12	-	247622.12
संसाधन पुस्तक योजना उपकरण		41087.56	-	-	41087.56	-	41087.56
उद्यान उपकरण		145805.00	-	-	145805.00	-	145805.00
श्रव्य दृश्य		422500.00	-	-	422500.00	-	422500.00
भारतीय सभ्यता के अध्ययन केन्द्र की परियोजना		518442.00	-	-	518442.00	-	518442.00
वर्ड प्रोसेसर्ज		1304921.00	-	-	1304921.00	-	1304921.00
आईसी4एचडी के अंतर्गत स्थिर परिसम्पतियां			-	-	0.00	-	0.00
आईसी4एचडी के अंतर्गत इलैक्ट्रॉनिक्स परिसम्पतियां		1603450.00	-	-	1603450.00	-	1603450.00
पुस्तकालय पुस्तकें तथा पत्रिकाएं		103748.00	-	-	103748.00	-	103748.00
फर्नीचर तथा फिटिंग		516537.00	-	-	516537.00	-	516537.00
उप योग (क)		**178003821.73**	**-**	**-**	**178003821.73**	**-**	**178003821.73**

ख) स्थिर परिसम्पतियां

योजना

पुस्तकालय पुस्तकें एवं उपकरण	10	7421502.00	7965819.00	0.00	15387321.00	1538732.00	13848589.00
अध्येताओं के लिए वर्ड प्रोसेसर्ज	20	47219.00	0.00	0.00	47219.00	9444.00	37775.00
ईपीबीएक्स	7.5	227953.00	0.00	0.00	227953.00	17096.00	210857.00
प्रिंटर	20	6545.00	0.00	0.00	6545.00	1309.00	5236.00
क्रॉकरी		54440.00	0.00	0.00	54440.00	4083.00	50357.00
एलईडी	7.5	97128.00	0.00	0.00	97128.00	7285.00	89843.00
बिस्तर	7.5	90801.00	0.00	0.00	90801.00	6810.00	83991.00
एल्यूमिनियम सीढ़ी	5	36167.00	0.00	0.00	36167.00	1808.00	34359.00
बिस्तर एवं लिनेन (पूंजीगत व्यय योजना)	7.5	331866.00	0.00	0.00	331866.00	24890.00	306976.00
बिस्तर एवं लिनेन (पूंजीगत व्यय योजना एस.सी)	7.5	253922.00	0.00	0.00	253922.00	19044.00	234878.00
बायोमैट्रिक हाजरी मशीन (पूंजीगत व्यय)	5	32692.00	13466.00	0.00	46158.00	2308.00	43850.00
इलैक्ट्रॉनिक पोडियम (पूंजीगत व्यय योजना एसटी)	5	316431.00	0.00	0.00	316431.00	15822.00	300609.00
फर्नीचर और जुड़नार (पूंजीगत व्यय)	7.5	54863.00	0.00	0.00	54863.00	4115.00	50748.00
फर्नीचर और जुड़नार (पूंजीगत व्यय, एसटी)	7.5	235697.00	0.00	0.00	235697.00	17677.00	218020.00
व्यावसायिक एलइडी (पूंजीगत व्यय)	7.5	209997.00	0.00	0.00	209997.00	15750.00	194247.00
वीडियो कांफ्रेंसिंग उपकरण (पूंजीगत व्यय योजना)	8	227850.00	0.00	0.00	227850.00	18228.00	209622.00
डिजिटाइजेशन/स्वचलन/ई–संसाधन	40	504493.00	351543.00	0.00	856036.00	342414.00	513622.00
फाइल कैबिनेट	7.5	0.00	64605.00	0.00	64605.00	4845.00	59760.00
इलैक्ट्रॉनिक कम्पैक्ट स्केल	7.5	0.00	2016.00	0.00	2016.00	151.00	1865.00
हस्त मैटल डिटेक्टर	7.5	0.00	5850.00	0.00	5850.00	439.00	5411.00
जर्नल	40	0.00	2648419.00	0.00	2648419.00	1059368.00	1589051.00
क्यू–मैनेजर	7.5	0.00	35438.00	0.00	35438.00	2658.00	32780.00
जूता सफाई मशीन	7.5	0.00	5288.00	0.00	5288.00	397.00	4891.00

वैप321 वायरलेस एन सिलेक्टेबल बैंड	8	0.00	207900.00	0.00	207900.00	16632.00	191268.00
मोनो ब्लॉक पम्प	5	0.00	221315.00	0.00	221315.00	11066.00	210249.00
हैण्ड ड्रायर	5	0.00	55000.00	0.00	55000.00	2750.00	52250.00
फायर अलार्म सिस्टम	5	0.00	13964030.00	0.00	13964030.00	698202.00	13265828.00
गीज़र एवं निकास पंखा	5		488210.00	0.00	488210.00	24411.00	463799.00
बार कोड स्कैनर	7.5	0.00	18692.00	0.00	18692.00	1402.00	17290.00
उप योग (ख)		**10149566.00**	**26047591.00**	**0.00**	**36197157.00**	**3869136.00**	**32328021.00**
ग) गैर–योजना							
पुस्तकालय पुस्तकें एवं उपकरण	10	2175.00	0.00	0.00	2175.00	218.00	1957.00
एल्यूमिनियम सीढ़ी	5	23217.00	0.00	0.00	23217.00	1161.00	22056.00
उद्यान उपकरण	5	61384.00	0.00	0.00	61384.00	3069.00	58315.00
घास काटने की म ाीन	5	26489.00	32000.00	0.00	58489.00	2924.00	55565.00
माइक	5	40808.00	0.00	0.00	40808.00	2040.00	38768.00
कम्प्यूटर	20	0.00	293900.00	0.00	293900.00	58780.00	235120.00
क्रॉकरी	7.5	0.00	12800.00	0.00	12800.00	960.00	11840.00
पर्दे एवं उनके उनके टांगने की छड़ें	7.5	0.00	53747.00	0.00	53747.00	4031.00	49716.00
इलैक्ट्रॉनिक्स उपकरण	7.5	0.00	12500.00	0.00	12500.00	938.00	11562.00
प्रिंटर	20	0.00	60900.00	0.00	60900.00	12180.00	48720.00
दूरभाष	7.5	0.00	6038.00	0.00	6038.00	453.00	5585.00
रसोई अल्मारियां	7.5	0.00	80150.00	0.00	80150.00	6011.00	74139.00
टुलु पम्प	7.5	0.00	11486.00	0.00	11486.00	861.00	10625.00
ईपीबीएक्स (कार्यालय उपकरण)	7.5	0.00	13250.00	0.00	13250.00	994.00	12256.00
वैक्यूम क्लीनर	7.5	0.00	99687.00	0.00	99687.00	7477.00	92210.00
उप योग (ग)		**154073.00**	**676458.00**	**0.00**	**830531.00**	**102097.00**	**728434.00**

घ) आईसी4एचडी के अंतर्गत स्थिर परिसम्पतियां							
आईसी4एचडी के अंतर्गत इलैक्ट्रॉनिक्स परिसम्पतियां	7.5	316474.00	0.00	0.00	316474.00	23736.00	292738.00
पुस्तकालय पुस्तकें तथा पत्रिकाएं	10	186097.00	0.00	0.00	186097.00	18610.00	167487.00
खेल परिसम्पतियां	5	128244.00	0.00	0.00	128244.00	6412.00	121832.00
कार्यालयी उपकरण (हॉट केस)	7.5	33966.00	0.00	0.00	33966.00	2547.00	31419.00
ऑडियो प्रणाली	7.5	0.00	1561820.00	0.00	1561820.00	117137.00	1444683.00
फर्नीचर उपकरण	7.5	16920.00	0.00	0.00	16920.00	1269.00	15651.00
कुल (घ)		**681701.00**	**1561820.00**	**0.00**	**2243521.00**	**169711.00**	**2073810.00**
कुल 1 (क+ख+ग+घ)	**188989161.73**	**28285869.00**	**0.00**	**217275030.73**	**4140944.00**	**213134086.73**	**188989161.73**
(ख) अमूर्त संपत्तियां							
नेटवर्क सुविधा	40	66089.00	0.00	0.00	66089.00	26436.00	39653.00
उपयोग (ख)		**66089.00**	**0.00**	**0.00**	**66089.00**	**26436.00**	**39653.00**
अनुसूची–4 (2)स्वनिधि से उपार्जित स्थिर परिसम्पतियां							
कालीन	7.5	591149.00	0.00	0.00	591149.00	44336.00	546813.00
सीसीटीवी कैमरे	7.5	84291.00	3673565.00	0.00	3757856.00	281839.00	3476017.00
हनीवाल आउटडोर कैमरा	5	26016.00	0.00	0.00	26016.00	1301.00	24715.00
क्यू मैनेजर	7.5	0.00	39600.00	0.00	39600.00	2970.00	36630.00
कैफे सॉफ्टवेयर	40	0.00	54950.00	0.00	54950.00	21980.00	32970.00
एलईडी	7.5	0.00	31000.00	0.00	31000.00	2325.00	28675.00
एलईडी जुड़नार	5	0.00	1023843.00	0.00	1023843.00	51192.00	972651.00
टिकट बूथ मशीन	5	15300.00	0.00	0.00	15300.00	765.00	14535.00
उप योग (2)		**716756.00**	**4822958.00**	**0.00**	**5539714.00**	**406708.00**	**5133006.00**
सकल योग (सरकारी एवं उपार्जित निधि) स्थिर परिसम्पत्तियां	**189705917.73**	**33108827.00**	**0.00**	**222814744.73**	**4547652.00**	**218267092.73**	**189705917.73**
सकल योग (स्थिर एवं अस्प् य परिसम्पत्तियां)	**189772006.73**	**33108827.00**		**222880833.73**	**4574088.00**	**218306745.73**	**189772006.73**

भारतीय उच्च अध्ययन संस्थान,
राष्ट्रपति निवास, शिमला-171005

अनुसूची – 5

राशि रूपयों में

	चालू वर्ष 2016–17	विगत वर्ष 2015–16
1. केन्द्र सरकार की प्रतिभूतियां 2. राज्य सरकार की प्रतिभूतियां 3. अन्य अनुमोदित प्रतिभूतियां 4. ऋण पत्र तथा बॉड 5. अन्य (निर्दिष्ट करने योग्य)		
कुल	0.00	0.00

राशि रूपयों में

अनुसूची – 5 (क)

	निधि	चालू वर्ष 2015–16
1. 2. 3. 4. 5.	धर्माथ निधि निवेश	
कुल	0.00	0.00

अनुसूची 6

राशि (रूपयों में)

	चालू वर्ष 2016–17	विगत वर्ष 2015–16
केन्द्र सरकार की प्रतिभूतियां राज्य सरकार की प्रतिभूतियां अन्य अनुमोदित प्रतिभूतियां ऋण पत्र तथा बॉड अन्य (निर्दिष्ट करने योग्य)		
कुल	0.00	0.00

भारतीय उच्च अध्ययन संस्थान,
राष्ट्रपति निवास, शिमला-171005

अनुसूची – 7 चालू परिसम्पत्तियां

राशि रूपयों में

	चालू वर्ष 2016–17	विगत वर्ष 2015–16
1. स्टॉक क) भण्डार एवं अतिरिक्त ख) खुले उपकरण ग) प्रकाशन घ) प्रयोगशाला केमिकल, उपभोग्य तथा कांच की वस्तुएं ङ) भवन सामग्री च) विद्युत सामग्री छ) स्टेशनरी ज) जलापूर्ति पदार्थ ञ) सोवनियर वस्तुएं	5098778.00 842316.00	4323699.12 1106216.00
2. विविध लेनदार अ) छः माह से अधिक की अवधि के बकाया ऋण ब) अन्य	447560.75	447560.00
3. नकद एवं बैंक में जमा राशि		
नकद अ) अनुसूचित बैंक में जमा : चालू खाते में जमा खाते में बचत खाते में ब) चालू खाते में गैर–अनुसूचित बैंक में जमा –अवधि जमा खाते–बचत खाते में जमा	28630.00 -- 207565720.00 196370307.25	32505.00 47638937.94 72405810.00 121282694.87
4. डाकघर बचत खाते में जमा विविध अग्रिम राशि (आईसी4एचडी) भा.सरकार से प्राप्य अनुदान ड्राफ्ट तथा भा.पो.ऑ.	2963.00	2963.00
कुल	410398586.50	247240386.00

भारतीय उच्च अध्ययन संस्थान,
राष्ट्रपति निवास, शिमला-171005

अनुसूची – 8

राशि रूपयों में

ऋण, अग्रिम तथा जमा राशि	चालू वर्ष 2016–17	विगत वर्ष 2015–16
1. कर्मचारियों को भुगतान की अग्रिम राशि (गैर–ब्याज सहित)		
क) वेतन	93150.00	129600.00
ख) त्योहार	-	
घ) चिकित्सा अग्रिम	-	0.00
ङ) अन्य (निर्दिष्ट)	27900.00	19800.00
च) डब्ल्यू.सी.ए.	431.00	431.00
छ) प्रतिकूल जलवायु तथा हुड हेतु अग्रिम राशि		
2. कर्मचारियों को दीर्घकालीन अग्रिम राशि (ब्याज सहित)		
क) वाहन ऋण	69000.00	69000.00
ख) गृह ऋण		--
ग) अन्य (निर्दिष्ट)	2444442.00	2444442.00
घ) कम्प्यूटर के लिए अग्रिम राशि	477000.00	187000.00
3. अग्रिम राशि तथा नकद अथवा वस्तु के रूप में अथवा जिसका मूल्य प्राप्त होने वाला हो		
क) पूंजीगत राशि से		
ख) आपूर्तिकर्ताओं के लिए	84963227.00	106709473.00
ग) अन्य (के.लो.नि.वि.)	5873687.00	4357965.00
आईयूसी से वसूल करने योग्य	106219.00	106219.00
अन्य से प्राप्य		
4. पूर्वदत्त व्यय		
क) बीमा		
ख) अन्य व्यय (पूर्व भुगतान किये गए ई–जर्नल)	--	--
ग) पूर्व चुकता वा.रखरखाव (आईसी4एचडी)	--	--
5. जमा		
क) दूरभाष	36200.00	36200.00
ख) पट्टा किराया	20000.00	20000.00
ग) विद्युत/जवाहर बुक बांइडर के पास प्रतिभूति		
घ) एआईसीटीइ, यदि लागू हो	2400.00	2400.00
ङ) अतिथि	19000.00	19000.00
1. विनीत गैस एजेंसी के पास प्रतिभूति	980.00	980.00
2. नगर निगम के पास प्रतिभूति	100000.00	100000.00
3. ईंधन के लिए जमा	4633.00	4633.00
4. अन्य	---	33434.00
5. वसूली योग्य नकद छुट्टी अतिरिक्त भुगतान		
वसूली योग्य टीडीएस	95237.00	95237.00
प्रकाशनाधीन पुस्तकें	9986.00	74701.00
अग्रिम कर	200000.00	200000.00
वसूली योग्य आयकर	65920.00	65920.00
टीडीएस (निर्धारण वर्ष 2016–17)	---	58190.00
मेस से वसूली योग्य	---	75994.00

6. उपार्जित आय क. निवेश–अन्य ख. ऋण तथा अग्रिम ग. अन्य (अप्राप्त देय आय)		
7. यूजीसी एवं प्रायोजित परियोजनाओं से अन्य प्राप्ति योग्य क) प्रायोजित परियोजनाओं में जमा शेष ख) अध्येतावृति तथा छात्रवृति में जमा शेष ग) वसूली योग्य अनुदान घ) यूजीसी से वसूली योग्य ङ) अन्य प्राप्ति योग्य	4000000.00	
8. दावे प्राप्ति योग्य		
कुल	98903412.00	114810619.00

टिप्पणी– यदि चलायमान निधि को कर्मचारियों को गृह निर्माण, कम्प्यूटर तथा वाहन की खरीद हेतु अग्रिम धन के तौर पर दिया गया हो तो उक्त अग्रिम राशि निशिचित/चंदा के रूप में होगी। इस ब्याजयुक्त अग्रिम राशि का बकाया इस सूची में नहीं दर्शाया गया है।

भारतीय उच्च अध्ययन संस्थान,
राष्ट्रपति निवास, शिमला-171005

अनुसूची – 9 शैक्षणिक प्राप्तियां

रुपए में राशि

	चालू वर्ष 2016–17	विगत वर्ष 2015–16
छात्रों से फीस	0.00	0.00
अकादमिक	0.00	0.00
1. ट्यूशन फीस	0.00	0.00
2. प्रवेश शुल्क	0.00	0.00
3. नामांकन शुल्क	0.00	0.00
4. पुस्तकालय प्रवेश शुल्क	0.00	0.00
5. प्रयोगशाला शुल्क	0.00	0.00
6. आर्ट एंड क्राफ्ट शुल्क	0.00	0.00
7. पंजीकरण शुल्क	0.00	0.00
8. पाठ्यक्रम शुल्क	0.00	0.00
कुल (क)	0.00	0.00
1. प्रवेश परीक्षा शुल्क	0.00	0.00
2. वार्षिक परीक्षा शुल्क	0.00	0.00
3. मार्क शीट, प्रमाण पत्र शुल्क	0.00	0.00
4. प्रवेश परीक्षा शुल्क	0.00	0.00
कुल (ख)	0.00	0.00
अन्य शुल्क	0.00	0.00
1. पहचान पत्र शुल्क	0.00	0.00
2. जुर्माना/विविध शुल्क	0.00	0.00
3. चिकित्सा शुल्क	0.00	0.00
4. परिवहन शुल्क	0.00	0.00
5. छात्रावास शुल्क	0.00	0.00
कुल (ग)	0.00	0.00
प्रकाशनों की बिक्री	0.00	0.00
1. एडमिशन फॉर्मों की बिक्री	0.00	0.00
2. सिलेबस और प्रश्न पत्र, आदि की बिक्री	0.00	0.00
3. प्रोस्पेक्टस प्रवेश फॉर्मों की बिक्री	0.00	0.00
कुल (घ)	0.00	0.00
अन्य अकादमिक प्राप्तियां	0.00	0.00
1. कार्यशालाओं, कार्यक्रमों का पंजीकरण शुल्क	0.00	0.00
2. पंजीकरण शुल्क (अकादमिक स्टाफ कॉलेज)	0.00	0.00
कुल (ङ)	0.00	0.00
समग्र योग (क+ख+ग+घ+ङ)	0.00	0.00

टिप्पणी– प्रवेश शुल्क सदस्यता शुल्क आदि सामग्री रहे हैं और पूंजीगत प्राप्तियों की प्रकृति मे होते हैं, ऐसी राशि पूंजीगत निधि के रूप में मानी जानी चाहिए। अन्यथा इस तरह की फीस उचित रूप से इस सूची में शामिल की जाएगी।

भारतीय उच्च अध्ययन संस्थान,
राष्ट्रपति निवास, शिमला-171005

अनुसूची – 10 अनुदान/रियायत (अचल अनुदान प्राप्ति)

रुपए में राशि

विवरण	योजना		कुल योजना	गैर–योजना भा.सरकार	चालू वर्ष 2016–17	विगत वर्ष 2015–16
	भा.सरकार	विशिष्ट योजना आईसी4एचडी				
अथशेष अग्रानीत	80666184.00	142717141.00	223383325.00	11642507.86	235025832.86	77468714.86
जमा : वर्ष के दौरान प्राप्तियां	192805000.00		192805000.00	111753000.00	304558000.00	296111500.00
उपार्जित ब्याज	4978665.00	15090958.00	20069623.00	0.00	20069623.00	7715585.00
योजना से आईसी4एचडी में हस्तांतरण	-	-	0.00	0.00	0.00	93621027.00
योजना से आईसी4एचडी में हस्तांतरण	-	-	0.00	0.00	0.00	10000000.00
योजना से आईसी4एचडी में हस्तांतरण	-	-	0.00	0.00	0.00	-93621027.00
योजना से आईसी4एचडी में हस्तांतरण	-	-	0.00	0.00	0.00	-10000000.00
कुल	278449849.00	157808099.00	436257948.00	123395507.86	559653455.9	381295799.86
न्यूनतर–यूजीसी/भा.स. से वापिसी			0.00		0.00	0.00
बकाया	278449849.00	157808099.00	436257948.00	123395507.86	559653455.86	381295799.86
न्यूनतर– पूंजीगत व्यय के लिए प्रयुक्त (क)	26047591.00	1561820.00	27609411.00	676458.00	28285869.00	11805794.00
बकाया	252402258.00	156246279.00	408648537.00	122719049.86	531367586.86	369490005.86
न्यूनतर– राजस्व व्यय के लिए प्रयुक्त (ख)	51497737.00	0.00	51497737.00	96476008.43	147973745.43	134464173.00
बकाया अग्रनीत	200904521.00	156246279.00	357150800.00	26243041.43	383393841.43	235025832.86

भारतीय उच्च अध्ययन संस्थान,
राष्ट्रपति निवास, शिमला-171005

अनुसूची – 11 निवेश से आय

रुपए में राशि

विवरण	निश्चित / दान		अन्य निवेश	
	चालू वर्ष 2016–17	विगत वर्ष 2015–16	चालू वर्ष 2016–17	विगत वर्ष 2015–16
1. ब्याज				
क. सरकारी प्रतिभूति पर				
ख. अन्य बॉण्ड/ऋणपत्र				
2. मियादी जमा पर ब्याज				
3. उपार्जित आय मगर कर्मचारियों की अग्रिम राशि की मियादी जमा ब्याज पर नहीं				
4. बैंक बचत खाते पर ब्याज				
5. अन्य (निर्दिष्ट)				
कुल	0.00	0.00	0.00	0.00
निश्चित/दान निधि में हस्तांतरण				
शेष	शुन्य	शुन्य	शुन्य	शुन्य

भारतीय उच्च अध्ययन संस्थान,
राष्ट्रपति निवास, शिमला-171005

अनुसूची – 12 उपार्जित ब्याज

रुपए में राशि

विवरण	चालू वर्ष 2016–17	विगत वर्ष 2015–16
1. अनुसूचित बैंकों में बचत खाता पर	....	....
2. ऋण पर	....	....
क. कर्मचारी/स्टाफ	....	....
ख. अन्य (एफडीआर)	....	....
3. कर्जदारों तथा अन्य प्राप्तियों से	....	....
टिप्पणी– कृप्या अनुसूची–10 का संदर्भ ग्रहण करें।		

भारतीय उच्च अध्ययन संस्थान,
राष्ट्रपति निवास, शिमला-171005

अनुसूची – 13 (अन्य आय)

विविध आय में सम्मिलित पदार्थों की राशि में मदें अलग से विनिर्दिष्ट होनी चाहिए।

रुपए में राशि

क. भूमि और भवनों से आय	चालू वर्ष 2016–17	विगत वर्ष 2015–16
1. छात्रावास कक्ष का किराया	--	--
2. लाईसेंस शुल्क	--	--
3. सभागार/खेल का मैदान/सुविधा केन्द्र आदि से प्राप्त किराया	--	--
4. बिजली प्रभार की वसूली	--	--
5. जल प्रभार की वसूली	--	--
कुल	--	--
ख. संस्थान के प्रकाशनों की बिक्री	592550.45	663947.88
ग. आयोजनों से प्राप्त आय		
1. वार्षिक समारोह/खेल प्रतियोगिताओं के आयोजन से सकल प्राप्ति		
न्यूनतरः वार्षिक समारोह/खेल प्रतियोगिताओं के आयोजन पर प्रत्यक्ष व्यय		
2. त्योहारों से सकल प्राप्ति		
न्यूनतरः त्योहारों के आयोजनों पर प्रत्यक्ष व्यय		
3. शैक्षणिक दौरों से प्राप्त सकल प्राप्ति		
न्यूनतरः शैक्षणिक दौरों प्रत्यक्ष व्यय		
4. अन्य (निर्दिष्ट तथा पृथक दर्शाने योग्य)		
कुल	0.00	0.00
घ. अन्य		
1. परामर्श आय		
2. सूचना के अधिकार से शुल्क		
3. रॉयल्टी से प्राप्त आय		
4. आवेदन पत्रों की बिक्री (भर्ती)		
5. अन्य प्राप्तियां (टैण्डर फार्म, रद्दी आदि की बिक्री)	34978.00	118645.00
6. बिक्री से लाभ/परिसम्पतियों का निपटान		
क) स्वाधिकृत परिसम्पतियां		
ख) निःशुल्क प्राप्त परिसम्पतियां		
7. संस्थानों, कल्याणकारी निकायों तथा अंतर्राष्ट्रीय संगठनों से अनुदान/दान		
8. अन्य (निर्दिष्ट)		
अन्य निर्दिष्ट सुविधा प्रसार का किराया	74518.00	
अतिथि गृह	500512.87	435823.00
वाहन का निजी प्रयोग	-	--

पौधों की बिक्री	7990.00	--
पुस्तकालय सदस्यता	74140.00	36000.00
अप्रयोगिक वस्तुओं की बिक्री	0.00	0.00
खेल सदस्यता शुल्क	0.00	0.00
विविध आय	0.00	0.00
टिकट बूथ से प्राप्त शुद्ध आय	1354820.05	454449.00
कुल अन्य (निर्दिष्ट)	2011980.92	926272.00
कुल अन्य (8)	2046958.92	1044917.00
समग्र योग (क + ख + ग + घ)	2639509.37	1708864.88

अनुसूची 14 – पूर्व कालिक आय

	राशि रूपयों में	
विवरण	चालू वर्ष 2016–17	विगत वर्ष 2015–16
1. अकादमिक प्राप्तियां	---	---
2. निवेश से आय	---	---
3. उपार्जित ब्याज	---	---
4. अन्य	---	209635.00
कुल	---	209635.00

भारतीय उच्च अध्ययन संस्थान,
राष्ट्रपति निवास, शिमला-171005

अनुसूची – 15 स्टाफ का वेतन तथा लाभ (व्यवस्थापन व्यय)

विविध आय में सम्मिलित पदार्थों की राशि में मदें अलग से विनिर्दिष्ट होनी चाहिए।

शिक्षक और गैर–शिक्षक एवं तदर्थ स्टाफ का पृथक वर्गीकरण होगा। मंहगाई भत्ते की बकाया राशि तथा वेतन वृद्धि का बकाया पृथक दर्शाया जाएगा।

रुपए में राशि

	चालू वर्ष 2016–17			विगत वर्ष 2015–16		
	योजना	गैर योजना	कुल	योजना	गैर योजना	कुल
क. वेतन एवं मजदूरी	-	44994361.00	44994361.00	1183713.00	43101416.00	44285129.00
ख. भत्ते तथा बोनस	-		0.00	-		0.00
ग. भविष्य निधि/नई पेंशन योजना में योगदान	-	1250276.00	1250276.00	-	762739.00	762739.00
घ. अन्य निधि (विशिष्ट) पेंशन निधि में योगदान	-	500000.00	500000.00	-	1200000.00	1200000.00
ङ. कर्मचारी कल्याण व्यय	-		0.00	-		0.00
च. सेवानिवृति तथा सेवानिवृति लाभ	-	1625728.00	1625728.00	-	12431278	12431278.00
छ. एलटीसी सुविधा	-	152066.00	152066.00	-	24681.00	24681.00
ज. चिकित्सा सुविधा	-	569410.00	569410.00	-	334187.00	334187.00
झ. बच्चों का शैक्षणिक भत्ता	-	599934.00	599934.00	-	733831.00	733831.00
ञ. मानदेय	-	629365.00	629365.00	-	336706.00	336706.00
ट. अन्य (विशिष्ट) पें ान	-	19800185.00	19800185.00	-	20594170.00	20594170.00
ठ. वर्दी	-	194179.00	194179.00	-	120190.00	120190.00
ड. आतिथ्य	-	73387.00	73387.00	-		
कुल	**0.00**	**70388891.00**	**70388891.00**	**1183713.00**	**79639198.00**	**80822911.00**

भारतीय उच्च अध्ययन संस्थान,
राष्ट्रपति निवास, शिमला-171005

अनुसूची 15 क– कर्मचारियों की सेवानिवृति एवं सेवानिवृति लाभ

रुपए में राशि

	पैन्शन	ग्रेच्यूटी	अवकाश नकदीकरण	कुल
अथशेश				
जमा : अन्य संगठनों से प्राप्त योगदानों का पूंजी मूल्य				
कुल (क)				
न्यूनतरः वर्ष के दौरान वास्तविक भुगतान (ख)				
उपलब्ध बकाया शेष (क–ख)				
31.3.2015 को बीमाकिक मूल्यांकन (घ) के अनुसार आपेक्षित प्रावधान				
क. चालू वर्ष के दौरान प्रावधान (घ–ग)				
ख. नई पेन्शन में योगदान				
ग. सेवा निवृत कर्मचारियों को चिकित्सा खर्च की अदायगी				
घ. सेवानिवृति पर होमटाउन का भुगतान				
ङ. संबंद्ध बीमा भुगतान जमा				
कुल (क+ख+ग+घ+ङ.)				

टिप्पणी

1. इस उप सूची में कुल (क+ख+ग+घ+ङ) अनुसूची 15 में सेवानिवृति तथा सेवानिवृति लाभ के अंतर्गत है।
2. ख, ग, घ तथा ङ मदों की गणना उपचय आधार पर की गई है तथा इसमें वरीयता प्राप्त बिलों को सम्मिलित किया गया है मगर 31.3.2017 को उनका भुगतान शेष है।

भारतीय उच्च अध्ययन संस्थान,
राष्ट्रपति निवास, शिमला-171005

अनुसूची 16 – अकादमिक व्यय

रुपए में राशि

	चालू वर्ष 2016–17			विगत वर्ष 2015–16		
	योजना	गैर योजना	कुल	योजना	गैर योजना	कुल
क. प्रयोगशाला व्यय	-		0.00	-	-	0.00
ख. फील्ड संबंधी कार्य/सम्मेलनों में प्रतिभागिता			0.00	-	-	0.00
ग. संगोष्ठियों/कार्यशालाओं पर व्यय	7058366.00	4000.00	7062366.00	9587622.00	21950.00	9609572.00
घ. आगंतुक संकाय को भुगतान	-	-	0.00	-	-	0.00
ङ. परीक्षा	-	-	0.00	-	-	0.00
च. छात्र कल्याण व्यय	-	-	0.00	-	-	0.00
छ. प्रवेश व्यय	-	-	0.00	-	-	0.00
ज. दीक्षांत समारोह व्यय	-	-	0.00	-	-	0.00
झ. प्रकाशन	-	-	0.00	-	-	0.00
प्रारंभिक स्टॉक 4323699.12	-	-	0.00	-	-	0.00
जमा 946139.00	-	-	0.00	-	-	0.00
कुल 5269838.12	-	-	0.00	-	-	0.00
अंतिम स्टॉक 5098778.00	-	-	0.00	-	-	0.00
कुल हानि 171060.12 अनुसूची–13 में हस्तांतरित	-	-	171060.12	-	-	1189854.19
ञ. वजीफा/संसाधन व योग्यता छात्रवृति	-	-	0.00	-	-	0.00
ट. अंशदान व्यय	-	-	0.00	-	-	0.00
i) अन्य (विशिष्ट) अध्येताओं को अध्येतावृति	11108054.00	11019351.00	22127405.00	10409397.00	9572762.00	19982159.00
ii) अध्येताओं को राष्ट्रीय अध्येतावृति	3228387.00	-	3228387.00	1670400.00	0.00	1670400.00
कुल	**21394807.00**	**11023351.00**	**32589218.12**	**21667419.00**	**9594712.00**	**32451985.19**

भारतीय उच्च अध्ययन संस्थान,
राष्ट्रपति निवास, शिमला-171005

अनुसूची 17 – प्रशासनिक तथा सामान्य व्यय

रुपए में राशि

	चालू वर्ष 2016–17			विगत वर्ष 2015–16		
	योजना	गैर योजना	कुल	योजना	गैर योजना	कुल
अवसंरचना						
क. विद्युत एवं ऊर्जा	-	5216574.00	5216574.00	582013.00	1952620.00	2534633.00
ख. जल प्रभार	-	789687.00	789687.00	44594.00	787545.00	832139.00
ग. बीमा	-	95991.00	95991.00	-	36520.00	36520.00
घ. किराया, किराया तथा कर (सम्पति कर सहित)	-	1410514.00	1410514.00	-	877660.00	877660.00
संचार	-	-	0.00	-	-	0.00
ङ. डाक व लेखन सामग्री	75000.00	88500.00	163500.00	84997.00	90000.00	174997.00
च. दूरभाष, फैक्स तथा इंटरनेट प्रभार	-	426684.00	426684.00	332009.00	101291.00	433300.00
अन्य	-		0.00	-	-	0.00
छ. मुद्रण एवं लेखन (उपभोग)	42012.00	499187.00	541199.00	1098727.00	589475.00	1688202.00
ज. यात्रा एवं यातायात सुविधा व्यय	-	2955422.87	2955422.87	678295.00	2085154.00	2763449.00
झ. आतिथ्य	-		0.00	-	192370.00	192370.00
ञ. लेखा परीक्षक मानदेय	-	117216.00	117216.00	-	117216.00	117216.00
ट. व्यावसायिक प्रभार	-	569668.00	569668.00	-	812188.00	812188.00
ठ. विज्ञापन एवं प्रचार–प्रसार	-	663606.00	663606.00	-	367474.00	367474.00
ड. पत्रिकाएं एवं जर्नल	-	176239.00	176239.00	-	286112.00	286112.00
ढ. ई–संसाधन अभिदान	-	-	0.00	-	186948.00	186948.00
ण. अन्य (विशिष्ट)	-	-	0.00	218851.00	-	218851.00
विविध व्यय	-	183752.00	183752.00	30698.00	-	30698.00
कुल	**117012.00**	**13193040.87**	**13310052.87**	**3070184.00**	**8482573.00**	**11552757.00**

भारतीय उच्च अध्ययन संस्थान,
राष्ट्रपति निवास, शिमला-171005

अनुसूची 18– यातायात संबंधी व्यय

रुपए में राशि

विवरण	चालू वर्ष 2016–17			विगत वर्ष 2015–16		
	योजना	गैर योजना	कुल	योजना	गैर योजना	कुल
1. वाहन (संस्थान द्वारा खरीदे गए)	-	-	0.00			0.00
क. चालू व्यय	25928.00	252766.00	278694.00	219346.00	185435.00	404781.00
ख. मरम्मत एवं रखरखाव	-	109725.00	109725.00	188980.00	101234.00	290214.00
ग. बीमा व्यय	-	-	0.00	-	-	0.00
2 किराये/पटटे पर लिए गए वाहन	-	-	0.00	-	-	0.00
क. किराये/पट्टे का व्यय	-	-	0.00	-	-	0.00
3 वाहन/टैक्सी किराया	-	-	0.00	-	-	0.00
कुल	25928.00	362491.00	388419.00	661428.00	601952.00	1263380.00

अनुसूची 19 – मरम्मत एवं रखरखाव

विवरण	चालू वर्ष 2016–17			विगत वर्ष 2015–16		
	योजना	गैर योजना	कुल	योजना	गैर योजना	कुल
क. भवन	29874707.00	181287.00	30055994.00	8241415.00	607347.00	8848762.00
ख. फर्नीचर एवं स्थिर वस्तुएं	-	-	0.00			0.00
ग. संयंत्र एवं म ीनरी	-	-	0.00	73923.00	-	73923.00
घ. कार्यालयी उपकरण	81283.00	499394.00	580677.00	374014.00	118112.00	492126.00
ङ. कम्प्यूटर	-	-	0.00	-	-	0.00
च. प्रयोग ाला तथा वैज्ञानिक उपकरण	-	-	0.00	-	-	0.00
छ. श्रव्य–दृश्य उपकरण	-	-	0.00	-	-	0.00
ज. सफाई संबंधी सामान तथा सेवाएं	-	-	0.00	-	-	0.00
झ. पुस्तक जिल्दबंदी शुल्क	-	-	0.00	-	-	0.00
ञ. बागवानी	-	175269.00	175269.00	-	217206.00	217206.00
ट. सम्पदा का रखरखाव	-	-	0.00	-	-	0.00
1. अन्य (विशिष्ट) उपभोग्य भण्डार	4000.00	648161.00	652161.00	502944.00	147095.00	650039.00
स्थिर परिसम्पतियां बट्टे में	-	-	0.00	-	-	0.00
कुल	**29959990.00**	**1504111.00**	**31464101.00**	**9192296.00**	**1089760.00**	**10282056.00**

भारतीय उच्च अध्ययन संस्थान,
राष्ट्रपति निवास, शिमला-171005

अनुसूची 20 – वित्तीय व्यय

रुपए में राशि

विवरण	चालू वर्ष 2016–17			विगत वर्ष 2015–16		
	योजना	गैर योजना	कुल	योजना	गैर योजना	कुल
क. बैंक प्रभार	-	4123.56	4123.56	228.00	5188.00	5416.00
ख. अन्य (विशिष्ट)	-	-	0.00			0.00
कुल	**0.00**	**4123.56**	**4123.56**	**228.00**	**5188.00**	**5416.00**

अनुसूची 21 – अन्य व्यय

विवरण	चालू वर्ष 2016–17			विगत वर्ष 2015–16		
	योजना	गैर योजना	कुल	योजना	गैर योजना	कुल
क. डूबी तथा संदिग्ध रकम/ अग्रिम राशि का प्रावधान	-	-	0.00	-	-	0.00
ख. वसूल न होने बकाया बट्टे में डाली गई रकम	-	-	0.00	-	-	0.00
ग. अनुदान/अन्य संस्थानों/ संगठनों को रियायत	-	-	0.00	-	-	0.00
घ. अन्य (विशिष्ट)	-	-	0.00	-	-	0.00
कुल	**0.00**	**0.00**	**0.00**	**0.00**	**0.00**	**0.00**

अनुसूची 22 – पूर्वावधिक व्यय

विवरण	चालू वर्ष 2016–17			विगत वर्ष 2015–16		
	योजना	गैर योजना		योजना	गैर योजना	कुल
1 संस्थापन व्यय	-	-	0.00	-	-	0.00
2 अकादमिक व्यय	-	-	0.00	-	-	0.00
3 प्रशासनिक व्यय	-	-	0.00	-	-	0.00
4 यातायात व्यय	-	-	0.00	-	-	0.00
5 मरम्मत एवं रखरखाव	-	-	0.00	-	-	0.00
6 अन्य व्यय	-	-	0.00	30855.00	0.00	30855.00
कुल	**0.00**	**0.00**	**0.00**	**30855.00**	**0.00**	**30855.00**

भारतीय उच्च अध्ययन संस्थान,
राष्ट्रपति निवास, शिमला-171005

31.3.2017 को समाप्त वित्तीय वर्ष की प्राप्तियों एवं भुगतान के लेखे

	प्राप्तियां	चालू वर्ष	विगत वर्ष		भुगतान	चालू वर्ष	विगत वर्ष
1	अधिशेष			1	व्यय		
	क) नकदी शेष	32505.00	-		क) स्थापन व्यय	80315826.00	75580783.00
	ख) बैंक में जमा राशि				ख) शैक्षणिक व्यय	4314818.00	12262635.00
	1) चालू खातों में	47638937.94	8155512.93		ग) प्रशासनिक व्यय	12658084.00	10845934.00
	2) जमा खातों में	72405810.00	70652853.00		घ) परिवहन खर्च	2096935.87	318447.00
	3) बचत खातों	121282694.87	11351648.00		ङ) मरम्मत व रखरखाव	1616189.00	989458.00
					च) पूर्व की अवधि व्यय/बैंक प्रभार	4846.37	7616.00
2	अनुदान प्राप्त			2	निर्धारित/दान निधि की एवज में भुगतान		
	क) भारत सरकार से						
	1) पूंजी अनुदान	192805000.00	181241000.00				
	2) राजस्व अनुदान	107753000.00	114870500.00				
	ख) संस्कृति मंत्रालय (भारत सरकार) से		621000.00				
	ग) अन्य स्रोतों से (आईसी4एचडी के अंतर्गत बैंक की एफडीआर पर ब्याज)	15090958.00	6465726.00				
	ग) सहायता भारत सरकार प्राप्य अनुदान		33188377.00				
3	अकादमिक प्राप्तियां			3	आईसी4एचडी से वापसी		103621027.00
4	विशिष्ट/दान निधि से प्राप्तियां			4	प्रायोजित फैलोशिप/छात्रवृत्ति की एवज में भुगतान		
5	आईसी4एचडी से प्राप्तियां		102654885.00	5	निवेश एवं जमा क) निर्धारित/दान निधि से ख) स्वनिधि से (निवेश–अन्य)		
6	प्रायोजित फैलोशिप एवं छात्रवृत्ति की एवज में प्राप्तियां			6	अनुसूचित बैंकों के साथ नए सिरे से सावधि जमा	-	

7	निवेश से आय क) निर्धारित/दान निधि			7	व्यय देय	19862368.95	15503941.00
	ख) अन्य निवेश				क) अचल संपत्ति		
					1) अनुदान से सहायता में	12424251.00	11805794.00
					2) स्वयं के स्रोतों से	125550.00	137250.00
					ख) पूंजी कार्य–प्रगति		
8	ब्याज पर प्राप्त			8	वैधानिक भुगतान सहित अन्य भुगतान	-	-
	क) बैंक जमा		252957.00				
	ख) ऋण और अग्रिम	-	-				
	ग) बचत बैंक खाते	4978665.00-	-				
9	निवेश नकदीकरण	-	-	9	अनुदान की वापसी		
10	अनुसूचित बैंकों में आवधिक जमा परिपक्व	-	-	10	अग्रिम और निकाली गई राशि		
					क) स्टाफ	943500	490934.00
					ख) अन्य	40430967.00	71476747.20
11	अन्य आय (पूर्व अवधि आय सहित	13903749.63	7521118.08	11	वैधानिक भुगतान सहित अन्य भुगतान		
12	जमा और अग्रिम	2866673.00	7424937.00	12	शेष राशि समापन		
					क) हाथ में नकदी	28630.00	32505.00
					ख) बैंक में जमा राशि		
					चालू खातों में		47638937.94
					बचत खातों में	196370307.25	121282694.87
					बैंक में सावधि जमा	207565720.00	72405810.00
13	अन्य प्राप्तियां सहित विविध प्राप्तियों सहित						
	कुल	**578757993.44**	**544400514.01**		कुल	**578757993.44**	**544400514.01**

हस्ता./–
(राकेश कुमार सिंह)
लेखा अधिकारी

हस्ता./–
(प्रेम चंद)
सचिव

हस्ता./–
(अजित कुमार चतुर्वेदी)
निदेशक

भारतीय उच्च अध्ययन संस्थान,
राष्ट्रपति निवास, शिमला-171005

31.3.2017 को समाप्त वर्ष के लेखा की लेखा नीतियां तथा टिप्पणियां

लेखा नीतियां

(क) लेखा अवधारणाएं

वित्तीय विवरण सामान्यतः परम्परागत लागत रीति के अनुसार भारत में प्रचलित लेखा सिद्धांतों के आधार पर तैयार किये गये हैं।

सोसायटी सामान्यतः लेखा प्रणाली की उपचय पद्धति का अनुसरण करती है तथा संभूति के आधार पर आय और व्यय की महत्वपूर्ण मदों की पहचान करती है।

(ख) अचल परिसम्पत्तियां

सोसायटी की अचल परिसम्पत्तियां परम्परागत लागत पर घोषित हैं, जिनमें समस्त प्रासंगिक व्यय सम्मिलित हैं।

(ग) मूल्य ह्रास

संस्थान द्वारा वित्तीय वर्ष 2013–14 तक अचल संम्पत्ति पर कोई मूल्यह्रास नहीं दर्शाया गया है। तदोपरांत वर्ष के लिए अचल परिसम्पत्तियों की अधिक्य पर मूल्यह्रास आयकर नियम 1962 के अंतर्गत किया गया है। हलांकि वर्ष 2016–17 के दौरान केन्द्रीय उच्च शैक्षणिक संस्थानों के लिए निर्धारित वित्तीय विवरण के प्रपत्र में निहित दरों के अनुरूप मूल्यह्रास दर्शाया गया है।

मूल्यह्रास को आयकर अधिनियम 1962 के आधार पर दर्शाया गया है। पूंजीगत सहायता अनुदान में हस्तांतरित कर दिया गया है। केन्द्रीय उच्च शैक्षणिक संस्थानों के लिए निर्धारित वित्तीय विवरण के प्रपत्र में निहित दरों के अनुरूप मूल्यह्रास 45,74,088.00 रूपए की अपेक्षा 1,05,00,720.00 रूपए होना चाहिए था।

अनुदान सहायता से अचल अर्जित की स्थिति में मूल्यह्रास को पूंजीगत अनुदान सहायत में हस्तांतरित कर दिया गया है।

(घ) मूल्य निर्धारण/वस्तु सूची

प्रकाशित पुस्तकों का मूल्य निर्धारण व्यय अथवा शुद्ध विश्वस्त कीमत पर किया गया है, जो भी न्यूनतर है।

लेखा रिपोर्ट के बारे में टिप्पणियां

1. लेखे भारत सरकार के मानव संसाधन विकास मंत्रालय द्वारा जारी नए प्रारूप के अंतर्गत तैयार किये गए हैं ताकि समरूप लेखा पद्धति का अनुपालन सुनिश्चित हो सके।
2. सामान्य भविष्य निधि लेखा के लिए पृथक तुलन पत्र तैयार की गई है।
3. दिनांक 31.3.2017 को ग्रेच्यूटी तथा अवकाश नकदीकरण की राशि क्रमशः 31590383.00 रूपए तथा 16056876.00 दर्शायी गई है जबकि दिनांक 31.3.2016 को यह राशि 32726241.00 तथा 31.3.2015 को 14944273.00 रूपए थी।

4. तुलन पत्र में चालू सम्पत्ति के अंतर्गत दर्शायी गई संस्थान के प्रकाशनों की राशि 5098778.00 रूपए (दिनांक 31.3.2016 को 4323699.12 रूपए) जन सम्पर्क अधिकारी द्वारा उपलब्ध करवाई गई सूचना पर आधारित है।

5. परिषद के मतानुसार चालू परिसम्पत्तियां, ऋण तथा अग्रिम राशियां आंकित मूल्य के लगभग हैं, यदि प्रयोजन की सामान्य प्रक्रिया के अनुरूप किया गया हो। सभी प्रकार की ज्ञातव्य देनदारियों का प्रावधान पर्याप्त है तथा न्योचित तौर पर आवश्यक राशि से अधिक नहीं है।

6. लेनदारों, देनदारों तथा अन्य खातों में नामे शेष तथा जमा शेष सत्यापन तथा मिलान का विषय हैं।

7. पांच वर्षों से अधिक अवधि से विभिन्न कर्जदारों के पास कुल 489872.25 रूपए की बकाया पड़ी है जिसमें 325333.75 रूपए की राशि भी सम्मिलित है, वसूली के लिए उपयुक्त मानी गई है।

8. पांच वर्षों से अधिक अवधि से 2444442.00 रूपए की विविध अग्रिम राशि जिसमें 2152822.00 की बकाया राशि भी सम्मिलित है वसूली के लिए उपयुक्त मानी गई है।

9. जहां आवश्यक समझा गया विगत वर्ष के दौरान आकड़ों को चालू वर्ष के तुल्य बनाने के लिए पुनः तैयार, पुनः वर्गीकृत तथा पुनः व्यवस्थित किया गया है।

10. टिप्पणी संख्या 1 से 24 तक तलुन–पत्र का आंतरिक भाग है तथा उसे पूर्णतः सत्यापित किया गया है

हस्ता./–	हस्ता./–	हस्ता./–
(राकेश कुमार सिंह)	(प्रेम चंद)	(अजित कुमार चतुर्वेदी)
लेखा अधिकारी	सचिव	निदेशक

आर.के. कौशल एण्ड कंपनी
सनदी लेखाकार

चैम्बर #7, ऊपरी मंजिलए अरोमा होटल
उच्च न्यायालय, शिमला–1
दूरभाश # (0177) 2652045 (का.) 2623263 (आ.)
मो. # 09816006660
ईमेल: anjath1997@yahoo.com

लेखा परीक्षा रिपोर्ट

हमने मानविकी और सामाजिक विज्ञानों के अन्तर्विश्वविद्यालय केन्द्र (आई.यू.सी.) के तुलनपत्र के साथ उसकी प्राप्तियों व भुगतान तथा आय व व्यय का 31 मार्च, 2017 को समाप्त वर्ष का लेखा परीक्षण किया है तथा संबंधित रिपोर्ट संलग्न कर दी है।

वित्तीय विवरणों के लिए आई.यू.सी. प्रबन्धन जिम्मेवार है। हमारी जिम्मेवारी इन वित्तीय विवरणों के आधार पर लेखा परीक्षा के पश्चात् अपनी राय व्यक्त करना है।

हमने भारत के लेखा परीक्षा के मानकों के आधार पर लेखा परीक्षण किया है जो भारत में सामान्यतः स्वीकार्य हैं। इन मानकों के आधार पर हम लेखा परीक्षण करते हैं कि क्या वित्तीय विवरणीय स्पष्ट हैं और किसी प्रकार के गलत विवरणियाँ नहीं हैं। लेखा परीक्षण के आधार पर किया जाता है, तथा वित्तीय विवरणियों में रकमों के सबूत भी लिये जाते हैं। लेखा परीक्षण में लेखा सिद्वान्तों और विस्तृत आंकलन जोकि प्रबन्धन द्वारा तैयार किये जाते हैं उसका भी परीक्षण किया जाता है तथा वित्तीय विवरणियों का मूल्यांकन भी किया जाता है। हमें विश्वास है कि हमारा लेखा परीक्षण हमारी राय को व्यक्त करने में मूल आधार होता है।

पूर्ववर्ती टिप्पणियों के आधार पर हम रिपोर्ट प्रस्तुत करते हैं–

1) लेखा परीक्षण के लिए अनिवार्य सभी सूचनायें और स्पष्टीकरण हमने अपनी पूर्ण जानकारी और विश्वास के आधार पर प्राप्त कर लिये हैं।

2) हमारे मत तथा जानकारी के अनुसार एवं हमें दिये गये स्पष्टीकरण तथा अनुलग्नक–2 में दिये गये मानकों के आधार पर इन लेखाओं की स्पष्ट स्थिति प्रकट होती हैः–

   क) तुलनपत्र में 31 मार्च, 2017 को समाप्त वर्ष के केन्द्र के कार्य कलाप हैं।

   ख) आय–व्यय लेखे में उस तिथि को समाप्त हुए वर्ष में प्राप्त सहायता अनुदान से उपयोग की गई रकम का लेखा–जोखा है।

   ग) प्राप्तियों तथा भुगतान के लेखों में उस तिथि को समाप्त हुए वर्ष का प्राप्तियाँ तथा भुगतान का लेखा–जोखा है।

आर.के. कौशल एण्ड कंपनी
सनदी लेखाकार
शिमला
आईसीएआई नं. 12233एन
(स.ले. राकेश कुमार कौशल)
एफसीए प्रॉप.
एफसीएआई एम. न. 090655

दिनांक : 09.6.2017

भारतीय उच्च अध्ययन संस्थान,
राष्ट्रपति निवास, शिमला-171005

31.3.2017 को मानविकी व सामाजिक विज्ञानों के लिये अन्तरविश्वविद्यालय केन्द्र का तुलन पत्र

देनदारियां	राशि	राशि	परिसम्पतियाँ	राशि	राशि
पूंजी आरक्षित		7236129-00	स्थाई परिसम्पतियाँ (अनुसूची–1 के अनुसार)		7236129.00
चालू देनदारियां संसाधनों पर कर की कटौती भा.उ.अ.सं. के खाते से असुरक्षित ऋण टिकट बूथ से असुरक्षित ऋण देय वेतन तथा मजदूरी लेखा परीक्षण देय शुल्क	 2373687.00 3500000.00 62854.00 9488.00	5946029.00	चालू परिसम्पतियां भा.स्टेट बैंक (बचत खाता सं. 10116686391) यूजीसी से प्राप्त करने योग्य सहायता अनुदान ऋण तथा अग्रिम (परिसम्पति)	 2765283.51 2870954.49 309791.00	5946029.00
कुल		13182158.00		कुल	13182158.00

हस्ता./–
(राकेश कुमार सिंह)
लेखा अधिकारी

हस्ता./–
(प्रेम चंद)
सचिव

हस्ता./–
(अजित कुमार चतुर्वेदी)
निदेशक

सनदी लेखाकार
आईसीएआई एफआरएन 012233एन
राकेश कुमार कौशल
एकल स्वामित्व
आईसीएआई एम. न. 090655

भारतीय उच्च अध्ययन संस्थान,
राष्ट्रपति निवास, शिमला-171005

31.3.2017 को मानविकी व सामाजिक विज्ञानों के लिये अन्तरविश्वविद्यालय केन्द्र का आय–व्यय लेखा

व्यय	राशि रूपये में	आय	राशि रूपयों में
रखरखाव भत्ता	967600.00	प्रयुक्त अनुदान सहायता	2775962.00
सह–अध्येताओं का यात्रा भत्ता/दैनिक भत्ता	806739.00	उपार्जित ब्याज	60913.00
आईयूसी शोध संगोष्ठी और अध्ययन सप्ताह	39781.00	अन्य आय	31360.00
प्रशासनिक एवं साचिविक सहायता(डाक, मैडिकल लेख सामग्री)	6210.00		
आईयूसी जर्नल के प्रकाशन पर व्यय	-		
विविध प्रासंगिक व्यय	36346.00		
दिल्ली कैम्प कार्यालय का किराया	49413.00		
प्रशासनिक इकाई मजदूरी, समयोपरि भत्ता, यात्रा भत्ता, मंहगाई भत्ता/मानदेय	864233.00		
वाहनों का रख–रखाब	72880.00		
वाहनों का बीमा	15436.00		
ब्याज एवं बैंक प्रभार	109.00		
लेखा परीक्षण शुल्क	9488.00		
कुल	**2868235-00**	कुल	**2868235-00**

हस्ता./–
(राकेश कुमार सिंह)
लेखा अधिकारी

हस्ता./–
(प्रेम चंद)
सचिव

हस्ता./–
(अजित कुमार चतुर्वेदी)
निदेशक

सनदी लेखाकार
आईसीएआई एफआरएन 012233एन
राकेश कुमार कौशल
एकल स्वामित्व
आईसीएआइ एम. न. 090655

भारतीय उच्च अध्ययन संस्थान,
राष्ट्रपति निवास, शिमला-171005

अनुसूची–1

मानविकी और सामाजिक विज्ञानों के लिए अन्तरविश्वविद्यालय केन्द्र
स्थाई परिसम्मपतियों की अनुसूची (31.3.2017 को समाप्त वर्ष)

क्र.	विवरण	दिनांक 01.4.2016 को अथशेष	वर्ष के दौरान जोड़ी गई	वर्ष के दौरान घटाई गई	दिनांक 31.3.2017 को अंतशेष
1.	कम्प्यूटर	1764725.00	0.00	0.00	1764725.00
2.	विद्युत उपकरण	876816.00	0.00	0.00	876816.00
3.	फर्नीचर व स्थिर वस्तुएं	1192092.00	0.00	0.00	1192092.00
4.	पुस्तकालय व पुस्तकें	2809649.00	0.00	0.00	2809649.00
5..	नया वाहन	592847.00	0.00	0.00	592847.00
	कुल योग	**7236129.00**	**0.00**	**0.00**	**7236129.00**

हस्ता./–
(राकेश कुमार सिंह)
लेखा अधिकारी

भारतीय उच्च अध्ययन संस्थान,
राष्ट्रपति निवास, शिमला-171005

मानविकी व सामाजिक विज्ञानों के लिये अन्तरविश्वविद्यालय केन्द्र का प्राप्तियाँ एवं भुगतान
(31.3.2017 को समाप्त वर्ष)

प्राप्तियां	राशि रूपये में	भुगतान	राशि रूपयों में
अथशेष		रखरखाव भत्ता	967600.00
भा.स्टेट बैंक में बचत खाता संख्या 10116686391	252752.51	सह–अध्येताओं का यात्रा भत्ता/दैनिक भत्ता	806739.00
प्राप्त आय	60913.00	आईयूसी शोध संगोष्ठी और अध्ययन सप्ताह	39781.00
उपार्जित ब्याज	---	प्रशासनिक एवं साचिविक सहायता(डाक, मैडिकल लेख सामग्री)	6210.00
विविध आय	24539.00	आईयूसी जर्नल के प्रकाशन पर व्यय	-
		विविध प्रासंगिक व्यय	36346.00
		दिल्ली कैम्प कार्यालय का किराया	49413.00
अन्य प्राप्तियां		अन्य भुगतान	
संसाधन पर कर की कटौती आयकर		विविध पेशगियाँ	20000.00
सह–अध्येताओं से प्राप्त मेस प्रभार	7617.00	टीडीएस जमा	7578.00
टिकट बूथ से असुरक्षित ऋण	597681.00	मेस प्रभार	597681.00
भा.उ.अ.सं. से सुरक्षित ऋण	-	देय लेखा परीक्षण शुल्क	9447.00
विविध अग्रिम राशियां	1501300.00	संस्थान द्वारा आतिथ्य.	3000.00
यूजीसी से वसूली योग्य सहायता अनुदान	26224.00	भारतीय स्टेट बैक खाता सं. 10116686391	2765242.51
कुल	**6265988.51**	कुल	**6265988.51**

हस्ता./–
(राकेश कुमार सिंह)
लेखा अधिकारी

हस्ता./–
(प्रेम चंद)
सचिव

हस्ता./–
(अजित कुमार चतुर्वेदी)
निदेशक

सनदी लेखाकार
आईसीएआई एफआरएन 012233एन
राकेश कुमार कौशल

भारतीय उच्च अध्ययन संस्थान,
राष्ट्रपति निवास, शिमला-171005

अनुलंग्क–2

31 मार्च, 2017 को समाप्त वर्ष के लेखों की लेखा नीतियां और टिप्पणियां।

लेखा पद्धति

1) लेखे नगद प्रणाली के आधार पर बनाये गये हैं।

2) सामान्य वित्तीय नियमावली के नियम 151 (4) के अनुसार मूल्यह्रास नहीं लिया गया है।

लेखों पर टिप्पणियां

3) इस अवधि के दौरान अंतर–विश्वविद्यालय केन्द्र द्वारा 27,75,962.00 रूपए की राशि उपयोग की गई। यह अस्थाई/असुरक्षित ऋण भारतीय उच्च अध्ययन संस्थान से इस आशा पर लिया गया था कि इसकी अदायगी विश्वविद्यालय अनुदान आयोग द्वारा कर दी जाएगी। शीघ्र अदायगी के लिए मामले को विश्वविद्यालय अनुदान आयोग के समक्ष रखा गया है।

4) 18,475 रूपये की पेशगी की वसूली प्रोफेसर आर.एस. मिश्रा से वर्ष 94–95 से बकाया है पेशगी के समायोजन/वसूली के लिये प्रयास किये जा रहे हैं।

5) डॉ. वी.सी. थोमस से 20.3.2004 को दी गई 100000.00 रूपये पेशगी की वसूली की जानी है। पेशगी के शीघ्र समायोजन/वसूली के लिए प्रयास किये जा रहे हैं।

6) निदेशक आईसीएआर नई दिल्ली को अकादमिक संसाधन अधिकारी के द्वारा 15,000.00 रूपये संगोष्ठी के लिए दिये गए थे। इसमें से 10,000.00 रूपये की राशि बकाया है। पेशगी के समायोजन/वसूली के लिये प्रयास किये जा रहे हैं।

7) कुल सचिव जवाहरलाल नेहरु विश्वविद्यालय नई दिल्ली को अकादमिक संसाधन अधिकारी के द्वारा 2,75,000.00 रूपये की पेशगी 30.3.2007 को संगोष्ठी के आयोजन के लिए अकादमिक संसाधन अधिकारी द्वारा दी गई थी जिसमें से 1,80,116.00 रूपये बकाया हैं। पेशगी के समायोजन/वसूली के लिये प्रयास किये जा रहे हैं।

हस्ता./–	हस्ता./–	हस्ता./–
(राकेश कुमार सिंह)	(प्रेम चंद)	(अजित कुमार चतुर्वेदी)
लेखा अधिकारी	सचिव	निदेशक

सनदी लेखाकार
राकेश कुमार कौशल
एकल स्वामित्व
आईसीएआइ एम. न. 090655

भारतीय उच्च अध्ययन संस्थान,
राष्ट्रपति निवास, शिमला-171005

सोसायटी

1. प्रोफेसर कपिल कपूर — प्रधान
   अध्यक्ष, शासी निकाय
   भारतीय उच्च अध्ययन संस्थान
   राष्ट्रपति निवास, शिमला–171005
   पता– बी– एकता गार्डन
   9–1 आईपी एक्टेन्शन
   मदर डेयरी मार्ग, दिल्ली–110092
   दूरभाष : 011–22723406, मोबाइल– 09810202146
   ईमेलः kkapoor40@yahoo.com

2. प्रोफेसर अजित कुमार चतुर्वेदी
   निदेशक
   भारतीय उच्च अध्ययन संस्थान
   राष्ट्रपति निवास, शिमला–171005
   दूरभाष : 0177–2830006 (का.) फैक्स : 2831389, 2830995
   ईमेलः director@iias.ac.in

नियम 3 (क) संस्थागत सदस्य (पदेन)

1. श्री आर. सुब्रमणयम, भा.प्र.से.
   सचिव
   उच्चतर शिक्षा विभाग
   मानव संसाधन विकास मंत्रालय
   कमरा नं. 127, सी–विंग
   शास्त्री भवन
   नई दिल्ली–110001
   दूरभाष : 011–23386451, 23382698 (का.) 26979585,
   फैक्स :011–23385807, 23381355
   ईमेलः secy.dhe@nic.in,

2. श्री अजय नारायण झा, भा.प्र.से.
सचिव, व्यय एवं वित्त
भारत सरकार
व्यय विभाग
वित्त मंत्रालय, नार्थ ब्लाक केन्द्रीय सचिवालय
नई दिल्ली–110001
ईमेलः secyexp@nic.in

3. श्री संजय कुमार सिन्हा
संयुक्त सचिव (उच्चतर शिक्षा)
उच्चतर शिक्षा विभाग
मानव संसाधन विकास मंत्रालय
कमरा नं. 230–सी, शास्त्री भवन
नई दिल्ली–110015,
दूरभाषः 011–23385915 फैक्सः 011–23074410
ईमेलः sanjay.sinha@nic.in

4. प्रोफेसर डी.पी. सिंह
अध्यक्ष
विश्वविद्यालय अनुदान आयोग
बहादुरशाह ज़फर मार्ग, नई दिल्ली–110002
दूरभाषः 011–23239628 (कार्यालय) फैक्सः 011–23231797
ईमेल : cm.ugc@nic.in

5. डॉ. गिरीश साहनी
महानिदेशक
वैज्ञानिक एवं औद्योगिक अनुसंधान परिषद
रफी मार्ग, नई दिल्ली–110001
दूरभाष :011–23710472, 23717053 (का.), फैक्सः 011–23710618
ईमेल: dgcsir@csir.res.in, dg@csir.res.in

6. डॉ. ब्रज बिहारी कुमार
अध्यक्ष
भारतीय समाज विज्ञान अनुसंधान परिषद
पोस्ट बाक्स न0 10528
अरूणा आसिफ अली मार्ग, नई दिल्ली–110067
दूरभाषः 011–26179679 (का.) 011–255454865 / 26717146 (आ.)
फैक्स :–011–26162516 / 26179836, ईमेल: chairman@icssr.org

7. प्रोफेसर अरविंद पी. जामखेड़कर
अध्यक्ष
भारतीय इतिहास अनुसंधान परिषद
35 फिरोजशाह मार्ग, नई दिल्ली–110001
दूरभाषः 011–23386033, 23384869
फैक्स 23383421, 23387829, मोबाइलः 9415243954

8. प्रोफेसर एस.आर. भट्ट
भारतीय दार्शनिक अनुसंधान परिषद
36 तुगलकाबाद इन्स्टीच्यूशनल एरिया
मेहरोली बदरपुर मार्ग
नई दिल्ली–110062
टेलीफैक्स : 011–29051762 / 29901503, 29901501; मोबाइल : 09013181940
फैक्स : 011–29964755; ईमेल : srbhatt39@gmail.com, chairman@icpr.in

9. श्री बलदेव भाई शर्मा
अध्यक्ष
नेशनल बुक ट्रस्ट, इंडिया
नेहरु भवन, इन्स्टीट्यूश्नल एरिया, फेज–II
वसंतकुंज, नई दिल्ली–110070
दूरभाषः 011–26121880 (का.), मोबाइल : 09910052933
ईमेल: chairman@nbtindia.org.in

10. डॉ. चन्द्रशेखर कंबर
साहित्य अकादमी
श्री सैम्पिज, नं. 44, प्रथम मेन
बनशंकरी तृतीय स्तर, चौथा ब्लॉक
बेंगलुरू– 560085
मोबाइल : 09980559000
ईमेलः cbkambara@gmail.com

11. श्री शेखर सेन
अध्यक्ष
संगीत नाटक अकादमी
रवीन्द्र भवन, फिरोजशाह मार्ग
नई दिल्ली–110001
दूरभाष 011–24116375 / 76 फैक्स 011–23381621
ईमेल : chairman@sangeetnatak.gov.in

12. श्री के.एस. सेठी, भा.प्र.से.
प्रशासक
अध्यक्ष
ललित कला अकादमी
फिरोजशाह मार्ग, नई दिल्ली–110001
दूरभाषः 011–23387241–43
ईमेलः chairman@lalitkala.gov.in; secretary@lalitkala.gov.in

13. श्री अजय कुमार सूद
अध्यक्ष
भारतीय राष्ट्रीय विज्ञान अकादमी,
बहादुरशाह ज़फर मार्ग, नई दिल्ली– 110002
दूरभाष– 011–22932340(का.)
ईमेल–president@insa.nic.in

14. प्रोफेसर सुनैना सिंह
उपाध्यक्ष
भारतीय सांस्कृतिक संबन्ध परिषद
एन–38, पंचशील पार्क, नई दिल्ली–110017
ईमेल : president.iccr@nic.in
दूरभाष : 011–233379309, 23379310

15. प्रोफेसर पी.बी. शर्मा
अध्यक्ष, ए.आई.यू.
तथा
कुलपति
एमिटी विश्वविद्यालय हरियाणा
गुड़गांव (मनेसर) हरियाणा– 122413
मोबाइल : 09810146096
ईमेलः pbsharma@ggn.amity.edu ; vcauh@ggn.amity.edu

16. डॉ. अरूण कुमार चक्रवर्ती
महानिदेशक
राष्ट्रीय पुस्तकालय
वैलवैड्रे, अलीपुर
कोलकाता–700027
दूरभाष : 033–24792968 / 24791462 (का.) : फैक्स 033–24791462
ईमेलः nldirector@rediffmail.com

17. श्री प्रीतम सिंह
महानिदेशक अभिलेखागार
राष्ट्रीय अभिलेखागार
जनपथ, नई दिल्ली–110001
दूरभाषः–011–23381396 ईमेल : archives@nic.in

18. श्री विनीत चौधरी,
मुख्य सचिव
हिमाचल प्रदेश सरकार
हिमाचल प्रदेश सचिवालय,
शिमला–171002
दूरभाषः 0177–2621022 (का.), 2880714 (आ.) फैक्स : 2621813
ईमेलः cs hp@nic.in

यदि आवश्यक हो तो संस्थागत सदस्य बैठकों में अपने मनोनीत प्रतिनिधियों को भेज सकते हैं।

नियम 3 (ख) नामित सदस्य

नियम 3 (ख) (1) के अन्तर्गत केन्द्रीय सरकार द्वारा नामित भारतीय विश्वविद्यालयों के छः उप–कुलपति

1. प्रोफेसर कुलदीप चंद अग्निहोत्री
कुलपति
केन्द्रीय विश्वविद्यालय, धर्मशाला
हिमाचल प्रदेश–176206
दूरभाष – 01792–229330, फैक्स 229331
ईमेलः vc.cuhimachal@gmail.com

2. प्रोफेसर नलिनी कांत झा
कुलपति
टी.एम. भागलपुर विश्वविद्यालय
भागलपुर, बिहार–812007
दूरभाष – 0641–2620600, फैक्स 0641–2620240
मोबाइल– 09092548017, 07764016016
ईमेलः jhank59@gmail.com

3. प्रोफेसर एस.के. श्रीवास्तव
कुलपति
नॉर्थ–ईस्टरन हिल यूनिवर्सिटी, शिलांग –793002
दूरभाष : 0364–2721003 / 2721004
फैक्स : 0364–2550076, ई–मेलः vcnehu@nehu.ac.in

4. प्रोफेसर बी. थिम्मेगोड़ा
कुलपति
कर्नाटक राज्य ग्रामीण विकास एवं पंचायती राज विश्वविद्यालय
गड़क, रैता भवन, जनरल करियप्पा सर्कल, गड़क
कर्नाटक –582101
दूरभाष : 08372–230338, फैक्स : 08372–297343
ई–मेलः vc.ksrdpru@gmail.com; btgowda@yahoo.co.in

5. प्रोफेसर अप्पा राव पोडिल़
कुलपति
हैदराबाद विश्वविद्यालय
हैदराबाद–500046, तेलंगाना
दूरभाष : 040–23132000 / 23010121, मोबाइलः 9100655777
ई–मेलः podilerao@gmail.com; vc@uohyd.ac.in.

6. प्रोफेसर वसंत शिंदे
कुलपति
दक्षिण महाविद्यालय, स्नातकोत्तर एण्ड शोध संस्थान
पुणे–411006,
दूरभाष : 020–26513203, मोबाइलः 9923693795; 915888893
ई–मेलः vshinde.dc@gmail.com; vasant.shinde@dcpune.ac.in.

नियम 3 (ख) (2) के अन्तर्गत केन्द्र सरकार द्वारा नामित शिक्षाविद तथा संस्कृति एवं विज्ञान क्षेत्र से जुड़े प्रख्यात विद्वान

1. प्रोफेसर कपिल कपूर
बी– एकता गार्डन
9–1 आईपी एक्टेन्शन
मदर डायरी मार्ग, दिल्ली–110092
दूरभाष : 011–22723406, मोबाइल– 09810202146
ईमेलः kkapoor40@yahoo.com

2. प्रोफेसर चमन लाल गुप्ता
उपाध्याक्ष, शासी निकाय
भारतीय उच्च अध्ययन संस्थान
राष्ट्रपति निवास, शिमला–171005
दूरभाष : 0177–2830637; मोबाइल : 09418141898
ईमेलः guptcl@gmail.com

3. प्रोफेसर जी.के. कारंथ
प्राध्यापक समाजशास्त्र
सेंटर फॉर स्टडी ऑफ सोशल चेंज एण्ड डिवेल्पमेंट
इन्स्टिट्यूट फॉर सोशल एण्ड इकनॉमिक चेंज
बंगलोर–560072
मोबाइल :0789837275, 9845731403
ईमेल : gk.karanth@gmail.com

4. प्रोफेसर संजीव कुमार शर्मा
प्राध्यापक एवं विभागाध्यक्ष
राजनीति शास्त्र विभाग
चौधरी चरण सिंह विश्वविद्यालय
मेरठ– 250005 उतर–प्रदेश
दूरभाष : 0121–12764455
मोबाइलः 09412205348, 6458609921
ईमेल : sanjeeevaji@csds.in

5. प्रोफेसर पवन कुमार शर्मा
राजनीति शास्त्र विभाग
अटल बिहारी वाजपेयी विश्वविद्यालय
मध्य प्रदेश–462016
मोबाइलः 09313298815
ईमेल : pawansharmaccs67@csds.in

6. प्रोफेसर बी.के. कुठियाला
कुलपति
माखनलाल चतुर्वेदी राष्ट्रीय पत्रकारिता एवं संचार विश्वविद्यालय
भोपाल– 462011
दूरभाष : 0755– 2551531 (का.), फैक्स : 0755– 2553441
ईमेल: kuthialavc@gmail.com

7. प्रोफेसर (डॉ.) जगबीर सिंह
डब्ल्यूजेड–707, गली नं. 18
शिव नगर, जैल रोड़
नई दिल्ली– 110058
दूरभाष : 011–25559404, मोबाइल : 09871598125
ईमेलः jagbir707@yahoo.com

8. प्रोफेसर राकेश कुमार मिश्रा
202, साई अपार्टमेंट, सी–40, जे. पार्क–2
महानगर एक्सटेन्शन, लखनऊ– 226006
मोबाइलः 08953809188
ईमेल: rkm.lu007@gmai.com

9. प्रोफेसर हिमांशु प्रभा रे
603 आइवरी टावरस
द रिट्रीट काम्प्लेक्स
सेक्टर 30, साउथ सिटी 1
गुड़गांव– 122007, हरियाणा
दूरभाष : 0124–2381947 (आ.), मोबाइलः 09811119084
ईमेल: hprayjnu@vsnl.com

10. प्रोफेसर डी. मुरली मनोहर
अंग्रेजी विभाग, हैदराबाद विश्वविद्यालय, डाकघर केन्द्रीय विश्वविद्यालय
हैदराबाद–500046, तेलंगाना
दूरभाष : 040–231334069, मोबाइलः 09908569272
ईमेल: dmmpsh@gmail.com

11. प्रोफेसर शरद देशपाण्डे
13 खगोल वैज्ञानिक
को–ऑप्रेटिव हाउसिंग सोसायटी
38/1 पंचवटी पासन, पुणे– 411008
मोबाइल : 09422347778
ईमेल– sharad.unipune@gmail.com

12 प्रोफेसर दिलीप कुमार चक्रवर्ती
पुरातत्व विभाग
कैम्ब्रिज विश्वविद्यालय, ब्रिटेन
ईमेल– dc129@cam.ac.uk

13. प्रोफेसर डी.एन. त्रिपाठी
लीला निलायम
99–ए, इंदिरा नगर, डाक. श्योपुरी, नई कलोनी
गोरखपुर– 273016, उत्तर–प्रदेश
मोबाइल : 09415282388, 9415243954
ईमेल–dayatripathi136@gmail.com

14. प्रोफेसर प्रेमा नंदा कुमार
श्री अरबिंदो विद्वान, स्वामी विवेकानंद चेयर
महात्मा गाँधी विश्वविद्यालय
केरल–686560
ईमेल : prenand@tr.net.in

15 प्रोफेसर एस. के. चक्रवर्ती
पी– 69, डायमण्ड पार्क, डायमण्ड हारबर रोड़
जोका, कोलकाता– 700104
दूरभाष : 033– 653536677
मोबाइल : 09007116459
ईमेल : drdebangshu.chakraborty@gmail.com

16. श्री राजीव मल्होत्रा
संस्थापक, द इन्फिनिटी फाउंडेशन
174 नस्साऊ, स्ट्रीट, पीएमबी 400, प्रिन्सिटन, एनजे 08542
ईमेल : RajivMalhotra2007@gmail.com

17. डॉ. के.एस. कानन
107, व्यभावी, 17 मेन, 4 क्रॉस (न्यू 2बी क्रॉस)
मुनेश्वर ब्लॉक, बंगलोर– 560026
मेबाइल : 09900275255
ईमेल : ks.kannan.2000@gmail.com

18. प्रोफेसर शांतिश्री धुलिपुडी पण्डित
राजनीति एवं लोक प्रशासन विभाग
पुणे विश्वविद्यालय
महाराष्ट्र– 411007
दूरभाष : 020–25410519 / 68203772
ईमेल : santishreepandit@gmail.com

19. प्रोफेसर जी. नागेश्वर राव
कुलपति
आंध्र विश्वविद्यालय, विशाखापटनम– 530003
आंध्र प्रदेश
दूरभाष : 0891–2844333 / 4222, फैक्स :0891–2525611, मोबाइल : 09849701527
ईमेल : vicechancellor@andhrauniversity.edu.in

20. प्रोफेसर गुरूराज करजागी
संस्थापक एवं अध्यक्ष
सृजनात्मक अध्यापन अकादमी (एसीटी)
बंगलुरू– 560032
दूरभाष : 080–41697855 (का.); 080–23331748 (आ.)
मोबाइल : 09663611221
ईमेल : gururaj.karajagi@actedu.in

भारतीय उच्च अध्ययन संस्थान,
राष्ट्रपति निवास, शिमला-171005

शासी निकाय

1. प्रोफेसर कपिल कपूर
   अध्यक्ष, शासी निकाय
   भारतीय उच्च अध्ययन संस्थान
   राष्ट्रपति निवास, शिमला–171005
   पता– बी– एकता गार्डन
   9–1 आईपी एक्टेन्शन
   मदर डेयरी मार्ग, दिल्ली–110092
   दूरभाष : 011–22723406
   मोबाइल– 09810202146
   ईमेलः kkapoor40@yahoo.com

2. प्रोफेसर अजित कुमार चतुर्वेदी
   निदेशक
   भारतीय उच्च अध्ययन संस्थान
   राष्ट्रपति निवास, शिमला–171005
   दूरभाष : 0177–2830006 (का.)
   फैक्स : 2831389, 2830995
   ईमेलः director@iias.ac.in

मानव संसाधन विकास मंत्रालय तथा वित्त मंत्रालय से प्रतिनिधि

1. श्री आर. सुब्रमणयम, भा.प्र.से.
   सचिव
   उच्चतर शिक्षा विभाग
   मानव संसाधन विकास मंत्रालय
   कमरा नं. 127, सी–विंग
   शास्त्री भवन, नई दिल्ली–110001
   दूरभाष : 011–23386451, 23382698 (का.) 26979585,
   फैक्स : 011–23385807, 23381355
   ईमेल : secy.dhe@nic.in,

2. सुश्री दर्शन एम डबराल
सयुंक्त सचिव एवं वित्तीय सलाहाकार — पदेन सदस्य
माध्यम एवं उच्चतर शिक्षा विभाग
मानव संसाधन विकास मंत्रालय
120–सी, शास्त्री भवन
नई दिल्ली–110015
दूरभाषः–011–23382696 फैक्सः– 011–23070668
ईमेलः jsfa.edu@gov.in

पांच संस्थागत सदस्य

1. प्रोफेसर डी.पी. सिंह
अध्यक्ष
विश्वविद्यालय अनुदान आयोग
बहादुरशाह ज़फर मार्ग
नई दिल्ली–110002
दूरभाषः 011–23239628 (कार्यालय) फैक्सः 011–23231797
ईमेल : cm.ugc@nic.in

2. डा. गिरीश साहनी
महानिदेशक
वैज्ञानिक तथा औद्योगिक अनुसंधान परिषद
रफी मार्ग
नई दिल्ली–110001
दूरभाषः011–23710472, 23717053 (का.)
फैक्सः 011–23710618
ईमेल: dgcsir@csir.res.in, dg@csir.res.in

3. डॉ. ब्रज बिहारी कुमार
अध्यक्ष
भारतीय समाज विज्ञान अनुसंधान परिशद
पोस्ट बाक्स न0 10528
अरूणा आसिफ अली मार्ग
नई दिल्ली–110067
दूरभाषः 011–26179679 (का.) 011–255454865 / 26717146 (आ.)
फैक्स :–011–26162516 / 26179836
ईमेल: chairman@icssr.org

4. प्रोफेसर अरविंद पी. जामखेड़कर
अध्यक्ष
भारतीय इतिहास अनुसंधान परिषद
35 फिरोजशाह मार्ग
नई दिल्ली–110001
दूरभाषः 011–23386033, 23384869
फैक्स 23383421, 23387829, मोबाइलः 9415243954

5. प्रोफेसर एस.आर. भट्ट
अध्यक्ष
भारतीय दार्शनिक अनुसंधान परिषद
36 तुगलकाबाद इन्स्टीच्यूशनल एरिया
मेहरोली बदरपुर मार्ग
नई दिल्ली–110062
टेलीफैक्स : 011–29051762 / 29901503, 29901501
मोबाइल : 09013181940
फैक्स : 011–29964755
ईमेल : srbhatt39@gmail.com, chairman@icpr.in

सोसायटी सदस्यों में से श्रेणी 3(बी)(1) के केन्द सरकार द्वारा मनोनीत दो उपकुलपति

1. प्रोफेसर नलिनी कांत झा
कुलपति
टी.एम. भागलपुर विश्वविद्यालय
भागलपुर, बिहार–812007
दूरभाष – 0641–2620600, फैक्स 0641–2620240
मोबाइल– 09092548017, 07764016016
ईमेलः jhank59@gmail.com

2. प्रोफेसर एस.के. श्रीवास्तव
कुलपति
नॉर्थ–ईस्टरन हिल यूनिवर्सिटी
शिलांग –793002
दूरभाष : 0364–2721003 / 2721004
फैक्स : 0364–2550076
ईमेलः vcnehu@nehu.ac.in

नियम 3 (ख) (2) के अन्तर्गत केन्द्रीय सरकार द्वारा नामित सोसायटी के सदस्य

1. प्रोफेसर चमन लाल गुप्ता
   उपाध्याक्ष, शासी निकाय
   भारतीय उच्च अध्ययन संस्थान
   राष्ट्रपति निवास, शिमला–171005
   दूरभाष : 0177–2830637; मोबाइल : 09418141898
   ईमेलः guptcl@gmail.com

2. प्रोफेसर जी.के. कारंथ
   प्राध्यापक समाजशास्त्र
   सेंटर फॉर स्टडी ऑफ सोशल चेंज एण्ड डिवेल्पमेंट
   इन्स्टिट्यूट फॉर सोशल एण्ड इकनॉमिक चेंज
   बंगलोर–560072
   मोबाइल :0789837275, 9845731403
   ईमेल : gk.karanth@gmail.com

3. प्रोफेसर संजीव कुमार शर्मा
   प्राध्यापक एवं विभागाध्यक्ष
   राजनीति शास्त्र विभाग
   चौधरी चरण सिंह विश्वविद्यालय
   मेरठ– 250005 उतर–प्रदेश
   दूरभाष : 0121–12764455
   मोबाइलः 09412205348, 6458609921
   ईमेल : sanjeeevaji@csds.in

4. प्रोफेसर गुरूराज करजागी
   संस्थापक एवं अध्यक्ष
   सृजनात्मक अध्यापन अकादमी (एसीटी)
   बंगलुरू– 560032
   दूरभाष : 080–41697855 (का.); 080–23331748 (आ.)
   मोबाइल : 09663611221
   ईमेलः gururaj.karajagi@actedu.in

भारतीय उच्च अध्ययन संस्थान,
राष्ट्रपति निवास, शिमला-171005

वित्त समिति

1. प्रोफेसर अजित कुमार चतुर्वेदी — अध्यक्ष
   निदेशक
   भारतीय उच्च अध्ययन संस्थान
   राष्ट्रपति निवास, शिमला–171005
   ईमेलः director@iias.ac.in

2. सुश्री दर्शन एम डबराल
   सयुंक्त सचिव एवं वित्तीय सलाहाकार — पदेन सदस्य
   माध्यम एवं उच्चतर शिक्षा विभाग
   मानव संसाधन विकास मंत्रालय
   120–सी, शास्त्री भवन, नई दिल्ली–110015
   दूरभाषः–011–23382696 फैक्सः– 011–23070668
   ईमेलः jsfa.edu@gov.in

3. प्रोफेसर अरविंद पी. जामखेडकर
   अध्यक्ष — सदस्य
   भारतीय ऐतिहासिक अनुसंधान परिषद
   35, फिरोजशाह रोड़, नई दिल्ली–110001
   दूरभाष : 011–23386033 / 23384869 फैक्सः 23383421; मोबाइल : 09415243954
   ईमेल : chairman@ichr.ac.in

4 प्रोफेसर शरद देशपाण्डे — सदस्य
   13 खगोल वैज्ञानिक
   को–ऑप्रेटिव हाउसिंग सोसायटी
   38 / 1 पंचवटी पासन, पुणे– 411008
   मोबाइल : 09422347778

3. प्रोफेसर (डॉ.) जगबीर सिंह — सदस्य
   डब्ल्यूजेड– 707, गली नं. 18
   शिव नगर, जैल रोड़, नई दिल्ली– 110058
   दूरभाष : 011–25559404, मोबाइल : 09871598125
   ईमेल : jagbir707@yahoo.com

ANNUAL REPORT
2016–17

Contents

Sl. No.	Particulars	Page
	Foreword	3
	Director's Note	5
	Background	7
I	Administration	8
II	Fellows in Position	8
III	Academic Programmes	11
	A. 4th Rabindranath Tagore Memorial Lecture	11
	B. Seminar, Conferences, Symposia and Round Tables	11
	C. Weekly Seminars by Fellows	72
	D. Monographs Received from Fellows	74
	E. Visiting Professors	76
	F. Visiting Scholars	77
	G. Guest Fellows	78
	H. Inter-University Centre for Humanities and Social Science	79
	I. Other Programmes	84
IV	Library	85
V	Publication	85
VI	Sales and Public Relations	87
VII	Dispensary	88
VIII	Sexual Harassment Committee	88
IX	Right to Information Act, 2005	88
X	Estate	88
XI	Accounts and Budget	91
XII	Horticulture	91
XIII	Audited Statement of Accounts for the year 2016 -17 of the IIAS	94-127
XIV	Audited Statement of Accounts of the Inter-University Centre for Humanities and Social Sciences (IUC)	128-133
XV	List of IIAS Society, Governing Body and Finance Committee	134-148

FOREWORD

As I review the Report for the years December 2016-2018 March, I have a sense of satisfaction at the continuity of the academic activities at the Institute in rather constrained human resource circumstances. The credit for this undoubtedly goes to Professor Chaturvedi who with his dual responsibility, at great personal cost, directed and guided all the activities while at the same time discharging the enormous responsibility of heading the Indian Institute of Technology Roorkee.

I extend my personal felicitations and regards to him for this rich Annual Report.

This augurs well for the year(s) to come as we are able to see what new areas may now be tapped to further enrich the academics of the Institute in consonance with its original mandate.

I also record my appreciation for all the administration personnel who worked with great sense of responsibility and enabled all the activities. A word of thanks is also in order to the Secretary, Shri Prem Chand who most of the time was the most senior officer on the campus, a fact that defines his contribution.

My best wishes to all.

KAPIL KAPOOR
President, Indian Institute of Advanced Study Society
& Chairman, Governing Body

DIRECTOR'S NOTE

The Annual Report of Indian Institute of Advanced Study for 2016-17 celebrates another successful year in its quest for academic excellence. At the time of its creation, the then Union Minister for Education and Chairman of the Institute Shri M.C. Chagla had rightly said, '*the symbol of British imperialism was being transformed into a symbol of the best Indian scholarship.'* Over the years, IIAS has remained committed to its original objective of enabling outstanding scholars to explore fundamental concepts thereby advancing the frontiers of knowledge.

IIAS is an institution where scholars belonging to a diverse range of disciplines are in residence, from India and abroad. They engage in the exploration of ideas and in debate and discussion that is stimulating and substantive.

Under the prestigious Fellowship program of the Institute, outstanding scholars work for a year or two at the Institute on their respective projects and submit the outcome of their research to the Institute for publication. I am happy to state that many books and journals have been published during the period of this report. Almost all Fellows who completed their term in the year under report have submitted their monographs. Numerous Visiting Professors, Visiting Scholars and Guest Fellows from different academic disciplines stayed at the IIAS for varying periods, thereby creating a vibrant environment leading to intensive academic engagements. A large number of seminars, conferences, workshops and study weeks were organized which are mentioned in the report.

The impressive heritage building that houses the Institute needs special care. Continuous efforts are being made for its upkeep through the Archaeological Survey of India and the CPWD, the two main organizations tasked for its repair and maintenance.

The Library of the Institute is one of the best in the country in the area of Humanities and Social Sciences. Efficient functioning of the Library and other sections enables the Institute to achieve the dreams of the Institute's founder - venerable academic and the then President of India, Professor Sarvepalli Radhakrishnan.

I would like to express my thanks to Professor Chandrakala Padia, the former Chairperson of the Governing Body and President of the Society who showed keen interest in the effective functioning of the Institute.

I must also express my thanks to the Union Ministry of Human Resource Development for its constant support for the proper functioning of the Institute.

Ajit K. Chaturvedi
DIRECTOR

INDIAN INSTITUTE OF ADVANCED STUDY
|RASHTRAPATI NIVAS, SHIMLA - 171 005

ANNUAL REPORT FOR THE YEAR 2016-17

The Indian Institute of Advanced Study Society was established on 6th October 1964, under the Societies Registration Act XXIof 1860 (Punjab Amendment) Act 1957. Located at the Rashtrapati Nivas, Shimla, the Institute is devoted to higher levels of research, primarily in the areas of Humanities and Social Sciences. The academic community at the Institute consists mainly of Fellows in residence, Visiting Professors, Visiting Scholars, and Associates etc. who pursue their individual research and interact with each other, both formally and informally. Rashtrapati Nivas itself, and the natural surroundings which constitute the estate, provides an ambience conducive to living a life of the mind and exploring the different facets of the human condition.

The Institute's Memorandum of Association offers its perspective on research which is that:

(a) The areas of investigation should promote inter-disciplinary research;

(b) The areas identified should have deep human significance.

The Memorandum of Association also spells out the areas of study, which are:

(a) Social, political and economic philosophy;

(b) Comparative Indian literature (including ancient, medieval, modern folk and tribal);

(c) Comparative studies in philosophy and religion;

(d) Education, culture, arts including performing arts and crafts;

(e) Fundamental concepts and problems of Logic and Mathematics;

(f) Fundamental concepts and problems of natural and life sciences;

(g) Studies in environment – both natural and social;

(h) Indian Civilisation in the context of its Asian neighbours and the world; and

(i) Problems of contemporary India in the context of national integration and nation-building.

The Memorandum mentions that special attention should be given to:

(a) Theme of Indian unity in diversity;

(b) Integrality of Indian consciousness;

(c) Philosophy of education in the Indian perspective;

(d) Advanced concepts in natural sciences and their philosophical implications;

(e) Indian and Asian contribution to the synthesis of science and spirituality;

(f) Indian and human unity;

(g) 'Companions' to Indian Literature;

(h) Comparative studies of the Indian epics; and

(i) Human Environment.

I. ADMINISTRATION

During the year under report, the Indian Institute of Advanced Study Society and its Governing Body is headed by Professor Chandrakala Padia, Vice-Chancellor, Maharaja Ganga Singh University, Bikaner and President of IIAS Society. The members of the Society and the Governing Body are eminent persons drawn from different walks of life. The Institute has a Finance Committee, which includes representatives from the Ministry of Human Resource Development, besides other members from the Society and Governing Body of the Institute to advise the Governing Body on financial matters.

The Institute is headed by a Director who is assisted by a Secretary and other officers. Professor Chetan Singh continued as Director during the period of report.

II. FELLOWS IN POSITION

The Fellowship programme is the flagship programme of the Institute. National Fellows/Fellows/ Tagore Fellows reside at the Institute and pursue research on their respective research projects. Their tenure is for a maximum period of two years. At the end of their term the Fellows submit a monograph which, if found suitable for publication, is published by the Institute. They are also required to take part in seminars, discussions and deliberations during their stay at the Institute. In 2016-17, the following National Fellows /Tagore Fellows/Fellows were in position:

Sl. No.	Name of Scholars	Research Project
1.	Professor Bettina Baumer National Fellow	*"Third Eye and Overcoming Death". The Yoga of the Netra Tantra and its exegesis by Ksemaraja.*
2.	Professor Nirmal Sengupta National Fellow	*The Transition Paradigm of Traditional Knowledge Management and Governance System.*
3.	Professor Vijaya Shankar Varma National Fellow	*Translation of a manuscript in the Khuda Baksh Library in Patna on the "Rays of Light" by the Arab Philosopher and Scientist Al-Kindi.*
4.	Shri Amit Dutta Tagore Fellow	*The Creative Process – Aesthetics in Movement*

5.	Dr. Martin Kampchen Tagore Fellow	*Rabindranath Tagore and Paul Geheeb: Their personal Relationship and convergence of Education Ideas*
6.	Dr. Saumya Sharma Fellow	*Approach to Conservation and Restoration: Specific Focus on Cultural Heritage of Himachal Pradesh.*
7.	Professor Mahesh Champaklal Fellow	*Language in Theatre, Language of Theatre (Dramatic Text Versus Performance Text in the Context of Bhasa Natak Chakra – An Analytical and Comparative Study).*
8.	Dr. Kaustav Chakrabarty Fellow	*Socio-Cultural Study of the Non-Normative Expressions in select Tribal Folk-Literature of North Bengal.*
9.	Dr. B. Ravichandran Fellow	*Language, Caste and Territory: Language Spoken by the Scavenging Communities in South India*
10.	Dr. Jyoti Sinha Fellow	*Challenges and Attainments of 'Thumari Singers' in the Custom of Banarsi.*
11.	Dr. Arpita Mitra Fellow	*German Indological Scholarship and Modern Interpretations of Vedanta in the 19thand 20th Centuries.*
12.	Dr. Amba Kulkarani Fellow	*Computational Modeling of Yogyataa and Taatparya.*
13.	Dr. Gowhar Yaqoob Fellow	*Shaping a Literary Space: The Discourse of Identity and Use of Kashmiriyat as a Category in early Literary History of Kashmiri.*
14.	Shri Samir Banerjee Fellow	*Reinterpreting Gandhian Thought by Contemporary Civil Society Initiatives.*
15.	Dr. Pradeep Kumar Nayak Fellow	Towards Guaranteeing Land Titling (Secure Property Rights) in India: A Study.
16.	Shri Cherring Dorje Fellow	*Theory & Practice of Heritage conversation and Restoration of Rashtrapati Nivas*
17	Prof. Jagdish Lal Dawar Fellow	*History of Food in North India-Mizoramsicne pre-colonical times*
18.	Dr. Ratnakar Tripathy Fellow	*A Comparative study of the regional music industries in Hindi-speaking India: with special focus on Himachal Pradesh, Bihar and Haryana*

19.	Ms. Prachi Dublay Fellow	*Towards a theoretical framework of Adivasi Music: Studying the Musical Tradition of Rathwa Adivasi, a representative tribe living on borders of Madhya Pradesh, Gujarat and Maharashtra*
20.	Dr. Radhika Krishnan Fellow	*Red in the Green: Shankar Guha Niyogi (1942-1991) and Politics as the 'Great Outsider'*
21.	Dr. Sumanyu Satpathy Fellow	*In Print: The Role of the Early Periodical Press in Shaping Modern Odia Literary Culture*
22.	Dr. R. Lalitha Raja Fellow	*Significance of Optimality Theory in phonological acquisition and in assessment and intervention of phonological disorders.*
23.	Dr. Bindu Menon Mannil Fellow	*Religion, Migration and Modernity: Islamic Home films in Kerala and Migration to the Gulf Countries*
24.	Dr. Aditya Pratap Deo Fellow	*Writing Trans-temporality into History: Time and Politics in the Oral Traditions of the Mixed Tribe-Caste Communities of the Princely State of Kanker, Southern Chhattisgarh*
25.	Dr. Leon Morenas Fellow	*Mohallas and Smart Cities: Post-Colonial Development in Delhi.*
26.	Professor Triloki Singh Fellow	*Bouncing and Cyclic Models of the Universe*
27.	Dr. Anand Kumar Fellow	*India: Between democratic nation-building and dominant castes' democracy*
28.	Prof. K. M. Baharul Islam Fellow	*Migrant Muse: the third space in Assamese Literature*
29.	Prof. Madhavan Punappurath Fellow	*Meaning in Languages: A Comparison of the Dominant Themes and their treatment in the western and India/ Sanskrit Traditions*
30.	Dr. Sandili Maharaj-Ramdial Fellow	*From Forced Migration to the End of Indenture: A Psychological Analysis of the People of Indian Ancestory in Trinidad (1845-1917)*

III) ACADEMIC PROGRAMMES

The following academic programmes were organized during the period under report:

A. 4th Rabindranath Tagore Memorial Lecture

The Tagore Centre for the Study of Culture and Civilization was established at the Institute in 2012. Among the academic programmes to be organized as part of the activities of this Centre is an annual Tagore Memorial Lecture, which is to be delivered by a scholar of eminence or a public intellectual on any important theme related to the intellectual engagements around which the Tagore Centre has been established. These could include issues concerning culture, society and Tagore's overarching interest in civilizational issues pertaining to the condition of humankind.

Professor B.N. Goswamy, Eminent Art Historian, delivered the 4th Tagore Memorial Lecture on 28 November at Shimla. Professor Chandrakala Padia, Chairperson, IIAS delivered the Welcome Address. Professor Chetan Singh, Director, IIAS, proposed the vote of thanks.

B. SEMINARS, CONFERENCES, SYMPOSIA AND ROUND TABLES

Several seminars and conferences were organized by the Institute during this period. They are listed below along with the academic rationale that as spelt out in the concept note prepared by the respective conveners/co-conveners. Also mentioned with each report of the seminar are the names of participants and the sessions that were organized in each seminar.

The concept note of each seminar is placed on the website of the Institute and a call for papers is announced simultaneously on the website. In addition to inviting eminent scholars who have already made significant contribution to the subject matter of the proposed seminar, an effort is thus made to reach out to interested scholars working on the concerned topic. The number of younger scholars responding to this call for papers has been quite good. With growing publicity the quality of responses has also improved considerably.

The following were the seminars organized by the Institute:

1. International Conference on 'Intimacy and Belonging in Contemporary India' (04-06 April 2016)

Rationale: The Latin etymology of the word 'intimacy' conveys the following meaning: it is making known (*intimare*) what is innermost (*intimus*) to a close friend (*intima*).Intimacy, thus, incorporates a notion of sharing by acknowledging an urge of belonging together, almost inseparably. The questions arise then: Out of all that we develop, how many are intimate relations for us? Out of all that we feel, how many can be identified as the innermost feelings and how much of even

those can we express intimately in a familiar circle? The paradox of intimacy lies in the fact that it is objective but personal, somatic nonetheless psychological, affective in its dimension yet without having a firm reflective/self-conscious foundation. Most importantly, intimacy of the 'self' is dependent on 'other' and yet belonging together in such a manner as if the sharp distinction between the 'self' and the 'other' is annihilated in an act of intimate destruction. The notion of Intimacy thus proves that the 'self' cannot resist from belonging to the 'other'. To be specific, the 'self' can only be known through the 'other', where it seems possible that the innermost qualities can be shared. Here comes the question of choice. Unlike the bond with and among the non-humans, intimate bond among human beings depends on, firstly, the palpable possibility of sharing and, secondly, on the mutual consensus and commitment of belonging from both the parties. Is the tangibility of such probability of intimacy purely apolitical? Are the motivations for belonging, through closeness/fidelity, fully impulsive sans politics? What is the politics that drives us from the intimate awareness of belonging-to (externally related) towards/against belonging-with (related internally)? What is the politics that often adds an esoteric dimension to intimacy?

Initially viewed as the 'sociology of personal life' as a part of the discourse of everyday life, intimacy now has been recently melded with the complex broader issues related to labour, economies, social justice, commodification and body shopping. The possibility of finding new ways of belonging together cannot be understood without understanding the complex connection of intimacy with changing notions of nationhood, citizenship and community. From the ancient erotic practices of '*shringara'* to '*prem'*, the armed debate on valentines' day to interreligious, interclass, intercaste romances/marriages and their consequences, including shaming, stigmatizing to honour killing—all are symptomatic of the progress of intimacy in Indian hands in new and newer forms.

This conference, focusing on the emerging forms of intimacies in contemporary India, is also an attempt to understand/address the politics behind the changing notion/nature of belonging. What causes or inhibits intimacy and what restricts or disfigures one's identity of belonging? Questions can be asked, if at all the transformation in the modes of intimacies--resulting from transnational ties, migration/ immigration, rise of alternative socio-economic doctrines, new communication technologies and/or transnational media, and thereby giving rise to intimate spaces/ intimate settings for intimate encounters—have in actuality, paved way for transversal and emancipatory structures that can politically challenge the hegemonic, traditional, Indian concepts/norms of belongings, erstwhile restricted to the rigid boundaries of class, caste, religion, region and normative conformity.

Specifically, these are the questions we are asking: What are the benefits and challenges of cross-cultural/unconventional/non-human intimacies? What is/possibly be the politics of belonging if the contemporary forms of intimacies ever attempt in the intersecting of the issues related to geographical location/ethnicities, class, race, disability, age, (dalit/tribal)subalternity, (religious/

gender and sexual) minority and thereby aim at germinating alternative sub-cultural praxes? Can one relate the emerging trends of belonging in India with the concepts of intellectual intimacy, spiritual intimacy and the intimacy of the past through memory? Is there an essential politics behind the fusions of intimacy, commodification, bodies, labour, care, and social justice? How can one apprehend the politics and possibilities of the transformation from naming and relating—like friend, companion, lover, partner, spouse—to poly-amorous desires, dissident eroticism, anonymous/unnamed bonding or even collective belonging in a temporal manner? How can one also make sense of intimacy's paradoxes, such as domestic violence?

An International Conference on '*Intimacy and Belonging in Contemporary India*' was organized during 04-06 April 2016 at IIAS. Dr.Kaustav Chakraborty, Fellow, IIAS was the Convener of the seminar. The welcome address was given by Professor Chetan Singh, Director, IIAS. Dr.Kaustav Chakraborty, Convener of the seminar gave introductory remarks. Inaugural Address was given by Dr. Sudhir Kakar, Pulwado Pequeno, Benaulim, Goa.

PARTICIPANTS

- Dr.Sudhir Kakar, PulwadoPequeno, Benaulim, Goa.
- Dr. G. Amarjit Sharma, North East India Studies Programme, School of Social Sciences, Jawaharlal Nehru University, New Delhi
- Ms. Juhi Sidharth, Plot no. 87, Sector 8, Gandhinagar, Gujarat
- Dr. Vebhuti Duggal, Department of English, Zakir Husain Delhi Collage (Evening), University of Delhi, New Delhi
- Dr. Pranta Pratik Patnaik, Department of Culture & Media Studies, School of Social Sciences, Central University of Rajasthan, Rajasthan
- Professor Radhika Raj, Tata Institute of Social Sciences, Mumbai
- Dr. R Umamaheshwari, Fellow, IIAS, Shimla
- Dr. Kaustav Chakraborty, Fellow, IIAS
- Dr. Malemnganba Ningthoujam Meetei, Fellow, IIAS, Shimla
- Dr. Geeta Patel, Sector- 15A, Flat 4B, Super Delux Flats, Noida, UP
- Professor Isabelle Clark-Deces, Department of Anthropology, Princeton University, Princeton, NJ 08544, USA
- Professor Frederick Smith, Department of Religious Studies, University of Iowa, Iowa City, IA 52242, USA
- Mr. Sayan Bhattacharya, Jadavpur University, Kolkata

- Professor Priyambada Sarkar, Department of Philosophy, University of Calcutta, Kolkata
- Dr. M.S. Siddiqui, Department of Education, Visva-Bharati (A Central University), Santiniketan, West Bengal
- Dr. P. Sanal Mohan, School of Social Sciences, Mahatma Gandhi University, Kottayam, Kerala
- Mr. Dickens Leonard M., Center for Comparative Literature, University of Hyderabad, Hyderabad
- Professor K. Satyanarayana, Department of Cultural Studies, The English and Foreign Languages University, Hyderabad
- Dr. Sucharita Sarkar, DTSS College of Commerce, Kurar, Mumbai
- Dr. Mangesh Kulkarni, Department of Politics & Public Administration, S. P. Pune University, Pune
- Ms. Chandni Mehta, Delhi University, Delhi
- Dr. Vinita Singh, Manager, Enable India, Bangalore
- Dr. Himadri Roy, School of Gender & Development Studies, Indira Gandhi National Open University, New Delhi
- Professor G Arunima, Centre for Women's Studies, School of Social Sciences, Jawaharlal Nehru University, New Delhi
- Ms. Silpa Mukherjee, Jawaharlal Nehru University, New Delhi
- Professor Shivaji K Panikkar, School of Culture & Creative Expressions, Ambedkar University, Delhi
- Dr. KantaKochhar-Lindgren,23 Sha Wan Drive, Block 3, 1 Floor, Apt. 1C, Pokfulam, Hong Kong
- Ms. Nilanjana Sen, Kishore Bharati Bhagini Nivedita College (Co-ed), Kolkata
- Dr. Kaustav Chakraborty, Fellow, IIAS
- Dr. Tadd Graham, Fellow, IIAS
- Dr. Aryak Guha, Fellow, IIAS
- Professor Nirmal Sengupta, National Fellow, IIAS
- Professor K.L. Tuteja, Tagore Fellow, IIAS
- Dr. Gowhar Yaqoob, Fellow, IIAS
- Professor Bettina Baumer, National Fellow, IIAS

- Dr. Anindita Mukhopadhyay, Fellow, IIAS

Participants made presentations on the following themes during the conference:

Session I

G. Arunima: *Love, Life, Learning: The Intimate History of Political Subjectivity*

K. Satyanarayana: *Identification, Belonging and the Category of Dalit*

Shivaji K Panikkar: *Intimacy and Belonging under Duress: The Crisis in the Queer Expressive Practices*

Session II

Isabelle Clark-Decès: *Intimacy in Tamil Kinship*

Priyambada Sarkar: *Challenges of Queer Intimacies in Kolkata: An Exploration*

Nilanjana Sen: *How Stand Still in an Ever Moving Earth: A Reading of Intimacy in Disability Studies*

Session III

Geeta Patel: *Routing Techno-Intimacy, Risk-and the Ambient Political*

Juhi Sidharth: *New Freedoms, Old Controls: The Role of Mobile Phone Technology in the Intimate Lives of Young Women in a Mumbai Slum*

Sucharita Sarkar: *Maternal Intimacies Online: How Indian Mom-bloggers Reconfigure Self, Body, Family and Community*

Session IV

Mangesh Kulkarni: *Intimacy, Belonging and Masculinity in Bhalachandra Nemade's Novel, Kosla (Cocoon)*

Malemnganba Ningthoujam Meetei: *Animated Intimacies: Enacting Populism and Collective Memories in a Fragmented Society*

Radhika Raj: *Kings of the Suburbs: Hindu Nationalism and Fraternal Bond as Politics in the Urban Margins*

Session V

R. Umamaheshwari: *So Near Yet So Far: Nature as the Intimate and Nature as the Other*

Pranta Pratik Patnaik: *Public Spaces and Private Intimacies: The 'Politics of Belonging' in Parks*

Session VI

Sayan Bhattacharya: *Reading Queerness: Same-Sex Marriages in India*

Vinita Singh: *Getting Intimate: The Disabled Body as Date, Lover and Friend –Reading the Recent Strategies of Being Sexual by the Disabled in Contemporary India*

Chandni Mehta: *Sex Work: The Intimate 'Other' of Intimacy and Belonging*

Session VII

Himadri Roy: *Pleasurable Pain: Consuming Intimacy and a Sense of Belonging of Erotic Gay Men*

Dickens Leonard M: *Anti-caste Communities and Out-caste Experience: Space, Body, Displacement, and Writing*

Session VIII

G. Amarjit Sharma: *Citizenship and Ethnic Intimacy: Enclosure and Intersection in the Lives of People in North East India*

Silpa Mukherjee: *Queer Intimacies in the time of New Media: When Grindr Produces Alternative Cartographies*

Session IX

Vebhuti Duggal: *Listening to the Love Song: Intimacy on the Radio in India, c. 1960 – 75*

Kanta Kochhar-Lindgren: *Dis-Equilibriums: Performances of Belonging across South Asian Disability and Deaf*

Session X

Mohammad Shaheer Siddiqui: *Voice of Agony in the Spiritual Spark: Feminist Mysticism, Contemporary Society and Spiritual Intimacy*

Frederick M. Smith: *Intimacy and Community in Processions in Garhwal and Himachal Pradesh*

P. Sanal Mohan: *Intimacy in the Context of Caste Slavery: Exploring the Missionary Writings on Kerala*

2. National Seminar on 'Policing A Diverse India' (18-19 April 2016)

Rationale: India is a diverse and rapidly modernizing society. Significant aspects of socio-cultural diversity in the country intersect on several axes. It goes without saying that while this contributes immensely towards the richness of social interaction; it also creates an environment fraught with possibilities of friction. There do also, nevertheless, exist viable means of reconciliation and conflict resolution within the constitutional framework. For the most part a functional balance has been generally maintained. This is not to deny, however, that there have been several occasions when deeply entrenched social biases have influenced the functioning of the police

and other security agencies. The exhibition of such bias by public agencies not only aggravates an already conflictual situation: in a larger sense it essentially diminishes the idea of India as an accommodating, multicultural nation.

According to the 2011 census the population of India stood at 1,210,193,422. This billion plus population of India consists of Indians who practice all the major religions of the world such as Islam, Christianity and Judaism, Hinduism, Jainism, Sikhism and Buddhism and a unique gift from the Persia of yore – Zoroastrianism. A myriad of indigenous cults, practices and religious beliefs are followed by numerous sects and sub-sects in different parts of the country.

The astonishing linguistic diversity of India is all too evident. Grierson's (1903-28) survey of the Indian languages had listed 179 languages and 544 dialects in India. Having recognized eleven major languages initially, the Constitution of India has been amended four times to add eleven more languages thereby doubling the list of official languages. Furthermore, nearly half a dozen more linguistic groups continue to strive for obtaining a constitutional status for their language.

The 'People of India' project of the Anthropological Survey of India that generated comprehensive data on the socio-cultural diversity of the country between 1985 and 2000 identified 4,694 communities in its forty-three volume work. The project prepared a database of 17,129 entries, of which 8,530 refer to castes/communities and remaining 8,566 relate to sub-groups (3,123), surnames (2,729) and the names of deities, places and titles. It identified 2,619 castes, nearly 4,599 languages and dialects in twelve language families and some twenty-four scripts (Singh 1996). Diversity of kinship, marriage rites and customs, inheritance, modes of living, community life, forms of land tenure, agricultural operations and so on, abound in India.

Policing such a diverse society is a challenge of a quotidian nature. The police need to be aware not only of the different communities inhabiting an area, but also of the interstices and overlapping spaces where inter-community relations are rather sensitive and liable to turn volatile. Communal conflagrations are triggered by minor misunderstandings because of the inability of persons in authority to appreciate crucial elements of diversity around which community identities are constructed. It is important that these contentious social and physical spaces be sensitively identifiedpolice officials made cognizant of the role these play in maintaining communal harmony. All too often, the social bias of the police and security tends to become a matter of heated discussion whenever and wherever communal conflict occurs.

Yet another aspect of India's iniquitous social order is the caste system that insidiously permeates almost every social section and aspect of life. Notwithstanding higher expectations from the police, its professional vulnerability often becomes quite explicit when complaints regarding atrocities against Dalits and Adivasis have to be dealt with. Equally inept is the manner in which matters pertaining to women are handled by a force that has very evidently failed to keep pace with the growing demand to swiftly alter gender relations in a highly globalized world.

Special policing is a major area where not only the police, but also the paramilitary and armed forces are involved in policing. Special policing seeks to address major public security issues arising from terrorism and insurgency. Political movements that gravitate in some measure towards secessionism (for example in some parts, and amongst some social sections, of the north east and Jammu and Kashmir) have thrown up challenges of terrorism and insurgency. As a first line of defence in public security, the police are the first to confront such situations. Indeed, India's diversity creates challenges for the security agencies here as well. North eastern India and Jammu and Kashmir are clearly distinct socio-cultural regions. They also represent rather different dimensions and manifestations of policing problems. Special legal instruments such as the AFSPA are often seen by the state and security forces as indispensable enabling provisions. They have, however, also engendered great distrust and serious contention between the government and its agencies on one hand and the affected people and human rights groups on the other.

The Maoist movement is today, perhaps, the most significant kind of unrest that has found roots in the Indian heartland, and draws strength from the inequities of an economic system that has allowed millions to be left behind. Known in government parlance as Left Wing Extremism (LWE), it is often viewed as a revolutionary movement that shares the characteristics of an insurgency. Given its close connection with rural and tribal people, the police and paramilitary forces dealing with LWE have been repeatedly accused of avoidable brutality even as they occasionally become victims of an escalating circle of violence. The fact that tribals and Dalits constitute the foot-soldiers of the LWE groups makes this movement a matter of considerable concern, and one that deserves urgent and detailed interrogation.

The national seminar seeked to address issues pertaining to the enormous challenges confronting organizations tasked with policing such a diverse country as India. Participants were welcomed to work on a topic that they consider to be relevant and important, but within the larger vision of the seminar as summarized in the concept note.

A national seminar on '*Policing A Diverse India*' was organized during 18-19 April 2016 at IIAS in collaboration with Himachal Pradesh Police (Raising Day Celebration). Dr. Ajay K. Mehra, Director (Honorary), Centre for Public Affairs, Noida, UP and Mr. Zahur H. Zaidi, Inspector General (Administration), Himachal Pradesh Police, Shimla were the Conveners of the seminar. The welcome address was given by Professor Chetan Singh, Director, IIAS. Dr. Ajay K. Mehra and Mr. Zahur Zaidi, Conveners of the seminar gave introductory remarks.

PARTICIPANTS

- Dr. Ajay K. Mehra, Director (Honorary), Centre for Public Affairs, Noida, UP
- Mr. Zahur H. Zaidi, Inspector General (Administration), Himachal Pradesh Police, Shimla

- Mr. Kamal Kumar, DGP (Retd), Former Director, National Police Academy
- Ms. Madhavi Kuckreja, Sanat Kada, 130-J.C. Bose Road, Qaisarbagh,Lucknow
- Professor Ashwani Kumar, Pro-Chancellor, APG University, Shimla
- Dr. Sudhanshu Sarangi, Additional Director General of Police, State Police Headquarters, Odisha
- Ms. Maja Daruwala, Director, Commonwealth Human Rights Initiative, New Delhi
- Ms. Sreya Dutt, Department of Film Studies, Jadavpur University, Kolkata
- Shri Pradip Phanjoubam, Imphal Free Press, Manipur
- Mr. Sanjay Vashishtha, Centre for Criminology, Faculty of Law, University of Oxford, United Kingdom
- Mr. P. K. H. Tharakan, The kkanatt Parayil Komana, Olavipe, Kerala.
- Mr. Akbar Chawdhary, Jawaharlal Nehru University, New Delhi
- Mr. Dhruv Pande, Department of Humanities and Social Sciences, Indian Institute of Technology, Kanpur
- Mr. Basant Rath, Police Headquarters, Jammu
- Dr Manisha Sethi, Jamia Millia Islamia, New Delhi
- Mr. Pupul Dutta Prasad, National Human Rights Commission, New Delhi
- Dr. M. Sajjad Hassan, Centre for Equity Studies – Misaal, New Delhi
- Mr. Sanjay Kundu, Police Headquarters, Nigam Vihar, Shimla
- Mr. Kamlendra Prasad, DG Police (Retd.), K-704, Awadh Apartment Vipul-1, Gomti Nagar, Lucknow
- Mr. Umesh Sharraf, Sardar Vallabhbhai Patel, National Police Academy, Hyderabad
- Ms. Farah Naqvi, (Former Member NAC), 310, Kutab View Apartments, Jain Mandir, Dada Bari Road, Mehroli, New Delhi
- Shri Sukumar Muralidharan, Fellow, IIAS

Participants made presentations on the following theme during the seminar:

Session I

Police in India: The Historical Burden

Ashwani Kumar: *The Indian Police and its Legal and Administrative Burden*

Basant Rath: *Diversity and Coproduction of Safety: India's Disposal Problem*

M. Sajjad Hassan: *Police against the people: Understanding impunity!*

Session II

Society and Police

Kamal Kumar: *The Role of Environmental Factors*

Umesh Sharraf: *A Requiem for Free Speech*

Farah Naqvi: *Identity, Prejudice and the Police: A shifting response from 'Police Sensitization' to 'Police Accountability'*

Session III

Police and Contemporary Challenges

Sanjay Kundu: *Human Trafficking in India*

Sudhanshu Sarangi: *Policing in the Context of Radicalization*

Sanjay Vashishtha: *Evidence Based Policing: The Need for a 'What-Works' Approach in India*

Session IV

The Regional Question

Sreya Dutt: *Kashmir: Studying a Possible Reorganization of Civil Society*

Pradip Phanjoubam: *Policing the NE Frontier*

Session V

Issues of Gender

Maja Daruwala: *Women in Policing: Rough Road to Justice*

Dhruv Pande: *Law and the Police at Intersection: Dalit Women in Rural Tamil Nadu and Rajasthan*

Madhavi Kukreja: *Protecting the Marginalized Gender, LGBT, Senior Citizens and Human Trafficking*

Session VI

Terrorism and Extremist Movements

P. K. H. Tharakan: *Detecting Evolution of Terrorist Groups through Social Network Analysis*

Session VII

Issues of Marginalisation

Akbar Chawdhary: *Draconian Police and Security Force Actions, Corporate Complicity and Human Rights in the LWE Affected Regions of India*

Session VIII

The Question of Human Rights

Manisha Sethi: *Prejudice and Impunity: A Study of Terror Investigations*

Pupul Dutta Prasad: *Respecting Human Rights in Responding to Terrorism*

Kamlendra Prasad: *Police Reforms: Quest for an alternative agenda*

3. International Conference on 'Kipling in India: India in Kipling' (26-28 April 2016)

Rationale: Rudyard Kipling (1865-1936) was born and brought up in India till the age of five speaking an Indian language, and after schooling in England, returned to India to work here as a journalist for *The Civil and Military Gazette*, Lahore, from 1882 to 1887, and then *The Pioneer*, Allahabad ('the leading paper in India,' as Kipling described it) from 1887 to 1889. He left India in March 1889 to return just once briefly in 1891.

His father, J. Lockwood Kipling, had come out to India in 1865 as a teacher of art and crafts in Bombay/Mumbai at what later became the J.J. School of Art. He moved in 1875 to Lahore as the curator of the museum, and published in 1891 a book titled *Beast and Man in India;* he returned to England in 1893. Rudyard's only sibling, Alice (Trix), married Capt. Jack Fleming of the Survey of India, published two novels of her own, *The Heart of a Maid* (1891) and *A Pinchbeck Goddess* (1897), and lived on in India with her husband while coping with a mental illness. She and Rudyard had earlier both contributed poems to a volume titled *Echoes* (1883).

When Rudyard Kipling left India in 1889, he was already the author of eight books of poetry and fiction set in India, including *Departmental Ditties* and *Plain Tales from the Hills*. Later, while living in the UK and the USA, he published several more works set in India, including a co-authored novel *The Naulahka* (1892), the two *Jungle Books* (1894, 1895), and finally, his masterpiece *Kim* (1901).

Beyond these bare facts, the larger significance of Kipling's formative and vital connection with India as a person and a writer has been summed up thus by one of his recent biographers:

India was where Rudyard Kipling was happiest, where he learned his craft, where he rediscovered himself through his writing and came of age as a writer. India made him, charged his imagination, and after he left India in March 1889 at the age of twenty-three he was most completely himself as an artist when re-inhabiting the two Indian worlds he had left behind. He lived thereafter on borrowed time, a state of higher creativity he was unable to maintain once he had exhausted his Indian memories with the writing of his masterwork *Kim.* (Charles Allen, *Kipling Sahib,* 2007)

There is, thus, much to examine, explore and revaluate in Kipling's connection with India and his writings about India, in terms of locale, culture and language, the themes he chose to write on, and the historical and political context then and now.

An international conference on '*Kipling in India: India in Kipling*' was organized during 26-28 April 2016 at IIAS in association with the Kipling Society, United Kingdom. Professor Harish Trivedi, Professor of English, University of Delhi and Professor Janet Montefiore, 36 St Dunstan's Street, Canterbury, CT2 8BZ were the Conveners of the conference. The welcome address was given by Professor K. Satchidanandan, National Fellow, IIAS on the behalf of Director, IIAS, Shimla. Professor Harish Trivedi, Convener of the seminar gave introductory remarks.

PARTICIPANTS

- Professor Harish Trivedi, Professor of English, University of Delhi
- Professor Janet Montefiore, 36 St Dunstan's Street, Canterbury, CT2 8BZ
- Professor K. Satchidanandan, National Fellow, IIAS
- Mr. Anindyo Roy, Colby College, Waterville Maine, USA
- Professor Stephen Hancock, Department of English, Brigham Young University-Hawaii, USA
- Professor K.L. Tuteja, Tagore Fellow, IIAS, Shimla
- Ms. Angela Eyre, Open University, Milton Keynes MK7 6AA, United Kingdom
- Dr. Jill Didur, Department of English, Concordia University, Canada
- Dr. Sarvchetan Katoch, Department of English, Shaheed Bhagat Singh College, University of Delhi, New Delhi
- Dr. Vinita Bhatnagar, Department of Humanities, Institute of Technology, RGPV Bhopal
- Professor Harry John Dillon Ricketts, Victoria University of Wellington, New Zealand
- Dr. Usha Mudiganti, School of Liberal Studies, Ambedkar University, Delhi
- Professor Evelyne Hanquart Turner, University of Paris, France
- Professor Satish C. Aikant, BasantWatika, KulriMussoorie, Uttarakhand
- Dr.Rangana Banerji, Department of English, University of Calcutta, Kolkata
- Dr.Sudhir Kakar, PulwadoPequeno, Benaulim, Goa
- Professor Neelum Saran Gour, University of Allahabad, Allahabad
- Ms. Kaori Nagai, University of Kent, Canterbury, Kent, CT27NZ, United Kingdom
- Professor Sandra Kemp, Research Department, Victoria and Albert Museum, London SW7 2RL, England, UK
- Professor Nadhra Khan, Lahore University of Management Sciences, Lahore, Pakistan

- Dr.Madhu Grover, Lady Shri Ram College, University of Delhi, New Delhi
- Ms. Mary Hamer, AFRO- American Studies, Harvard
- Dr. Amrita Narayanan, 21, Defence Colony, Phase-I Lane-2, Goa Bardez
- Mr. Julius Bryant, Victoria and Albert Museum, London SW7, UK

The participants made presentations on the following themes during the conference:

Session I

Politics of Empire

Angela Eyre: Mind the Gap: *The Translation and Use of Hindi, Urdu and Hindustani Words in Kipling's Kim*

Harish Trivedi: *Kipling and Indian Nationalism*

Kipling Society

Mary Hamer (Chairman, Kipling Society), Introducing the Kipling Society.

Demonstration by Mike Kipling of the Kipling Society website and its resources

Presentation by Bharat Bhushan, to Mary Hameron behalf of the Kipling Society, of watercolour painting of Kipling's birthplace in Bombay

Janet Montefiore, Introducing the *Kipling Journal* and gifting some books on Kipling to the Director of IIAS.

Session II

Kipling as Poet

Harry Ricketts: *Hard Knocks and Visions: Kipling's Indian Poetry*

Janet Montefiore: *Kipling's Indian Love Lyrics*

Session III

Imperial Hospitality

Stephen Hancock: *Letting in the Jungle*

Kaori Nagai: *'I have the Jâtaka; and I have thee': Fables and Kipling's Political Zoology*

Session IV

The Jungle Books

Sarvchetan Katoch: *Re-ViewingThe Jungle Book*

Amrita Narayanan: Soul Murder, Wolf Mother: Re-reading Kipling's *Jungle Book* alongside Psychoanalysis

Session V

The Child in Kipling

Usha Mudiganti: *Through the Lens of Childhood*

Session VI

Going Native

Satish C. Aikant: *Going Native, Cautiously: Colonial Ambivalence in Rudyard Kipling's Kim*

Anindyo Roy: *Recuperative Narratives in the Anglo-Indian Romance: Situating Kipling's The Naulahka*

Session VII

Kipling's Cities

Jill Didur: Anglo-Indians in Kipling: Kipling in Simla [*sic*]

Evelyne Hanquart-Turner: *The City of Dreadful Night: From Thomson's Chronotope to Kipling's Lahore*

Neelum Saran Gour: *Kipling and Allahabad*

Session VIII

Kipling's Indian Spaces

Madhu Grover: *On the Edge: The Conundrum of Kipling's Ambivalent Fictions*

Rangana Banerji: *Kipling and Kaa [li]: via Kolkata*

Vinita Dhondiyal Bhatnagar: *Reading Kipling in 'Kipling's Own Country'*

Session IX

John Lockwood Kipling & Rudyard Kipling

Nadhra Khan: *Kipling's Lahore: Drawing and Reading Architecture*

Sandra Kemp: *'Expert Fellow-Craftsman': How Lockwood Kipling Shaped Rudyard's Understanding of India*

Julius Bryant: *John Lockwood Kipling: An Introduction to the V&A Exhibition (2017)*

Concluding Session

Mary Hamer, Reading from *Kipling &Trix*

4. National Seminar on 'Poetry as Counter-Culture: An Unbroken Indian Tradition' (16-18 May 2016)

Rationale: Indian poetry, like Indian philosophy, has a long tradition of creative dissent as it has always been alert to its surroundings and has worked like a counter-culture against diverse forms of cultural hegemony. This tradition begins with folk and tribal poetry where the people speak about their different origins, subvert status-quo myths and raise their voices against the masters who deny them their rights. We also have folk and tribal epics that are parallel to the mainstream epics, at times taking themes from Ramayana and Mahabharata and giving them new, often subaltern, interpretations or celebrating folk heroes.

Sanskrit poetry too had writers who did not necessarily follow the mainstream norms and practices like Yogeshwara or Shoodraka. The Buddhist and Jain poetry as also the Sangam poetry and the Tamil epics *Manimekalai* and *Silappadikaram* interrogated the status quo in diverse ways. The Bhakti and Sufi poetry (from Tirumular, Basaveshwara, Akka Mahadevi , Andaletc in the South to Kabir, Meerabai, Surdas, Tukaram, Namdev , Chaitanya, Lal Ded, Bulle Shah, Shah Abdul Latif and several others in the North) often consisted of a critique of the existing religious and social practices including the *varna*/*jati* system and patriarchy. Most of these poets rejected sectarian interpretations of religion, problematized priesthood and questioned the basis of caste hierarchies, many were against rituals and superstitions associated with religion, and most privileged the oral over the written and spoke/wrote in the languages of the people, instead of Sanskrit, which by that time had become the language of an elite minority, and created new symbolic languages to express their novel perceptions. These movements may be said to have laid the secure foundations of later poetic practices in India since they interrogated hierarchies, were secular-spiritual and foregrounded the egalitarian ideal.

These ideas had also inspired the anti-colonial and reformist trends that emerged during the freedom struggle as represented by Subramania Bharati, Veereshalingam Pantalu, Rabindranath Tagore, Nazrul Islam, Kumaran Ashan, Vallathol Narayana Menon, Sumitranandan Pant, Maithilisharan Gupta, Subhadrakumari Chauhan and several others. They squarely criticized the caste system, feudal exploitation, patriarchy and superstition. The Progressive Movement inspired both by Gandhi and Marx, was a continuation of the earlier reformist poetry but with a greater radical zeal and was particularly strong in languages like Urdu, Hindi, Bengali, Kashmiri, Tamil, Telugu and Malayalam and gave rise to several voices that questioned the rising capitalist exploitation along with the old feudal one as also the various kinds of discrimination based on caste, race, class and gender.

The progressive modernists radically changed the idiom of poetry as can be seen in the works of GN Mukthibodh, Ali Sardar Jafri, Dhoomil, Vijaydev Narayan Sahi, Sarveshwar Dayal Saxena, Rajesh Joshi, Kunwar Narain, Kedarnath Singh, Manglesh Dabral , Joy Goswami, Pash, Surjit

Pathar, Attoor Ravivarma, KG Shankara Pillai and several others. The emergence of strong feminist, nativist, dalit and tribal trends in poetry with scores of poets challenging diverse hegemonies, asserting their identity and innovating the poetic language by infusing it with local idioms and slangs, along with the poetry of the religious and sexual minorities and poetry that takes up the issues of environment and peace, has revitalized counter-cultural tradition in Indian poetry. The seminar looked at this counter-cultural tradition in its totality as also examine specific trends, authors and texts in an attempt to discover the patterns, paradigms and poetics of the practice of dissent in Indian poetry from the beginning to the present day.

A national seminar on '*Poetry as Counter-Culture: An Unbroken Indian Tradition*' was organized during 16-18 May 2016 at IIAS. Professor K. Satchidanandan, National Fellow, IIAS was the Convener of the seminar. The welcome address was given by Professor Chetan Singh, Director, IIAS. Professor K. Satchidanandan, Convener of the seminar gave introductory remarks. Inaugural address was given by Shri Keki N.Daruwala, Mount Kailash, SFS Apartments, New Delhi. Keynote address was given by Shri Ashok Vajpeyi, Safdarjung Dev Area, New Delhi.

PARTICIPANTS

- Professor K. Satchidanandan, National Fellow, IIAS
- Shri Keki N. Daruwala, 79, Mount Kailash, SFS Apartments, New Delhi
- Shri Ashok Vajpeyi, C-4/193, Safdarjung Dev Area, New Delhi
- Mr. Mohd. Sajid Ansari, Department of English, Aligarh Muslim University, Aligarh
- Dr. A.J. Thomas., Former Editor, Indian Literature, Sahitya Akademi, New Delhi
- Professor Kesavan Veluthat, Department of History, University of Delhi, Delhi
- Mr. Neeraj Sankhyan, School of Humanities and Social Sciences, Indian Institute of Technology (IIT) Mandi
- Mr. Chirag Trivedi, Department of English and Business Communication, BKMIBA, Amrut Mody School of Management, Ahmedabad University, Ahmedabad
- Dr. Manoj Pandya, Shree Govind Guru Government College, Banswara, Rajasthan
- Mr. Abhishek Jha, University of North Bengal, Kolkata, West Bengal
- Dr.Kaustav Chakraborty, Fellow, IIAS, Shimla
- Professor Bettina Baumer, National Fellow, IIAS, Shimla
- Ms. Tejoswita Saikia, DKD College, Assam
- Ms. Sreya Dutt, Department of Film Studies. Jadavpur University, Kolkata

- Dr. Kumar Sushil, Punjab University Campus, Punjab
- Ms. Paromita Datta, Department of English, Gobardanga Hindu College, West Bengal
- Mr. Huzaifa Pandit, Department of English, University of Kashmir, Srinagar
- Dr. R. Ramapriya, Department of English, Kunthavai Naacchiyaar Govt. Arts College for Women, Thanjavu
- Professor H.S. Shivaprakash, School of Arts and Aesthetics, Jawaharlal Nehru University, New Delhi
- Ms. Ardra N. G., Centre for Political Studies, School of Social Sciences, Jawaharlal Nehru University, New Delhi
- Professor Purushottam Agrawal, B5/A, (ground floor), Kailash Colony, New Delhi
- Mr. Judhajit Sarkar, Department of Comparative Literature, Faculty of Arts, Jadavpur University, Kolkata
- Dr Ajay S Sekher, Department of English, S. S. University, Kalady, Kerala
- Professor P. P. Raveendran, Mahatma Gandhi University, Kottayam, Kerala
- Ms. Gopika Jadeja, South Asian Studies Programme, National University of Singapore, Singapore
- Professor Ipshita Chanda, Department of Comparative Literature, Jadavpur University, Kolkata
- Professor Rukmini Bhaya Nair, Department of Humanities and Social Sciences. Indian Institute of Technology, New Delhi
- Mr. Shaji Khan, Department of English, University of Jammu, Jammu
- Ms. Shruti Sareen, Delhi University, Delhi
- Dr. Kokila Kalekar, Department of Translation Studies, The English and Foreign Languages University, Hyderabad
- Dr. Soibam Haripriya, Tata Institute of Social Sciences, Guwahati, Assam
- Professor Mini Chandran, Department of Humanities & Social Sciences, Indian Institute of Technology, Kanpur
- Ms. Sampurna Chattarji, A-3, Flat 205, Harasiddh Park, Pawar Nagar, Thane, Maharashtra
- Dr. Paritosh Chandra Dugar, Principal (Retd.), Postgradute Govt. College, Rajasthan
- Professor K.L. Tuteja, Tagore Fellow, IIAS
- Dr. Gowhar Yaqoob, Fellow, IIAS
- Dr. Jagdish Lal Dawar, Fellow, IIAS

Participants made presentations on the following theme during the conference:

Session I

Society and Transcendence: Some Early Examples

H S Shivaprakash: *The Vachana Tradition: Towards a Counter-Poetics*

Ramapriya Ramachandran: *Jouissance and the Female Body in Transcendence: A Reading of Andal's Nacciyar Tirumozhi through Irigaray*

Mini Chandran: *Sangam Poetry: The Song of the Common Man*

Session II

Women's Resistance: The Buddhist Strand

Rukmini Bhaya Nair: *Language, Body, Resistance*

Kaustav Chakraborty: *'Radical Grace': Hymning of 'Womanhood' in Therigatha*

Bettina Sharada Baumer: *Climb the Void with a Ladder: Bhima Bhoi, Tribal Mystic Poet of Odissa*

Special Session of Poetry Reading:

Ashok Vajpeyi

Keki Daruwalla

Rukmini Bhaya Nair

H S Shivaprakash

Sampurna Chattarji

A J Thomas

K. Satchidanandan

Session III

Bhakti: Kabir and Mira

Purushottam Agarwal: *Kabir and after: New Society, New Poetics*

Manoj Pandya: *Deshaj Adhunikata aur Kabir kee Prasangikta*

Paritosh Chandra Dugar: *The Mystical, Magical, Maverick Mira: A Poetics of Dissent*

Session IV

The Progressives in Retrospect

Ipshita Chanda: *Blood by Any Other Name: Kazi Nazrul Islam, Bengali Poet*

Kumar Sushil: *Ideological Concerns of Punjabi Poetry: A Study of the Selected Poems of AvtarPash*

Ardra N G: *Can Ambivalence be Progressive? Representations of Labour in Progressive Malayalam Poetry*

Session V

The Rise of Feminist Poetics

Sruti Sareen: *Post-Independent Indian Women's Poetry*

Paromita Datta: *Feminist Poetry in the 20th-21st Cent in Bengal: A Reading of the Poems of Mallika Sengupta*

Kokila Kalekar: *Post-Modern Feminist Poetry in Hindi as Counter-Culture*

Session VI

Voicing the Voiceless

Shaji Khan: *The Forgotten Sufi Traditions of the Pushtuns: An Analytical Study of the Selected Poems of Rahman Baba*

Sreya Dutt: *Poetics of the Everyday: Reading Kashmir and Counter-culture in Agha Shahid Ali*

Huzaifa Pandit: *Jejuri: The Poetics of Subcultural Resistance*

Session VII

Poetry of Bad Times

Soibam Haripriya: *What Good is Poetry in Desolate Times: On Manipuri Poetry*

Neeraj Sankhyan: *Poetry as Counter Culture: Reading Identity in Kynpham Sing Nonkynrih's Poetry*

Judhajit Sarkar: *Between Sound and Sense: Poetry, Resistance and the Rhythm of Everyday Speech*

Session VIII

Interrogating Hegemonies

P. P. Ravindran: *Poetry: The Progressive, the Modern and the Counter-Modern*

Chirag Trivedi: *An Anesthetic called the Aesthetic: A Post-Colonial Enquiry into the Aesthetics of Uma Shankar Joshi's Poetry*

Ajay S Shekhar: *Poetry of Counter Hegemonic Culture and Ethical Aesthetics: Sahodaran Ayyappan's Liberative Poetics and Cultural Politics in Kerala*

Session IX

Poetry of Transgression

SampurnaChattarji: *Sukumar Ray: Unsung Counter-Culturalist*

Abhishek Jha: *Tradition of Transgressive Talent? Tracing the Strains of Baul in Bengali Hungry Generation Poetry*

Mohd. Sajid Ansari: *Treatment of Homosexual Love in Modern Indian Poetry in English: A Study of the Selected Poems of Hoshang Merchant and Shaleen Rakesh*

Session X

Poetry from the Margins

Keshavan Veluthat: *Laughter in the Time of Misery: Cynicism as Protest in an Early Modern Sanskrit Poem*

Gopika Jadeja: *Master, the Country is Free: The Bhajan and Morality in Gujarati Dalit Poetry*

A J Thomas: *Dalit Poetry in Malayalam, Tamil, Kannada and Telugu: A Comparative Study*

Tejo Shweta: *Scripts of Scars: Dalit Women's Poetry*

5. International Conference on 'Migrations and Citizenship(s)' (30 May – 01 June 2016)

Rationale: Gruesome reports on migrants—of hundreds drowning as their rickety boats capsized in unforgiving waters, of them being enslaved or detained in squalid camps in Europe and Asia, even of their summary executions on the high seas—have punctuated news headlines with alarming regularity in recent years. What is novel about these reports are not the tragic incidents themselves which have a long history, but their scale as the magnitude of migratory flows across the Mediterranean and the Bay of Bengal have risen exponentially in recent years. The International Organization for Migration, to cite just one figure, estimated that at least 30,400 migrants arrived in Greece till May 12 this year compared to 34,000 in all of 2014.

If the immediate triggers for the rapid increase in migrations across the Mediterranean are obvious—foreign intervention in civil wars from Libya through Syria to Yemen and Iraq, and the continuing instability in Afghanistan—the vast numbers involved raise several questions. These streams of migrants themselves are part of a larger chain of trans-African and trans-Asian migrations as people in places further away move closer to the Mediterranean and Indian Ocean shores to better situate them for the passage to Europe or to Southeast Asia and beyond. While the direct results of Western (or Western-backed) interventions are obvious, what are their indirect corollaries—Boris Pasternak's 'the fruits of fruits, consequences of consequences'—ranging from the structural adjustment policies that wrecked African economies to the U.S. and European actions that enable Israel to expel Palestinians from their homeland? Which

populations are more likely to see migration as a route to a more secure future? How have foreign investments in land (and the consequent expulsion of peoples) and environmental degradation (and consequent loss of patterns of livelihood) fuelled these migrations?

This conference, sponsored by the Indian Institute of Advanced Study and Binghamton University, was designed to explore some of these contemporary issues of migration and citizenship(s) in Africa, Asia, and Europe historically.

An international conference on *'Migrations and Citizenship(s)*' was organized during 30 May - 01 June 2016 at IIAS in collaboration with Harpur College of Arts and Sciences, Binghamton (SUNY) and Distinguished Chair in Migration and Forced Migration Studies, Calcutta Research Group, Kolkata. Professor Ravi Palat, Department of Sociology, State University of New York, Binghamton, New York and Professor Ranabir Samaddar, Distinguished Chair in Migration and Forced Migration Studies, Calcutta Research Group, Kolkata werethe Conveners of the conference. The welcome address was given by Professor Chetan Singh, Director, IIAS. Professor Anne McCall, Dean of Harpur College of Arts and Sciences, Binghamton University gave introductory remarks. Keynote address was given by Professor Ranabir Sammadar, Convener of the conference.

PARTICIPANTS

- Professor Nasir Uddin, Department of Anthropology, University of Chittagong, Chittagong, Bangladesh
- Ms. Bipasha Rosy Lakra, Centre for Political Studies, School of Social Sciences, Jawaharlal Nehru University, New Delhi
- Professor Ravi Palat, Department of Sociology, State University of New York, Binghamton, New York
- Professor Ranabir Samaddar, Distinguished Chair in Migration and Forced Migration Studies, Calcutta Research Group, Kolkata
- Ms. Anwesha Sengupta, Research and Programme Associate, Calcutta Research Group, Salt Lake, Kolkata
- Shri Dinesh Kafle, Centre for English Studies, Jawaharlal Nehru University, New Delhi
- Professor Anne McCall, Harpur College of Arts and Sciences, Binghamton University
- Professor Nirmal Sengupta, National Fellow, IIAS
- Professor Roberto Patricio Korzeniewicz, Department of Sociology University of Maryland, USA
- Dr. Nasreen Chowdhory, Department of Political Science, University of Delhi, Delhi

- Dr. Anita Sengupta, Calcutta Research Group, Salt Lake, Kolkata
- Ms. Anuradha Sen Mookerjee, Graduate Institute of International and Development Studies, Switzerland
- Ms. Smita Tiwary, Indian Council of World Affairs, New Delhi
- Professor József Böröcz, Department of Sociology, Rutgers University, New Brunswick, NJ 08901, USA
- Professor Mahua Sarkar, Department of Sociology, Binghamton University, Binghamton, US
- Ms. Samata Biswas, Bethune College, Kolkata
- Dr. Simon Behrman, School of Law, University of East Anglia, Norwich NR4 7TJ, UK
- Shri Chapparban Sajaudeen, Centre for Comparative Literature, School of Humanities, University of Hyderabad, Hyderabad
- Dr. Nisha Kapoor, Department of Sociology, University of York, Heslington, YO10 5DD
- Dr. Ishita Shruti, D-4, Mother Apartment, Plot - 6, Sector 5, Dwarka, New Delhi

Participants made presentations on the following theme during the conference:

Session I

Migrations in History

Roberto Patricio Korzeniewicz: *Global Migrations and the Contentious Politics of Citizenship*

Mahua Sarkar: *The Flipside of the Integration/Assimilation Question: Circular/Managed Migration Regimes and their Significance, Historically and Today*

Session II

Citizenship and Migration: 1

NasreenChowdhory: *Making Citizens—Belonging and Rights in Camps in Tamil Nadu*

Samata Biswas: *Migrations and Displacements in Haldia*

Session III

Migations—South Asia: 1

Bipasha Roy Lakra: *Who are the 'Sons of the Soil'? Adivasis Amidst the Tribes of Assam*

Anwesha Sengupta: *Refugees as Productive Citizens: Rehabilitation of East Bengali Hindus in Andaman and Dandakaranya*

Dinesh Kafle: *Karachi's Native 'Others': Representation of Mujahirs in Kamila Shamsie's Novels*

Session IV

Migrations—Europe: 1

Simon Behrman: *On the Creation and Accommodation of the Misery of the World: The Case of the Sans-Papiers*

József Böröcz: *A Materialist Background to the 2015 'Refugee Crisis of Europe'*

Session V

Citizenship and Migration: 2

Nisha Kapoor: *Unmaking Citizens*

Anita Sengupta: *The Migrant as Political Object*

Session VI

Migrations: South Asia—2

Ishita Shruti: *The Making of Rohingyas: Interplay of Race, Religion, and Ethnicity*

Smita Tiwary: *Afghans in Pakistan: Issues of Statelessness and Belonging*

Session VII

Citizenship and Migration: 3

Nasir Uddin: *Citizenship, Migration and Statelessness: A Case of Rohingyas in Bangladesh*

ChapparbanSajaudeen: *Can a Muslim be a Diaspotic? Idea of Hijrat in Islam and Muslim Migration*

Roundtable/Open Discussion and Review

6. National Seminar on 'Rethinking Myth in Folk Dramatic Forms' (14-15 June, 2016)

Rationale: Questions about the nature and functions of myth in diverse cultural contexts have been raised and discussed by scholars from varying disciplines like anthropology, religious studies, folkloristics, history of literature, philosophy and psychology. The very concept of myth seems to change radically from camp to camp. Specialists talk about cult-myths and ritual-myths. Folklorists foreground the entertainment value of myths and their diffusion across space and time, historians and critics of literature emphasize their literary quality and philosophers seek their truth-value. Scholars like Richard Chase, A. B. Rooth, A. E. Jensen, Jane Ellen Harrison, Kluckhohn and B. Malinowski have their own interpretations of myth depending on their field of work and discipline. Myth is a genre of its own with defined qualities and functions and can be studied from plural cultural and religious perspectives.

There is no doubt that myth is a vital ingredient of human civilization and an important cultural force. Myths have ever been powerful tools in managing societies and have helped naturalize

social orders which could otherwise have been seen as unnatural and even unjust. The seminar is meant to show how deeply the sacred tradition of myth intervenes in human pursuits and how strongly it controls their moral and social behaviour.

India is a country that is rich in myths, some pan-Indian and many regional and local. They serve as a storehouse of wisdom and lend themselves to any number of readings, reinterpretations and rewritings. Artists constantly go back to myths and explore their semantic and aesthetic potential to articulate their world views and critique society. While this has happened in fiction, poetry, theatre and several other forms of art, this seminar concentrates on the interpretation of myth in folk dramatic forms and their performance in varying cultural contexts asking them questions like how and why they are doing it and what function does the myth serve in specific social and cultural contexts: in other words, the politics of the employment and interpretation of myth in folk-performances.

Several popular myths have been subverted, distorted and manipulated in order to serve the interests of hegemonic social groups from time to time. As a consequence, many myths have lost their original meaning, mooring and intent and often come to signify the very opposite. Constant misuse and what M N Srinivas would call 'Sanskritisation' has made many of them completely unrecognizable and far removed from their original forms and functions. The purpose of the seminar was to look at the nature and functions of myth in specific cultures, societies and historical contexts such inversions and transformations and uncover the underlying tactics of assimilation and subversion. With this view myth scholars, folklore specialists, anthropologists, theatre activists and performers from different parts of the country were invited to discuss a debate the social, cultural and political implications of myth-creation, myth-transformation and myth-manipulation.

Points for discussion:
General:

- What is myth?
- What are the social functions of myth?
- How and why is myth used in folk performances?
- What happens to a myth in such performances? How do its role and function change?

Specific:

- Myths in specific folklore performances in various regions of India, South, East, West, North and North-East.
- How is a specific myth interpreted in a specific cultural and class context?

- What does it do to the understanding of society?
- How does it help social regulation and misrecognition?
- Whose interest does the particular interpretation serve?

A national seminar on '*Rethinking Myth in Folk Dramatic Forms*' was organized during 14-15 June 2016 at IIAS. Professor A. Achuthan, Fellow, IIAS was the Convener of the seminar. The welcome address was given by Professor Chetan Singh, Director, IIAS. Professor A. Achuthan, Convener of the seminar gave introductory remarks. Keynote was given by Professor N. Bhakthavathsala Reddy, Director, Institute for Indian Folklore, Trivandrum.

PARTICIPANTS

- Professor Vasishta Narayan Tripathi, Department of Hindi, Banaras Hindu University, Varanasi
- Professor D.R. Purohit, Department of English, H.N.B. Central University, Srinagar, Garhwal
- Professor N. Bhakthavathsala Reddy, Institute for Indian Folklore, Trivandrum
- Dr. D.S. Chougale, Kannada Bhaurao Kakatkar College, Karnataka
- Professor R. Sasidharan, Department of Hindi, Cochin University of Science and Technology, Kochi, Kerala
- Dr. Manzoor Ahmed Najar, Mangalayathan University, Aligarh, UP
- Dr. Amitabha Mukherjee, Patha Bhavana, Visva-Bharati, Santiniketan, West Bengal
- Professor Fanindam Deo, PO- Khariar, Distt.- Nuapada, Odisha
- Dr. R.S.Chowalta, State Council of Educational Research & Training, Solan, H.P.
- Dr. R. Umamaheshwari, Seshadri Residency, Skandagiri, Padmaraonagar, Secundrabad
- Dr. Namdev, Department of Hindi, Kirodimal College, University of Delhi, Delhi
- Dr.Neelam, Department of Hindi, Laxshmibai College, Delhi
- Professor M. Dasan, Department of English, Central University of Kerala, Kerala
- Professor Mahesh Champaklal, Fellow, IIAS
- Professor Ganesh Chandanshive, Lok Kala Academy, University of Mumbai, Mumbai
- Professor Prakash Khandge, Lok Kala Academy, University of Bombay, Vidyapeeth Vidyarthi Bhavan, Mumbai
- Dr. Dhananjay Singh, Nehru Memorial Museum & Library, Teen Murti House, New Delhi
- Professor Sukhwinder Kaur Bath, Department of Hindi, Punjabi University, Patiala, Punjab

- Professor A. Achuthan, Fellow, IIAS
- Dr.Kaustav Chakraborty, Fellow, IIAS
- Dr.Amba Kulkarni, Fellow, IIAS
- Professor K.L. Tuteja, Tagore Fellow, IIAS
- Shri Makarand Sathe, National Fellow, IIAS

Participants made presentations on the following theme during the seminar:

Session I

D R Purohit: *Contingent Circles of Myth: Ritual Enactment of Mythical Narratives in the Folk Theatre of Uttarakhand*

Dhananjay Singh: *Pravasan ki Lok sanskriti mein Mithak ka Srujan*

Va Punah srujan: Ek Punar Vichar

Session II

M Dasan: *(Mis)interpretation and Interpolation into Theyyam Myths*

D. S. Chougale: *Rethinking Myth in Folk Dramatic Forms (Kannada)*

P Nazeemdeen: *Rethinking Myth in Folk Dramatic Forms of Tamil Nadu*

Session III

Namdev: *Lok parampara mein Nautanki ka Sthaan*

Ganesh S. Chandanshive: *Tamasha mein Mithak: Ek Anushilan*

Screening the Clippings of Folk Dramatic Performances

Session IV

FanindamDeo: *Myth, Folk Drama 'Ala Udel' and Antiquities of Maraguda Valley*

Amitabha Mukherjee: *Investigating into the Scope of Re-interpreting Mythology in Chhou of Purulia*

Manzoor Ahmad Najar: *Kaleidoscopic Portrayal of Myth in Folktales with Special Reference to Heemal Nagraai*

Session V

V. N. Tripathi: *Myth ki Punarkhoj: Sandarbh Ramnagar (Varanasi) ki Ramleela*

R. Umamaheshwari: *How to Reconfigure the Myth(ic)? An Example from a Student Movement in Telangana*

R Sashidharan: *Keral ka Loknatya 'Patayani' mein Prayukt Mithak: Ek Punar vichintan*

Session VI

Sukhwinder Kaur Bath: *Punjabi Lok-natya aur Mithak*

Neelam: *Haryana ka 'Khodiya' Loknatya (Sandarbh: MahilaRangmanch)*

Randhir Singh Chowalta: *Dramatic Representation of Sita Song in Pahari Folk Ramayana: An Interpretation in Myths*

Session VII

Prakash S. Khandge: *Myth of God Khandoba in Ritualistic Folk Play 'Jagran'*

Mahesh Champaklal: *'JasmaOdan'—'Parampara' se Naye 'Prayog' ki Aur*

7. Symposium on 'Thinking Social Sciences' (11-12 July 2016)

Rationale: The idea behind the symposium was to initiate an enduring conversation between the social sciences communities in both India and Indonesia. Beyond the obvious benefit of sharing insights and building collaborations lies the belief that since both India and Indonesia are complex countries, where a layered process of social transformation is taking place, it is necessary to invest in social sciences thinking to aid and assist the policy interventions that necessarily follow. Both societies require a rich body of social explanations of the transformation process that is being driven by both democracy and by globalization. These drivers are both normative and processual. These need to be recognized, analyzed and debated. Comparisons need to be made to understand their dynamics.

India and Indonesia share many common elements from their internal diversity, to their population migration from rural to urban areas, to the rapid urbanization taking place, to the desire for education, to the anticipated demographic dividend, to ecological stress, and even with issues relating to their majority-minority relations. Before we embark on a more intensive discussion on any one of the particular themes for comparison it is perhaps appropriate to look at the general concerns and anxieties of the two social sciences communities. A start can be made around the following themes:

1. Imperialism of Categories

The challenge social scientists face in post-colonial countries, when seeking to conceptually represent their social realities, is twofold: (i) to escape the orientalist framing of the social problem for discussion, and (ii) to select conceptual categories to represent their social realities. Susanne Rudolph in her Presidential address in 2005 describes this problem thus after having spent nearly half a century on researching India. She complained that the methodological training given in the North left them quite unprepared for the experiences of data collection in the alien field of South India.

She wondered 'to what extent were those concepts and methods amenable to infiltration, adaptation, modification, and transformation by the forms of life and world view of the alien other? To what extent were the tool kits we brought with us from the United States capable of bridging differences between civilizations, cultures, and World-views between the Western observer and the non-Western observed?'

Since concepts can be capacious, infiltration, adaptation, and modification may, in principle, be possible. The task before is to build up the 'inconvenient facts' that the concepts from the North have to confront so that they can be infiltrated. This involves hard intellectual labour.

2. Democratization of Higher Education

The expansion of Higher education in both India and Indonesia has had several consequences. These are (i) the changed classroom with respect to the access that is now available to hitherto excluded groups such as women and subaltern classes, (ii) the increasing voice of these groups with respect to the curricula and nationalist agendas, (iii) the changed attitude to politics of these groups from being observer to becoming participant, and (iv) the transformation that has taken place in the public sphere. These changes have emerged because of the democratization of higher education since independence and, hence, it is necessary for us to map these changes and to study the consequences of this democratization of higher education.

3. Identities and knowledge production

In the politics of knowledge production the issue of interests is always present. Since the democratization of higher education has brought new perspectives into the public discourse it is important for social scientists to discuss the issue of knowledge protocols and representation. Knowledge advocacy is an important resource for particular groups as they seek to assert their identities in the public sphere and the social science landscape is, as a consequence, divided into many sub groups who are engaged in the production of such knowledge. How do we deal with the issue of validity in such a politics of knowledge?

4. The future of social sciences and social sciences and the future

The session discussed the support for social sciences in the educational policy of the state and also the teaching and research practices of social sciences within the institutions of higher education.

5. The conclusion was a panel discussion on 'The contribution of Benedict Anderson to Social Sciences in Indonesia and India'.

Symposium on '*Thinking Social Sciences*' was organized at IIAS during 11-12 July 2016. Professor Peter Ronald deSouza, CSDS, Delhi and Dr. Radhika Krishnan, Fellow, IIAS were the Conveners of the symposium. The welcome address was given by Professor Chetan Singh, Director, IIAS.

Mr. Dalton Sembiring, Deputy Chief of Mission, Embassy of the Republic of Indonesia, New Delhi also addressed the participants. Professor Peter Ronald deSouza, Convener of the symposium gave introductory remarks.

PARTICIPANTS

- Shri Dalton Sembiring, Indonesia Embassy, New Delhi
- Professor Rukmini Bhaya Nair, Department of Humanities and Social Sciences, Indian Institute of Technology, New Delhi
- Shri Harsh Sethi, XC-1, SahVikas, 68, I.P. Extension, Delhi
- Dr. Gangeya Mukherji, Flat No. C- 404, Block-II, Lotus Apartments, Allahabad
- Professor Chandan Gowda, Azim Premji University, Bengaluru
- Professor Tridip Suhrud, Sabarmati Ashram, Ashram Road, Ahmedabad
- Professor Peter Ronald deSouza, Centre for the Study of Developing Societies, Delhi
- Ms. Idawati Hasan MuchyarYara, Jl. Taman Matraman Timur No. 17., Jakarta Pusat
- Professor Mayling Oey, Komplek Pejaten Indah I / B4., H. Samali Ujung, Kalibata, Jakarta, Indonesia
- Professor Hasjim Djalal , Jl. Kemang IV No. 10 A, Jakarta Selatan, Indonesia
- Professor Taufik Abdullah, Jl. Widya Chandra , XIII / I D, Jakarta Selatan
- Professor Mohomad Amin Abdullah, Jl. Cupuwatu I, Rt/Rw02/01, Purwomartani, Kalasan, Sleman, Yogyakarta, Indonesia
- Professor Ujjain Bhattacharya, Department of History, Vidyasagar University, West Bengal
- Dr. Rakesh Pandey, Centre for the Study of Developing Studies, Delhi
- Dr. Manish Kumar Thakur, Indian Institute of Management, Calcutta, Kolkata
- Dr. Sanjeer Alam, Centre for the Study of Developing Studies, Delhi
- Dr. Hemachandran Karah, Department of Humanities and Social Sciences, Indian Institute of Technology Madras, Chennai
- Professor Pulapre Balakrishnan, Centre for Developing Studies, Trivandrum
- Dr. Arundhati Virmani, Guest Fellow, IIAS, Shimla
- Dr. Radhika Krishnan, Fellow, IIAS, Shimla
- Professor Nirmal Sengupta, National Fellow, IIAS, Shimla

- Professor K.L. Tuteja, Tagore Fellow, IIAS, Shimla
- Dr. Arpita Mitra, Fellow, IIAS, Shimla
- Shri Samir Banerjee, Fellow, IIAS, Shimla
- Dr. Ratnakar Tripathy, Fellow, IIAS, Shimla
- Dr. Gowhar Yaqoob, Fellow, IIAS, Shimla

Participants made presentations on the following theme during the symposium:

Session I

Imperialism of Categories – Infiltrating the Western Discourse

Initiated: Peter Ronald deSouza

Comments: Pulapre Balakrishnan, Rakesh Pandey, Arpita Mitra

Session II

Democratization of Higher Education

Initiated: Harsh Sethi

Comments: Tridip Suhrud, Sanjeer Alam, Mayling Oey

Session III

Identities and Knowledge Production

Initiated: Manish Thakur

Comments: Rukmini Bhaya Nair, Gauhar Yakoob, Ratnakar Tripathy

Session IV

The Future of Social Sciences and social sciences and the future

Initiated: Chandan Gowda

Comments: Hemchandran Karah, Hasjim Djalal, Arundhati Virmani

Session V

Benedict Anderson and the Social Sciences in Indonesia and India

Panelists: Ujjain Bhattacharya, Gangeya Mukherji

Open Discussion

8. International seminar on 'Cosmopolitanism in the History of Science' (09-10 August 2016)

Rationale: As the world becomes 'global', so too should its history - especially its history of science. Contemporary histories of knowledge have drawn our attention to the importance of

multiple sources, communicative networks, and circulation of scientific knowledge in the making. This refocusing has come with a closer sensitivity to the multitudinal genealogies and movements of knowledge. It also presents us with a new set of general questions about doing local and global history of science.

Two years ago, the EHESS, Paris organized a workshop on 'Cosmopolitanism in early Modern South Asia'. The collection, as published in a special issue of the journal *Purushartha*, focused on specific case-studies of knowledge circulation and cosmopolitanism in South Asia, recognizing the interpenetration of the local and the global. The idea of the workshop could now be pushed further to re-examine some of the concerns of social theory that are linked up with the history of science. This exploratory meeting will explore those re-examinations.

In unpacking 'cosmopolitanism' in the history of science, such a re-examination would entail commencing with a categorical distinction between the 'trans' -cultural or -national, or whatever metanarrative one adopts to engage with our historical concerns, and the *cosmopolitanism* of objects, things, actors, texts etc - that we confront in our investigations; something which perhaps may not be in the reckoning of the historical actors concerned.

Further, it is equally important to understand how the politics of knowledge plays itself out in the contact zones between the little and high traditions. Playing fields are hardly ever level. For example some recent research reflects on itinerants medical practitioners from Korea who travelled to China and became the mediators between several medical traditions, while at the same time raising questions of their high professional status in Korea and a diminished one in China.

Finally, beyond the debate on what cosmopolitanism means or when was cosmopolitanism, the frame of 'cosmopolitan science' enables an engagement with the diversity of agents, objects and things constituting more than the material culture of science, transgressing the boundaries of national and civilizational history. In branding or labeling a tradition or school or practice as cosmopolitan the gesture is always towards an essential diversity, of a multitude of genealogies, objects and flows. The politics of cosmopolitan science urges further explorations of authority, privilege and cultural capital to be possessed by the practitioners of a cosmopolitan science.

The seminar was directed towards a dialogue that would then flag a set of important issues for further research and problematise cosmopolitan science, rather than celebrate `nous sommestoujours cosmopolite'.

The objective of the seminar was to bring together scholars studying narratives of a non-exclusivist history of science. It sought to examine the issues, problems and materials involved in building a globalized history of science that is both sensitive to the 'local' and open to trans-local exchanges, circulation and translation of knowledge. By focusing on the concept of 'cosmopolitanism', The aim was to explore new ways of narrating a non-hierarchical world history of science. In order

to do so the seminar hoped to discuss the possibility of developing a long term collaborative research network bringing together researchers from diverse disciplinary backgrounds and specialties.

An International seminar on '*Cosmopolitanism in the History of Science*' was organized at IIAS during 09-10 August 2016. Professor Dhruv Raina, Jawaharlal Nehru University, New Delhi was the Convener of the seminar. The welcome address was given by Professor Chetan Singh, Director, IIAS. Professor Dhruv Raina, Convener of the seminar gave introductory remarks.

PARTICIPANTS

- Dr. Jobin M. Kanjirakkat, King's College, 6350, Coburg RD, Halifax, NS, Canada
- Professor Joachim Kurtz, Karl Jaspers Centre, Heidelberg University, Germany
- Professor Lasley Cormack, Faculty of Arts, University of Alberta, Canada
- Professor Gordon Mc Ouat, University of King's College, Halifax, Canada
- Dr. Robert Michael Brain, University of British, Columbia, Department of History, Canada
- Professor Kapil Raj, Ēcole des Hautes Ētudesen sciences Sociales, EHESS, Paris, France
- Professor John Bosco Lourdusamy, Department of Humanities and Social Sciences, Indian Institute of Technology, Madras, Chennai
- Professor Dhruv Raina, Jawaharlal Nehru University, New Delhi
- Dr. Sanjay Kumar, Department of Physics, St. Stephen's College, Delhi
- Dr. Pradipto Roy, Department of Psychiatry, NIMHANS, Bangalore
- Ms. Srabanti Choudhuri, Sociology School of Social Sciences, Netaji Subhas, Open University, Calcutta
- Professor Vijaya Shankar Varma, National Fellow, IIAS, Shimla
- Dr. Amba Kulkarni, Fellow, IIAS, Shimla
- Shri Om Prasad, School of Social Sciences, Jawaharlal Nehru University, New Delhi
- Ms. Urmila Unnikrishnan, Jawaharlal Nehru University, New Delhi

Participants made presentations on the following theme during the seminar:

Session I

Kapil Raj: *Cosmopolitanism: The Very Idea...*

Lesley Cormack: *What does a 'Global History of Science' look like? Strategizing for a new 'master narrative'*

Session II

Robert Brain: Hermit and Cosmopolitan, Fully Human: German Natural Scientists before the Nation State

Pradipto Roy: *Psychological Symptoms in the Vernacular: Towards a Cosmopolitan History of Mental Health Science in South Asia*

Session III

Srabanti Choudhri: *Nirmal Kumar Bose's master-piece Hindu Samajer Gadan (The Structure of Hindu Society): An attempt offer a cosmopolitan approach to the study of Indian civilization*

Joachim Kurtz: *Western, New or Cosmopolitan? Chinese Views on the Origins of Modern Science*

John Lourdusamy: *Commodities and Cosmopolitanism: The Case of Tea*

Session IV

Sanjay Kumar: *Cosmopolitan Strands in Science in Colonial and post-independence India*

Jobin Kanjirakkat: *Cosmopolitanism and the local in linguistics*

Session V

Vijaya Shankar Varma: *Al-Kindi and Cosmopolitanism in Science*

Gordon McOuat: *Local Cosmopolitanism: Social, Political and Material: (+: where do we go from here)*

9. School on 'Bhāsa In Performance' (29 August to 11 September 2016)

Rationale: The rediscovery of Bhāsa's plays in the first decades of the 20th century is the most remarkable event in the history of Indian classical theatre. Since then all thirteen plays of Bhāsa, some based on the *Mahābhārata*, others on the *Rāmāyana* and *Bruhadakathā* have been widely performed across the country and abroad. Modern attempts at staging Bhāsa's plays for contemporary audience in different styles include following:

(a) Productions inspired by a sort of mixed classical-regional dramatic and rituals forms, for example the productions of K.N. Panikkar, RatanThiyam, Habib Tanvir, B.V. Karanth, Bhumikeshwar Singh, AnjalaMaharshi, etc.

(b) Production style based on pure classical dance or dance-drama, such as Kanak Rele's productions.

(c) Productions based on the *Nātyashāstric* tradition, for example the productions of Shanta Gandhi, Govardhana Panchal, S.R. Leela, etc.

(d) A sort of free style evolved by taking elements of different traditional forms including

acrobatics and blending them in a stylized form. The productions of M.K. Raina and Bansi Kaul provide such instances.

(e) Plays produced in proscenium theatres or on improvised proscenium stage with formal settings in semi-realistic style: the productions of Waman Kendre and Nadira Babbar.

Over and above these modern attempts, Bhāsa plays are also performed on the Kutiyattam stage especially his *Rāmāyana* plays.

School on '*Bhāsa in Performance*' was organized at IIAS during 29 August to 11 September 2016. Professor Mahesh Champaklal, Fellow, IIAS was the Convener of the school. The welcome address was given by Professor Chetan Singh, Director, IIAS. Professor Mahesh Champaklal, Convener of the seminar gave introductory remarks.

PARTICIPANTS

- Dr. C. Rajendran, 28/1097, 'Rajadhani', T.P. Kumaran Nair Road, Chevayur, Calicut, Kerala
- Professor K.D. Tripathi, Indira Gandhi National Centre for Arts, Varanasi Regional Centre, Varanasi
- Professor Bhumikeshwar Singh, Gyan Khand- 3/125, Behind Shipra Rivorg, Indirauram, Ghaziabad
- Shri B.R. Bhargav, Kulguru, Natyakulam, Jaipur
- Ms. Sangeeta Gundecha, Rashtriya Sanskrit Sansthan, Bhopal
- Professor Radhavallabh Tripathi, 21, Land Mark City, (Near Bhel Sangam Society), Bhopal
- Professor Mahesh Champaklal, Fellow, IIAS, Shimla
- Dr. Praveen Bhole, Lalit Kala Kendra (Gurukul) (Centre for Performing Arts), University of Pune, Pune
- Mr. Ravindra Mundhe, R.N.-64, Gorakh Pandey Hostel, M.G.A. Hindi Vishwavidyalaya, Wardha, Maharashtra
- Mr. Rohit Kumar, MGA Hindi Vishwavidaylya, Wardha, Maharashta
- Mr. Saurabh Kumar Gupta, MGA Hindi Vishwavidyalya, Wardha, Maharashta
- Mr. Shakir Tasnim, Centre for Performing Arts, Central University of Jharkhand, Jharkhand
- Ms. Shilpi Mathur, Rajasthan University, Jaipur
- Dr. Mrityunjay Prabhakar, Drama and Theatre Art, Sangit Bhavan, Visva-Bharati University, Santiniketan, West Bengal
- Mr. Anand Pandey, Indira Kala Sangeet Vishwavidyalya, Khaira Garh, Chattisgarh
- Mr. Siddharth Pandey, Madhya Pradesh School of Drama, Bhopal

- Mr. Shivankar Pathak, Sethwal, Rani ki Sarai, District- Azamgarh (U.P.)
- Ms. Dolly Desai, Bharat Kalanjali School of Dance, Ahmedabad
- Mr. Bhargav Thakkar, B-6, Arvachin Society, Bopal, Ahmedabad, Gujarat
- Dr. Sujatha Mohan, Dr. MGR Janaki College for Arts and Science, Chennai
- Dr. Dhananjay Mishra, Rashtriya Sanskrit Sansthan, (Deemed University), Shri Sadashiva Campus, Puri, Odisha
- Mr. Vinay Verma, Indian Theatre Department, Punjab University, Chandigarh
- Mr. Priyank Mahendrabhai Prajapati, C/29 Swami Narayan Nagar E, Near Ramvatika, Waghodiya Road, Vadodara
- Mr. Manoj Mishra, 165, B-38, 3 floor, Patkar Housing Society, New Tilaknagar, Chembur, Mumbai

Participants made presentations on the following theme during the school:

Session I

Radhavallabh Tripathi: Bhasa and Nātyashastra

Session II

Radhavallabh Tripathi: Textual Analysis of Bhasa's *Ramayana Plays*

Session III

Introduction to Bhāsa in Performance by Mahesh Champaklal

Session IV

Bhasa in *Kutiyattam*: Performance Analysis of K N Panikkar's *Parvati Virham* by Mahesh Champaklal

Session V

Radhavallabh Tripathi: Textual Analysis of Bhasa's *Mahabharata Plays*

Session VI

Paper Reading by Ravindra Mundhe on *Abhishek Natakam* and Dhananjay Mishra on *Pratima Natakam*

Session VII

Performance Analysis of K N Panikkar's *Pratima Natakam* by Mahesh Champaklal

Session VIII

Radhavallabh Tripathi: Bhasa Plays based on Popular Tales

Session IX

Paper Reading by Sujata Mohan on *Balacharitam*

Session X

Performance Analysis of S R Leela and Bhumikeshwar Singh's *Balacharitam* by Mahesh Champaklal

Session XI

Paper reading on *Duta Ghatotkacha* by Siddharth Pandey and *Urubhangam* by Vinay Verma

Session XII

Paper Reading on *Pratigna Yaugandhrayana* by Rohit Kumar

Session XIII

Performance Analysis of Rajendra Avasthi's *Duta Ghatot kacha, Madhyam Vyayoga, Urubhamgam by* Mahesh Champaklal

Session XIV

Performance Analysis of Goverdhan Panchal's *Duta Vakyam* by Mahesh Champaklal

Session XV

Paper reading on *Duta Vakyam* by Bhargav Thakkar, Dolly Desai and Anand Pandey

Session XVI

Performance Analysis of K N Panikkar, Anjala Maharshi and Waman Kendre's *Madhyam Vyayoga* by Mahesh Champaklal

Session XVII

Paper reading on *Madhyam Vyayoga* by Priyank Prajapati and Shakir Tasnim

Session XVIII

Paper reading on *Charudattam* by Manoj Mishra

Session XIX

Performance Analysis of S R Leela and Anagha Deshpande's *Svapna Vasavdattam* by Mahesh Champaklal

Session XX

Bharat Ratna Bhargav: Translating Bhasa

Session XXI

Paper reading on *Avimaraka* by Shilpi Mathur

Session XXII

Performance Analysis of Shanta Gandhi's *Svapna Vasavdattam* and K N Panikkar's *Swapna Katha* by Mahesh Champaklal

Session XXIII

Bharat Ratna Bhargav: Translating Bhasa

Session XXIV

e-Reader of *Karnabharam* by Amba Kulkarni

Paper reading on *Karnabharam* by Pravin Bhole and Saurabh Kumar Gupta

Session XXV

Sangeeta Gundecha: Textual Analysis of *Urubhangam*

Performance Analysis of Ratan Thiyam's *Karnabharam* by Mahesh Champaklal

Session XXVI

Performance Analysis of K N Pannikar and Neeraj Kunder's *Karnabharam* by Mahesh Champaklal

Session XXVII

K N Panikkar's *Urubhangam* presented by Sangeeta Gundecha

Session XXVIII

Performance Analysis of K N Panikkar's *Charudattam* by Mahesh Champaklal

Session XXIX

Sangeeta Gundecha: Contemporary Interpretations of Bhasa in the context of K N Panikkar and Ratan Thiyam's Production of *Urubhangam*

Session XXX

Paper reading on *Svapna Vasavdattam* by Mrityunjay Prabhakar

Ratan Thiyam's *Urubhangam* presented by Sangeeta Gundecha

Session XXXI

Performance Analysis of Ratan Thiyam's *Urubhangam* by Sangeeta Gundecha and Mahesh Champaklal followed by group discussion

Session XXXII

C Rajendran: Action, Conflict and Dramatic Scenes in Bhasa's Plays

Session XXXIII

Bhumikeshwar Singh: Introduction to the form of *Chhau* Dance

Session XXXIV

C Rajendran: Tragic Characters of Bhasa

Session XXXV

Bhumikeshwar Singh: Experimenting with Bhasa through *Chhau* Dance

Session XXXVI

Vesh of Karna—Hindi Adaptation of Bhasa's *Karnabharam* in Bhavai form, directed by P S Chari

Session XXXVII

Bhumikeshwar Singh: Experimenting with Bhasa through *Chhau* Dance

Session XXXVIII

K. D. Tripathi: Accounts of Sanskrit Play Performances in Pre-medieval India and Significance of Bhasa Plays from Performative Viewpoint

Session XXXIX

Paper reading on Pancharatram by Shivankar Pathak

Session XXXX

K. D. Tripathi: Performances of Bhasa's Plays: Contribution of K N Pannikar and a few other Contemporary Directors to the Modern Indian Theatre Movement

10. Programme on the occasion of Teachers Day on 'Significance of Human Sciences in the World' (05 September 2016)

A programme was organized on 05 September 2016, the occasion of 'Teachers Day' to mark the birthday of Dr. Sarvepalli Radhakrishnan, the Founder of IIAS. There was a discussion on the 'Significance of Human Sciences in the World' in which all the Fellows of IIAS participated.

PARTICIPANTS

- Professor Vijaya Shankar Varma, National Fellow
- Dr. Anand Kumar, Fellow, IIAS
- Dr. Amba Kulkarni, Fellow, IIAS

11. National Seminar on 'Revitalizing the Rural: Rethinking Rural and Agricultural Policies' (27-29 September, 2016)

Rationale: At a time of intense and expedited globalization of India's economy and the on-going multiple forms of distress in rural India, there is an urgent need to engage with these conditions and formulate new policies. While some attention has been paid to the on-going rural distress, manifested primarily in suicides by agriculturists, rural India is also experiencing a series of

contradictions. These include the growth of small pockets of commercially successful agricultural belts as against vast impoverished regions. The Green Revolution has increased productivity of cereals but it has taken its toll in terms of loss of agricultural bio-diversity, erosion of natural resources especially the soil, and chemicalisation of food which has only further endangered the food security of the people. As capital and market have expanded to mark the rural economy, there is the spread of 'welfare governmentality' in the form of the rural employment guarantee programme and the rights to food and basic education. The expanding real estate industry and extractive industries, while creating a few *crorepatis*, are altering the rural landscape and pushing vast numbers of the population into conditions of destitution. Several issues such as that of land access, use, rights (especially among Dalits, Adivasis and women) and the spread of destructive and unsustainable forms of land use need attention. Global warming and climate change are impacting agricultural productivity and practices and the search for resilient and sustainable forms of natural resource management and agricultural models must be expedited.

Since existing policies and non-policy programmes seem to benefit large and capital-based agriculture, policies that focus on, and cater to, the needs of the majority, the small and marginal agriculturists must be considered seriously. Policy decisions must be made democratic and transparent without vested commercial/financial interests holding sway. There is an urgent need to promote new production, marketing, distributing, and administrative structures that can enable cultivators and rural set-ups to be economically viable.

Attendant with the retrogression of agriculture have been a range of policies and programmes that have increasingly privatised public institutions such education and health. Expenditures on these alone account for growing indebtedness and for people to fall into poverty. Reclaiming these institutions as effective, functioning and public institutions will address a range of problems and enhance the individual and household/family capabilities of a large proportion of rural people.

In seeking to integrate the rural and agricultural, the approach is to address not only economic but also social and institutional issues that impact everyday life in rural India. Issues such as food security, seed sovereignty, income generation, and ecological sustainability require attention. A range of new technologies and bio-technologies (such as GM seeds) are poised to be deployed by corporate sectors and yet their dangers for the bio-diversity of the continent and the social and economic implications of such commercialised inputs are not adequately debated and reviewed. The rise of a new rural service economy indicates that there are ways in which new agro-based industries can be promoted to make the rural a site of sustainable production and residence. New and alternative agricultural policies are required to stem the tide of out-migration, the abandonment of land, and the overall de-agrarianisation that has set-in in the nation.

Several small and viable models of alternative agricultural and rural livelihood and governance are currently functioning in various parts of India. The cases of community-supported non-pesticide agriculture in Andhra Pradesh , organic agriculture in Sikkim, zero-budget agriculture in

various parts of South India, farmers/producers marketing organizations, integrated agriculture in parts of Gujarat are some cases. There are also a large number of farmer-led innovations in sustainable agriculture that demonstrate the potential of these alternatives on the ground. Learning from some of these and the possibility of integrating ideas from these cases for scaling up can be considered.

Given the above issues and challenges, the Indian Institute of Advanced Studies, Shimla, organized a two and half days seminar during 27-29 September 2016.

A national seminar was organized on '*Revitalising the Rural: Rethinking Rural and Agricultural Policies*' during 27-29 September 2016 at IIAS. Professor A.R. Vasavi, Apt. G- 327, Bridage Coortyard, HMT, Bengaluru and Dr. Pradeep Nayak, Fellow, IIAS were the Conveners of the seminar. The welcome address was given by Professor Chetan Singh, Director, IIAS. Professor A.R. Vasavi and Dr. Pradeep Nayak, Conveners of the seminar gave introductory remarks.

PARTICIPANTS

- Mr. Ajay Vir Jakhar, Chairman, Bharat Krishak Samaj, New Delhi
- Ms. Shalini Bhutani, A-1/702 Glaxo Apts., Mayur Vihar Extn., Delhi
- Ms. Kavitha Kuruganti, Alliance for Sustainable & Holistic Agriculture (ASHA), Bengaluru
- Dr. Walter Fernandes, North Eastern Social Research Centre, Guwahati
- Dr. Namita Wahi, Centre for Policy Research, Dharma Marg, Chanakyapuri, New Delhi
- Mr. P.S. Vijayshankar, Samaj Pragati Sahayog, Jatashankar Road, Madhya Pradesh
- Dr. M. Vijayabaskar, Madras Institute of Development Studies, Chennai
- Professor C. Shambu Prasad, General Management - Strategy and Policy, Institute of Rural Management, Anand
- Professor Abhijit Sen, Jawaharlal Nehru University Campus, New Delhi
- Professor Sukhpal Singh, Centre for Management in Agriculture, Indian Institute of Management, Ahmedabad
- Shri Ravi Chopra, People's Science Institute, Dehradun
- Professor Keshab Das, Gujarat Institute of Development Research, Gota, Ahmedabad
- Dr. Richa Kumar, Department of Social Sciences, IIT, New Delhi
- Dr. Debal Deb, Centre for Interdisciplinary Studies, Kolkata
- Dr. Rajeswari S. Raina, National Institute of Science, Technology and Development Studies, New Delhi

- Mr. Devinder Sharma, Kothi No: 273,Sector-54, Mohali
- Shri Deepak Sanan, Himachal Pradesh Secretariat, Shimla
- Ms. Sarojini G. Thakur, H.P. Private Universities Regulatory Authority, Shimla
- Professor Nirmal Sengupta, National Fellow, IIAS, Shimla
- Professor A.R. Vasavi, Apt. G-327, Brigade Courtyard, Bangalore
- Dr. Pradeep Kumar Nayak, Fellow, IIAS, Shimla
- Mr. Harish Chauhan, Fruit, Vegetable and Flower Grower, Himachal Pradesh, Nav Bahar Shimla
- Ms. N. Sudha, 593, 'Dundubhi', 24th Cross, BSK II Stage, Bengaluru

Participants made presentations on the following theme during the seminar:

Session I:

New Orientations for Rural and Agricultural Policies

Harish Chauhan

Devinder Sharma: *Agrarian Crisis and Policy Challenges*

Session II:

Marginalities and Fragilities

Dr. Walter Fernandes: *Rural Crisis and Rural Development in Northeast India*

Dr. M. Vijaybaskar: *Emerging Vulnerabilities in the Indian Plantation Economy*

Professor A.R. Vasavi: *Matters of Liveability: Re-orienting Policies towards the Marginalised Majority*

Session III:

Rural Public Institutions

Professor Rajeswari Raina: *Science for Agricultural Policy Appraisal and Reform: Is There any Scope for Hope?*

Dr. Shalini Bhutani: *Collecting People, Conserving Knowledge? Intellectual Property Right (IPR)*

Ms. Kavita Kurangati: *Assured Income for all Farm Households*

Session IV:

Resource and Regulatory Regimes

Dr. Pradeep Nayak: *Land Titling and Emerging Political Economy of Land in India*

Dr. Namita Wahi: *Understanding Conflict over Land Acquisition in India*

Shri P.S. Vijay Shankar: *Reforming Water Governance in India: A Proposal*

Session V:

Seed and Grain Policies

Dr. Debal Deb: *Climate Change, Genetic Diversity Conservation, and Food Security*

Dr. Richa Kumar: *Agricultural Marketing in India: Making Markets Work for Farmers*

Professor Sukhpal Singh: *Corporate Interface with the Indian Agricultural Sector: Smallholder and Worker perspectives*

Session VI

Appropriate and Alternative Technology

Professor Nirmal Sengupta: *Post-Flood Rural Revitalization- Some Issues*

Shri Ravi Chopra: *Rural Technologies*

Professor Shambu Prasad C: *Rethinking the Technology Question in Agriculture; Some Thoughts on Rural Mechanization and Scale Appropriate choices*

Session VII

Supportive Policies and Programmes

Professor Keshab Das: *Rejuvenating Craft Clusters in Rural India: Challenges for Policies*

Shri Ajay Vir Jakhar: *Failure of Farmer Organizations to deliver Farmer Prosperity*

Session VIII

What Ails Rural Sanitation in India

Shri Deepak Sanan: *What Ails Rural Sanitation in India?*

Summary of Key Discussion and Points; Way Forward for Completion of Report; Further Engagements and Collaboration

12. Workshop on 'Language & Learning' (06-08 October, 2016)

Rationale: Language, it is often reiterated, is constitutive of our identities, playing a distinctive role in the discourse of mass-media, advertising, gender marking, politeness behavior, class formation, political activity and, most importantly - in education. Our focus in this workshop will thus be on the cognitive and communicative skills facilitated by language amongst school children in particular. This is because of the now widely accepted 'Language Bio-program' hypothesis proposed by Lenneberg which suggests a 'language window' that is open from birth

to puberty. Although this window never entirely closes, children most effortlessly acquire one or more languages between the ages of 1-14 years. There is also convincing evidence that this is probably the period best suited to equip an individual with mental capabilities to last a lifetime.

Clearly, language is central to our existence. It is inconceivable that we could ever manage to pose important questions to ourselves about our societies, cultures and systems of knowledge, our past histories, our present quandaries and our complex futures, without language. Educators and thinkers from Rabindranath Tagore to Paulo Freire and Noam Chomsky have long regarded language as a mental pivot, a primary medium for the transmission of knowledge, the articulation of innovative ideas and critical thinking. Education, indeed, is ideally supposed to begin with such linguistically driven processes of questioning as well as with continuous attempts to answer and rearticulate certain basic questions in every age, across the entire fields of the sciences and the arts.

The irony, however, seems to be that this fundamental tool for shaping the 'self', namely language, about which there has been a very sophisticated tradition of thinking from Panini onwards on the Indian subcontinent, has been greatly neglected in the contemporary Indian educational scenario. This is especially surprising given our rich heritage of languages and scripts, the historic formation of 'linguistic states' after Independence, the vigorous debates in the Constituent Assembly on the 'official language(s)' of India, the key Eighth Schedule of the Indian Constitution devoted to a listing of India's languages, the devising of the 'three-language formula' in the 60s and so forth.

How is it that such a potent inheritance of thinking about language has come to be forgotten or, at the very least, become far too chaotic and Babel-like to be clearly articulated in present-day India? Such a lack of clarity in the ways in which we conceive of the relationship between language and learning could in fact profoundly affect the very foundations of our school and university education across the country. Further, in the rapidly transmuting scenario of an India that possesses a uniquely youthful demographic in an otherwise aging global world, the qualities of mind that we wish our young citizens to have and their access to a hopeful future seem inextricably bound up with 'the language question'. It is this context that makes the subject of this workshop quite urgent.

Today, it is widely admitted that the quality of education in our schools is extremely variable with some children who have highly privileged language access and others who may be said to suffer from severe language deprivation or what one might even call debilitating forms of 'language malnutrition'. In addition, the twin problems of rote learning and punitive exams harshly judged by grades and grades alone, without any space for debate and questioning, are so familiar that even to raise them comprises a rote objection. As Tagore strikingly put it long ago:

> From our very childhood… we are made to lose our world to find a bagful of information instead. We rob the child of his earth to teach him geography, of language to teach him

> grammar…Children's minds are sensitive to the influences of the world…This sensitive receptivity allows them, without any strain, to master language, which is the most complex and difficult instrument of expression, full of indefinable ideas and abstract symbols... In childhood we learn our lessons with the aid of both body and mind, with all the senses active and eager.

The workshop seeked to reexamine, in the rapidly mutating context of 21st century India, some of the 'body and mind' educational anxieties so sharply expressed over a century ago by Rabindranath Tagore.

It is said that global modernity and post-modernity in the time since Tagore wrote has been marked by 'the linguistic turn' in academia during which a variety of perspectives on language learning were developed. Scholars like Chomsky believe, for example, that language rules are 'innate' i.e. they are already present in the human mind before it is exposed to society. Still others believe that the 'general cognitive abilities' that account for other kinds of learning also account for language. A large number of thinkers subscribe to the view that language is essentially socially embedded and that all learning takes place through social interactions. Some regard language simply as a pairing of a lexicon and syntax but all agree that the phenomenon of language is both complex and the most crucial attribute of our humanness. This workshop examined some of these theoretical viewpoints in order to make a fresh analysis of the current lacunae in our approaches to education.

More than thirty years ago, Shirley Brice-Heath, an educational anthropologist, predicted in a famous paper that in the decades ahead the functional knowledge about language that has come from linguistics will be like certain principles of mathematics, physics, and biology; basic knowledge for other disciplines as well as for practical domains such as teacher training, legal and medical education, and computer software production… Language increasingly will be a natural part of the research domain of fields ranging from computer science to industrial sociology'.

It is hard to disagree today with such a prediction. The approach to studying a complex phenomenon like language can only be multidisciplinary in nature. This workshop will bring together linguists, scientists and other academicians with professional teachers and practitioners in the field of language teaching. It will not only aim to create awareness about the nature of language and explain its deep relationship to learning in the widest sense but will also seek to recommend sets of practical and implementable measures that will strengthen the hands of all those who wield a pen – even if that 'pen' is increasingly likely to be a computer – to tell new stories.

Workshop on '*Language and Learning'* was organised at IIAS during 06-08 October 2016. Professor Rukmini Bhaya Nair, Department of Humanities and Social Sciences, Indian Institute of Technology, HauzKhas, New Delhi and Dr. Rajesh Kumar, Humanities and Social Sciences, Indian Institute of Technology Madras, Chennai were the Conveners of the workshop. The welcome address was given by Professor Vijaya Shankar Varma, National Fellow, IIAS. Professor Rukmini Bhaya Nair, Convener of the workshop delivered the inaugural Address.

PARTICIPANTS

- Professor R. Govinda , Council for Social Development, New Delhi
- Dr. Irfanullah Farooqi, Department of Sociology, Aligarh Muslim University, Aligarh
- Dr. Hemachandran Karah, Department of Humanities and Social Sciences, Indian Institute of Technology, Madras, Tamil Nadu
- Professor Alok Rai, Department of English, Delhi University, Delhi
- Dr. Mumtaz Begum, School of Education, Pondicherry Central University, Puducherry
- Dr. Ruth Z Hauzel, GITAM University, Hyderabad, Telangana
- Dr. Rukmini Banerji, Pratham Education Foundation, New Delhi
- Professor Ajit Mohanty, Jawaharlal Nehru University, Delhi
- Dr. Meenakshi Pawha, Department of English and Modern European Languages, University of Lucknow, Lucknow
- Dr. Rajesh Kumar, Humanities and Social Sciences, Indian Institute of Technology Madras, Chennai
- Mr. Kshirod Kumar Dash, National University of Educational Planning and Administration, New Delhi
- Professor Anita Rampal, Faculty of Education, Delhi University, Delhi
- Dr. Om Prakash, School of Humanities and Social Sciences, Gautam Buddha University, Noida, Uttar Pradesh
- Ms Snehlata Gupta, Faculty of Education, Central Institute of Education, University of Delhi, New Delhi
- Mr. Sanjit Chakraborty, Department of Philosophy, Jadavpur University, Kolkata, West Bengal
- Dr. Annie Koshi, St Marry's School, Safdarjung Enclave, New Delhi
- Professor Parvin Sinclair, School of Sciences, IGNOU, New Delhi
- Ms. Deepa Kiran, House no- 107, Plot no-22-23, Ramaniah Apartments, Jyoti colony, Hyderabad
- Professor Rohit Dhankar, Azim Premji University, Bengaluru, Karnataka
- Professor Rukmini Bhaya Nair, Department of Humanities and Social Sciences, Indian Institute of Technology, Hauz Khas, New Delhi
- Professor Amba Kulkarni, Fellow, IIAS, Shimla

- Dr. R. Lalitha Raja, Fellow, IIAS, Shimla
- Professor Mahesh Champaklal, Fellow, IIAS, Shimla
- Professor Punnappurath Madhavan, Fellow, IIAS, Shimla
- Ms. Preetam Pyari, Educational Institute Dayalbagh, Agra, Uttar Pradesh
- Ms. Swati Mazta, Research Scholar, Central University of Rajasthan, Ajmer, Rajasthan

Participants made presentations on the following theme during the workshop:

Session I

School and Texts

Dr. Rukmini Banerji: *Challenges for School Education in India Today*

Professor Ajit Mohanty: *Multilingualism: A Cognitive Resource or Burden*

Dr. Annie Koshi: *Inclusive Education: Law, Language and Attitudes towards Disability*

Session II

Learning Disabilities, Culture, and Cognition

Ms. Swati Mazta: *Role of Gesture and Eye Contact in Teaching and Learning Communication among School Students and Teachers*

Ms. Preetam Pyari: *Visual Learning: Boon for Deaf Students*

Dr. R. Lalitha Raja: *Implications of Cognition on Language Learning in Children with Dyslexia*

Dr. Mumtaz Begum: *Sign Language of the Hearing Impaired - A Positive Sign of the Cognitive Mind*

Dr. Prachi Dublay: Poolside Theatre Performance: “Songs of India: Connections between various musical traditions”

Session III

Nature and Structure of Language

Professor Rohit Dhankar: *Language, Logic and Human Understanding*

Dr. Rajesh Kumar &Dr. Om Prakash: *Learning of Language Interface with I/E Language Distinction*

Professor Amba Kulkarni: *Importance of Information Dynamics in Learning Human and Programming Languages*

Dr. Irfanullah Farooqi: *Understanding Mistakes as Sites of Possibilities: Revisiting Success and Failure in the Context of Elementary Schooling*

Session IV

Pedagogy and Learning

Professor Anita Rampal: *Language for Learning*

Mr. Kshirod Kumar Dash: *Schooling of Tribal Children through Multilingual Education Program: A study of selected schools in Odisha*

Dr. Ruth Z. Hauzel: *Language Teaching and Learning in a Multilingual Context of North East Region*

Ms. Snehlata Gupta: *English in Government Schools in Delhi*

Session V

Creativity, Literature, Performance and Emancipation

Dr. Meenakshi Pawha: *Role of Gender and Class in English Language Learning: A Study of Rural and Urban areas in and around Lucknow*

Dr. Hemchandran Karah: *Decrepit Presence of the Idea of Care within the Language of Emancipatory Pedagogy: A Few Considerations*

Ms. Deepa Kiran: *Story Telling and Scope for Language Learning: Teacher and Student Development Possibilities*

Mr. Sanjit Chakraborty: *Seeing Through Language*

Professor Mahesh Champaklal: *Learning Language through Theatre*

Session VI

Roundtable Discussion

- Professor Rukmini Bhaya Nair
- Professor Ajit Mohanty
- Professor Alok Rai
- Professor Amba Kulkarni
- Professor Anita Rampal
- Dr. Annie Koshi, Principal
- Ms. Deepa Kiran
- Dr. Hemchandran Karah
- Dr. Irfanullah Farooqi
- Mr. Kshirod Kumar Dash
- Professor Mahesh Champaklal

- Dr. Meenakshi Pawha
- Dr. Mumtaz Begum
- Dr. Om Prakash
- Professor Parvin Sinclair
- Professor Punnapurath Madhavan
- Ms. Preetam Pyari
- Professor R. Govinda
- Dr. R. Lalitha Raja
- Dr. Rajesh Kumar
- Professor Rohit Dhankar
- Dr. Rukmini Banerji
- Dr. Ruth Z. Hauzel
- Mr. Sanjit Chakraborty
- Ms. Swati Mazta

  Concluding Remarks and Roadmap

13. Art Workshop "The Essential Tagore: Wanderer behold, these trees are prayers!" (19-22 October 2016)

Rationale: The Sacredness of nature and of the entire creation is an essential Indian paradigm which Rabindranath Tagore wholeheartedly supported. In his poems and prose, the poet found a variety of ways to express sacredness. The tree has a special place within the metaphoric cosmos that Tagore developed. In the Upanishads the tree was a symbol of Life. The roots were in the air, receiveing nourishment from the transcendent sphere. Rabindranath Tagore added to this many layers of sacredness of the tree as can best be witnessed in his famous poem briksha bandna/A Hymn to Trees.

Around the tree as a symbol of the creative life-force, Tagore unfolded an eco-spirituality which embraced all living beings; insentient things as well he experienced as part of the spiritual vibrancy of the cosmos. Modern ecological concerns and our need to protect the environment could get a powerful new vision by placing the sacredness of nature, especially the sacredness aof the tree as the epitome of nature, at the root of our ecological awareness. Artist may express such awareness in a variety of innovative ways.

An Art Workshop on 'The Essential Tagore: Wanderer behold, these trees are prayers!' was organised at IIAS during 19-22 October 2016. Professor Him Chatterjee, Dean, Department of

Fine Arts, Himachal Pradesh University, Shimla was the Convener of the workshop. The welcome address was given by Professor Vijaya Shankar Varma, National Fellow, IIAS. Professor Him Chatterjee, Convener of the workshop gave introductory remarks. Dr. Martin Kämpchen, Tagore Fellow, IIAS delivered the inaugural speech.

PARTICIPANTS

- Professor Him Chatterjee, Faculty of Performing and Visual Arts, H.P. University, Shimla
- Shri Sudanshu Sutar, B-127, Kendriya Vihar, Sector-56, Gurgaon
- Shri Bhajju Shyam , 57 Akashwani Colony, Kotra , Sultanabad, Madhya Pradesh
- Dr. Martin Kämpchen, Tagore Fellow, IIAS
- Shri Sanyasi Lohar, Purbapalli, Santiniketan, West Bengal
- Shri Hemant Dwivedi, Department of Visual Arts, M.L. Sukhadia University, Udaipur
- Shri Rajat Nandi, Indian Collage of Arts & Draftmaship, Kolkata
- Shri Babu.C., Sreevalsam, T.B. Road, Angamali, Kerala
- Shri Shyam Sharma, Ex. Principal, College of Fine Art (P.U.), Patna, Bihar
- Professor Vijaya Shankar Varma, National Fellow, IIAS
- Shri Viney Vadhera, 1071 House No., Sector 18-C, Chandigarh
- Shri Goutam Pal, Mahalakshmi's Balaji Avenue, Flat No-107, Sudarshan Nagar, Hyderabad
- Dr. Vijay M. Dhore, 2-2-12/5, D.D. Colony, Shivam Road, near Life Hospital, Hyderabad
- Shri Kanu Patel, Lajja- 2nd Floor, Super Market, Rajendra Marg, Vallahab Vidya Nagar, Ananad, Gujarat

14. International seminar on "Science and Spirituality: Bridges of Understanding" (21-23 November 2016)

Rationale:

"Self-transcendence, the mark of all spiritual experience, is present in the devoted passion for the pursuit of science, art, and morality." (Dr. S. Radhakrishnan)

"The most beautiful thing we can experience is the mysterious; it is the source of all true art and science." (Albert Einstein)

Man's search for an understanding of reality has taken several routes that also have their respective methods: science and spirituality being amongst the most significant of these in the

present day context. Science, and its application, technology, have brought us tools and comforts that pervade our life today. They also shape our relationship with the world. At the same time, both in the East and in the West, there is an ever growing need of humanity to find an inner meaning. There is a continuous search for refuge in spiritual traditions and practices across the world. Both, science and spirituality, endeavour to unravel the mysteries of the universe and the inner workings of matter and spirit. Common to both approaches is a quest for truth, and a fluidity which does not allow the seeker to stop at any given point. Science constantly moves towards new discoveries, and spirituality seeks ever deeper dimensions of consciousness. The scientific method, relying on empirical evidence, and spiritual practice, aiming at inner experience both share a sense of wonder at the greatness of the universe and depth of the human spirit. Just as moments of intuitive inspiration have led to some of the greatest scientific discoveries, the spiritual traditions originate from and testify to intuitive, enlightening insights. Ideally, both disciplines require a free mind - unbiased and unprejudiced (in phenomenology: *epoché*) - in order to approach their goal. The words of Albert Einstein on the limitations of the human condition, and the way to overcome them, are not only pertinent for both scientific and spiritual perspectives, but also seem to indicate a way towards a more inclusive and thus compassionate existence: "*A human being is a part of the whole called by us universe, a part limited in time and space. He experiences himself, his thoughts and feelings as something separated from the rest, a kind of optical delusion of his consciousness. This delusion is a kind of prison for us, restricting us to our personal desires and to affection for a few persons nearest to us. Our task must be to free ourselves from this prison by widening our circle of compassion to embrace all living creatures and the whole of nature in its beauty.*"

Over the last century, we have seen great minds from both fields of understanding reaching out to engage with, and even embrace, each other. There is much reason to hope that "*these two are in our own days brought closely into touch with each other, so that they may aid and strengthen each other, may be found as servants in a common cause, and not as opposing and incongruous ideas."*[1] Quantum mechanics has profoundly challenged our understanding of reality and our long held notions about the world we live in. Niels Bohr's statement "*Everything we call real is made of things that cannot be regarded as real*" seems to echo the Hindu notion of *Māyā*. And Erwin Schrödinger's words "*Quantum physics thus reveals a basic oneness of the universe*" resonate well with the spiritual experience of oneness which saints and sages of East and West have so rapturously sung about since ages.

On the other side, Sri Aurobindo acknowledges how science may aid in improving our understanding of spiritual practices themselves: "*Yogic methods have something of the same relation to the customary psychological workings of man as has the scientific handling of the force of electricity or of steam to their normal operations in Nature. And they, too, like the*

1 Annie Besant, Modern Science and Higher Self (Adyar, 1915).

operations of Science, are formed upon a knowledge developed and confirmed by regular experiment, practical analysis and constant result".[2]

His Holiness the Dalai Lama has been leading a dialogue with scientists over the last decades, most fruitfully with neuroscience. We have to connect with this important and epoch-making dialogue. Addressing the Society of Neuroscience (Washington, DC), Dalai Lama said: "*I believe that the collaboration between neuroscience and the Buddhist contemplative tradition may shed fresh light on the vitally important question of the interface of ethics and neuroscience… Both parties in the dialogue can find the common ground of empirical observable facts of the human mind, while not falling into the temptation of reducing the framework of one discipline into that of the other…*"[3]

The aim of the seminar was to attempt an overcoming of opposites and dichotomies. We can live neither without science nor without spirituality, and it is a bridging of the gap between the two that will contribute to greater harmony in society. We need most importantly to remember the vision of Dr. S. Radhakrishnan: "*Progress in the realms of Science, Art, and Morality shows that self and not-self are only relatively opposed. It is the business of man to break down the opposition, and make both express the one spirit. This view restores the balance between nature and spirit, and makes life worth living.*"[4]

An International seminar on '*Science and Spirituality: Bridges of Understanding*' was organised at IIAS during 21-23 November 2016. Professor Bettina Sharda Beaumer, National Fellow, IIAS was the Convener of the seminar. The welcome address was given by Professor Chetan Singh, Director, IIAS. Professor Bettina Sharda Beaumer, Convener of the seminar gave introductory remarks. The keynote addresss was given by Professor Partha Ghose, Fellow, National Academy of Sciences, 5, Lajpatrai Road, Mumfordganj, Allahabad delivered the keynote address.

PARTICIPANTS

- Professor Partha Ghose, Fellow, National Academy of Sciences, 5, Lajpatrai Road, Mumfordganj, Allahabad
- Professor Swami Atmapriyananda, Vice Chancellor, Ramakrishna Mission Vivekananda University, Howrah, West Bengal
- Mr. Geshe Jangchup Choeden, Gaden Shartse Monastery, Mundgod, Karnataka
- Dr. Kishor Dere, Visiting Faculty, Jamia Millia Islamia University, Jamia Nagar, New Delhi
- Dr. Stephen Antony Parker, Swami Rama Saohaka, Gram Virpur Kurd Virbhadra Road, Pashulok 249203, Rishikesh UK

2 Sri Aurobindo, The Synthesis of Yoga, p. 7. Pondicherry, 1999.
3 Tenzin Gyatso, the Dalai Lama, Science at the Crossroads (Talk given in 2005).
4 Dr. S. Radhakrishnan, The Philosophy of Rabindranath Tagore, p.27 (London, 1919).

- Professor P. Krishna, Krishnamurti Foundation India, Rajghat Fort, Varanasi
- Professor Joy Sen, Architecture & Regional Planning, IIT Kharagpur, West Bengal
- Dr. Jitendra B. Shah, LD Institute of Indology, Near Gujarat University, Navrangpura, Ahmedabad, Gujarat
- Professor Sudhir K. Sopory, Ex Vice-Chancellor, Professor of Microbiology, Jawaharlal Nehru University, New Delhi
- Dr. Gopal Chandra Bhar, Ramakrishna Mission ,Vivekananda University, West Bengal
- Dr. V. Hari Narayanan, Department of Humanities and Social Sciences, Indian Institute of Technology, Jodhpur
- Dr. Atul Bhatnagar, Faculty of Dental Sciences, Institute of Medical Sciences, Banaras Hindu University, Varanasi
- Dr. Arpita Mitra, Fellow, IIAS
- Dr. Varghese Manimala, St. Joseph Capuchin Provincialate, Kottayam, Kerala
- Ustad Bahauddin Dagar, 6/20, Rukmini, R.C. Marg, Chembur, Mumbai
- Dr. Martin Kämpchen, Tagore Fellow, IIAS
- Professor Mahesh Champaklal, Fellow, IIAS
- Shri Samir Banerjee, Fellow, IIAS
- Professor Vijaya Shankar Varma, National Fellow, IIAS

Participants made presentations on the following theme during the seminar:

Session I

Sudhir K. Sopory: Perception and Awareness in the Plant World

Gopal Chandra Bhar: In Search of Rationality in our Habit: Spirituality in the Light of Neuroplasticity

Session II

P. Krishna: Science and Spirituality: J. Krishnamurti's View

Varghese Manimala: Sacred Secularity: The Meeting Point of Science and Spirituality

Session III

Geshe Jangchup Choeden: Study of Consciousness

Jitendra B. Shah: Consciousness, Knowledge and Karma in Jainism and Science

Evening Program at Pool Theatre by Ustad Baha'ud'din Dagar on Art of Dhrupad: Scientific Method and the Question of Spirituality

Rudra Veena presentation and performance

Session IV

Swami Atmapriyananda: Swami Vivekananda's concept of the harmony of Science and Religion

Bettina S. Bäumer: Consciousness at the Heart of Matter: Trika Śaivism of Kashmir and its Insights for a Dialogue with Science

Session V

Atul Bhatnagar: Thought: Its genesis and growth in the light of Theosophy and Neuroscience

Vijaya Shankar Varma: Science and Spirituality

Session VI

Stephen A. Parker: Intuition, Playground or Kurukṣetra?

A Perspective from Pātañjala Yoga and Psychology

Martin Kämpchen: Rabindranath Tagore's Belief in Holistic Science

Session VII

Joy Sen: Exploring 'Tree' – Establishing dialogues between Cosmic Science and Indian Heritage

Hari Narayanan: Self, Experience and Spirituality

Session VIII

Kishore Dere: 21st Century Ecological Concerns: Perspectives of Modern Science and Ancient Indian Spirituality

Arpita Mitra: Heart of the Matter: Vedanta and the Possibility of a "Heart"-centric Education

Panel Discussion

Partha Ghose, S.K. Sopory, P. Krishna, Swami Atmapriyananda

15. Winter School on "Life and Thought of MK Gandhi" from 01-15 December 2016.

A Winter School on "*Life and Thought of Gandhi*" was organized at IIAS from 01-15 December 2016. Dr. Gangeya Mukherji, Flat No. C- 404, Block-II, Lotus Apartments, 49/39 Tashkant Marg, Allahabad was the Convener of the School. The welcome address was given by Professor Chetan Singh, Director, IIAS. Professor Chandrakala Padia, Chairperson, IIAS gave inaugural address. Dr. Gangeya Mukherji, Convener of the school gave introductory remarks.

PARTICIPANTS

- Professor Tridip Suhrud, Preservation & Memorial Trust & Chief Editor, Gandhi Heritage Portal, Gandhi Ashram, Sabrarmati, Ashram Road, Ahmedabad
- Professor Gopal Guru, Centre for Political Studies, School of Social Sciences, Jawaharlal Nehru University, New Delhi
- Professor Sudhir Chandra, Delhi
- Dr. Samir Banerjee, Fellow, IIAS, Shimla
- Professor Bhagvan Josh, Centre for Historical Studies, School of Social Sciences, Jawaharlal Nehru University, New Delhi.
- Dr. Sashi Joshi, 511, Ayaachi Apartments, Sector 45, Gurugram , Harayana
- Dr. Anuradha Veeravalli, Department of Philosophy, University of Delhi
- Dr. Gangeya Mukherji, Flat No. C- 404, Block-II, Lotus Apartments, 49/39 Tashkant Marg, Allahabad
- Professor Anand Kumar, Fellow, IIAS, Shimla
- Professor Kundan Lal Tuteja, # 884, Sector-5, Urban Estate, Kurukshetra
- Dr. Ajay Kumar, M.I.G.-91, Sector-C, P.D. Nagar, Unnao, (U.P.)
- Mr. Abdul Raoof Mir, Jhelum Hostel, Room 360, Jawaharlal Nehru University, New Delhi
- Dr. Arun S. Wahul, Department of History, Vivekanand Arts, Sardar Dalipsingh, Commerce & Science College, Samarthnagar, Aurangabad, Maharashtra
- Dr. Mithilesh Kumar, MGFG Centre for Social Work, Mahatma Gandhi Antarrashtriya Hindi University, Wardha (A Central University) Maharashtra
- Mr. Rohan Hassan, Department of English, Aliah University, Kolkata
- Ms. Ashmeet Kaur, E-94, Lajpat Nagar, Part One, New Delhi
- Dr. Chitra Upadhyaya, A1-009- Century Commander Vista, Behind prestige Monte Carlo, Yelhanka Banglore, Karnatka
- Ms. Anvita Bhuvan Mishra, A 403, Eldeco City, IIM Road, Lucknow
- Mr. Biplove Kumar, Department of History, Sikkim University, Tadong, Gangtok, Sikkim
- Mr. Atul Kumar Mishra, Gorakh Pandey Hostel, Mahatma Gandhi Antarrashtriya Hindi Vishwavidyalay, Wardha Maharashtra
- Mr. Thakur Prem Kumar, Saramohanpur,Gangwara. Darbhanga. Bihar
- Ms. Neetanjali Khari , 5484/5 New Chandrawal, Near Kamla Nagar, New Delhi

- Ms. Nishtha Saxena, F-27, Sector 25, Panjab University Residential Complex, Panjab University, Chandigarh
- Ms. Tripta Sharma, 69, Paschim Vihar Extension, Rohtak Road, Opposite Odinance Depot, New Delhi
- Mr. Pawan Kumar, Centre for Studies and Research in Gandhian Thought and Peace, Central University of Gujarat Gandhinagar
- Mr. Pavan Kumar, International Politics Division, Centre for International Politics, Organization and Disarmament, School of International Studies Jawaharlal Nehru University, New Delhi
- Mr. Praveen Dhanda, # 69, Paschim Vihar Extension, Rohtak Road, Opposite Ordinance Depot, New Delhi
- Mr. Sachin Kumar, Village Jola, PO. Padhiun, district Mandi, Himachal Pradesh.
- Mr. Somak Biswas, Flat 9B/1, Ekta Oleanders, 16 Radhanath Chowdhury Road, Kolkata Mr. Vikash Kumar Mishra, G B Pant Social Science Institute, Allahabad.
- Mr. Vikash Kumar Mishra, G B Pant Social Science Institute, Allahabad- 211019.
- Mr. Subhash Debnath, Vill. Vidyasagar Palli, D-Block, P.O- I.C. Nagar, P.S-Amtali, Tripura, West.
- Mr. Rajeev Kumar, A31/32, Room No. 04, Metro Hostel, Christian Colony, Patel Chest, New Delhi

Resource Persons made lectures/presentations on the following theme during the Winter School:

01 December, 2016

Shri Samir Banerjee: 'Down with Gandhism: Long Live Gandhi'

Shri Samir Banerjee: Film

Shri Samir Banerjee: Discussion on Film

02 December, 2016

Professor Bhagvan Josh: 'The Colonial State and the Gandhian Strategy'

Shri Samir Banerjee: 'Gandhi and Education: Nai Talim'

Dr. Shashi Joshi: 'Gandhi and his Christian Friends I'

Dr. Shashi Joshi: 'Gandhi and his Christian Friends II'

03 December, 2016

Professor Bhagvan Josh: 'The Logic of Gandhian Movements'

Professor Bhagvan Josh: 'Gandhi, Indian National Congress & the Politics of the Capitalist Class'

05 December, 2016

Dr. Gangeya Mukherji 'The Limits and Possibilities of Non Violence I'

Dr. Gangeya Mukherji: 'The Limits and Possibilities of Non Violence II'

Dr. Gangeya Mukherji: 'Gandhi, Tagore & Jallianwala Bagh Tragedy: The Ethicism of Protest I'

Dr. Gangeya Mukherji: 'Gandhi, Tagore & Jallianwala Bagh Tragedy: The Ethicism of Protest II'

06 December, 2016

Professor Sudhir Chandra: 'Facing Gandhi, Facing the Self'

Professor Ananda Kumar: 'Dimensions of Gandhian Thought'

Professor KL Tuteja: 'Gandhi's Psychology of Mass Movements'

Professor Sudhir Chandra: 'Pragmatic Non Violence'

07 December, 2016

Professor Gopal Guru: 'Ambedkar's Gandhi I'

Professor Gopal Guru: 'Ambedkar's Gandhi II'

Professor Ananda Kumar: 'The Gandhian Way and the Wave of Globalisation'

Professor KL Tuteja: 'Hindu-Muslim Unity & Gandhi'

08 December, 2016

Professor Sudhir Chandra: 'Where is Gandhi Today?'

Professor Sudhir Chandra: 'Gandhi's recognition of Dalit Oppression'

Professor Tridip Suhrud: 'Gandhi: The South African Experiment'

Professor Tridip Suhrud: 'Introducing *Hind Swaraj*'

09 December, 2016

Professor Sudhir Chandra: 'Raag Mala: The Multi Dimensionality of Looking at Gandhi'

Professor Tridip Suhrud: 'Reading *Hind Swaraj*'

Professor Tridip Suhrud: 'Reading *Hind Swaraj*'

Professor Tridip Suhrud: 'Reading *Hind Swaraj*'

10 December, 2016

Professor Tridip Suhrud: 'Reading *The Autobiography*'

Professor Tridip Suhrud: 'Reading *Hind Swaraj*'

Professor Tridip Suhrud: 'Reading *Hind Swaraj*'

12 December, 2016

Professor Tridip Suhrud: 'Reading *Hind Swaraj*'

Professor Tridip Suhrud: 'Reading *Hind Swaraj*'

Professor Tridip Suhrud: Interactive Session on *Hind Swaraj*

Professor Tridip Suhrud: Interactive Session on *Hind Swaraj*

13 December, 2016

Dr. Anuradha Veeravalli: 'Gandhi as Theorist: Swaraj in Political Theory'

Dr. Gangeya Mukherji: 'Reading *Ashram Observances in Action*'

Dr. Gangeya Mukherji: 'Reading *Satyagraha in South Africa*'

14 December, 2016

Dr. Anuradha Veeravalli: 'Charkha, Industrialisation & Political Economy'

Dr. Gangeya Mukherji: 'Reading *Satyagraha in South Africa*'

Dr. Gangeya Mukherji: 'Tagore-Gandhi Debate'

Dr. Gangeya Mukherji: 'Gandhi's Nationalism'

15 December, 2016

Dr. Gangeya Mukherji: 'Biographies of Gandhi'

16. National Seminar on "Anthropological Histories and Tribal Worlds in India" at IIAS (27-29 March 2017)

Rationale: Histories of 'tribal' peoples in India have been struggling continuously to respond to the increasingly complex present-day predicaments of peoples so described. If the task of History is to speak empathetically from conceptions of the past to the human condition in the present, this task is extremely fraught in the case of tribal peoples. They are mostly invisible in the statist archives and are definitionally the constitutive other of historical temporality and politics. Ethnography, History's mirror twin, in its post-foundational avatar, has thus emerged as a critical site from which to challenge the protocols of History which do not admit terms from the life-worlds of the tribal peoples as legitimate grounds from where to write histories. The field of Anthropological History has provided a hopeful and exciting site from where to pluralize the practices of writing about tribal pasts.

Anthropological histories of tribal peoples have interrogated the epistemic and administrative practices that have constructed the category of the primitive tribal, including that of History and Anthropology, explored the emergence and sustenance of and changes in the identification claims of tribal peoples, and gestured towards the alternate imaginations of the past in the

self-presentations of these communities. These attempts have striven to re-center the modern historical/political as irreducibly plural and heterogeneous with the tribal as an acutely critical and dissonant sign within.

Yet, the project of fashioning meaningful anthropological histories for tribal peoples has also thrown up serious philosophical, methodological and political questions.

- How can we intimate the inextricable imbrications of our lived temporalities in historical prose so that the tribal worlds are neither fetishized as locations of singular, unique, pristine-utopian and authentic subjectivities nor completely assimilated into the disciplinary historical?
- Will the study of alternate cosmologies which engage with the historical but whose center of gravity lies elsewhere reaffirm a stereotype or signal a move that is politically more powerful? How might the political/historical be reimagined in this enterprise and can we risk that move?
- Can we look beyond translating tribal worlds and write from the entanglements of our shared temporalities; and from this vantage, what might the languages and vocabularies of the tribal-modern look like?
- What manners of texts could be crafted in this radical reworking of the historical roles and relationship of History and Ethnography and their critical interruption of each other?
- How might we explore tribal cosmologies and yet attend to tribal peoples' present-day identifications and conditions of marginalization effectively and consistently?
- How will the explorations of the everyday of the tribal pasts change our sense of tribal victimhood and/or habitual rebellion, and of resistance, tropes within which tribal histories invariably get frozen? What kind of subjectivities come into view?
- Without setting up an inward-looking domain of 'tribal studies', how can we stay with the focus on tribal histories and still dialogue with other comparable non-tribal worlds and concerns that speak to our common dilemmas?

A National seminar on '*Anthropological Histories and Tribal Worlds in India'* was organised at IIAS during 27-29 March 2017. Dr. Aditya Pratap Deo, Fellow, IIAS was the Convener of the seminar. The welcome address was given by Professor Vijaya Shankar Varma, National Fellow, IIAS. Dr. Aditya Pratap Deo, Convener of the seminar gave introductory remarks. The keynote address was given by Professor Virginius Xaxa, Professor of Eminence, Sociology and Social Work, Tezpur University, Tezpur.

PARTICIPANTS

- Dr. K.C. Bindu, Ambedkar University, Delhi
- Dr. Devaki Nambiar, Public Health Foundation of India, Delhi
- Dr. Amrita Tulika, Department of History, St Stephen's College, Delhi
- Mr. Biswamoy Pati, 47 Deshbandhu Apts., 15 Patparganj, Delhi
- Mr. Subodha Mendaly, Department of History, Sambalpur University, Orissa
- Mr. Nitin Dwivedi, Saraphikpura, Mahobra (U.P.)
- Dr. R. Umamaheshwari, Former Fellow, IIAS, Shimla
- Mr. Rajesh K. P., Kuniparambil House, East Road, Bappankad, Koyilandy
- Ms. Rimi Tadu, Tata Institute of Social Sciences, Hyderabad
- Ms. Riddhi Gyan Pandey, Adarsh Nagar, Kanker
- Dr. Suresh.M, School of Development Studies, Tata Institute of Social Sciences, Mumbai
- Dr. Arivalagan Murugeshapandian, XXV/343, Kolanjiyil House, Aiswarya Lane, Thottakkattuara, Aluva, Kerala State
- Dr. Swargajyoti Gohain, Department of Humanities and Social Sciences, Indian Institute of Technology, Kanpur
- Ms. Lubna Irfan, Aligarh Muslim University, Aligarh (U.P.)
- Mr. Duli Ete, Department of History, Dera Natung Government College, Itanagar
- Ms. Sarah Jacobson, 1st Floor, H No - 44, Adarsh Nagar, Kanker, Chhattisgarh
- Dr. John Thomas, Department of Humanities and Social Sciences, Indian Institute of Technology, Guwahati
- Dr. Avishek Ray, Department of Humanities & Social Sciences, National Institute of Technology Silchar, Silchar
- Dr. Radhika Krishnan, International Institute of Information Technology, Hyderabad
- Ms. Priyanka Choudhary, PhD Scholar, Department of Political Science, University of Delhi
- Ms. Prachi Dublay, Fellow, IIAS, Shimla
- Shri Amit Dutta, Tagore Fellow, IIAS, Shimla
- Dr. Jagdish Lal Dawar, Fellow, IIAS, Shimla
- Dr. Pradeep Nayak, Fellow, IIAS, Shimla

- Professor Chetan Singh, Former Director, IIAS
- Dr. Jyoti Sinha, Fellow, IIAS

Participants made presentations on the following theme during the seminar:

Session I

Framing the Subject

KC Bindu: *Naturally Pure Adivasis and Corrupt Modernity" Situating the Anti-Modernity Debate with Reference to the Adivasis*

Amrita Tulika: *Bhil Rebellions in a Frontier Region: Western Deccan C.1800-1860*

Avishek Ray: *Historiography of Travel in India: The Tribal Lifeworld Disenfranchised*

Session II

Politics of Culture

John Thomas: *Space, Time and Religious Change among the Tribes of North-East India*

Aditya Pratap Deo: *The Enchanted Realm: Spirits of the State in a Kingdom in Colonial Central India*

Radhika Krishnan: *Indigeneity and its Performances: Ecological Discourses, the Industrial project and Resistance in Odisha*

Session III

Negotiation the Margins

Rajesh K.P.: *Marginality, Land Question and the Making of Modern Adivasi Community in Kerala: The Case of Adivasi Gothra Maha Sabha (AGMS)*

R. Umamaheshwari, *Understanding Resistance, from the People of Kondamodalu (East Godavari, Andhra Pradesh)*

Film Screening

Amit Dutta: *Jangarh Film/I, 2008*

Session IV

From Memory to History

Duli Ete: *Missing in Narration: Women in History Embedded in the Genealogy of the Galos of Arunachal Pradesh*

Prachi Dublay: *History of Rathwa Bhils through the dynamics of their Songs and Stories!*

Rimi Tadu: *Ethnographic Conversations in History: Doing Oral History in the North East India*

Session V

Holding Out

Suresh M.: *State of Misrecognition: Politics and Modalities of "owning" land and "tribes" in Kerala*

Pradeep Nayak: *From Land Reform to Land Titling (Secure Property Rights in Land) in India: Perspectives from Tribal Land Rights*

Session VI

Evidence and Experience

Arivalagan M.: *Modernity and Body History: Re-engineering Forests and Tribal Labour in 20th Century Southern Tamil Nadu*

Jagdish Lal Dawar: *Natural Disasters in Post-Colonial North-East India: Different Memories of Famine of 1959 in Mizoram*

Subodha Mendaly: *Megalithic Culture in Odisha: A Recent Study on Living Megalithic Tradition Found among the Munda Tribes in Sundergarh District*

Session VII

Categorical Questions

Swargajyoti Gohain: *Legends of origin and the politics of recognition*

Priyanka Choudhary: *The Anti-Civilization in Colonial Times: Khanabadosh of the North West India*

Lubna Irfan: *African diaspora in medieval Indian history: Contextualizing the political presence of Sidi and Habshi tribes in India*

Session VIII

Regimes of Knowledge I

Biswamoy Pati: *Exploring Health Concerns: The Tribals and Outcastes/Dalits in Colonial Orissa*

Devaki Nambiar: *Whither revitalization?: On documentation as a mode of disciplining senescent tribal knowledge in South India*

Session IX

Regimes of Knowledge II

Nitin Dwivedi: *Indigenous Knowledge Systems and Conservation of Natural Resources among the Tribes of Middle India: Madhya Pradesh since the Nineteenth Century*

Sarah Jacobson and Riddhi Pandey: *Gond adivasis making History: Documenting their culture in modern times*

C. WEEKLY SEMINARS BY FELLOWS

The Fellows of the Institute regularly presented weekly seminars. The seminars are open to other scholars at the Institute, Associates of the Inter-University Centre and faculty of Himachal Pradesh University and other interested members of the public. These seminars are related to the themes of the projects being undertaken by Fellows at the Institute and provide an opportunity for formal interaction among the scholars.

During the period under report the Fellows made the following seminar presentations:

1. Professor Bettina Sharada Bäumer: *The Yoga of the Netra Tantra:The 'Third Eye' and 'Overcoming Death'* (07 April 2016)
2. Dr. Pradeep Nayak: *Towards Guaranteeing Land Titling (secure property rights) in India: A Study* (13 April 2016)
3. Professor K. Satchidanandan: *Travel Poetry and its Poetics* (21 April 2016)
4. Dr. Anindita Mukhopadhyay: *Children's Games Adults' Gambits* (02 May 2016)
5. Dr. Tadd Graham Fernee: *Beyond the Faustian Bargain: Ethics as Material Development* (05 May 2016)
6. Professor Nirmal Sengupta: *Modern World of Traditional Knowledge* (10 May 2016)
7. Dr. B. Ravichandran: *Language, Caste and Territory: Language Spoken by the Scavenging Communities in South India* (19 May 2016)
8. Shri Samir Banerjee: *Reinterpreting Gandhian Thought by Contemporary Civil Society Initiatives* (26 May 2016)
9. Shri Amit Dutta: *Jangarh Singh Shyam: Art Education and Prosperity* (02 June 2016)
10. Dr. Jyoti Sinha: *Banaras Sangeet evam Banarasi Thumri*(30 June 2016)
11. Professor A. Achuthan: *Bhartiya Lok Natya Parampara aur Dalit Chetna* (08 July 2016)
12. Dr. Arpita Mitra: *"Neo-Hinduism" and Ethics: Unpacking the Politics of Paul Hacker (1913-1979)* (14 July 2016)
13. Professor Kundan Lal Tuteja: *Hindu Consciousness and Nationalism in Colonial Punjab* (21 July 2016)
14. Dr. Ratnakar Tripathy: *A Comparative Study of the Regional Music Industries in Hindi-Speaking India: with special focus on Himachal Pradesh, Bihar, and Haryana* (28 July 2016)

15. Ms. Prachi Dublay*: Towards a Theoretical Framework of Adivasi Music: Studying the Musical Tradition of Rathwa Adivasi, a Representative Tribe Living on Borders of Madhya Pradesh, Gujarat and Maharashtra (*28 July 2016*)*
16. Shri Chhering Dorje: *Theory and Practice of Heritage Conservation and Restoration of Rashtrapati Nivas, Shimla* (04 August 2016)
17. Dr. Jagdish Lal Dawar: *History of Food in Northeast India: Mizoram since Pre-colonial Times* (04 August 2016)
18. Dr. Kaustav Chakraborty: *Non-normative and the Indigeneity: Queering the Select Tribal Folktales* (11 August 2016)
19. Dr. Amba Kulkarni: *Computational Modeling of Yogyatā* (16 August 2016)
20. Shri Samir Banerjee: *Gandhi in South Africa: Satyarthi to Satyagrahi* (18 August 2016)
21. Dr. Gowhar Yaqoob: *Shaping a Literary Space: The Discourse of Identity and use of Kashmiriyat as a Category in Early Literary History of Kashmiri* (26 August 2016)
22. Ms. Saumya Sharma: *Comprehending Architecture and Conservation through Shimla* (30 August 2016)
23. Dr. Radhika Krishnan: *Red in the Green: Shankar Guha Niyogi (1942-1991) and Politics as the 'Great Outsider'* (01 September 2016)
24. Professor Sumanyu Satpathy: *In Print: The Role of the Early Periodical Press in Shaping Modern Odia Literary Culture* (01 September 2016)
25. Professor Vijaya Shankar Varma: *Al-Kindi and his Treatise on Light Rays* (08 September 2016)
26. Professor Mahesh Champaklal: *Episodes of 'Valkal' and 'Pratimā' on Page and Stage* (15 September 2016)
27. Professor K. Satchidanandan: *Is an Indian Literary History Possible?* (19 September 2016)
28. Dr. Pradeep Nayak: *Towards Guaranteeing Land Titling (Secure Land Rights) in India: A Study* (22 September 2016)
29. Dr. R. Lalitha Raja: *Significance of Optimality Theory in Phonological Acquisition and in Assessment and Intervention of Phonological Disorders* (20 October 2016)
30. Dr. Leon Angelo Morenas: *Mohallas and Smart Cities: Post- Colonial Development in Delhi* (20 October 2016)
31. Dr. Bindu Menon M.: *Religion, Migration and Modernity: Islamic Home Films in Kerala and Migration to the Gulf Countries* (27 October 2016)

32. Dr. Aditya Pratap Deo: *Writing Trans-temporality into History: Time and Politics in the Oral Traditions of the Mixed Tribe-Caste Communities of the Princely State of Kanker, Southern Chattisgarh* (27 October 2016)
33. Professor Anand Kumar: *India: Between Democratic Nation-building and Dominant Castes' Democracy* (03 November 2016)
34. Professor K.M. Baharul Islam: *Migrant Muse: The Third Space in Assamese Literature* (10 November 2016)
35. Professor Nirmal Sengupta: *Against Pride and Prejudice* (17 November 2016)
36. Professor Triloki Singh: *Bouncing and Cyclic Models of the Universe* (24 November 2016)
37. Professor Punnappurath Madhavan: *Meaning in Languages: A comparison of the Dominant Themes and their Treatment in the Western and Indian/Sanskrit Traditions* (24 November 2016)
38. Dr. Martin Kämpchen: *Rabindranath Tagore and Johann Wolfgang Goethe* (01 December 2016)
39. Dr. Sandili Maharaj Ramdial: *From Forced Migration to the end of Indentureship: A Psychological Analysis of the People of Indian Origin in Trinidad (1845-1917)"* (08 December 2016)
40. Dr. Bindu Menon: *Morality Tales: Reform, Democracy and Media in Malabar Home Films* (09 March 2017)
41. Dr. Ratnakar Tripathy: *A Comparative Study of the Regional Music Industries in Hindi-Speaking India: With Special Focus on Himachal Pradesh, Bihar and Haryana* (16 March 2017)
42. Ms. Prachi Dublay: राठवा-भील समाज की गीत परंपरा: कला एवं शास्त्र विमर्श (23 March 2017)
43. Dr. Jagdish Lal Dawar: *Food as Commodity and its Evolution in Mizoram* (30 March 2017)

D. MONOGRAPHS RECEIVED FROM FELLOWS

Fellows are required to submit the final findings of their research to the Institute in the form of a monograph. During the period under report, the following monographs were received:

- Dr. Shekhar Pathak: *Chipko Movement and the Tradition of Peasant Protests in Uttarakhand Himalaya* (10 April 2016)
- Professor K. Satchidanandan, *No Borders for me: Poems of Travel* (13 April 2016)'
- Shri SukumarMuralidharan: *Development and Disproportionality: Revisiting the Choice of Technology Question* (22 April 2016)

- Shri AryakGuha: *Minor Matters: Cultures of Childhood in Post-Independence India (Draft)* (29 April 2016)
- Dr. N. MalemnganbaMeetei: *Armed Forces Special Powers Act and the Protest in Manipur* (12 May 2016)
- Professor B.D. Chattopadhaya: *Spaces, Peoples and Cultures: Perceptions in Early Indian Texts* (13 June 2016)
- Dr. Anindita Mukhopadhyay: Children's Games, Adults' Gambits: Some Retrospective Moves in Colonial and Post-Colonial Bengal (27 June 2016)
- Dr. Debojyoti Das: *Memory Resilience and Climate Change Ethnography of Flood and Cyclone in South Asia* (31 July 2016)
- Shri Makarand Sathe, *Realism, Modernism, Romanticism and Experimental Marathi Theatre from 1970 to 1990* (02 August 2016)
- Professor Kundan Lal Tuteja: *Hindu Consciousness and Nationalism in Late Colonial Punjab* (12 August 2016)
- Professor A. Achuthan: *Bhartiya Loknatya aur Dalit Chetna* (19 August 2016)
- Dr. Pravesh Jung Golay: *The Autonomous Man: Kant, Sade, and Nietzsche* (19 August 2016)
- Dr. Kaustav Chakraborty: *Socio-Cultural Study of the Non-Normative Expressions in select Tribal Folk-Literature of North Bengal* (29 August 2016)
- Professor Mahesh Champaklal: *Language in Theatre, Language of Theatre (Dramatic Text Versus Performance Text in the context of Bhāsa's Ramayana Plays- An Analytical and Comparative Study)* (06 October 2016)
- Dr. Sarfraz Ahmed, *Translation, Introduction and Edition of Maathir-I-Jahangiriwith Valuable* (24 October 2016)
- Ms. Saumya Sharma: *Approach to Conservation and Restoration: Specific Focus on Cultural Heritage of Shimla* (02 November 2016)
- Professor N. Jayaram: *Theory and Method in Sociology: A Study in the Philosophy of Social Sciences* (17 November 2016)
- Professor Vijaya Shankar Varma: *Al-Kindī and his Treatise on Light Rays* (19 December 2016)
- Dr. Radhika Krishnan: *Red in the Green: Shankar Guha Niyogi (1942-1991) and Politics as the 'Great Outsider'"*(27 December 2016)

- Dr. N. Malemnganba Meetei : *Armed Forces Special Powers Act and the Protest in Manipur* (28.12.2016)
- Shri Chhering Dorje: *Theory and Practice of Heritage Conservation and Restoration of Rashtrapati Nivas, Shimla* (02 February 2017)
- Dr. Shashi Joshi: Religious Crossing and Boundaries: Gandhi, Dinabandhu Andrews and Din-Sevek Elwin" (03 March 2017)

E. VISITING PROFESSORS

Eminent scholars are invited by the Governing Body of the Institute as Visiting Professors to deliver three lectures on subjects of their specialized interest. They reside at the Institute for a month and interact with the academic community at the Institute. The following scholars visited the Institute as Visiting Professors during the period under report:

May 2016

1. Professor Sridhar Rajeswaran, Visiting Professor in Humanities, Centre for Excellence in Basic Sciences, University of Mumbai, Mumbai gave following lectures:
    - *W.B.Yeats a Dialectic of Desire and Nation: The Body of a Woman and the Lie of the Land* (06 May 2016)
    - *Girish Karnad: Beginnings, Ends and New Beginnings* (12 May 2016)
    - *Earth 1947 through the Fish-Eye: Imaging the Landscape of Memory* (23 May 2016)

June 2016

1. Professor Pulapre Balakrishnan, Director (Economist), Centre for Developing Studies, Prasanth Nagar, Trivandrum gave following lectures:
    - *Markets, Growth and Social Justice: Twenty-Five Years of Economic Reforms* (09 June 2016)
    - *Rights and Capabilities: A Reflection on Democracy and Development in India* (16 June 2016)
    - *Knowing Where You Come From: The Economy of Early Independent India Revisited* (23 June 2016)

September 2016

1. Professor Udayon Misra, House 3, Lane 3, Narikalbari, Mother Teresa Road, Guwahati gave following lectures:

- *Re-Defining the Indian Nation: The Northeast Experience-I* (06 September 2016)
- *Re-Defining the Indian Nation: The Northeast Experience-II* (20 September 2016)
- *Re-Defining the Indian Nation: The Northeast Experience-III* (26 September 2016)

F. VISITING SCHOLARS

The Institute has a scheme of Visiting Scholars under which eminent scholars are invited for a week. They deliver a lecture on a theme or topic of their choice. During the period under report, the following scholars were invited as Visiting Scholars:

April 2016

1. Shri P. Sainath, 27/43, SagarSangam, Bandra Reclamation, Mumbai delivered a lecture on:
   - *Rural India — a living journal, a Breathing Archive (The everyday lives of everyday people)"* (08 April 2016)

May 2016

1. Professor Ananta Kumar Giri, Madras Institute of Development Studies, Chennai, Tamil Nadu delivered a lecture on:
   - *With and Beyond Epistemologies from the South: Ontological Epistemology of Participation, Multi-topial Hermeneutics and the Contemporary Challenges of Planetary Realizations* (09 May 2016)
2. Professor Roy W. Perrett, 3 Elkedra Close, Hawker, ACT 2614, Australia delivered a lecture on:
   - *Memory, Doubt and the Self* (20 May 2016)
3. Professor Anirban Chakraborti, Professor and Dean, School of Computational & Integrative Sciences, Jawaharlal Nehru University, New Delhi delivered a lecture on:
   - *Physicists' Approach to Studying Socio-Economic Inequalities: Can Humans be Modelled as Atoms?* (25 May 2016)

August 2016

1. Professor Sreekala M. Nair, Head, Department of Philosophy, Sree Sankaracharya University of Sanskrit, Kalady, Kerala delivered a lecture on:
   - *Releasing Theology from Epistemological Barriers: A Postmodern Narrative* (19 August 2016)

September 2016

1. Professor Narayani Gupta, Professor (retired), Department of History and Culture, Jamia Millia New Delhi delivered a lecture on:

- *The Hall of Nations as a Metaphor for our sense of History* (14 September 2016)

October 2016

1. Professor Uma Chakravarti, Anand Niketan, House No. 4, Opposite Motilal, College, Dhola Kuaan, New Delhi delivered a lecture on :

   - *The Feminist Turn in Documentary Cinema: An Audio Visual* (18 October 2016)

November 2016

1. Shri Makarand Sathe, 5 Gautam, Prabhat Road, 9th Lane, Pune delivered a lecture on:

   - *Political and Social Aspects of Theatre during 19th Century Colonial Rule- With reference to Marathi Theatre* (15 November 2016

March 2017

1. Dr. Nalini Persram, Associate Professor, Department of Social Science, Faculty of Liberal Arts & Professional Studies, Centre for Research on Latin American and the Caribbean, York University, Toronto, Canada delivered a lecture on:

   - *Thought Through Motility: Phenomenological and Somatic Studios of the Conceptual* (17 March 2017)

G. GUEST FELLOWS

Guest Fellows are invited to the Institute for a period of three months but they are not paid any Fellowship amount. The Institute only reimburses their travel expenses and extends free hospitality. The category has been created for scholars who are unable to take up full time Fellowship for some or the other reason but are willing to spend a lesser period at the institute. During their stay, they are invited to participate in all activities and are free to use the library and other facilities. At the end of their term, they are expected to make a presentation to the academic community of the Institute.

Under this category, the following presentations were made:

May 2016

1. Professor Sujata Patel, Department of Sociology, University of Hyderabad, Hyderabad

   - *The Challenge of Doing Sociology Today* (24 June 2016)

July 2016

1. Dr. Arundhati Virmani, EHESS, Centre Norbert Elias,2 rue de la Charité, 13002 Marseille delivered a lecture on:

- *The Social Responsibility of the Historian: The case of the Annales since 1929 in perspective* (05 July 2016)

August 2016

1. Shri Prakash N. Shah, Hon. Director, Acharya Kripalani Adhyayan Kendra, Gujarat Vidyapith, Ahmedabad delivered a lecture on:

   - *Gandhi's Inner Quest: A Temporal Perspective* (02 August 2016)

October 2016

1. Dr. Parvis Ghassem-Fachandi, Department of Anthropology, RAB 306, 131 George Street, New Brunswick, NJ, 08901-1414, USA and Professor John Borneman, Department of Anthropology, Aaron Burr Hall, Princeton University, Princeton, New Jersey 08540 USA delivered a lecture on:

   - *The Syrian Refugee Crisis in Germany: Erotic Conflict and Foreigner Integration (*24 October 2016*)*

H. INTER-UNIVERSITY CENTRE FOR HUMANITIES AND SOCIAL SCIENCES

The Institute acts as the Inter-University Centre (IUC) for Humanities and Social Sciences on behalf of the University Grants Commission. The academic programmes of the IUC have three basic components: (i) the scheme of Associateship; (ii) organization of research seminars in different parts of the country; and (iii) holding of study weeks on problems of national and international interest at the Institute. The Centre invites serving teachers from the universities and colleges in the country to spend three months for three consecutive years at the Centre to: (a) complete a piece of writing that they might at the time be engaged in; (b) revise their doctoral work for publication; (c) make use of the library facilities of the Institute; and (d) interact with Fellows of the Institute and Visiting Professors and Visiting Scholars from India and abroad ho come to the Institute. The Associateship also takes part in the seminars and conferences, both national and international, which are among the regular activities of the Institute. Apart from their own work, the Associates are also expected to participate in all the academic activities of the Institute. They are required to give at least one presentation during their stay at the Centre. It is, however, optional for Associates to submit their research paper to the Institute for publication in the Institute's journals.

The following seminars were given by the IUC Associates during the period under report:

April

- Dr. Shailaja B. Wadikar (Nanded): *Spirit for Revolution in BadalSircar's Stale News* (21 April 2016)

- Dr. Baliram Raghunath Dhapase (Maharashtra): Hindi Marathi Cinema se Sambandhit Vyaktiyon ka Jivniparak Sahitya (Meri 'Filmi Atamkatha' aur 'Ekta Jeev' ke Vishesh Sandharabh Mein) (21 April 2016)
- Dr. Jagan Karade (Maharashtra): *Social Interaction Pattern of the Scheduled Castes in Maharashtra* (21 April 2016)
- Dr. Debopam Raha (West Bengal): *Fictions of Mahasweta Devi: A Postcolonial Eco-critical Study and Beyond* (21 April 2016)
- Professor Subir Biswas (Kolkata): *Ethical issues in Anthropological Research: Participant Observation* (22 April 2016)
- Dr. Reeta Kumari Sharma (Jharkhand): *Relevance of Yoga for Stress Management in Era of Globalization* (22 April 2016)
- Dr. Akash Verma(Assam): Bhojpuri Lok geeton mein Abhivyakt Samvendna ka Adhar(22 April 2016)
- Shri Melwyn Sunny Pinto (Bangalore): *Students' uses and gratifications of the Internet: A comparative analysis* (22 April 2016)
- Dr. Uma Sankar Prasad Patra *(*(Orissa): *Rural Marketing- Opportunities and Challenges in the Globalised Scenerio*(22 April 2016)
- Dr. Anup Kumar Mohanty (Orissa): *Introduction of Goods and Services Tax (GST) – Challenges Ahead*(22 April 2016)
- Dr. Amulya Kumar Tripathy (Odisha): *Modi's U.S. Policy: A Changing Scenario?* (22 April 2016)

May

- Dr. Akshaya K. Rath (Odisha): *Kali in British India* (20 May 2016)
- Dr. Kumar Birendra Singh (Jharkhand): *Chhayavadi Kavy Pratimaon Ke Nirman Mein Pustak Sameeksha Ka Yog*(20 May 2016)
- Dr. Akhilesh Kumar Shankhdhar (Manipur): *Arun Kamal ke Kavya mein Yathartha aur Karuna*(20 May 2016)
- Dr. Bhimji Khachria (Gujarat): *Gujarat ki Kanthastha Parampara me Garba*(23 May 2016)
- Dr. PoulamiAich Mukherjee (Kerala): *Carnations, Captains and communism: Exploring political posters as a source of history* (23 May 2016)
- Dr. Rohmingmawii (Mizoram) *Cultural Revitalization and the Experience of Revival Movement in Mizoram* (23 May 2016)

- Dr. Vinod Balakrishnan (Tamil Nadu): *One among us and, by Choice, a Poet; Some notes on Nissim Ezekiel* (23 May 2016)
- Dr. Narendra Kumar Behera (Odisha): *Seasonal Out-migration: A Case Study on Bargarh District of Western Odisha* (24 May 2016)
- Shri Ravendra Singh Patel (M.P.): Bharat mein Manav Vikas evam Janankikeya Labhansh24) May 2016(
- Dr. D. Venkat Ram (Andhra Pradesh)**:** *Role of Indian Agro Industry in Rural Economic Development* (24 May 2016)
- Dr. Anaya Milind Thatte (Mumbai): *Maharashtra ke Sangeet Natak aur Natya Sangeet: Ugam, VikasaurSwaroop*(24 May 2016)
- Dr. Ishmeet Kaur Chaudhary (Gujarat): *Narrating the Experiences: Oral Histories and Testimonies of the 1984 anti-sikh carnage victims* (25 May 2016)
- Dr. DarshanaPadia (Ahmedabad): *Issues and Aspects of Literacy and Education: Lessons from Dahod*(25 May 2016)
- Dr. Abhishek Kumar (Tamil Nadu): *Gora and John Tanner - A Foucauldian Reading* (25 May 2016)

June

- Dr. Preety Choudhari: *Sahitya Mein Loktantra: Hindi Lekhanaur Dalit Naivaad* (20 June 2016)
- Dr. Rashmi Chaturvedi: *Bhartiya Dalit Sahitya mein Manvadhikar* (20 June 2016)
- Dr. Virender Singh Dhillon: *Khap Ideologues: Concept of Honour in Rural Haryana* (20 June 2016)
- Dr. Yamini: *Evolution of Religion in the Modern Secular World* (21 June 2016)
- Dr. Laxmikanta Padhi: *Does Morality Depend upon Religion?* (21 June 2016)
- Ms. Meenu Gupta: *Literature as a mode of Ethical Reflection* (21 June 2016)
- Dr. Praveena Devi: Rigvedik Darshan-Gyan Tatva ke Sandharabh mein (22 June 2016)
- Professor Hardeep Singh: Avyakt Vaniyon mein 'Swarajaya Adhikari' ki Avdharana(22 June 2016)
- Dr. Nandita Banerjee: *Role of the Courtesan in Hindi Films* (22 June 2016)
- Dr. Sushil Kumar: *Problematics of the Pedagogy of English Language Teaching in Rural Areas of Punjab* (23 June 2016)
- Mr. Lalit Kumar Patra: *Educating and Motivating Global Society for Sustainable Environment* (23 June 2016)

- Mr. S N Kiran: *Images of Cities in Modern Indian Poetry in English* (23 June 2016)
- Dr. Gargi Talapatra: *Relocating 1857: The Event and the Perspectives* (24 June 2016)
- Ms. Kavita Harihar: *Some Observation on the Folk Rituals of North Karnataka* (24 June 2016)
- Dr. Sharmila Chhotaray: *Integrating and Resisting the 'Other': The Contemporary History of Emerging Tribal Identity in Tripura* (24 June 2016)

July

- Dr. Shobha Kaur (Delhi): *Sanskritik Samrajaywad Ke Samananter Gobind Sahitya Ki Prasangikta* (25 July 2016)
- Dr. Suresh Kumar (Haryana): *The Current World Order* (25 July 2016)
- Dr. Tahir H. Ansari (Assam): *The Kharagpur Chieftaincy during 18th and 19th Century* (25 July 2016)
- Dr. Sona Mandal (New Delhi): *Aspects of Women's Work in a Neoliberal India: A Comparative Perspective* (26 July 2016)
- Dr. Meghali Goswami (West Bangal): *Durga Puja Images and Pandals of Silchar: Storyteller of Tradition, Socio-Culture and Aesthetics* (26 July 2016)
- Dr. Pradyumna Sarma (Assam): *Pathsala*: The (Hi) Story So Far…. (26 July 2016)

August

- Dr. Nirpat Prasad Prajapati (M.P.): *Dalit Sahitthya: Sangharsh ke Aayam* (19 August 2016)
- Shri Pratip Chattopadhyay (West Bengal): *New Politics' Political Parties in India: Understanding Trinamul Congress* (19 August 2016)
- Dr. Pratibha Singh(Jharkhand): *Hadia in 'HO' Tribes of Jharkhand: from Rituals to Addiction* (19 August 2016)
- Dr. Ramdas P(Kerala): *Fish-Oil Technology in the British Malabar, Kerala: Transfer, Development and Impact (1880-1930)* (24 August 2016)
- Dr. B. P. Badola(H.P.): *Vedantism and Postmodern Situation: A Synthetic Approach to Knowledge* (24 August 2016)
- Dr. Mumtaz Begum (Pondicherry): *Life Rights Education : The Universal Verdict* (24 August 2016)

September

- Dr. Dipak K. Midya (West Bengal): *Social Exclusion and the vulnerability to Extremist Activity: Looking into the Ethnic Groups in the Red* Corridor in India (20 September 2016)

- Dr. Shiv Sharan Kaushik (Jaipur): *समकालीन हिंदी–उपन्यास और सांस्कृतिक संकट* (20 September 2016)
- Dr. Oindrila Ghosh (Kolkata): *The 'New Woman', Her Construction and Depiction in Thomas Hardy and Rabindranath Tagore: A Comparative Study* (21 September 2016)
- Dr. Anita Nair (Rajashthan): *सिनेमा और स्त्रीः कल, आज और कल* (21 September 2016)

October

- Dr. Virendra Singh Yadav (U.P.): *समाजवादी चिंतक डॉ. राममनोहर लिहिया भाषाई विमर्श* (18 October 2016)
- Dr. Manjeet Maan (Haryana): *Shifting Paradigm in Haryana* (18 October 2016)
- Dr. S. Chandrakiran (Mandya): *Globalisation and Kannada Literature* (18 October 2016)
- Dr. Ashutosh Pandey (U.P.): *Judicial Activism and Protection of Human Rights in India*(18 October 2016)
- Dr. Premakumara G.S. (Karnataka): *Rural Energy Security in Karnataka: Theoretical and Empirical Perspectives* (20 October 2016)
- Dr. Alok Prasad (Allahabad) *Jawaharlal Nehru's view of Caste and Caste-based Social Exclusion: A Critical Analysis* (20 October 2016)
- Dr. Brajesh Kumar Tripathi (U.P.): *भारत में राजनीतिक दल व्यवस्था एवं संविद सरकारें* (20 October 2016)
- Dr. Anil Kumar Jha (M.P.): *Dr. Ambedkar's Engagement with Environmental Questions (21 October 2016)*
- Dr. Chandrasheel Babi Tambe (Maharashtra): *An Exploration of Dalit Identity(21 October 2016)*
- Dr. Asha Susan Jacob (Kerala): *Politics of Gender and Governance: Female Personal Narratives as Sites of Cultural Discourse (21 October 2016)*
- Dr. Punam Sood (New Delhi): *उत्तर उपनिवेशवाद एवं निर्मल वर्मा (21 October 2016)*

November

- Dr. Pulak Chandra Devnath: *Socio-Economic condition of the Chakmas in CADC of Mizoram* (24 November 2016)
- Dr. Ayub Khan: *Three Characters, Three Portrayals: Images of the Hijra in Hindi Cinema* (24 November 2016)
- Dr. Harish Thakur: *Theorizing Roma Origins: A Study in Millennium Long Efflux* (24 November 2016)

- Dr. Anuradha R Chetiya: *Stochastic Processes and their Application in Music: A Review* (25 November 2016)
- Dr. Anil Kumar Thakur: *Sacred Traditions and Plants: A Case Study of Shivalik Hills, Himachal Pradesh, India* (25 November 2016)

March 2017

- Dr. Vinny Jain: *Resisting Patriarchy: the Lives of Women in Colonial Maharashtra* (22 March 2017)
- Dr. Leena Chauhan: *ब्रज में उपेक्षित अध्यात्मिक अस्थल* (22 March 2017)
- Dr. Maheshwar Mishra: *उत्तर–आधुनिक संदर्भ में वागर्थ की प्रासंगिकता* (22 March 2017)
- Dr. Sunita Jakhar: *A Doll's House: Reanalysis of the Character of Nora* (23 March 2017)
- Dr. Priyesh C.A.: *The Agenda for the Next Generation of Economic Reforms in India* (23 March 2017)
- Dr. Sudhir Bhausaheb Wadekar: *Water Dispute in the Nile River Basin* (23 March 2017)
- Dr. Mridula Sharda: *Beyond the Present Democracy: An Ideas of Deendayal Upadhyaya* (24 March 2017)
- Dr. Arun Kumar: *The Emerging Landscape of Merger and Acquisition in India* (24 March 2017)
- Dr. Jomon Mathew: *Human Rights Issues of Migrant Workers in Kerala* (24 March 2017)

I. Other Programmes

- Book Discussion on the research publications and autobiography 'Caught by the Police' of Dr. Anandswarup Gupta (18 April 2016) at IIAS. The welcome address was given by Professor Chetan Singh, Director, IIAS. Shri Deepak Gupta, Chairman, Union Public Service Commission, New Delhi and Shri MadhukarGupta, AB 96, Shah Jahan Road, Opposite Union Public Service Commission, New Delhi introduced Dr. Anandswarup Gupta and his ideas about the police. Presentations were given by Shri Zahur Zaidi, Inspector General (Administration), H.P. Police, Shimla and Dr. Ajay K. Mehra, Director (Honorary) Centre for Public Affairs, Noida, UP. Dr. Pradeep Nayak, Fellow, IIAS gave the vote of thanks.
- A talk on '*Pakistan-India Relations: The Current Situation*' by Mr. Abdul Basit, High Commissioner of Pakistan (11 May 2016). The talk was followed by a question and answer session with the Fellows.
- A Lecture on *'Milton, Macaulay and the Learned Natives: Radhanath's Mahayatra Interrupted'* by Professor Sumanyu Satpathy, Fellow, IIAS (25 July 2016) **XI. International Centre for Fellows' Review Meetings**

IV. LIBRARY

Library caters to the needs of not only to its Fellows but also provides its services to Visiting Professors, Visiting Scholars, Guest Scholars, IUC Associates, Consulting members and seminar participants etc. from all over the country. During the year, the library acquired 1265 books and subscribed to 187 printed journals.

All the housekeeping operations of the library are fully computerized. The traditional circulation system has been replaced with a fully automated issue and returned system. Library catalogue is online. By using the internet users can access library catalogue from anywhere at any time. The library has given external membership to 42 external members by charging nominal membership fees; besides 2388 walk-in users visited the library during 2016-17.

Access to E-resources: The library is member of E-Shodhsindhu and has access to wide range of e-resources under the consortium. Under the consortuam, the library has access to all major and important e-resources in the field of Humanities and Social Science. The key e-resources that the Library has access to are -Cambridge University Press, Oxford University Press, Jstor, Project Muse, Springerlink, Willy InterScience, Annual Reviews, Tylor and Frances and Ebrary etc. In addition to the e-resources available under E-shodhsindhu, library subscribes to E-journals published by Duke University press and ACLS. Three (3) E-Resource subscriptions renewed during 2016-17.

Remote Access: The Library has implemented the facility to access the e-resources from remote places. The subscribed and license resources can be accessed from anywhere at any time with the implementation of EZPROXY software.

Digitization of monograph: The Library has digitized monograph and journals published by the Institute. A separate digital Lab has been established for digitization of library materials.

V. PUBLICATION

The following books/journals are published during this period of report.

1. Gandhi and Tagore: Politics, Truth, and Conscience by Dr. Gangeya Mukherji (Co-published with Routledge)
2. Land Rights in India Policies, Movements and Challenges edited by Professor Varsha Bhagat-Ganguly(Co-published with Routledge)
3. Populism and Power Farmers' Movement in Western India: 1980-2014 by Professor D.N. Dhanagare (Co-published with Routledge)
4. Towards an Ethics and Aesthetics of the Future: Rabindranath Tagore 1930-41 by Professor Shirshendu Chakrabarti

5. Protest Movements and Citizen's Rights in Gujarat (1970-2010) by Professor Varsha Bhagat-Ganguly
6. Sikhism and Indian Society" (2nd edn.)edited and New Introduction by Professor J.S.Grewal
7. Caring to Know: Towards a Comparative Care-Based Epistemology Professor Vrinda Dalmiya (Co-published with OUP)
8. *प्रवासी श्रम इतिहास मौखिक श्रोतः भोजपुरी लोकसाहित्य* लेखक – डॉ. धनंजय सिंह
9. Vada in Theory and Practice: Studies Debates Dialogues and Discussions in Indian Intellectual Discourses Professor Radhavallabh Tripathi (Co-published with D.K. Printworld)
10. Writing the First Person: Literature, History, and Autobiography in Modern Kerala by Professor Udaya Kumar (Co-published with Permanent Black)
11. Memories of Roads: Calcutta From Colonial Urbanization to Global Modernization by Dr. Sumanta Banerjee (Co-published with OUP)
12. Performing Arts in India: Performances of/and Violence edited by Dr. Lata Singh and Dr. Guru Rao Bapat
13. The Category of Children's Cinema in India by Dr. Ajanta Sircar
14. *दलित विमर्शः संदर्भ गांधी और अंबेडकर* लेखक – प्रोफेसर गिरिराज किशोर
15. A Source Book of Early Buddhist Inscriptions of Amravati by Dr. N.J. Francis
16. Empire in the Hills: Simla, Darjeeling, Ootacamund and Mount Abu (1820-1920) by Dr. Queeny Pradhan Singh (Co-published with OUP)
17. Out of Pocket Expenditure and Health Security in Bhutan by Dr. Jayendra Sharma
18. Singular History- Reading Postmetaphysical History in Heidegger and Gadamer" by Dr. Aniruddha Chowdhury

JOURNALS

1. Summerhill: IIAS Review Vol. XX, No.1, Summer 2014, Editor: Dr. Albeena Shakil
2. Summerhill:I IAS Review Vol. XXI, No.1, Summer 2015, Editor: Professor K. Satchidanandan
3. Studies In Humanities and Social Sciences(SH&SS) Vol. XXII, No. 2, Winter 2015, Special issue on "Anxiety of Intimacy" Editor: Dr. Kaustav Chakraborty
4. हिन्दी पत्रिका 'हिमांजलि' 12वां अंक
5. हिन्दी पत्रिका 'हिमांजलि' 13वां अंक

VI. SALES AND PUBLIC RELATIONS

1. Income from the Tourist Entry Ticket

During the period from 1st April 2016 to 31st March 2017, the Institute received 2, 06,207 Tourists and earned a sum of Rs.73, 66,140.00 (Rupees Seventy Three Lakh Sixty Six Thousand One Hundred Forty Only) by charging entry fee. The Institute has also earned a sum of Rs. 5, 63,600.00 (Rupees Five Lakh Sixty Three Thousand six Hundred Only) from entry fee being charged from the vehicles coming up to the main building. Thus the total income during the above period from the tourist fee was Rs. 79, 29,780 (Rupees Seventy Nine Lakh Twenty Nine Thousand Seven Hundred Eighty Only).

2. Sale of books of various publishers at the IIAS Book Shop

The IIAS Book Shop stocks books published by leading National and International publishers. During the period under report the Book Shop sold 468 books worth Rs 1,74,392.00 (Rupees One Lakh Seventy Four Thousand Three Hundred Ninety Two Only) and the net profit from the sale of books was Rs. 43,683.00 (Rupees Forty Three Thousand Six Hundred Eighty Three Only).

3. Sale of IIAS Publications

During the period from 1st April 2016 to 31st March 2017 visitors visited to the Institute purchased books costing to Rs.1,65,023.00 (Rupees One Lakh Sixty Five Thousand Twenty Three only). The Institute has sold 372 books to various clients across the country of a sum amounting to Rs. 79,927.00 (Rupees Seventy Nine Thousand Nine Hundred Twenty Seven Only). Besides this, the Institute has also participated in World Book Fair held at New Delhi w.e.f 7-01-2017 to 15-01-2017. The Institute has earned net amount of Rs. 47,250.00 from the sale of 307 books (Rupees Forty Fifty Thousand Four Hundred Ninetyfive Only). The Institute has also sold 263 books through online worth Rs. 47,661.00 (Rupees Forty Seven Thousand Six Hundred Sixty One Only). Thus the total amount received from Sale of IIAS Publications is Rs. 3,39,861.00 (Rupees Three Lakh Thirty Nine Thousand Eight Hundred Sixty One Only).

4. Income from membership of IIAS Book Club

The Institute has also enrolled 34 members to the IIAS Book Club, and obtained a membership fee of Rs. 3,400.00 (Rupees Three Thousand Four Hundred Only).

5. Sale of Souvenirs

There are some souvenir items available for sale at the IIAS Book Shop, such as a booklet on the IIAS, T-shirts, Sweat-Shirts, Caps, Coffee Mugs, Picture Postcards, IIAS Calendars and Greeting Cards. During this period, the Institute earned a sum of Rs. 5,44,875.00 (Rupees Five Lakh Fourty Four Thousand Eight Hundred Seventy Five Only) from the gross sale of these

souvenir items and the net profit from the sale is Rs. 1,97,780.00 (Rupees One Lakh Ninety Seven Thousand Seven Hundred Eighty Only).

Thus the total break-up of income from sale of tickets and sale at the IIAS Book Shop is as under:

S.No.	Head	Amount (Rs.)
1.	Sale of IIAS Publications	3,39,861. 00
2.	Income from the Entry Ticket	79,29,780.00
3.	Net profit from sale of books (Various Publishers)	43,683. 00
4.	Net Profit from sale of Souvenirs	5,44,875. 00
5.	Income from IIAS Book Club Membership	3400.00
	Total	**88,61,599.00**

VII. DISPENSARY

The Institute houses a well equipped dispensary with a Pharmacist for dispensing the medicines and a Resident Medical Officer who looks after the health care needs of fellows, associates and other residents of the Institute including employees and their families. 3451 patients attended the dispensary during the period 2016-17. 77 emergency visits were made by the R.M.O .

VIII. SEXUAL HARASSMENT COMMITTEE

No complaint was received during the period under report, nor was there any prior complaint pending before the Committee

IX. RIGHT TO INFORMATION ACT 2005

40 applications were received during the period w.e.f. 01/04/16 to 31/03/17 under RTI ACT 2005, required information was collected and supplied to the applicants.

X. ESTATE

MAINTENANCE OF ESTATE AND SPECIAL REPAIR WORKS

During the period under report, both wings of the CPWD (Civil & Electrical) and Archaeological Survey of India (ASI) continued to attend the day-to-day maintenance work of the Institute. The details are as under:

1. CPWD (Civil) Works:

    a) The Institute released a sum of Rs. 92,207/- to CPWD (Civil) against the estimate for Provision of 4 Nos. New PVC Water Tank of 500 ltrs. capacity each with required G.I. pipe line & fitting at Zakir Hussain House, IIAS, Shimla. The work has been completed.

b) The Institute released a sum of Rs. 9,32,600/- to CPWD (Civil) against the estimate for reconstruction of damaged dry retaining wall on road from Fellow House to Juice Bar, above Military Barrack No. 1 and at other locations at IIAS, R.P. Nivas, Shimla, which has been approved by the Institute. The work is in progress.

c) The Institute released a sum of Rs. 61,41,400/- to CPWD (Civil) against the estimate for provision of M.S. Tube Railing in place wornout railing and repair of retaining wall and drainage system in the path from turn of the road near Karanchi Line to Squire Hall at IIAS Campus. The CPWD (Civil) has completed the work.

d) The Institute released a sum of Rs. 4,47,360/- to CPWD (Civil) against the estimate for provision of Chequerred Tiles and repair of drainage system in front of Stable House near Squire Hall, IIAS Campus. The CPWD (Civil) has completed the work.

e) The Institute released a sum of Rs. 46,75,930/- to CPWD (Civil) against the estimate for provision of M.S. Tube Railing in place of wornout railing from Gorkha Gate No. 2 to Souvenir Shop and from Souvenir Shop to Fellows House at IIAS Campus. The CPWD (Civil) has completed the work.

f) The Institute released a sum of Rs. 17,30,100/- to CPWD (Civil) against the estimate for repair of roof to prevent leakage and seepage of Old Tennis Court at IIAS Campus. The work is in process.

g) The Institute released a sum of Rs. 48,19,310/- on dated 31.03.2017 for Annual Repair and Maintenance of Residential Buildings of Rashtrapati Nivas, Shimla during 2016-2017.The work is in progress.

h) The Institute released a sum of Rs. 43,70,460/- on dated 31.03.2017 for Annual Repair and Maintenance of Non-Residential Buildings of Rashtrapati Nivas, Shimla during 2016-2017.The work is in progress.

i) The Institute released a sum of Rs. 13,53,315/- to CPWD (Civil) against the estimate for repair of retaining wall of Nursery (Garden) at IIAS, R.P. Nivas, Shimla, which has been approved by the Institute. The work is in progress.

2. CPWD (Electrical) Works:

a) The Institute released a sum of Rs. 13,36,424/- to CPWD (Electrical) against the estimate for repair, renovation, retrofitting, additions and up-gradation of B-Block, Prospect Hill at IIAS, R.P. Nivas Campus, Shimla, which has been approved by the Institute. The work is in progress.

b) The Institute released a sum of Rs. 9,64,221/- to CPWD (Electrical) against the estimate fixtures, fittings and compound lights and wiring, rewiring of 7 quarters in 28 Family line

and Military Barrack No. 4 at IIAS, R.P. Nivas Campus, under A/R and M/O during the period under report, which has been approved by the Institute. The work has been completed.

c) The Institute released a sum of Rs. 24,55,744/- to CPWD (Electrical) against the estimate for providing and fixing of decorative street light poles and fittings near main building at IIAS Campus. The work has been completed.

d) The Institute released a sum of Rs. 21,80,112/- to CPWD (Electrical) for maintenance of pumps, street lights, lift and Fire equipment etc. during the period under report. The work is under process.

3. Archaeological Survey of India (ASI) Works:

During the period under report, the Institute has not awarded any new restoration works to ASI as the ASI has not completed the assigned works (2013-15). The Institute has asked the ASI to complete the pending works at the earliest and submit the utilization certificates to the Institute.

4. Safai Abhiyan:

As per the directives of Government of India vide Office Memorandum No. 17-14/2014-S&S, dated 22nd March 2016, all the officers and employees of the Institute took Mass Pledge in the Reception Hall to remain committed toward cleanliness and devote time for this purpose on 17th August 2016. All the Sections voluntarily devoted two hours for the Cleanliness in their respective Section on 17th August 2016. The Photographs taken while taking Mass Pledge and also while cleaning in the Sections were uploaded on the website of the Institute.

Further, as per the directives of Government of India, the all the officers and employees of the Institute are voluntarily devoting two hours on every Monday w.e.f. 20th August 2016 in order to devote 100 hours in a year for cleanliness.

The Institute has already installed dustbins in all around the campus and it is specifically insured by the Institute to collect the garbage from the dustbins and hand over the same to the Municipal Corporation Shimla for further processing.

5. Swachhata Pakhwara (1-15 September 2016): As per the directions of the Government of India, the Swacchta Pakhwara from 1-15 September 2016 has been observed at the Institute. In this connection, the following activities/ programmes are being undertaken at the Institute:

1. In order to keep the premises and toilets clean at the Institute, the efforts were made to keep the premises litter free.

2. Two banners have been displayed (one on the main Gate of the Institute and one on the main Building).

3. With regard to weeding out the old records/old files, efforts have been initiated.

XI. ACCOUNTS AND BUDGET

The Revised Estimates for the F.Y. 2016-17 and Budget Estimated for the year 2017-18 are as under:

Rupees in Lakhs

Name of Scheme	Revised Estimated 2016-17	Budget Estimated 2017-18
Object Head -31	1385.00	2214.00
Object Head- 35	215.00	651.00
Object Head -36	970.00	1050.00
Total	**2570.00**	**3915.00**

The Accounts of the Institute for the year 2016-17 duly audited by the office of the Director General of Audit (Central) , Indian Institute of Audit and Accounts Department Chandigarh are Enclosed as **Annexure-I**

IUC ACCOUNTS

The Accounts of the Inter-University Centre for Humanities and Social Sciences (IUC) scheme are audited by chartered Accountants M.s Rakesh Kumar Kaushal and Co. Shimla . The Expenditure for the year 2016-17 was Rs. 28.68 Lakhs . The Audited statement of Accounts of the Inter-University Centre (IUC) scheme 2016-17 is placed below as **Annexure-II.**

XII. HORTICULTURE

The IIAS is housed in the erstwhile Viceregal Lodge, a heritage building and has a very beautiful garden with a variety of flowers, shrubs and trees. This is perhaps one of the highest landscape gardens in the world. The garden is dependent on rain water, which is harvested for its maintenance. Harvested rain water is being used for the maintenance of lawn and gardens as well. The following works were done during this period of time:

- Seeds for seasonal plants were sown in the nursery of the gardens of the Institute for transplanting them into the planting beds in and around the campus of the Institute and also in the official/fellows residences viz. Squire's Hall, Siddhartha Vihar, Observatory cottage, Observatory house (Guest House), Red Stone, Delvile, Bilaspur House.
- The seeds of coleus (*Plectranthus*), marigold (*Tagetes*), *Aster*, cockscomb (*Celosia*), sweet

William (*Dianthus*), globe amaranth (*Gomphrena*), phlox, *Coreopsis*, Zinnia, Cosmos, sunflower, *Amaranthus*, salvia etc., were sown in the months from March to June 2016. Similarly new seeds of plants like petunia, cinereria, cyclamen, antirhinium, salvia, *Gypsophila* and calceolaria were raised in the nursery in July 2016. New seeds of pansy, petunia, *Antirrhinum*, primula, primerose, tanacetum, ice plant, rananculus, carnation, geranium, hollyhock, lupin, calceolaria, cyclamen, godetia, lychnis, delphinium, gypsophilla (white and pink) and begonia were raised and are being transplanted to the planting beds from October to December 2016. Some of these seedlings have been transplanted into larger pots for indoor displays.

- Planting beds were prepared for transplanting planting new seedlings/Saplings in the month of late May and early June. Similarly, the planting beds in and around the premises of the Institute and in the residences of authorities, fellows, and staff members were also prepared for transplanting the seasonal plants.
- Primula, geranium, orchids, aster, ranunculus, stock, cyclamen, hydrangea etc. were transplanted into new pots from small plastic bags in rainy season. Hydrangea, rose, climbing rose, geranium, buddelleia, junipers, ivy, private, green rose, rex begonia and other cuttings were raised in the mist chamber were transplanted in P-bags for sale as well as for use in the gardens of the Institute in rainy season. Similarly, in the month of February 2017 seasonal plants like Antirrhinum, schizanthus, petunia, pansy, goddetia, clarkia, dwarf and tall cineraria, rudbeckia etc. were raised and transplanted to the planting beds of the Institute.
- Seeds of the seasonal plants were collected from the planting beds and were stored in the section for use in the next season during June- July and also in October –November.
- About 150 plants of deodara (about 50), cupressus (about 60), junipers (about 30) and some bottle brush were planted in starry cottage and back of the building to conserve the Mother Nature during the rainy season. The maintenance of these plants is also being done by the gardens. New plants, as hedge, were also planted in the back lawns of the Institute in this season. In addition to this, new plants of hydrangea, white daisy, duranta, junipers were planted in small hills near the café/ souvenir shop.
- Deep ploughing with the tiller and manually was done in the month of November and December, all along the premises of the Institute and as well as in Squire's Hall, Observatory House, Observatory Cottage, Red Stone and Fellow's residences. New saplings of various plants have been planted. During this period, cultural practices like multiplication and replanting of perennial/permanent plants like chrysanthemum, golden rod, caryopsis, achilea, phlox, gaillardia flower, daisy, peony, sunshine daydream, lily of nile etc. was done.
- New planting beds were prepared in the garden area below tennis court for planting the

cut flowers to meet out the requirements of the Institute. Mulching with pine needles for seasonal annuals and in cactus was done to save them from winter injuries due to frost. Farm yard manure was purchased and was distributed and mixed in the planting beds all along the premises of the Institute. In addition to this farm yard manure was also distributed in garden area of the Squire's Hall, Observatory Cottage, Siddhartha Vihar, Red Stone, and other buildings of the Institute during winter months.

- Old fallen and dead leaves of Himalayan oak trees are collected at different locations in the nursery of the Institute in the months of March to May. The leaves were stored in the large pit which, after degradation, is used in preparing the soil mixture.
- Regular de-weeding of the planting beds and lawns and the cleaning of the garden area is done on regular basis.
- Regular cleaning of the planting beds and cutting of the hedges, climbers has been carries out in the officers/fellows residences. Cleaning of garden area is also maintained by the garden staff.
- Regular irrigation of the planting beds in the gardens of the Institute from the rain water harvesting tanks was done daily during the hot summer days of the month.
- Lawn mowing of the lawns around the Institute, Guest House and other official/fellows residences viz. Squire's Hall, Siddhartha Vihar, Observatory cottage, Observatory house (Guest House), Red Stone, Delvile, Bilaspur House.
- Pruning and training of the climbers like whisteria, tecoma, jasmine etc. was done. Unwanted parts of hydrangea, Carla lily, day lily, agapanthus lily etc. were also removed.
- Hanging baskets in the front corridor of the Institute has been replaced by new flowering annuals.
- The brass pots are cleaned with brasso twice in a month on Monday. Maintenance of earthen pots in the main building, public entry and other flower decorations are done by the garden staff every day.
- Soil mixture was prepared for the transplantation of the seedlings from the P-bags to the earthen pots in April 2016. Soil mixture has been prepared from degraded oak leaves, clay, sand, and cow dung manure (4 kiltas of oak leaves, one kilta each of clay, sand and cow dung manure). Similarly the soil mixture was also prepared in the month of November 2016
- Moss grass was collected from the nearby forest area, as and when needed, to be used in earthen pots to conserve water and also to prevent soil erosion from the pots.
- Flower bouquets are prepared by the gardens for VIP visiting the Institute as per the directions by the authorities of the Institute.

सत्यमेव जयते

भारतीय लेखा परीक्षा तथा लेखा विभाग

कार्यालय प्रधान निदेशक लेखा परीक्षा (केन्द्रीय), चण्डीगढ़

Indian Audit & Accounts Department

Office of The Principal Director of Audit (Central), Chandigarh

क्रमांक: पी.डी.ए. (सी)/के. व्यय/SAR IIASS 2016-17/2017-18/ 4268
दिनांक: 31/10/17

सेवा मे,

सचिव,
शिक्षा विभाग,
मानव संसाधन विकास मंत्रालय,
भारत सरकार
नई दिल्ली – 110001

विषय: Indian Institute of Advanced Study, Shimla के वर्ष 2016-17 के लेखाओं पर पृथक लेखापरीक्षा प्रतिवेदन

महोदय,

कृपया Indian Institute of Advanced Study, Shimla के वर्ष 2016-17 के लेखाओं पर पृथक लेखापरीक्षा प्रतिवेदन (Separate Audit Report) संसद के दोनों सदनों के समक्ष प्रस्तुत करने हेतु सलंग्न पायें।

संसद में प्रस्तुत होने तक प्रतिवेदन को गोपनीय रखा जाए।

संसद में प्रस्तुत करने के उपरांत प्रतिवेदन की पांच प्रतियाँ इस कार्यालय को भी भेजदी जाएँ।

कृपया इस पत्र की पावती भेजें।

भवदीय,

संलग्न: उपरोक्त अनुसार

हस्ता

प्रधान निदेशक

उपरोक्त की प्रतिलिपी वर्ष 2016-17 की पृथक लेखापरीक्षा प्रतिवेदन की प्रति सहित आवश्यक कार्यवाही हेतु निदेशक, Indian Institute of Advanced Study, Rashtrapati Niwas, Shimla को प्रेषित की जाती है।

उप निदेशक (केन्द्रीय व्यय)

प्लाट न. 20-21, सेक्टर - 17ई, चण्डीगढ़ – 160017 Plot No. 20-21, Sector-17E, Chandigarh - 160017
दूरभाष/ Tel.No. 0172 - 2782020 फैक्स/ FAX No:0172 - 2782021 / 2783974 ई-मेल/ Email: pdacchandigarh@cag.gov.in

Separate Audit Report of the Comptroller & Auditor General of India on the Accounts of Indian Institute of Advanced Study, Shimla, for the year ended 31 March 2017

1. We have audited the Balance Sheet of the Indian Institute of Advanced Study, Shimla, as at 31 March 2017, Income & Expenditure Account and Receipts & Payments Account for the year ended on that date under Section 20(1) of the Comptroller & Auditor General's (Duties, Powers & Conditions of Service) Act, 1971. The audit has been re-entrusted from 2013-14 to 2017-18. These financial statements are the responsibility of the Institute's management. Our responsibility is to express an opinion on these financial statements based on our audit.

2. This Separate Audit Report contains the comments of the Comptroller & Auditor General of India (CAG) on the accounting treatment only with regard to classification, conformity with the best accounting practices, accounting standards and disclosure norms, etc. Audit observations on financial transactions with regard to compliance with the Law, Rules & Regulations (Propriety and Regularity) and efficiency-cum-performance aspects, etc., if any, are reported through Inspection Reports/ CAG's Audit Reports separately.

3. We have conducted our audit in accordance with auditing standards generally accepted in India. These standards require that we plan and perform the audit to obtain reasonable assurance about whether the financial statements are free from material mis-statements. An audit includes examining, on a test basis, evidences supporting the amounts and disclosure in the financial statements. An audit also includes assessing the accounting principles used and significant estimates made by management, as well as evaluating the overall presentation of financial statements. We believe that our audit provides a reasonable basis for our opinion.

4. Based on our audit, we report that:

   i) We have obtained all the information and explanations, which to the best of our knowledge and belief were necessary for the purpose of our audit;

   ii) The Balance Sheet and Income and Expenditure Account dealt with by this Report have been drawn up in the format prescribed by the Ministry of Human Resources Development. Government of India vide order No. 29-4/2012-FD dated 17 April 2015.

   iii) In our opinion, proper books of accounts and other relevant records have been maintained by the Indian Institute of Advanced Study, Shimla in so far as it appears from our examination of such books.

   iv) We further report that:

A Balance Sheet

A.1 Fixed Assets (Plan)

E-resources/ Digitisation/ automation: Rs.5.14 lakh

Above includes an amount of Rs.2.92 lakh on account of purchase of HP Server but the equipment was not put to use upto 31.03.2017 due to non availability of MS Windows Server operating system, hence, depreciation of Rs. 1.17 lakh was overcharged. This has resulted into overstatement of expenditure and understatement of Fixed Assets and Corpus/Capital Fund by Rs. 1.17 lakh.

A.2 Current Assets (Schedule 7): Rs.41.04 crore

Above does not include closing stock of Postage stamps of Rs.0.42 lakh as on 31.03.2017. This has resulted into understatement of current assets as well as of Corpus/ Capital Fund by Rs. 0.42 lakh.

B. Net impact of Audit comments on the Annual Accounts

Net impact of Audit comments on the Annual Accounts of Indian Institute of Advanced Study, Shim la for the year ending 31 March 2017 is as under:

i Assets understated by Rs. 1.59 lakh.

ii Surplus for the year understated by Rs. 1.17 lakh and Corpus/Capital Fund understated by Rs. 1.59 lakh.

C. General

C.I Depreciation: Rs. 45.74 lakh

The Institute has not provided depreciation on the Fixed Assets which have been purchased prior to the financial year 2014-15 and the fixed assets have been taken/ booked on actual cost of acquisition. Although the institution has started charging depreciation on the assets purchased during 2014-15 and onwards. Thus, non-charging of depreciation on fixed assets resulted in overstatement of fixed assets and overstatement of Capital fund to the extent of depreciation not charged on the fixed asset.

This was also pointed out in previous SARs but no remedial action was taken.

C.2 Indian Institute of Advanced Study, Shimla cancelled and made reverse entry of Stale Cheques of Rs. 32,281/- on 30.09.2016 which was not presented for payment by the parties although a period of more than 3 months were lapsed. Although the Institute took the credit in Cash Book but the necessary Liability for stale cheques was not created in books. Necessary rectification needs to be made in the Accounts.

C.3 Provisions of retirement benefits (Schedule 3 Current Liabilities & Provisions):

Although provisions for retirement benefits have been made in the Annual Accounts for the year 2016-17 but these provisions are not made on actuarial basis. This issue was also pointed in the previous SARs but no corrective steps were taken.

D. Grant-in-aid

Out of total available funds of Rs.55.96 crore (Non Plan: Rs. 12.33 crore Plan: Rs.43.63 crore) including Grant-in-Aid received during the year Rs.30.45 crore (Non Plan: Rs. 11.17 crore Plan Rs.19.28 crore) and previous year unspent balance of Rs.23.50 crore,(Non Plan: Rs. 1.16 crore, Plan: Rs. 22.34 crore) and interest Rs. 2.01 crore (Plan) the Institute could utilise a sum of Rs. 17.62 crore (Non Plan: Rs. 9.71 crore, Plan: Rs. 7.91 crore)leaving an unspent balance of Rs. 38.34 crore (Non Plan: Rs. 2.62 crore, Plan: Rs. 35.72 crore).

v) Subject to our observations in the preceding paragraphs, we report that the Balance Sheet and Income and Expenditure Account/Reccipts & payments Account dealt with by this report are in agreement with the books of accounts.

vi) In our opinion and to the best of our information and according to the explanations given to us, the said financial statements read together with the Accounting Policies and Notes on Accounts, and subject to the significant matters stated above and other matters mentioned in Annexure to this Audit Report give a true and fair view in conformity with accounting principles generally accepted in India:

a. In so far as it relates to the Balance Sheet, of the state of affairs of the Indian Institute of Advanced Study, Shimla as at 31st March 2017; and

b. In so far as it relates to Income & Expenditure Account, of the Surplus for the year ended on that date.

For and on behalf of the C & AG of India.

Principal Director of Audit (Central)

Place: Chandigarh **Chandigarh**

Date:

ANNEXURE TO AUDIT REPORT

1. **Adequacy of Internal Audit System.**

   Internal Audit was conducted through a firm of Chartered Accountants.

2. **Adequacy on Internal Control System**

   There was no system of confirmation of balances from debtors.

3. **Physical verification of Fixed Assets and Inventory**

   Physical Verification of Fixed Assets and Inventory for the year 2016-17 has not been conducted. Physical verification of Assets and Inventory was however, was in progress at the time of Audit.

4. **Regularity in payment of Statutory Dues**

   The Institute was found regular in depositing statutory dues.

Deputy Director

ANNEXURE TO THE MANAGEMENT LETTER

A. Balance Sheet

Fixed Assets (Schedule-4) – Rs. 1897.05 lakh

Digitisation/Autmoation and Netwroking/e-sources: Rs. 5.04 lakh

(a) Above includes revenue nature of expenses of Rs.0.91 lakh incurred on digitisation/ automation and Networking/e-source during the year 2015-16. This had resulted in understatement of revenue expenditure of Rs. 0.45 lakh {Revenue expenditure taken as capital expenditure Rs. 0.91 lakh minus depreciation charged on revenue expenditure Rs. 0.46 lakh (Rs. 61,112 x 60% + Rs. 29,718 x 30%)} and overstatement of Assets by Rs. 0.45 lakh and overstatement of Corpus fund by the like amount.

(b) As per notes to accounts the Institute has provided depreciation as per rates prescribed by the Income Tax Rules, 1962. In the Income Tax Rules, depreciation rates prescribed for software and e-journals are 100%. But the depreciation on software and e-journals of Rs. 1.04 lakh has been provided at the rate of 60%. This has resulted in understatement of expenditure by Rs. 0.563 lakhs {Rs. 1.04 lakh minus depreciation charged on revenue expenditure Rs. 0.51 lakh (Rs. 66140 x 60% + Rs.37518 x 30%)} and overstatement of Assets by Rs. 0.53 lakh and overstatement of Corpus fund by the like amount.

B. General

Investment of General Provident Fund

Investments of General Provident Fund were not made as per the pattern prescribed by the Government of India, Ministry of Finance vide notification no. F. No. 5(88)/2006-PR dated 14.08.2008 and al the investment amounting to Rs.2.80 crore was made in Fixed Deposits with Nationalized Bank. This issue was also pointed in the previous SAR but no corrective steps were taken.

Sd/-

Director

INDIAN INSTITUTE OF ADVANCED STUDY, SHIMLA
RASHTRAPATI NIVAS, SHIMLA-5

BALANCE SHEET AS ON 31st March 2017

Amount in Rupees

Source of Funds	**Schedule**	**"Current Year 2016-17"**	**"Previous Year 2015-16"**
Corpus/Capital Fund	1	238742117.80	236680376.55
Designated/ Earmarked / Endowment Funds	2	47546604.00	23428115.00
Current Liabilities & Provisions	3	441320022.43	291714520.86
Total		**727608744.23**	**551823012.41**
Application of Funds	**Schedule**	**"Current Year 2016-17"**	**"Previous Year 2015-16"**
Fixed Assets			
Tangible Assets	4	218267092.73	189705917.73
Intangible Assets	4	39653.00	66089.00
Capital Works-in-progress			
Investments from Earmarked / Endowment Funds	5		-
Long Term			
Investments - Others			
Investments - Others	6		-
Current Assets	7	410398586.50	247240386.68
Loans, Advances & Deposits	8	98903412.00	114810619.00
Total		**727608744.23**	**551823012.41**
Significant Accounting Policies	23	-	-
Contingent Liabilities and Notes to Accounts	24	-	-

Sd/-	Sd/-	Sd/-
(Rakesh Kumar Singh)	(Prem Chand)	(Ajit Kumar Chaturvedi)
Accounts Officer	Secretary	Director

INDIAN INSTITUTE OF ADVANCED STUDY
RASHTRAPATI NIVAS, SHIMLA-5

INCOME AND EXPENDITURE ACCOUNT FOR THE YEAR ENDED, 31ST MARCH 2017

Amount in Rupees

Particulars	Schedule	"Current Year 2016-17"	"Previous Year 2015-16"
INCOME			
Academic Receipts	9	0.00	0.00
Grants / Subsidies	10	147973745.43	134464173.00
Income from investments	11		0.00
Interest earned	12		0.00
Other Income	13	2639509.37	1708864.88
Prior Period Income	14	0.00	209635.00
Depreciation transferred to Capital fund Grant- in-Aid		4167380.00	9035231.50
TOTAL (A)		**154780634.80**	**145417904.38**
EXPENDITURE			
Staff Payments & Benefits (Establishment expenses)	15	70388891.00	80822911.00
Academic Expenses	16	32589218.12	32451985.19
Administrative and General Expenses	17	13310052.87	11552757.00
Transportation Expenses	18	388419.00	694995.00
Repairs & Maintenance	19	31464101.00	10282056.00
Finance costs	20	4123.56	5416.00
Depreciation	4	#REF!	9151194.65
Other Expenses	21	0.00	0.00
Prior Period Expenses	22	0.00	30855.00
TOTAL (B)		**#REF!**	**144992169.84**
Balance being excess of Income over Expenditure (A-B)		#REF!	425734.54
Transfer to / from Designated Fund		-	-
Building fund		-	-
Others (specify)		-	-
Balance Being Surplus / (Deficit) Carried to Capital Fund		-	-
Significant Accounting Policies	23	-	-
Contingent Liabilities and Notes to Accounts	24	-	-

Sd/-	Sd/-	Sd/-
(Rakesh Kumar Singh)	(Prem Chand)	(Ajit Kumar Chaturvedi)
Accounts Officer	Secretary	Director

INDIAN INSTITUTE OF ADVANCED STUDY
RASHTRAPATI NIVAS, SHIMLA-5

SCHEDULE -1 CORPUS/CAPITAL FUND

Amount in Rupees

Particulars		**"Current Year, 2016-17"**	**"Previous Year, 2015-16"**
	Balance at the beginning of the year	236680376.55	236254642.01
Add:	Contributions towards Corpus/Capital Fund		
Add:	Grants from UGC, Government of India and State Government to the extent utilized for capital expenditure		
Add:	Assets Purchased out of Earmarked Funds		
Add:	Assets Purchased out of Sponsored Projects, where ownership vests in the institution		
Add:	Assets Donated/Gifts Received		
Add:	Other Additions		
Add:	Excess of Income over expenditure trasferred from the Income & Expenditure Account	2061741.25	425734.54
Total		**238742117.80**	**236680376.55**
(Deduct)	Deficit transferred from the Income & expenditure Account		
Balance at the year end		**238742117.80**	**236680376.55**

INDIAN INSTITUTE OF ADVANCED STUDY
RASHTRAPATI NIVAS, SHIMLA-5

SCHEDULE 2 - DESIGNATED/ EARMARKED / ENDOWMENT FUNDS/CAPITAL GRANT

Amount in Rupees

Particulars	Fund wise Breakup					Total	
	Capital Grant in aid	Fund AAA	Fund BBB	Fund CCC	Endowment Funds	Current Year	Previous Year
A.							
a) Opening balance	23428115.00						20657552.50
b) Additions during the year	28285869.00						11805794.00
c) Income from investments made of the funds							
d) Accrued Interest on investments/Advances							
e) Interest on Savings Bank a/c							
f) Other additions (Specify nature)							
Total (A)	**51713984.00**	**0**	**0**	**0**	**0**		**32463346.50**
B.							
Utilisation/Expenditure towards objectives of funds							
ii) Capital Expenditure							
ii) Revenue Expenditure							
Less Depreciation	4167380.00						9035231.50
Total (B)	**47546604.00**	**0**	**0**	**0**	**0**		**23428115.00**
Closing balance at the year end (A - B)	47546604.00						
Represented by							
Cash And Bank Balances							
Investments							
Interest accrued but not due							
Fixed Assets	47546604.00						23428115.00
Total							

INDIAN INSTITUTE OF ADVANCED STUDY
RASHTRAPATI NIVAS, SHIMLA-5

SCHEDULE 3- CURRENT LIABILITIES & PROVISIONS

Amount in Rupees

	"Current Year 2016-17"	"Previous Year 2015-16"
"A. CURRENT LIABILITIES"		
1. Deposits from staff		
2. Deposits from students		
3. Sundry Creditors a) For Goods & Services b) Others		
4. Deposit-Others (including EMD, Security Deposit)		
5. Statutory Liabilities (GPF, TDS, WC TAX, CPF, GIS, NPS):		
a) Overdue	42653.00	42653.00
b) Others		
6. Other Current Liabilities		
a)Salaries	4651474.00	3570034.00
b)Receipts against sponsored projects		
c) Receipts against sponsored fellowships & scholarships		
d)Unutilised Grants	383393841.43	235025832.86
e) Unutilised Grants of MOC	202157.00	202157.00
f) Other funds		
g) Other liabilities		
h)KKS		2931.00
I) TDS payable		450.00
j) NPS payable	121039.00	75101.00
k) Anup service Station		
l) Expenses Payable	3464041.00	3924848.00
m) Payable for IC4HD	97558.00	
Total (A)	**391972763.43**	**242844006.86**
B. PROVISIONS		
1. For Taxation		
2. Gratuity	31590383.00	32726241.00
3. Superannuation Pension	1700000.00	1200000.00
4. Accumulated Leave Encashment	16056876.00	14944273.00
5. Trade Warranties/Claims		
6. Others (Specify)		
Total (B)	**49347259.00**	**48870514.00**
Total (A+ B)	**441320022.43**	**291714520.86**

INDIAN INSTITUTE OF ADVANCED STUDY
RASHTRAPATI NIVAS, SHIMLA-5

SCHEDULE 4: FIXED ASSETS ACQUIRED OUT OF GRANT IN AID

A. Fixed Assets since inception of Institute

Particular	Rate of depreciation	Opening Balance 01.04.16	Additions upto 01.04.2016 to 31.03.2017	Deletion 01.04.2016 to 31.03.2017	Total	Depreciation for the Year	Written Down value on 31.03.2017
Office Equipment		7742537.63			7742537.63		7742537.63
Electronic Equipment		10123527.00			10123527.00		10123527.00
Furniture & Fittings		6923261.75			6923261.75		6923261.75
Vehicles		2838064.64			2838064.64		2838064.64
Library Equipment		5926142.38			5926142.38		5926142.38
Other Equipment		814603.20			814603.20		814603.20
Publication Equipment		839040.02			839040.02		839040.02
Library Books & Periodical		137892532.43			137892532.43		137892532.43
Source Book Scheme		247622.12			247622.12		247622.12
Equipment Source Book Scheme		41087.56			41087.56		41087.56
Garden Equipment		145805.00			145805.00		145805.00
Audio Visual		422500.00			422500.00		422500.00
Project towards the centre for the study of Indian Civilization		518442.00			518442.00		518442.00
Word Processrs		1304921.00			1304921.00		1304921.00
Fixed Assets under IC4HD		0.00			0.00		0.00
Electronic Assets under IC4HD		1603450.00			1603450.00		1603450.00
Library Books & Periodical		103748.00			103748.00		103748.00
Furniture & Fittings		516537.00			516537.00		516537.00
Sub-Total (A)		**178003821.73**			**178003821.73**		**178003821.73**

Fixed assets
B. Plan

Particular	Rate of depreciation	Opening Balance 01.04.16	Additions upto 01.04.2016 to 31.03.2017	Deletion 01.04.2016 to 31.03.2017	Total	Depreciation for the Year	Written Down value on 31.03.2017
Library Books and Equipments	10	7421502.00	7965819.00	0.00	15387321.00	1538732.00	13848589.00
Word processors for Fellows	20	47219.00	0.00	0.00	47219.00	9444.00	37775.00
EPBX (Office Equipment)	7.5	227953.00	0.00	0.00	227953.00	17096.00	210857.00
Printer	20	6545.00	0.00	0.00	6545.00	1309.00	5236.00
Crokery		54440.00	0.00	0.00	54440.00	4083.00	50357.00
LED	7.5	97128.00	0.00	0.00	97128.00	7285.00	89843.00
Bed	7.5	90801.00	0.00	0.00	90801.00	6810.00	83991.00
Aluminum ladder	5	36167.00	0.00	0.00	36167.00	1808.00	34359.00
Bedding and Linen(Capital Exp. Plan)	7.5	331866.00	0.00	0.00	331866.00	24890.00	306976.00
Bedding and Linen(Capital Exp Plan SC)	7.5	253922.00	0.00	0.00	253922.00	19044.00	234878.00
Biometric Attendance Machine(Cap exp)	5	32692.00	13466.00	0.00	46158.00	2308.00	43850.00
Electronic Podium(Cap exp ST)	5	316431.00	0.00	0.00	316431.00	15822.00	300609.00
Furniture and Fiture (Cap Exp)	7.5	54863.00	0.00	0.00	54863.00	4115.00	50748.00
Furniture and Fixture (Cap Exp ST)	7.5	235697.00	0.00	0.00	235697.00	17677.00	218020.00
Professional LED (Cap Exp)	7.5	209997.00	0.00	0.00	209997.00	15750.00	194247.00
Video Conferencing System (cap exp Plan)	8	227850.00	0.00	0.00	227850.00	18228.00	209622.00
e-resources /Digitation /automation and Networking	40	504493.00	351543.00	0.00	856036.00	342414.00	513622.00
File Cabnet	7.5	0.00	64605.00	0.00	64605.00	4845.00	59760.00
Electronic compact scale	7.5	0.00	2016.00	0.00	2016.00	151.00	1865.00
hand held metal detector	7.5	0.00	5850.00	0.00	5850.00	439.00	5411.00
Journal	40	0.00	2648419.00	0.00	2648419.00	1059368.00	1589051.00

Q-Manager	7.5	0.00	35438.00	0.00	35438.00	2658.00	32780.00
Shoe cleaning Machine	7.5	0.00	5288.00	0.00	5288.00	397.00	4891.00
WAP321 warlessN select-ableband	8	0.00	207900.00	0.00	207900.00	16632.00	191268.00
Mono Block Pump	5	0.00	221315.00	0.00	221315.00	11066.00	210249.00
Hand Dryer	5	0.00	55000.00	0.00	55000.00	2750.00	52250.00
Fire Alram System	5	0.00	13964030.00	0.00	13964030.00	698202.00	13265828.00
Geyser and Exhaust Fan	5		488210.00	0.00	488210.00	24411.00	463799.00
Bar Code scanner	7.5	0.00	18692.00	0.00	18692.00	1402.00	17290.00
Sub-Total(B)		**10149566.00**	**26047591.00**	**0.00**	**36197157.00**	**3869136.00**	**32328021.00**

C. Non- Plan

	Rate of depreciation	**Opening Balance 01.04.16**	**Additions upto 01.04.2016 to 31.03.2017**	**Deletion 01.04.2016 to 31.03.2017**	**Total**	**Depreciation for the Year**	**Written Down value on 31.03.2017**
Library Books and Equip-ments	10	2175.00	0.00	0.00	2175.00	218.00	1957.00
Aluminum Ladder	5	23217.00	0.00	0.00	23217.00	1161.00	22056.00
Garden Equipments	5	61384.00	0.00	0.00	61384.00	3069.00	58315.00
Grass Cutter	5	26489.00	32000.00	0.00	58489.00	2924.00	55565.00
Mike	5	40808.00	0.00	0.00	40808.00	2040.00	38768.00
Computer	20	0.00	293900.00	0.00	293900.00	58780.00	235120.00
Crokery	7.5	0.00	12800.00	0.00	12800.00	960.00	11840.00
Curtans and Rods	7.5	0.00	53747.00	0.00	53747.00	4031.00	49716.00
Electronic applicance	7.5	0.00	12500.00	0.00	12500.00	938.00	11562.00
Printer	20	0.00	60900.00	0.00	60900.00	12180.00	48720.00
Telephone	7.5	0.00	6038.00	0.00	6038.00	453.00	5585.00
Kitchen Cabinets	7.5	0.00	80150.00	0.00	80150.00	6011.00	74139.00
Tulu pump	7.5	0.00	11486.00	0.00	11486.00	861.00	10625.00
EPBX (Office Equipment)	7.5	0.00	13250.00	0.00	13250.00	994.00	12256.00
vacum cleaner	7.5	0.00	99687.00	0.00	99687.00	7477.00	92210.00
Sub total (C)		**154073.00**	**676458.00**	**0.00**	**830531.00**	**102097.00**	**728434.00**

D. Fixed Assets under IC4HD

	Rate of depreciation	Opening Balance 01.04.16	Additions upto 01.04.2016 to 31.03.2017	Deletion 01.04.2016 to 31.03.2017	Total	Depreciation for the Year	Written Down value on 31.03.2017
Electronic Assets under IC4HD	7.5	316474.00	0.00	0.00	316474.00	23736.00	292738.00
Library Books & Periodical	10	186097.00	0.00	0.00	186097.00	18610.00	167487.00
Sports assets	5	128244.00	0.00	0.00	128244.00	6412.00	121832.00
Office equipment (hot cases)	7.5	33966.00	0.00	0.00	33966.00	2547.00	31419.00
Audio System	7.5	0.00	1561820.00	0.00	1561820.00	117137.00	1444683.00
furniture (equipment)	7.5	16920.00	0.00	0.00	16920.00	1269.00	15651.00
Sub-Total (D)		**681701.00**	**1561820.00**	**0.00**	**2243521.00**	**169711.00**	**2073810.00**
Total I (A+B+C+D)		**188989161.73**	**28285869.00**	**0.00**	**217275030.73**	**4140944.00**	**213134086.73**

(b) Intangible assets	**Rate of depreciation**	**Opening Balance 01.04.16**	**Additions upto 01.04.2016 to 31.03.2017**	**Deletion 01.04.2016 to 31.03.2017**	**Total**	**Depreciation for the Year**	**Written Down value on 31.03.2017**
Networking Facility	40	66089.00	0.00	0.00	66089.00	26436.00	39653.00
Sub total (b)		**66089.00**	**0.00**	**0.00**	**66089.00**	**26436.00**	**39653.00**

Schedule-4(ii) Fixed Assets acquired out of Own funds

Fixed Assets acquired out of own funds							
Carpets	7.5	591149.00	0.00	0.00	591149.00	44336.00	546813.00
CCTV Camera (with Com-puter)	7.5	84291.00	3673565.00	0.00	3757856.00	281839.00	3476017.00
Honey Wall outdoor Fixed Camera	5	26016.00	0.00	0.00	26016.00	1301.00	24715.00
Q Manager	7.5	0.00	39600.00	0.00	39600.00	2970.00	36630.00
Café Software	40	0.00	54950.00	0.00	54950.00	21980.00	32970.00
LED	7.5	0.00	31000.00	0.00	31000.00	2325.00	28675.00
LED fixure	5	0.00	1023843.00	0.00	1023843.00	51192.00	972651.00
Ticket booth Machine	5	15300.00	0.00	0.00	15300.00	765.00	14535.00
Sub total (ii)		**716756.00**	**4822958.00**	**0.00**	**5539714.00**	**406708.00**	**5133006.00**
Grand total(GOI +Own fund)Tangible assets)		**189705917.73**	**33108827.00**	**0.00**	**222814744.73**	**4547652.00**	**218267092.73**
Grand total (Tangeible +intangible		**189772006.73**	**33108827.00**		**222880833.73**	**4574088.00**	**218306745.73**

INDIAN INSTITUTE OF ADVANCED STUDY
RASHTRAPATI NIVAS, SHIMLA-5

SCHEDULE 5 : INVESTMENTS FROM EARMARKED/ENDOWMENT FUNDS

Amount in Rupees

	"Current Year 2016-17"	"Previous Year 2015-16"
1 In Central Government Securities	-	-
2 In State Government Securities	-	-
3 Other approved Securities	-	-
4 Shares	-	-
5 Debentures and Bonds	-	-
6 Term Deposits with Banks	-	-
7 Others (to be specified)	-	-
Total	0	0

SCHEDULE 5 (A) INVESTMENTS FROM EARMARKED/ENDOWMENT FUNDS (FUND WISE)

Sl. No.	Funds	"Current Year 2016-17"
1	-	-
2	-	-
3	-	-
4	-	-
5	Endowment Fund Investments	-
	Total	0

INDIAN INSTITUTE OF ADVANCED STUDY
RASHTRAPATI NIVAS, SHIMLA-5

SCHEDULE 6-INVESTMENTS-OTHERS

Amount in Rupees

	"Current Year, 2016-17"	"Previous Year, 2015-16"
1. In Central Government Securities	-	-
2. In State Government Securities	-	-
3. Other approved Securities	-	-
4. Shares	-	-
5. Debentures and Bonds	-	-
6. Others (to be specified)	-	-
Total	0	0

INDIAN INSTITUTE OF ADVANCED STUDY
RASHTRAPATI NIVAS, SHIMLA-5

SCHEDULE 7-CURRENT ASSETS

Amount in Rupees

	"Current Year, 2016-17"	**"Previous Year, 2015-16"**
1, Stock:		
a) Stores and Spares	-	-
b) Loose Tools		
c) Publications	5098778.00	4323699.12
d) Laboratory chemicals, consumables and glass ware	-	-
e) Building Material	-	-
f) Electrical Material	-	-
g) Stationery	-	-
h) Water supply material	-	-
i) Souvenir Item	842316.00	1106216.00
2. Sundry Debtors		
a) Debts Outstanding for a period exceeding six months(cosidered goods)	447560.75	447560.75
b) Others	42311.50	-
3. Cash and Bank Balances		
Cash in Hand	28630.00	32505.00
a) With Scheduled Banks:	-	-
- In Current Accounts	-	47638937.94
- In term deposit Accounts	207565720.00	72405810.00
-In Savings Accounts	196370307.25	121282694.87
b) With non-Scheduled Banks:	-	-
- In term deposit Accounts	-	-
- In Savings Accounts	-	-
4. Post Office- Saving Accounts	-	-
Misc advance(IC4HD)	2963.00	2963.00
Grant receivable form GOI	-	-
Drafts and IPO in hand	-	-
TOTAL	**410398586.50**	**247240386.68**

INDIAN INSTITUTE OF ADVANCED STUDY
RASHTRAPATI NIVAS, SHIMLA-5

SCHEDULE 8 - LOANS. ADVANCES & DEPOSITS

Amount in Rupees

	"Current Year, 2016-17"	"Previous Year, 2015-16"
1. Advances to employees: (Non-interest bearing)		
a) Salary	-	-
b) Festival	93150.00	129600.00
c) Medical Advance	-	-
d) Other (to be specified)	-	-
i) WCA	27900.00	19800.00
ii) Bad Climate and Flood Advanced	431.00	431.00
2. Long Term Advances to employees: (Interest bearing)		
a) Vehicle loan	63000.00	69000.00
b) Home loan	-	-
c) Others (to be specified)	2444442.00	2444442.00
Computer Advance	477000.00	187000.00
3. Advances and other amounts recoverable in cash or in kind or for value to be received:		
a) On Capital Account .	-	-
b) to Suppliers	-	-
c) Others (to CPWD)	84963227.00	106709473.00
Recoverble from IUC	5873687.00	4357965.00
Recoverable from others	106219.00	106219.00
4. Prepaid Expenses		
a) Insurance	-	-
b) Other expenses(Prepaid e-journal subscription)	-	-
c) Prepaid AMC(ic4hd)	-	-
5. Deposits		
a) Telephone	36200.00	36200.00
b) Lease Rent	-	-
c) Electricity/Security with Jawahar Book Binder	20000.00	20000.00
d) AICTE, if applicable	-	-
e) Guests	2400.00	2400.00
i) Security with Vineet Gas Agency	19000.00	19000.00
ii) Security with Municipal Corporation	980.00	980.00
iii) Deposit for fuel	100000.00	100000.00
iv) Others	4633.00	4633.00
v) Excess Payment of Leave Encashment Recoverable	-	33434.00
TDS recoverable	95237.00	95237.00
Books Under Printing	9986.00	74701.00
Advance Tax	500000.00	200000.00
Income Tax Recoverable	65920.00	65920.00
TDS (Assesment Year 2016-17)	-	58190.00

Recoverable from mess	-	75994.00
6. Income Accrued:	-	-
a) On Investments from Earmarked/ Endowment Funds	-	-
b) On Investments-Others	-	-
c) On Loans and Advances	-	-
d) Others (includes income due unrealized)	-	-
7. Other - Current assets receivable from UGC/sponsored projects	-	-
a) Debit balances in Sponsored Projects	-	-
b) Debit balances in Sponsored Fellowships & Scholarships	-	-
c) Grants Receivable from GOI	4000000.00	-
d) Other receivables from UGC	-	-
8. Claims Receivable	-	-
TOTAL	**98903412.00**	**114810619.00**

Note: 1. If revolving funds have been created for House Building, Computer and Vehicle advances to employees, the advances will appear as part of Earmarked/endowment Funds. The balance against these interest -bearing advances will not appear in this schedule.

INDIAN INSTITUTE OF ADVANCED STUDY
RASHTRAPATI NIWAS, SHIMLA-5

SCHEDULE 9- ACADEMIC RECEIPTS

Amount in Rupees

	"Current Year, 2016-17"	"Previous Year, 2015-16"
FEES FROM STUDENTS		
Academic		
1. Tuition fee	-	-
2. Admission fee	-	-
3. Enrolment fee	-	-
4. Library Admission fee	-	-
5. Laboratory fee	-	-
6. Art & Craft fee	-	-
7. Registration fee	-	-
8. Syllabus fee	-	-
Total (A)	0	0
Examinations		
1. Admission test fee	-	-
2. Annual Examination fee	-	-
3. Mark sheet, certificate fee	-	-
4. Entrance examination fee	-	-
Total (B)	0	0
Other Fees		
1. Identity card fee	-	-
2. Fine/ Miscellaneous fee	-	-
3. Medical fee	-	-
4. Transportation fee	-	-
5. Hostel fee	-	-
Total (C)	0	0
Sale of Publications		
1. Sale of Admission forms	-	-
2. Sale of syllabus and Question Paper, etc.	-	-
3. Sale of prospectus including admission forms	-	-
Total (D)	0	0
Other Academic Receipts		
1. Registration fee for workshops, programmes	-	-
2, Registration fees (Academic Staff College)	-	-
Total (E)	0	0
GRAND TOTAL (A+B+C+D+E)	0	0

Note:
In case fees like entrance fee, subscriptions etc are material and are in the nature of capital receipts, such amount should be recognized to the Capital Fund. Otherwise such fees will be appropriately incorporated in this schedule

INDIAN INSTITUTE OF ADVANCED STUDY
RASHTRAPATI NIVAS, SHIMLA-5

SCHEDULE 10 - GRANTS / SUBSIDIES (IRREVOCABLE GRANTS RECEIVED)

Amount in Rs. Ps.

Particulars	Plan		Total Plan	Non Plan	"Current Year 2016-17"	"Previous Year 2015-16"
	Govt. of India	Specific Schemes IC4HD		GOI		
					Total	Total
Balance B/F	80666184.00	142717141.00	223383325.00	11642507.86	235025832.86	77468714.86
Add: Receipts during the year	192805000.00		192805000.00	111753000.00	304558000.00	296111500.00
Interest Earned	4978665.00	15090958.00	20069623.00	0.00	20069623.00	7715585.00
Transfer to IC4HD from Plan	-	-	0.00	0.00	0.00	93621027.00
Transfer to IC4HD from Plan	-	-	0.00	0.00	0.00	10000000.00
Transfer from Plan to IC4HD	-	-	0.00	0.00	0.00	-93621027.00
Transfer from Plan to IC4HD	-	-	0.00	0.00	0.00	-10000000.00
Total	278449849.00	157808099.00	436257948.00	123395507.86	559653455.9	381295799.86
Less: Refund to UGC /GOI			0.00		0.00	0.00
Balance	278449849.00	157808099.00	436257948.00	123395507.86	559653455.86	381295799.86
Less: Utilised for Capital expenditure (A)	26047591.00	1561820.00	27609411.00	676458.00	28285869.00	11805794.00
Balance	252402258.00	156246279.00	408648537.00	122719049.86	531367586.86	369490005.86
Less: Utilized for Revenue Expenditure (B)	51497737.00	0.00	51497737.00	96476008.43	147973745.43	134464173.00
Balance C/F (C)	200904521.00	156246279.00	357150800.00	26243041.43	383393841.43	235025832.86

INDIAN INSTITUTE OF ADVANCED STUDY

RASHTRAPATI NIVAS, SHIMLA-5

SCHEDULE 11: INCOME FROM INVESTMENTS

Particulars	Earmarked / Endowment Funds		Other Investments	
	Current Year, 2016-17	Previous Year, 2015-16	Current Year, 2016-17	Previous Year, 2015-16
1. Interest a. On Government Securities b. Other Bonds/Debentures 2. Interest on Term Deposits 3. Income accrued but not due on Term Deposits/Interest bearing advances to employees - 4. Interest on Savings Bank Accounts 5. Others (Specify)				
Total	0.00	0.00	0.00	0.00
Transferred to Earmarked/Endowment Funds				
Balance	Nil	Nil		

Note: Interest accrued but not due on Term Deposits from HBA fund, conveyance advance fund and Computer Advance fund and on interest bearing advances to employees will be included here (Item 3), only where Revolving funds (EMF) for such advances have been set up.

SCHEDULE 12: INTEREST EARNED

Amount in Rupees

Particulars	Current Year, 2016-17	Previous Year, 2015-16
1. On Savings Accounts with scheduled banks	–	–
2 On Loans	–	–
a. Employees/Staff	–	–
b. Others(FDR)	–	–
3. On Debtors and Other Receivables	–	–
Total	–	–
Note: Please refer to schedule-10 .		

INDIAN INSTITUTE OF ADVANCED STUDY
RASHTRAPATI NIVAS, SHIMLA-5

SCHEDULE 13: OTHER INCOME

Items of material amounts included in Miscellaneous Income should be separately disclosed.

A. Income from Land & Buildings	**"Current Year, 2016-17"**	**"Previous Year, 2015-16"**
1. Hostel Room Rent		
2, License fee	-	-
3. Hire Charges of Auditorium/Play ground/Convention Centre, etc	-	-
4. Electricity charges recovered	-	-
5. Water charges recovered .	-	-
Total	0.00	
B. Sale of Institute's publications*	592550.45	663947.88
C. Income from holding events		
1. Gross Receipts from annual function/ sports carnival	-	-
Less: Direct expenditure incurred on the annual function/ sports carnival	-	-
2. Gross Receipts from fetes	-	-
Less: Direct expenditure incurred on the fetes	-	-
3, Gross Receipts for educational tours	-	-
Less: Direct expenditure incurred on the tours	-	-
4. Others (to be specified and separately disclosed)	-	-
Total	0.00	0.00
D. Others		
1. Income from consultancy	-	-
2. RTI fees	-	-
3. Income from Royalty	-	-
4. Sale of application form (recruitment)	-	-
5. Misc. receipts (Sale of tender form, waste paper, etc.)	34978.00	118645.00
6. Profit on Sale/disposal of Assets	-	-
a) Owned assets	-	-
b) Assets received free of cost	-	-
7. Grants/Donations from Institutions, Welfare Bodies and International Organizations	-	-
8 Others (specify)		
Rent for other specfic facility extended	74518.00	-
Guest House	500512.87	435823.00
Pvt use of vehicle		-
sale of plant	7990.00	-
liabrary membership	74140.00	36000.00
Sale of unusable items	-	0.00
Sports membership fee	-	0.00
Misellaneous income	-	0.00
Net Income of Ticket booth	1354820.05	454449.00
Total Others (specify)	2011980.92	926272.00
Total (D)	2046958.92	1044917.00
Grand Total (A+B+C+D)	**2639509.37**	**1708864.88**

INDIAN INSTITUTE OF ADVANCED STUDY
RASHTRAPATI NIVAS, SHIMLA-5

SCHEDULE 14: PRIOR PERIOD INCOME

Amount in Rupees

Particulars	Current Year, 2016-17	Previous Year, 2015-16
1. Academic Receipts	–	–
2. Income from Investments	–	–
3.Interest earned	–	–
4. Other Income Adjustment	–	209635.00
Total		**209635.00**

INDIAN INSTITUTE OF ADVANCED STUDY
RASHTRAPATI NIVAS, SHIMLA-5

SCHEDULE 15 - STAFF PAYMENTS & BENEFITS (ESTABLISHMENT EXPENSES)

These shall be classified separately for teaching and non-teaching staff; adhoc staff, Arrears of DA, Salary arrears due to increment shall be shown separately

Amount in Rs. Ps.

	"Current Year, 2016-17"			"Previous Year, 2015-16"		
	Plan	**Non Plan**	**Total**	**Plan**	**Non Plan**	**Total**
a) Salaries and Wages	-	44994361.00	44994361.00	1183713.00	43101416.00	44285129.00
b) Allowances and Bonus	-		0.00	-		0.00
c) Contribution to Provident Fund/NPS	-	1250276.00	1250276.00	-	762739.00	762739.00
d) Contribution to Other Fund (specify) Pension Fund	-	500000.00	500000.00	-	1200000.00	1200000.00
e) Staff Welfare Expenses	-		0.00	-		0.00
f) Retirement and Terminal Benefits	-	1625728.00	1625728.00	-	12431278	12431278.00
g) LTC facility	-	152066.00	152066.00	-	24681.00	24681.00
h) Medical facility	-	569410.00	569410.00	-	334187.00	334187.00
i) Children Education Allowance	-	599934.00	599934.00	-	733831.00	733831.00
j) Honorarium	-	629365.00	629365.00	-	336706.00	336706.00
1) Others (specify) Pension	-	19800185.00	19800185.00	-	20594170.00	20594170.00
Liveries	-	194179.00	194179.00	-	120190.00	120190.00
Hospitality	-	73387.00	73387.00	-		
TOTAL	0.00	70388891.00	70388891.00	1183713.00	79639198.00	80822911.00

INDIAN INSTITUTE OF ADVANCED STUDY

RASHTRAPATI NIVAS, SHIMLA-5

SCHEDULE 15 A - EMPLOYEES RETIREMENT AND TERMINAL BENEFITS

Amount in Rupess

	Pension	**Gratuity**	**Leave Encashment**	**Total**
Opening Balance as on Addition: Capitalized value of Contributions Received from other Organizations Total (a) Less: Actual Payment during the Year (b) Balance Available on 31,03 c (a-b) Provision required on 31.03 as per Actuarial Valuation (d) A. Provision to be made in the Current year (d-c) B. Contribution to New Pension Scheme C. Medical Reimbursement to Retired Employees D. Travel to Hometown on Retirement E. Deposit Linked Insurance Payment				
Total (A+B+C+D+E)				

Note:

1. The total (A+B+C+D+E) in this sub schedule wiir&eVieTigure against Retirement and Terminal Benefits in Schedule 15.

2, Items B,C,D&E will be accounted on accrual basis and will include bills preferred but outstanding for payment on 31/3.

INDIAN INSTITUTE OF ADVANCED STUDY
RASHTRAPATI NIVAS, SHIMLA-5

SCHEDULE 16 - ACADEMIC EXPENSES

Amount in Rupees

	"Current Year, 2016-17"			"Previous Year, 2015-16"		
	Plan	**Non Plan**	**Total**	**Plan**	**Non Plan**	**Total**
a) Laboratory expenses	-		**0.00**	-	-	**0.00**
b) Field work/Participation in Conferences			**0.00**	-	-	**0.00**
c) Expenses on Seminars/Workshops	7058366.00	4000.00	**7062366.00**	9587622.00	21950.00	**9609572.00**
d) Payment to visiting faculty	-	-	**0.00**	-	-	**0.00**
e) Examination	-	-	**0.00**	-	-	**0.00**
f) Student Welfare expenses	-	-	**0.00**	-	-	**0.00**
g) Admission expenses	-	-	**0.00**	-	-	**0.00**
h) Convocation expenses	-	-	**0.00**	-	-	**0.00**
i) Publications	-	-	**0.00**	-	-	**0.00**
Opening stock = 4323699.12	-	-	**0.00**	-	-	**0.00**
Additions=946139	-	-	**0.00**	-	-	**0.00**
Total=5269838.12	-	-	**0.00**	-	-	**0.00**
closing stock=5098778	-	-	**0.00**	-	-	**0.00**
"Net Loss = 171060.12 Transferred to schedule-13"	-	-	**171060.12**	-	-	**1189854.19**
	-	-		-	-	
j) Stipend/means-cum-merit scholarship	-	-	**0.00**	-	-	**0.00**
k) Subscription Expenses	-	-	**0.00**	-	-	**0.00**
i) Others (specify) Fellowship to fellows	11108054.00	11019351.00	**22127405.00**	10409397.00	9572762.00	**19982159.00**
ii) National fellowship to fellows	3228387.00	-	**3228387.00**	1670400.00	0.00	**1670400.00**
TOTAL	**21394807.00**	**11023351.00**	**32589218.12**	**21667419.00**	**9594712.00**	**32451985.19**

INDIAN INSTITUTE OF ADVANCED STUDY
RASHTRAPATI NIVAS, SHIMLA-5

SCHEDULE 17 - ADMINISTRATIVE AND GENERAL EXPENSES

Amount in Rupees

	"Current Year, 2016-17"			"Previous Year, 2015-16"		
	Plan	**Non Plan**	**Total**	**Plan**	**Non Plan**	**Total**
A Infrastructure						
a) Electricity and power	-	5216574.00	5216574.00	582013.00	1952620.00	2534633.00
b) Water charges	-	789687.00	789687.00	44594.00	787545.00	832139.00
c) Insurance	-	95991.00	95991.00	-	36520.00	36520.00
d) Rent, Rates and Taxes (including property tax)	-	1410514.00	1410514.00	-	877660.00	877660.00
B Communication	-	-	0.00	-	-	0.00
e) Postage and Stationery	75000.00	88500.00	163500.00	84997.00	90000.00	174997.00
f) Telephone, Fax and Internet Charges	-	426684.00	426684.00	332009.00	101291.00	433300.00
C Others	-		0.00	-	-	0.00
g) Printing and Stationery (consumption)	42012.00	499187.00	541199.00	1098727.00	589475.00	1688202.00
h) Travelling and Conveyance Expenses	-	2955422.87	2955422.87	678295.00	2085154.00	2763449.00
i) Hospitality	-		0.00	-	192370.00	192370.00
j) Auditors Remuneration	-	117216.00	117216.00	-	117216.00	117216.00
k) Professional Charges	-	569668.00	569668.00	-	812188.00	812188.00
1) Advertisement and Publicity	-	663606.00	663606.00	-	367474.00	367474.00
m) Magazines & Journals	-	176239.00	176239.00	-	286112.00	286112.00
m1) E-resource subscription	-	-	0.00	-	186948.00	186948.00
n) Others (specify)Medicine	-	-	0.00	218851.00	-	218851.00
Misc Expenditure	-	183752.00	183752.00	30698.00	-	30698.00
TOTAL	**117012.00**	**13193040.87**	13310052.87	**3070184.00**	**8482573.00**	11552757.00

INDIAN INSTITUTE OF ADVANCED STUDY
RASHTRAPATI NIVAS, SHIMLA-5

SCHEDULE 18-TRANSPORTATION EXPENSES

Amount in Rupees

Particulars	"Current Year, 2016-17"			"Previous Year, 2015-16"		
	Plan	**Non Plan**	**Total**	**Plan**	**Non Plan**	**Total**
1 Vehicles (owned by institution)	-	-	0.00			0.00
a) Running expenses	25928.00	252766.00	278694.00	219346.00	185435.00	404781.00
b) Repairs & maintenance	-	109725.00	109725.00	188980.00	101234.00	290214.00
c) Insurance expenses	-	-	0.00	-	-	0.00
2 Vehicles taken on rent/lease	-	-	0.00	-	-	0.00
a) Rent/lease expenses	-	-	0.00	-	-	0.00
3 Vehicle (Taxi) hiring expenses	-	-	0.00	-	-	0.00
Total	25928.00	362491.00	388419.00	661428.00	601952.00	1263380.00

SCHEDULE 19 - REPAIRS & MAINTENANCE

Particulars	"Current Year, 2016-17"			2015-16		
	Plan	**Non Plan**	**Total**	**Plan**	**Non Plan**	**Total**
a) Buildings	29874707.00	181287.00	30055994.00	8241415.00	607347.00	8848762.00
b) Furniture & Fixtures	-	-	0.00			0.00
c) Plant & Machinery	-	-	0.00	73923.00	-	73923.00
d) Office Equipment	81283.00	499394.00	580677.00	374014.00	118112.00	492126.00
e) Computers	-	-	0.00	-	-	0.00
f) Laboratory & Scientific equipment	-	-	0.00	-	-	0.00
g) Audio Visual equipment	-	-	0.00	-	-	0.00
h) Cleaning Material & Services	-	-	0.00	-	-	0.00
i) Book binding charges	-	-	0.00	-	-	0.00
j) Gardening	-	175269.00	175269.00	-	217206.00	217206.00
k) Estate Maintenance	-	-	0.00	-	-	0.00
1) Others (Specify) Consumble store	4000.00	648161.00	652161.00	502944.00	147095.00	650039.00
Fixed assets written off	-	-	0.00	-	-	0.00
Total	**29959990.00**	**1504111.00**	31464101.00	**9192296.00**	**1089760.00**	10282056.00

INDIAN INSTITUTE OF ADVANCED STUDY
RASHTRAPATI NIVAS, SHIMLA-5

SCHEDULE 20 - FINANCE COSTS

Amount in Rupees

Particulars	"Current Year, 2016-17"			"Previous Year, 2015-16"		
	Plan	Non Plan	Total	Plan	Non Plan	Total
a) Bank charges	-	4123.56	4123.56	228.00	5188.00	5416.00
b) Others (specify)	-	-	0.00			0.00
Total	0.00	4123.56	4123.56	228.00	5188.00	5416.00

SCHEDULE 21 - OTHER EXPENSES

Amount in Rupees

Particulars	"Current Year, 2016-17"			"Previous Year, 2015-16"		
	Plan	Non Plan	Total	Plan	Non Plan	Total
a) Provision for Bad and Doubtful Debts/Advances	-	-	0.00	-	-	0.00
b) Irrecoverable Balances Written - off	-	-	0.00	-	-	0.00
c) Grants/Subsidies to other institutions/organizations	-	-	0.00	-	-	0.00
d) Others (specify)	-	-	0.00	-	-	0.00
Total	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00

SCHEDULE 22: PRIOR PERIOD EXPENSES

Amount in Rupees

Particulars	"Current Year, 2016-17"			"Previous Year, 2015-16"		
	Plan	Non Plan	Total	Plan	Non Plan	Total
1 Establishment expenses	-	-	0.00	-	-	0.00
2 Academic expenses	-	-	0.00	-	-	0.00
3 Administrative expenses	-	-	0.00	-	-	0.00
4 Transportation expenses	-	-	0.00	-	-	0.00
5 Repairs & Maintenance	-	-	0.00	-	-	0.00
6 Other expenses	-	-	0.00	30855.00	0.00	30855.00
Total	0.00	0.00	0.00	30855.00	0.00	30855.00

"INDIAN INSTITUTE OF ADVANCED STUDY
RASHTRAPATI NIWAS, SHIMLA-5

RECEIPT AND PAYMENT ACCOUNT FOR THE YEAR ENDED ON (01.04.2016 to 31.03.2017)

(Amount in Rupees)

	RECEIPT	Current year	Previous Year		PAYMENT	Current year	Previous Year
1	Opening Balance			1	Expenses		
	a) Cash Balances	32505.00	-		a) Establishment Expenses	80315826.00	75580783.00
	b) Bank Balances				b) Academic Expenses	4314818.00	12262635.00
	i) In Current accounts	47638937.94	8155512.93		c) Administrative Expenses	12658084.00	10845934.00
	ii) Saving accounts	121282694.87	11351648.00		d) Transportation Expenses	2096935.87	318447.00
	iii) Term deposit with bank	72405810.00	70652853.00		e) Repair & maintenance	1616189.00	989458.00
					f) Prior period expenses/Bank Charges	4846.37	7616.00
2	Grants Received			2	Payment against Earmarked/ Endowment Funds		
	a) From Government of India						
	i) Capital Grant	192805000.00	181241000.00				
	ii) Revenue Grant	107753000.00	114870500.00				
	b) From Ministry of culture (GOI)		621000.00				
	c) From other sources (Interest on FDR with Bank in respect of IC4HD)	15090958.00	6465726.00				
	c) Grant in Aid recoverable from GOI		33188377.00				
3	Academic Receipts			3	Refund for IC4HD		103621027.00
4	Receipts against Earmakred/ Endowment Funds			4	Payment against Sponsored Fellowship/Scholarship		
5	Receipts from IC4HD		102654885.00	5	Investment and Deposits made a) Out of Earmarked/ Endowment funds b) Out of own funds (Investments -Others		
6	Receipts against sponsored Fellowship and Scholarships			6	Term Deposits with Scheduled Banks renewed	-	

7	"Income on Investments from) a) Earmarked/Endowment funds b) Other investments"			7	Expenses Payable	19862368.95	15503941.00
					a) Fixed Assets		
					i) Out of Grant in aid	12424251.00	11805794.00
					ii) From own sources	125550.00	137250.00
					b) Capital Works-in-progress		
8	Interest received on			8	Other payments including statutory payments	-	
	a) Bank Deposit		252957.00				
	b) Loan and advances	-					
	c) Saving Bank Accounts	4978665.00					
9	Investments encashed	-		9	Refunds of Grants		
10	Terms deposits with scheduled Banks matured	-		10	Advances and Withdrawn		
					a) Staff	943500	490934.00
					b) Others	40430967.00	71476747.20
11	Other Income (including Prior Period Income	13903749.63	7521118.08	11	Other payments including statutory payments		
12	Deposits and Advances	2866673.00	7424937.00	12	Closing balances		
					a) Cash in Hand	28630.00	32505.00
					b) Bank Balances		
					In Current Accounts		47638937.94
					In Saving Accounts	196370307.25	121282694.9
					Term deposit with bank	207565720.00	72405810
13	Miscellaneous Receipts including						
14	Any Other Receipts						
	Total	**578757993.44**	**544400514.01**		**Total**	**578757993.44**	**544400514.01**

sd/-
(Rakesh Kumar Singh)
Accounts Officer

sd/-
(Prem Chand)
Secretary

sd/-
(Ajit Kumar Chaturvedi)
Director

INDIAN INSTITUE OF ADVANCED STUDY
RASHTRAPATI NIVAS, SHIMLA -171 005

ACCOUNTING POLICIES AND NOTES TO ACCOUNTS FOR THE YEAR ENDING 31.03.2017

ACCOUNTING POLICIES

(a) Accounting Concepts

The financial statements have been prepared under the Historical Cost convention in accordance with the Generally Accepted Accounting Principles as applicable in India.

The Society generally follows Accrual System of Accounting and recognizes Significant items of Income and Expenditure on Accrual Basis.

(b) Fixed Assets

The Fixed Assets of the Society are stated at Historical Cost and includes all the incidental expenses.

(c) Depreciation

i) No Depreciation on old balances of fixed assets have been provided by the Institute upto the Financial Year 2013-14. Thereafter, Depreciation on addition in fixed assets has been provided in accordance with Income Tax Rules, 1962. However, Depreciation for the year 2016-17have been provided as per rates prescribed inFormats of Financial Statements for Central Higher Educational Institutions.

ii) Had, the Depreciation provided on old pattern as per Income Tax Rules, 1962, the depreciation on fixed assets would have been Rs. 10500720.00 as compared to Rs.4574088.00 as per rates prescribed in Formats of FinancialStatements for Central Higher Educational Institutions

iii) Depreciation has been transferred to capitalGrant-in-Aid, in case of fixed acquired out of Grant-in- Aid.

(d) Method of Valuation/Inventory

Valuation of Publication (Books) Inventory is on the basis of Cost or Net Reliable Value, whichever is less.

NOTES TO ACCOUNTS

1. The accounts have been prepared as per the new format supplied by the Ministry of Human Resource Development (Government of India) in compliance with Uniform Accounting Standard.

2. Separate Balance Sheet has been prepared for General Provident Fund Account.

Page 29

3. Provision of Gratuity and Leave encashment as on 31.03.2017 is 31590383.00 (as at 31.03.2016 Rs. 32726241.00) and Rs.16056876.00 (as at 31.03.2015 Rs. 14944273.00) respectively.

4. Institute Publication amounting to Rs.5098778.00 (as at 31.03.2016 Rs. 4323699.12) as shown in the balance sheet under “Current Assets” is based on the information supplied by the Sales and Public Relation Officer(SPRO)

5. In the opinion of the Institute the Current Assets, Loans and Advances are approximately of the value stated, if realised in the ordinary course of business. The provision of all the known liabilities is adequate and not excess of the amount considered reasonably necessary.

6. Debit and Credit balances in the accounts of Creditors, Debtors and others are subject to confirmation and reconciliation.

7. Sundry debtors Rs.489872.25 includes Rs. 325333.75 which are outstanding from recovery for more than five years, however these are considered good for recovery.

8. Miscellaneous advance Rs.2444442.00 includesRs. 2152822.00 which is outstanding from recovery for more than five years, however these are considered good for recovery.

9. Previous year figure have been re-worked, re-grouped and rearranged, wherever considered necessary to make the comparable with those of current year

10. Schedule 1 to 24 is integral part of Balance Sheet and has been duly authenticated.

Sd/-	Sd/-	Sd/-
(Rakesh Kumar Singh)	(Prem Chand)	(Ajit Kumar Chaturvedi)
Accounts Officer	Secretary	Director

R.K. Kaushal & Co.
Chartered Accountants

Chamber#7, Top Floor, Aroma Hotel
Below High Court, Shimla - 1
Ph # (0177) 2652045 (O) 2623263(R)
Cell# 09816006660
E-mail: anjath1997@yahoo.com

AUDITORS' REPORT

We have audited the "Balance Sheet "of Inter University Centre for Humanities and Social Sciences (UGC), Shimla as at 31st March, 2017 and also their 'Receipt and Payment Account "and Income and Expenditure Account" for the year ended on that date, annexed hereto and report that: -

These financial statements are the responsibility of the Inter-University Centre Management. Our responsibility is to express an opinion on these financial statements based on our audit.

We conducted our audit in accordance with auditing standards generally accepted in India. Those standards require that we plan and perform the audit to obtain reasonable assurance about whether the financial statements are free of material misstatement. An audit includes examining, on a test check basis, evidence supporting the amounts and disclosures in the financial statements. An audit also includes assessing the accounting principles used and significant estimates made by the management, as well as evaluating the overall financial statements presentation. We believe that out audit provides a reasonable basis for our opinion.

Subject to foregoing remark we report that: -

1. We have obtained all the information and explanation which to the best of our knowledge and belief were necessary for the purpose of audit.
2. In our opinion and to the best of our information and according to explanation given to us the said accounts read with the notes contained in Schedule 2, give a true and fair view:-
   (a) In the case of the Balance Sheet, of the state of affairs of the Centre as at 31st March, 2017.
   (b) In the Case of Income and Expenditure Account, of the amount utilized form Grant-in-Aid for the year ended on that date.
   (c) In case of Receipt and Payment Account, of the amount received and payments made during the year ended on the date.

For R.K. Kaushal & Co.,
Chartered Accountants
ICAI FRN012233N
Sd/-
(CA. Rakesh Kumar Kaushal)
Sole Proprietor
ICAI M.No. 090655

Shimla
Dated: 09/06/2017

INDIAN INSTITUTE OF ADVANCED STUDY, SHIMLA
INTER UNIVERSITY CENTER FOR HUMANITIES & SOCIAL SCIENCES(UGC)

Balance Sheet as on 31st March.2017

Liabilities		**Amount (Rs)**		**Assets**		**Amount (Rs)**
Capital Reserve		**7236129.00**		**Fixed Assets**		**7236129.00**
				(As per Schedule-I)		
Current Liabilities		**5946029.00**		**Current Assets**		**5946029.00**
				State Bank of India Saving A/c 10116686391	2765283.51	
Tax Deducted at Sources				Grant-in-Aid Recoverable from UGC	2870954.49	
Unsecured Loan from IIAS A/C	2373687.00			Loans and Advances (Asset)	309791.00	
Unsecured Loan from Ticket Booth	3500000.00					
Salary/Wages payable	62854.00					
Audit Fee payable	9488.00					
Total		**13182158.00**		**Total**		**13182158.00**

Sd/-
(Rakesh Kumar Singh)
Accounts Officer

Sd/-
(Prem Chand)
Secretary

Sd/-
(Ajit Kumar Chaturvedi)
Director

As per our report of even date
for R.K.Kaushal & Co.,
Chartered Accountants
ICAI FRN 012233N"

(CA RAKESH KUMAR KAUSHAL)
ICAI M.No. 090655

INDIAN INSTITUTE OF ADVANCED STUDY, SHIMLA

INTER UNIVERSITY CENTER FOR HUMANITIES & SOCIAL SCIENCES(UGC)

Income & Expenditure Account for the year ending 31st March 2017

EXPENDITURE	AMOUNT (Rs.)		INCOME	AMOUNT(Rs.)
Maintance Allowances	967600.00		Grant in Aid Utilized	2775962.00
T.A to Associates	806739.00		Interest earned	60913.00
Research Seminar /Studyweek/workshop	39781.00		Misc Income	31360.00
Admim.and Secretal Support of Postage ,Medical,	6210.00			
Publication Exp.on the Issue of IUC Journal	-			
Misc.Expenses	36346.00			
Rent of Camp office at New Delhi	49413.00			
Admin. Unit Wages OTA,TA/Da /Honororium	864233.00			
Maintance/Running Expenses of Vehicle	72880.00			
Insurance of Vehicle	15436.00			
Interest and Bank Charges	109.00			
Audit fee	9488.00			
Total	**2868235.00**		**Total**	**2868235.00**

Sd/-
(Rakesh Kumar Singh)
Accounts Officer

Sd/-
(Prem Chand)
Secretary

Sd/-
(Ajit Kumar Chaturvedi)
Director

As per our report of even date
for R.K.Kaushal & Co.,
Chartered Accountants
ICAI FRN 012233N"

(CA RAKESH KUMAR KAUSHAL)
ICAI M.No. 090655

Schedule-1

INDIAN INSTITUTE OF ADVANCED STUDY, SHIMLA

INTER UNIVERSITY CENTER FOR HUMANITIES & SOCIAL SCIENCES(UGC)

Schedule fo Fixed assets as at 31st March 2017

S.No	Item	Opening Balance as on 1.4.2016	Addition during the year	Deletion during the year	Closing Balance as on 31.03.2017
1	Computer	1764725.00			1764725.00
2	Electrical Equipment	876816.00			876816.00
3	Furniture & Fixtures	1192092.00			1192092.00
4	Library Books	2809649.00			2809649.00
5	New Vehicle	592847.00			592847.00
	Grand Total	7236129.00			7236129.00

(Rakesh Kumar Singh)
Accounts Officer

INDIAN INSTITUTE OF ADVANCED STUDY, SHIMLA

INTER UNIVERSITY CENTER FOR HUMANITIES & SOCIAL SCIENCES(UGC)

Receipts and Payment (1st April 2016 to 31 March 2017)

Receipts	**Amount (Rs)**	**Payments**	**Amount (Rs)**
Opening Balance		**Revenue Expenditure**	
State Bank of India Saving A/c 10116686391	252752.51	Maintencces Allowances	967600.00
Revenue Receipts	60913.00	T.A to Associates	806739.00
		Research Seminar /Studyweek/workshop	39781.00
Interest Received		Admin. Unit Wages OTA,TA/Da /Honororium	879385.00
Misc Income	24539.00	Publication Expenses on the Issue of IUC Journal	
		Misc. Expenses	36346.00
		Maintence/ Running expense of Vehicle	68180.00
		Insurance of Vehicle	15436.00
		Interest and Bank Charges	160.00
		Rent of Camp Office New Delhi	49413.00
Other Receipts		**Other Payment**	
Tax Deduct at Sources	7617.00	Misc Advances	20000.00
Mess Charges Collected from associates	597681.00	TDS Deposited	7578.00
Unsecured loan from Ticket Booth	-	Mess Charges deposite with IIAS mess	597681.00
Unsecured loan from IIAS	1501300.00	Audit Fee Payable	9447.00
Misc. Advances	26224.00	IIAS	3000.00
Grant-in -Aid Recoverable for UGC	3794962.00	**Closing Balance**	
		State Bank of India Saving A/c 10116686391	2765242.51
Total	**6265988.51**	**Total**	**6265988.51**

Sd/-
(Rakesh Kumar Singh)
Accounts Officer

Sd/-
(Prem Chand)
Secretary

Sd/-
(Ajit Kumar Chaturvedi)
Director

As per our report of even date
for R.K.Kaushal & Co.,
Chartered Accountants
ICAI FRN 012233N"

(CA RAKESH KUMAR KAUSHAL)
ICAI M.No. 090655

INDIAN INSTITUE OF ADVANCED STUDY
RASHTRAPATI NIVAS, SHIMLA -171 005

SCHEDULE 2

ACCOUNTING POLICIES AND NOTES TO ACCOUNTS FOR THE YEAR ENDING 31.03.2017

ACCOUNTING POLICIES

1. Accounts have been maintained on Accrual System of Accounting.
2. Depreciation on assets is not being charged in view of the Rule 151 (4) of General Financial Rules.

NOTES TO ACCOUNTS

3. The Inter-University Centre has utilized an amount of Rs. 2775962.00 for the intended purpose by raising temporary/unsecured loan from Indian Institute of Advanced Study in anticipation that this amount be reimbursed by the University Grants Commission, the matter has been taken up with the University Grants Commission for its earlier recovery.
4. Advance of Rs. 18475.00 recoverable from Professor R.S. Mishra is long outstanding since 1994-95. Steps are being taken to adjust/recover the same at the earliest.
5. Advance of Rs. 1,00,000.00 is recoverable from Dr. V.C. Thomas since 20.03.2004. Steps are being taken to adjust/recover the same at the earliest.
6. An advance of Rs. 15000.00 was paid to Director ICAR New Delhi through ARO for seminar, out of above Rs. 10,000.00 is still outstanding. Steps are being taken to adjust/recover this amount.
7. An advance of Rs. 2,75,000.00 was paid to Registrar, Jawaharlal Nehru University, New Delhi on 30.03.2007 through ARO for organizing seminar and amount of Rs. 1,80,116.00 is still outstanding. Efforts are being made to adjust/recover this amount.

Sd/-	Sd/-	Sd/-
(Rakesh Kumar Singh)	(Prem Chand)	(Ajit Kumar Chaturvedi)
Accounts Officer	Secretary	Director

INDIAN INSTITUTE OF ADVANCED STUDY
Rashtrapati Nivas, Shimla-171005

SOCIETY

1. Professor (Retd.) Kapil Kapoor — President
   Chairman, Governing Body
   Indian Institute of Advanced Study,
   Rashtrapati Nivas, Shimla – 171005.
   Address: B-2/332, Ekta Garden,
   9-I.P.Extension, Mother Dairy Marg, Delhi – 110092.
   Tel. 011-22723406; Mob. (0) 9810202146
   E-mail ID: kkapoor40@yahoo.com

2. Professor Ajit Kumar Chaturvedi
   Director
   Indian Institute of Advanced Study
   Rashtrapati Nivas, Shimla-171005
   Telephone: 0177-2830006(O), Fax: 2831389, 2830995
   E-mail: director@iias.ac.in

Rule 3(a) Institutional Members (Ex-Officio)

1. Shri R. Subrahmanyam, IAS
   Secretary
   Department of Higher Education
   Ministry of Human Resource Development
   Room No. 127-C-Wing
   Shastri Bhavan, New Delhi - 110 015
   Tel: 011-23386451, 23382698 (O) 26979585,
   Fax: 011-23385807, 23381355; E-mail: secy.dhe@nic.in

2. Shri Ajay Narayan Jha, IAS
   Secretary Expenditure
   Government of India
   Department of Expenditure
   Ministry of Finance
   North Block, Central Secretariat, New Delhi -110 001
   E-mail: secyexp@nic.in

3. Shri Sanjay Kumar Sinha
   Joint Secretary (Management & ICR Division)
   Union Ministry of Human Resource Development
   Room No.230-C
   Shastri Bhavan, New Delhi – 110 015
   +91-11-23385915(O) +91-11-23074410(Fax)
   E-mail: sanjay.sinha@nic.in

4. Professor D.P. Singh
   Chairman
   University Grants Commission
   Bahadurshah Zafar Marg, New Delhi – 110 002
   Tel: (011) 23239628 (O) Fax: 011-23231797,
   E-mail: cm.ugc@nic.in

5. Dr. Girish Sahani
   Director-General,
   Council of Scientific & Industrial Research,
   Anusandhan Bhawan,
   2; Rafi Ahmed Kidwai Marg, New Delhi – 110 001.
   Tel: 011- 23710472, 23717053 (O),
   Fax: 011- 23710618 (O),
   E-mail: dgcsir@csir.res.in ; dg@csir.res.in

6. Dr. Braj Bihari Kumar
   Chairman
   Indian Council of Social Science Research
   Post Box No.10528
   Aruna Asaf Ali Marg, New Delhi – 110 067
   Tel: Phone: 011-26179679 (O), 011-26742398 (R)
   Fax: 011-26162516/26179836, E-mail : chairman@icssr.org

7. Professor Arvind P. Jamkhedkar
   Chairman
   Indian Council of Historical Research
   35, Ferozeshah Road, New Delhi – 110 001
   Tel: 011-23386033, 23384869, Fax: 23383421, 23387829,
   Mobile 9415243954, Email: chairman@ichr.ac.in

8. Professor S.R. Bhatt
   Chairman
   Indian Council of Philosophical Research
   36, Tughlakabad Institutional Area
   Mehrauli Badarpur Road, New Delhi – 110 062
   Tele fax: 011-29901503/, 29901501; Mobile: 9599955780
   Fax: 011-29964755; E-mail: srbhatt39@gmail.com; chairman@icpr.in

9. Shri Baldeo Bhai Sharma
   Chairman
   National Book Trust,
   5, Nehru Bhavan, Institutional Area, Phase – II
   Vasant Kunj, New Delhi – 110 070
   Phone: 011-26121880 (office), Mobile: 09910052933
   E-mail: chairman@nbtindia.org.in

10. Dr. Chandrashekhar Kambar
    (President, Sahitya Akademi)
    "Siri Sampige", No. 44, Ist Main,
    Banashankari 3rd Stage, 4th Block
    Bengaluru-560 085
    Mobile : 09980559000
    Email: cbkambara@gmail.com

11. Shri Shekhar Sen
    Chairman,
    Sangeet Natak Akademi,
    Rabindra Bhavan, Ferozeshah Road
    New Delhi – 110 001
    Phone: 011-24116375/76 Fax: 011-23381621;
    E-mail: chairman@sangeetnatak.gov.in

12. Shri C.S. Krishna Setty, IAS
    Administrator
    Lalit Kala Akademi, Rabindra Bhavan,
    35, Ferozeshah Road, New Delhi – 110 001
    Phone: 011- 23387241 - 43
    E-mail: chairman@lalitkala.gov.in ; secretary@lalitkala.gov.in

13. Shri Ajay Kumar Sood
    Chairman
    Indian National Science Academy,
    Bahadur Shah Zafar Marg, New Delhi 110002
    Phone : 22932340 (O), E-mail : president@insa.nic.in

14. Professor Sunaina Singh
    Vice-President,
    Indian Council for Culture Relations,
    N-38, Panchsheel Park, New Delhi –110 017.
    Phone: 011-23379309, 23379310
    E-mail : president.iccr@nic.in

15. Professor P.B.Sharma
    President
    Association of Indian Universities
    AIU House, 16 Comrade Indrajit Gupta Marg (Kotla Marg),
    Landmark: Opposite National Bal Bhawan, Near I.T.O.,
    New Delhi -110002
    &
    Vice Chancellor
    Amity University Haryana, Amity Education Valley,
    Gurgaon (Manesar), Haryana 122413
    Mobile : 09810146096
    Email: pbsharma@ggn.amity.edu & vcauh@ggn.amity.edu

16. Dr. Arun Kumar Chakraborty
    Director General
    National Library
    Belvedere, Alipore, Kolkata – 700 027
    Tel: 033-24792968/ 24791462(O); Fax: 033- 24791462
    E-mail: nldirector@rediffmail.com

17. Shri Pritam Singh
    Director-General of Archives
    National Archives of India
    Janpath, New Delhi – 110 001
    Tel: 011-23381396, E-mail: archives@nic.in

18. Shri Vineet Chawdhary, IAS
    Chief Secretary,
    Government of Himachal Pradesh,
    H.P. Secretariat,
    Shimla - 171 002 (H.P.)
    Tel: 0177-2621022 (O), 2880714 (R)
    Fax: 2621813
    E-mail: cs-hp@nic.in

These Institutional members may, if necessary, be represented, at the meetings, by their nominees.

Rule 3(b) Nominated Member

Rule 3(b)(i) Six Vice-Chancellors of Indian Universities nominated by Central Government.

1. Professor Kuldip Chand Agnihotri,
   Vice Chancellor,
   Central University,
   Himachal Pradesh- 176206
   Phone No. 229330; Fax: 229331
   E- mail: vc.cuhimachal@gmail.com

2. Professor Nalini Kant Jha
   Vice Chancellor
   T.M. Bhagalpur University,
   Bhagalpur, Bihar- 812007.
   Ph.No.: 0641 -2620600 (R); 2620100 (0)
   Fax No.: 0641- 2620240
   Mobile: 09092548017, 07764016016
   Email: jhank59@gmail.com

3. Prof. S.K. Srivastava
   Vice-Chancelor
   North-Eastern Hill University,
   Shillong 793 022
   Phone: (0364) 2721003/2721004/2550101/ 2550074 (R)
   Fax: (0364) 2550076, Email: vcnehu@nehu.ac.in

4. Professor B. Thimmegowda,
   Vice Chancellor,
   Karnataka State Rural Development and Panchayath Raj University
   Gadag, Raitha Bhavana, General Cariyappa Circle,
   Gadag-582101, Karnataka
   Phone No: 08372-230338, Fax-08372-297343
   E-mail: vc.ksrdpru@gmail.com , btgowda@yahoo.co.in

5. Professor Appa Rao Podile
   Vice-Chancellor
   University of Hyderabad
   Prof.C.R. Rao Road, Gachibowli
   Hyderabad - 500046 Telangana
   Phone : 040-23132000/23010121 (O)
   Mobile : 9100655777, Email: podilerao@gmail.com ; vc@uohyd.ac.in

6. Professor Vasant Shinde
   Vice-Chancellor
   Deccan College,
   Post-Graduate and Research Institute,
   Deemed to be University, Pune - 411 006
   Phone: 020-26513203 (O), Mobile: 9923693795, 9158988893
   E-mail: vshinde.dc@gmail.com ; vasant.shinde@dcpune.ac.in

Rule 3(b)(ii) Educationists and those eminent in the fields of learning, culture and science, nominated by the Central Government.

1. Professor Kapil Kapoor
   B-2/332, Ekta Garden,
   9-I.P.Extension, Mother Dairy Marg, Delhi – 110092.
   Tel. 011-22723406; Mob. (0) 9810202146
   E-mail ID: kkapoor40@yahoo.com

2. Professor Chaman Lal Gupta — Vice-President
   Vice-Chairman, Governing Body
   Indian Institute of Advanced Study,
   Rashtrapati Nivas, Shimla – 171005.
   Mobile: 9418141898, Phone: 0177-2830637
   E-mail: guptcl@gmail.com

3 Professor G.K. Karanth
Professor Sociology,
Centre for Study of Social Change and Development,
Institute for Social and Economic Change,
Bangalore – 560072
Mobile: 7899837275; 9845731403
E-mail: gk.karanth@gmail.com

4 Professor Sanjeev Kumar Sharma
Professor and former Head,
Department of Political Science,
Chaudhary Charan Singh University,
Meerut – 250005 Uttar Pradesh.
Phone: +911212764455
Mobile: 9412205348, 9458609921
Email: sanjeevaji@gmail.com

5 Professor Pawan Kumar Sharma
Professor & HoD,
Department of Political Science,
Atal Bihar Vajpayee Hindi University,
Madhya Pradesh - 462016
Contact No: 8989120208
Email: pawansharmaccs67@gmail.com

6. Professor B.K. Kuthiala
Vice Chancellor,
Makhanlal Chaturvedi National University of Journalism & Communication,
Bhopal – 462011
Phone No (O): (0755)-2551531, Fax No: (0755)-2553441
E-mail: kuthialavc@gmail.com

7. Professor (Dr.) Jagbir Singh
WZ- 707/C, Street No. 18,
Shiv Nagar, Jail Road,
New Delhi – 110058.
Mobile: 09871598125. Phone: 011-25559404.
Email: jagbir707@yahoo.com

8 Professor Rakesh Kumar Mishra
202, Sai Apartments, C-40, J Park-II,
Mahanagar Extension, Lucknow-226 006
Mobile : 08953809188
Email: rkm.lu007@gmail.com ; rkm200080@yahoo.com

9. Professor Himanshu Prabha Ray
603 Ivory Towers,
The Retreat Complex
Sector 30, South City I
Gurgaon 122007, Haryana
Phone : 91 (0124) 2381947 (res) 91 9811119084 (m)
E-mail: hprayjnu@vsnl.com ; rayhimanshuprabha@gmail.com

10. Professor D. Murali Manohar
Department of English,
University of Hyderabad,
P.O. Central University,
Hyderabad - 500 046, Telangana State
Phone No. : 040-231334069
Mobile No. : 09908569272
E-mail id : dmmpsh@gmail.com

11. Professor Sharad Deshpande
13 Khagol Vaigyanik
Cooperative Housing Society
38/1 Panchwati Pasan
Pune – 411008
Mobile : 094223-47778
Email: sharad.unipune@gmail.com

12. Professor Dilip Kumar Chakrabarti
Professor Emeritus of South Asian Archaeology,
Department of Archaeology
Cambridge University of U.K
Email: dc129@cam.ac.uk

13. Professor D.N. Tripathi
    Leela Nilayam
    99-A, Indira Nagar,
    P O Sheopuri, New Colony,
    Gorakhpur -273 016, Uttar Pradesh
    Mobile: 09415282388, 9415243954
    Email: dayatripathi136@gmail.com ; dntripathi@gmail.com

14. Professor Prema Nanda Kumar
    Sri Aurobindo Scholar
    Swami Vivekananda Chair,
    Mahatma Gandhi University
    Kerala –686560.
    Email: premnand@tr.net.in

15. Professor S.K. Chakraborty
    P-69, Diamond Park
    Diamond Harbour Road
    Joka, Kolkata 700 104
    Phone: 033- 65353677
    Mobile: 9007116459
    Email: drdebangshu.chakraborty@gmail.com

16 Shri Rajiv Malhotra
    Founder
    The Infinity Foundation
    174 Nassau St.
    PMB 400, Princeton, NJ 08542
    Email: RajivMalhotra2007@gmai.com

17. Dr. K.S.Kannan,
    107, Vybhavi,
    17th Main, 4th Cross (New 2B Cross),
    Muneshwara Block,
    Bangalore - 560 026
    Contact No: 99002 75255
    Email: ks.kannan.2000@gmail.com

18. Professor Shantishree Dhulipudi Pandit
    Department of Politics & Public Administration
    University of Pune, Maharashtra- 411007
    Phone: 91 20 -25410519 / 65203772
    Email: santishreepandit@gmail.com

19. Professor G. Nageswara Rao
    Vice-Chancellor
    Andhra University
    Visakhapatnam 530 003
    Andhra Pradesh
    Phone: 0891-2844333/4222
    Fax: 0891-2525611
    Mobile: 9849701527
    Email : (Official) vicechancellor@andhrauniversity.edu.in

20. Professor Gururaj Karajagi
    Founder and Chairman,
    Academy for Creative Teaching (ACT),
    Bangaluru – 560032
    Phone: 080 41697855
    080 23331748 (R)
    Mobile : 9663611221
    E-mail: gururaj.karajagi@actedu.in

INDIAN INSTITUTE OF ADVANCED STUDY
Rashtrapati Nivas, Shimla-171005

GOVERNING BODY

1 Professor (Retd.) Kapil Kapoor
Chairman, Governing Body
Indian Institute of Advanced Study,
Rashtrapati Nivas, Shimla - 171005
Address: B-2/332, Ekta Garden,
9-I.P.Extension, Mother Dairy Marg, Delhi – 110092.
Tel. 011-22723406; Mob. (0) 9810202146
E-mail ID: kkapoor40@yahoo.com

2. Professor Ajit Kumar Chaturvedi
Director
Indian Institute of Advanced Study
Rashtrapati Nivas, Shimla-171005
Telephone: 0177-2830006(O) Fax: 2831389, 2830995
E-mail: director@iias.ac.in

3. A representative each of the Ministry of Human Resource Development and the Ministry of Finance.

3. Shri R. Subrahmanyam, IAS
Secretary,
Department of Higher Education,
Ministry of Human Resource Development,
Room No. 127-C- Wing
Shastri Bhavan, New Delhi -110 015.
Tel: 011-23386451, 23382698(O) 26979585, Fax: 23385807, 23381355
E-mail: secy.dhe@nic.in

4. Smt. Darshana M Dabral
Joint Secretary & Financial Adviser
Department of Secondary & Higher Education
Ministry of Human Resource Development
120-C, Shastri Bhavan, New Delhi - 110 015.
Tel: 011-23382696, Fax- 011-23070668, E-mail: jsfa.edu@gov.in

4. Five Institutional Members

1. Professor D.P. Singh
   Chairman
   University Grants Commission,
   Bahadurshah Zafar Marg, New Delhi – 110 002.
   Tel: (011) 23239628 (O) Fax: 011-23231797, E-mail: cm@ugc.nic.in

2. Dr. Braj Bihari Kumar
   Chairman
   Indian Council of Social Science Research,
   Post Box No.10528,
   Aruna Asaf Ali Marg, New Delhi – 110 067
   Phone: 011-26741679 (O), 011-26742398 (R)
   Fax: 011-26162516/26179836, E-mail : chairman@icssr.org

3. Professor S.R. Bhatt
   Chairman,
   Indian Council of Philosophical Research,
   36, Tughlakabad Institutional Area,
   Mehrauli Badarpur Road, New Delhi – 110 062.
   Tel: 9599955780, Fax: + 91-11-29964755
   E-mail:srbhatt39@gmail.com

4. Dr. Girish Sahni,
   Director-General,
   Council of Scientific & Industrial Research and Secretary
   DSIR Anusandhan Bhavan,
   2 , Rafi Marg, New Delhi – 110 001.
   Tel: + 91-11-23710472,23717053 Fax: + 91-11-23710618
   Email : dgcsir@ csir.res.in ; dg @csir.res.in

5. Professor Arvind P. Jamakhedar
   Chairman
   Indian Council of Historical Research
   35, Ferozeshah Road, New Delhi – 110 001
   Tel: 011-23386033, 23384869, Fax: 23383421, 23387829,
   Mobile 9415243954, E-mail: chairman@ichr.ac.in

These Institutional members may, if necessary, be represented, at the meetings, by their nominees.

5. Two Vice-Chancellors from category 3(b)(i) of the Members of Society nominated by the Central Government.

1. Professor Nalini Kant Jha
   Vice Chancellor
   T.M. Bhagalpur University,
   Bhagalpur, Bihar- 812007.
   Ph.No.: 0641 -2620600 (R); 2620100 (0)
   Fax No.: 0641- 2620240
   jhank59@gmail.com

2. Prof. S.K.Srivastava
   Vice-Chancelor
   North-Eastern Hill University,
   Shillong 793 022
   Phone: (0364) 2721003/2721004/2550101/ 2550074 (R)
   Fax: (0364) 2550076
   Email: vcnehu@nehu.ac.in

6. Four persons from Category 3(b)(ii) of the Members of the Society nominated by the Central Government:

1. Professor Chaman Lal Gupta
   Vice-Chairman, Governing Body
   Indian Institute of Advanced Study,
   Rashtrapati Nivas, Shimla – 171005.
   Mobile: 9418141898
   Phone: 0177-2830637, E-mail: guptcl@gmail.com

2. Professor G.K. Karanth
   Professor Sociology,
   Centre for Study of Social Change and Development,
   Institute for Social and Economic Change,
   Bangalore – 560072
   Mobile : 7899837275; 9845731403
   E-mail : gk.karanth@gmail.com

3. Professor Sanjeev Kumar Sharma
Professor and former Head,
Department of Political Science,
Chaudhary Charan Singh University,
Meerut - 250005, Uttar Pradesh
Phone: +911212764455
Mobile: 9412205348, 9458609921
Email: sanjeevaji@gmail.com

4. Professor Gururaj Karajagi
Founder and Chairman,
Academy for Creative Teaching (ACT),
Bangaluru – 560032
Phone: 080 41697855, 080 41697866, 080 23439822 (O)
080 23331748 (R)
Mobile : 9663611221
E-mail: gururaj.karajagi@actedu.in

INDIAN INSTITUTE OF ADVANCED STUDY
Rashtrapati Nivas, Shimla-171005

FINANCE COMMITTEE

1. Professor Ajit Kumar Chaturvedi — Chairman
   Director
   Indian Institute of Advanced Study
   Rashtrapati Nivas, Shimla-171005
   Telephone: 0177-2830006(O) Fax: 2831389, 2830995
   E-mail: director@iias.ac.in

2. Smt. Darshana M Dabral — Ex-Officio Member
   Joint Secretary & Financial Adviser
   Department of Secondary & Higher Education
   Ministry of Human Resource Development
   120-C, Shastri Bhavan, New Delhi - 110 015.
   Tel: 011-23382696, Fax- 011-23070668,
   E-mail: jsfa.edu@gov.in

3. Professor Arvind P. Jamakhedar — Member
   Chairman
   Indian Council of Historical Research
   35, Ferozeshah Road, New Delhi – 110 001
   Tel: 011-23386033, 23384869, Fax: 23383421, 23387829,
   Mobile 9415243954, E-mail: chairman@ichr.ac.in

4. Professor Sharad Deshpande — Member
   13 Khagol Vaigyanik
   Cooperative Housing Society
   38/1 Panchwati Pasan, Pune – 411008
   Mobile : 094223-47778

5. Professor (Dr.) Jagbir Singh — Member
   WZ- 707/C, Street No. 18,
   Shiv Nagar, Jail Road,
   New Delhi – 110058.
   Mobile: 09871598125. Phone: 011-25559404.
   Email: jagbir707@yahoo.com